महाकविक महाप्रयाण

डॉ. रंगनाथ दिवाकर

महाकविक महाप्रयाण

(महाकवि कालिदासक मैथिलत्व आ महाप्रयाण विषयक नाटक)

डॉ. रंगनाथ दिवाकर

अनुप्रास प्रकाशन

जय-राम शोध संस्थान, सुलतानपुरक तत्वावधानमे मनोलिता प्रकाशन, दरभंगा/पटना प्रस्तुत करैत अछि...

अनुप्रास हार्डबैक्स

ISBN : 978-93-91371-12-8

9 789391 371128

प्रकाशक : अनुप्रास प्रकाशन
कार्यालय : इन्द्र परिसर, लहेरियागंज,
मधुबनी, मिथिला (बिहार) 847 211
वेबसाइट : www.anuprasprakashan.com
ईमेल : info@anuprasprakashan.com
anuprasprakashan@gmail.com
मोबाइल : +91 8862977228

पोथी प्राप्तिक स्थान :
- 102,अनंत विकास अपार्टमेंट,
वेदनगर, रुकनपुरा, पटना-800014

- श्री मनोज कुमार चौधरी
न्यू बलभद्रपुर, लहेरियासराय,
दरभंगा (मिथिला), बिहार- 846001
मोबाइल : +91 9155221944 /8709610336

आवरण पेंटिंग : श्री मिथिलेश कुमार
भा. प्र. से.(से.नि.)
थॉमसन प्रेस इंडिया लिमिटेड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

महाकविक महाप्रयाण
(महाकवि कालिदासक मैथिलत्व आ महाप्रयाण विषयक नाटक)

© **डॉ. रंगनाथ दिवाकर**

पहिल संस्करण : 2022
मूल्य : ₹ 800/-

MAHAKAVIK MAHAPRAYAN
A Critical and Dramatic Assessment of Mahakavi Kalidas : His Maithilatva and Mahaprayan by
Dr. Rangnath Divakar

Published by ANUPRAS PRAKASHAN
First Edition : 2022
Price : ₹ 800/-

समर्पण

तीनू मातृशक्ति—

स्मृतिशेष पू. माता कृष्णा देवी *(महाप्रयाण 23 अक्टूबर 2015),*

स्मृतिशेष पू. अम्मा गीता देवी *(महाप्रयाण 24 अक्टूबर 2014),*

आ

स्मृतिशेष पू. चाची शची देवी *(महाप्रयाण 25 फरवरी 2022)*

एवं

एवं तीनू पितृपुञ्ज—

स्मृतिशेष पू. बड़का बाबू जगन्नाथ चौधरी *(महाप्रयाण 24 अप्रैल 2014),*

स्मृतिशेष पू. छोटका बाबू डॉ. गोविन्द नारायण चौधरी *(महाप्रयाण 21 नवम्बर 2016),*

आ

पूज्य ददा श्री वासुदेव नारायण चौधरी *(जन्म 5 फरवरी 1927)*

केर

श्रीचरणमे

सादर समर्पित।

रंगनाथ दिवाकर

(रंगनाथ दिवाकर)

विषयानुक्रम

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ
1.	*शुभकामनासन्देश : प्रो. शशिनाथ झा*	*09*
2.	*भूमिका : महेन्द्र मलंगिया*	*11*
3.	*किछु आखर*	*15*
4.	*महाकवि कालिदास आ हुनक मैथिलत्व*	
i)	महाकविक समय आ जन्मस्थान	23
ii)	रचनामे व्यक्त विचार सभक आधारपर महाकविक मैथिलत्व	51
iii)	प्रकृति वर्णनमे महाकविक मैथिलत्व	57
iv)	रीति-रिवाज व पावनि-तिहारक चर्चमे महाकविक मैथिलत्व	64
v)	भाषा वैज्ञानिक आधारपर महाकविक मैथिलत्व	69
vi)	राजस्व अभिलेखक आधारपर महाकविक मैथिलत्व	73
5.	*इतिहास आ साहित्यक अनुशीलनसँ महाकविक मैथिलत्व*	
i)	महाकवि कालिदास आ सीता चरित्र-चित्रण	76
ii)	उच्चैठ, उज्जैन आ महाकवि कालिदास	100
iii)	महाकवि कालिदासक श्रीलंका यात्रा	117
iv)	कालिदास, कुमारदास आ श्रीलंका	132
v)	महाकवि कालिदास आ कुमारदास : अनन्त पथ केर सहयात्री	162
vi)	श्रीलंकाक महातीर्थ माटरा : दू महाकविक महाप्रयाण स्थल	185
6.	*निष्कर्ष*	*197*
7.	*महाकविक महाप्रयाण (नाटक)*	*201*

प्रो. शशिनाथ झा
कुलपति
कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार- 846008

Prof. Shashi Nath Jha
Vice-Chancellor
kamehwarsingh Darbhanga Sanskrit
University, Darbhanga, Bihar-846008
mob.: 9199475909

पत्रांक :............ दिनांक :...............

शुभकामनासन्देश

महाकवि कालिदास विश्व साहित्यक प्रख्यात साहित्यकार छलाह, जनिक परिचय, जीवनी, स्थान ओ काल पर विगत डेढ़ सए वर्षसँ घमर्थन होइत रहल अछि। एहि दिशामे विद्याव्यसनी विज्ञ लेखक ओ कुशल प्रशासक श्रीयुत रंगनाथ दिवाकर जी अपन गहन अध्ययन ओ परिश्रम कए प्रमाणपूर्वक जे तथ्य प्रस्तुत कएलनि अछि से मननीय एवं प्रशंसनीय थिक। प्रत्येक बिन्दु पर प्रबल युक्ति एवं प्रामाणिक उद्धरण हिनक लेखन कुशलताक परिचायक भेल अछि।

कालिदासक मैथिलत्वक सिद्धिमे पं. जीवनाथ झा 1962मे ओ डॉ. जयमन्त मिश्र 1984मे प्रचुर सामग्री देने छथि, तकर उल्लेख एतए नहि भए सकल अछि, ओना ओकर कतोक विषय एतए आबि गेल अछि।

प्रस्तुत पोथीमे कालिदासक सम्बन्धमे विविध पक्ष पर आधारित बारह गोट निबन्ध आ कालिदासक महाप्रयाण पर आधारित नाटक विन्यस्त अछि, जाहिमे निबन्ध महाकवि कालिदास आ हुनक मैथिलत्व ओ सीताविषयक धारणा मिथिलाक उत्कर्षसँ सम्बद्ध अछि। एतेक दृढ़ भए एहन प्रतिपादन प्रथमे बेर देखल गेल अछि। शेष निबन्ध कालिदास ओ कुमारदासक सख्यभाव पर आश्रित अछि, जकर परीक्षण आलोचकगण अवश्य करताह ओ एहि युक्ति सबहक सम्यक् समीक्षा कए लाभान्वित होएताह। एहि विषयक एतेक सामग्री एकठाम भेटब बड़ महत्त्वपूर्ण अछि।

लेखक महोदयक एहि उत्कृष्ट प्रयासक भूरि-भूरि प्रशंसा करैत हिनक लेखनीक प्रवाहमय रहबाक शुभकामनासन्देश प्रेषित करैत छी।

शशिनाथ झा
22.03.2021
(शशिनाथ झा)

भूमिका

काव्येषु नाटकं रम्यम्

अर्थात् जतेक प्रकारक काव्य अछि ओहिमे नाटक सभसँ बेसी आनन्दज अछि। एहि बातक पुष्टि निम्नांकित कथासँ होइत अछि—

एक बेर ब्रह्मा थाकल-ठेहिआएल विष्णु लग पहुँचलाह आ कहलथिन जे हम सृष्टि करैत-करैत थाकि गेलहुँ। हमरा जीवनमे नीरसता आबि गेल अछि। एकरासँ कोना छुटकारा भेटत तकर उपाय हमरा बता दिअ। एहिपर विष्णु कहलथिन जे एकर उपाय हमरा लग नहि अछि। अहाँ शिवजी लग जाउ। तखन ओ शिवजी लग गेलाह आ सभ बात हुनका कहलथिन। हिनक बात सुनिक' शिवजी नन्दिकेश्वरकेँ बजौलथिन आ कहलथिन जे हम जे अहाँकेँ नाट्यवेद सिखौने छी, ओ प्रयोग सहित हिनका सिखा दियौन। नन्दिकेश्वर शिवजीक आज्ञा मानि सम्पूर्ण नाट्यवेद प्रयोग सहित सिखा देलथिन। एहि तरहे ब्रह्मामे जे थकान आएल छलनि ओ दूर भेलनि।

आब कहल जाए जे एहन कोन साहित्यिक विधा छैक जकरामे एहन क्षमता होइक। नहि छैक तेँ तँ एकरा साहित्यक मणिमय मुकुट कहल गेलैए। हमरा तँ लगैए जे ई लोभ्य विद्या अछि तेँ दिवाकरजी एहि दिस अग्रसर भेलाह अछि। आओर विषय-वस्तुक रूपमे चयन कएलनि अछि। संसारक महान् नाटककार कालिदासकेँ जनिक अभिज्ञान शाकुन्तलम् भारतेमे नहि, अपितु संसारमे अपन वर्चस्व स्थापित कएलक। एहि सभ प्रसंगमे हम एकटा बात कह' चाहब— जखन कोनो पुरुष सफलताक शिखरपर पहुँचैत छथि तँ हुनका संग अनेकहु किंवदन्ती जुटि जाइत छनि। यथा-विद्यापतिक संग उगना, कालिदासक संग काली, पाणिनिक संग महेश्वर आदि। मुदा जखन एकरा सत्यक कसौटीपर रखैत छी तँ खरा नहि उतरैत अछि। जेनाकि कहल जाइत अछि जे कालिदास कालीक पैघ भक्त छलाह तेँ लोक हिनक नाम कालिदास राखि देलकनि जे व्याकरणसँ सिद्ध नहि होइत अछि। कारण, जँ इएह बात रहितै तँ हिनक नाम कालीदास रहबाक चाहैत छलनि जे नहि अछि।

खैर, एहन-एहन किंवदन्तीक लाभ हमरा लोकनिक प्राचीन साहित्यकार खूब उठौलनि अछि। एतबए नहि, पाठक हिनका लोकनिक साहित्यकेँ हृदयसँ

स्वागतो कएलकनि अछि। हमरा लगैए जे एही तरहक सोचक चलते दिवाकरजी अपना नाटकक हेतु एहन विषय-वस्तुक चयन कएलनि अछि। तैँ तँ कालिदासकेँ वज्र मूर्ख बनाक' ओही डारिकेँ कटबैत छथि जाहि डारिपर ओ बैसल रहैत अछि। विदूषकक सहायतासँ विद्योत्तमा सन विदुषीकेँ वज्र मूर्ख कालिदाससँ हरबा दैत छथि। हँ, किछु गोटेक मोनमे अवश्य ई बात उठतनि जे एहिसभ बातमे जे सत्यता नुकाएल अछि ओकर उजागर करब आइ-काल्हुक युगमे आवश्यक छल। मुदा नहि, लोकविश्वासकेँ अक्षुण्ण राखब सेहो लेखकक कर्तव्य भऽ जाइत छैक। एहि सम्बन्धमे हम 'द डिस्कवरी ऑफ इण्डिया'क किछु पाँती उल्लेख कर' चाहब, ''भारतक दन्तकथासभ महाकाव्ये धरि सीमित नहि अछि। ई वैदिक काल धरि पहुँचैत अछि आ अनेक रूप एवं पोशाकमे संस्कृत साहित्यमे अबैछ। कवि आ नाटककार एकर पूरा लाभ उठबैत अछि आ एकर आधार बनैत अछि सुन्दर कल्पना। कहल जाइत अछि जे युवतीक चरणक स्पर्शसँ अशोकक वृक्ष फुलाइत अछि।...शिवक तेसर नेत्रसँ निकलल ज्वालामे कामदेव भस्म भ' जाइत छथि, तथापि ओ अनंग, बिना शरीरक भैयोक' जिन्दा रहैत छथि।[1]'' की, ई बात दिवाकरजीक सोचक समर्थन नहि करैत अछि? तैँ उक्त सम्बन्धमे कोनो प्रश्नचिह्न ठाढ़ करब निरर्थक होएत।

प्रस्तुत नाटकमे नट, नटी, अनुचर तथा गीतक प्रयोग प्राचीन संस्कृत नाटकक स्मरण करबैत अछि। किएक तँ जहिना प्राचीन संस्कृत नाटकमे नाटकक स्थापना सूत्रधार आ नटी करैत अछि। ओहिना एहि नाटकमे नट आ नटी करैत अछि। संगहि दुनू पण्डितसँ अनुचर ओहिना चुटकी लैत अछि जहिना विदुषक प्राचीन संस्कृत नाटकमे लैत रहैत छैक।

हमरालोकनिकेँ एकटा बात बुझले अछि जे नाटकमे नाट्य भाषाक महत्वपूर्ण स्थान छैक। ई भाषा प्रेक्षककेँ अपना दिस आकृष्ट करैत रहैत छैक। जेनाकि सोहाग रातिमे विद्योत्तमा कलुआक हाथ पकड़िक' अपना लग बैसा लैत अछि। एहिठाम विरोधाभासक स्थिति उत्पन्न होइत छैक। एक दिस विद्योत्तमा उमंगसँ उमड़ल रहैत अछि तँ दोसर दिस कलुआ अपन आर्थिक आ सामाजिक स्थितिकेँ देखैत ओहिना सकुचा जाइत अछि जहिना लजबिज्जीक पात घोकचि जाइछ। फेर आगाँ स्थिति बदलैत छैक। विद्योत्तमाकेँ जखन वस्तु-स्थितिक पता चलैत छैक तँ ओकर सभ उमंग झहरि जाइत छैक। ओ नागिन जकाँ क्रुद्ध भ' जाइत अछि आ अनाप-सनाप कलुआकेँ कह' लगैत छैक। एकरा ओ सहैत रहैत अछि, मुदा एकर बाद ओकर पौरुष

1. पं. जवाहरलाल नेहरू : हिन्दुस्तान की खोज (अनुवाद), पृष्ठ 116

जगैत छैक। ओ कोबर कक्षसँ पाएर पटकैत विदा भ' जाइत अछि। विद्योत्तमाक इएह दुत्कार कलुआकेँ कालिदास बना दैत छैक। एहि तरहे देखल जाए तँ ई नाटक संवाद मात्रक संकलन नहि भ' क' अपन नाट्य भाषासँ युक्त अछि।

नाटकक सम्बन्धमे कहल गेलैए जे ई सार्ववर्णिक वेद अछि। सार्ववर्णिकक तात्पर्य एहिठाम जाति आ वर्गसँ रहितहु एकटा पेंच एहिमे घुसिया जाइत अछि, आ ओ पेंच अछि प्रेक्षक तथा दर्शक। एहिमे प्रेक्षक ओ होइत अछि जे नाटकक शुरूसँ ल' क' अन्त धरि ओकर मर्मसँ अपनाकेँ जोड़ने रहैत अछि, मुदा ठीक एकर विपरीत दर्शक ओ होइत अछि जे उपर-झापड़ देखलक आ चलि देलक। ई नाटकक मर्म धरि नहि पहुँचैत अछि। यथा, राजा सलहेश लोकनाट्यक प्रेक्षक निरक्षर आ अखरकट्टू होइत अछि। ई साधारणतया निम्न वर्गसँ अबैत अछि। ई सभ भरि-भरि राति एहि लोकनाट्यक रसमे अपनाकेँ डुबौने रहैत अछि। ओहीठाम प्रबुद्ध लोक एक तँ ई लोकनाट्य देख' नहि जाइत अछि आ जएबो कएल तँ उपर-झापड़ देखिक' उपहास करैत चल जाएत। एहिना जँ संसारक महान् नाटककार सैमुएल बैकेटक प्रसिद्ध नाटक 'वेटिंग फॉर गोदो'क प्रदर्शन कोनो ग्रामीण मंचपर कएल जाए तँ हमरा नइँ लगैए जे एकर केओ प्रेक्षक बनि सकत। ई तँ आयु, शिक्षा, पेशा, रूचि आदिपर निर्भर करैत छैक।

प्रस्तुत नाटककेँ प्रबुद्ध वर्ग हाथो-हाथ लेत से हमर दृढ़ विश्वास अछि। किएक तँ सिंहलक युवराजसँ कालिदासक मैत्री सम्बन्ध, कामसेनासँ सम्पर्क, फेर हिनक मृत्यु आदिक बारेमे हमरा जनैत बहुत गोटे नहि जनैत होएताह जकरा ई नाटक प्रकाशमे अनलक अछि। एतबए नहि, जाहि ढंगसँ एकर घटनाक्रम चलैत अछि, ओ सहजहिं पाठक, दर्शक तथा प्रेक्षकक मोनमे उत्सुकता उत्पन्न क' दैत छैक। आओर एही उत्सुकताक चलते पाठक एकर मंचन देख' चाहत तथा दर्शक प्रेक्षक बनि जाएत ताहिमे हमरा सन्देह नहि अछि।

आब सभ किछुकेँ देखैत हम एतबए कहब जे ई एकटा पूर्ण सफल नाटक अछि।

महेन्द्र मलंगिया

(महेन्द्र मलंगिया)

किछु आखर

मन्द: कवियश: प्रार्थी गमिष्याम्युपहास्यताम्।
प्रांशुलभ्ये फले लोभादुद्बाहुरिव वामन:।।

रघुवंशम् (1/3)

महाकवि कालिदासक वचन उद्धृत करैत हम कहि सकैत छी जे महाकवि कालिदास सन विराट् व्यक्तित्वपर एहि अकिंचनक किछु लिखबाक साहस ओहिना अछि जेना ऊँचगर डारिपर लागल फल तोड़बाक लेल कोनो बाओनवीर अपन छोट-छोट हाथ उठा अपन उपहास करा रहल हो। मुदा की करी, महाकविक जीवन यात्रापर मातृवाणी मैथिलीमे महाकविक मैथिलत्व विषयक कोनो पोथी नहि देखि हम ई दुस्साहस करबाक लेल विवश छी। विश्वक प्राय: सब महत्त्वपूर्ण भाषामे महाकवि कालिदास विषयक सामग्री अछि। मैथिलीमे सेहो अछि मुदा पोथी रूपमे कदाचित् ई प्रथमे पुष्प अछि जाहि संग हम महाकवि कालिदासक अभ्यर्थनामे उपस्थित भेल छी।

महाकविक रचना रस केर पीयूष वर्षासँ आप्लावित भारतवर्षक बहुत क्षेत्र हुनक जन्मस्थानक दावी कयने अछि। मिथिलाक अपन दावी सेहो अछि। एकरे मूल्यांकन एहिमे भेल अछि। महाकविक जीवनयात्रा रोमांचकारी अछि। जन्मस्थल मिथिला, कर्मस्थल पाटलिपुत्र आ उज्जैन एवं महाप्रयाण स्थल श्रीलंकाक मातरा! एहि मध्य अनेकश: अनुश्रुति, जनश्रुति, दंतकथा, किंवदन्ती, प्रवाद, रहस्य आ किन्तु-परन्तु केर सागरमे भुतिआयल महाकविक जीवनवृत्तसँ तथ्य केर अमृत आनब अत्यन्त दुष्कर काज अछि। प्रत्येक क्षेत्रक प्रातिभ महाकविकेँ अपन प्रमाणित करबामे अपन प्रतिभा आ वैदुष्यक सर्वश्रेष्ठ उपयोग कयने छथि। एहन स्थितिमे हुनकर मान्यताक काट करबाक लेल ओहि डरीर सभसँ पैघ डरीर उकेरब आवश्यक। हम एहि विषयक विवादक क्षीरसागर मथि महाकविक मैथिलत्व केर नवनीत लऽ अपने सभक समक्ष उपस्थित भेल छी। एहि पोथीक प्रत्येक पाँतीक मूलस्वर महाकविक मैथिलत्वे अछि।

विनम्र निवेदन जे एकर मूल्यांकनमे महाकवि कालिदासकेँ 'पूरब केर शेक्सपीयर' कहि अपन उपहास करओनिहार आंग्ल दृष्टिकोण नहि राखल जाय। शेक्सपीयर महान् लेखक अवश्य छथि मुदा जँ महाकविसँ तुलना करब तखन पासँगसँ विशेष नहि मानऽ पड़त। ओना एहन कोनो तुलना अशोभनीय अछि। भाषाक अपन सीमा, सम्प्रेषण केर पृथक् मानदण्ड आ देश-काल-परिस्थितिक पार्थक्यक कारणेँ एहन तुलना उचित नहि। किछु कठपिंगल आंग्ल विद्वान् सभसँ प्रभावित विशेष रूपसँ मैकाले केर विषबीजसँ प्रस्फुटित आ अनुप्राणित लोक अपन उत्कृष्ट आ विलक्षणो वस्तुकेँ साधारण वा हेय मानैत छथि। ओ तखने एकरा श्रेष्ठ मानताह जखन कोनो मैक्समूलर वा कोनो विलियम, कोनो राबर्ट, जोन्स प्रभृति आंग्ल नामधारी ओकरा श्रेष्ठ कहत। एहन हाहाकारी आत्महीनताकेँ तिलांजलि देबऽ पड़त। ई साँच जे जहिना आत्महीनता अनर्थकारी अछि तहिना आत्ममुग्धता सेहो अनिष्टकारी अछि। एहि अनिष्टकारी आत्ममुग्धतासँ सेहो पिण्ड छोड़बए पड़त। सन्तुलित दृष्टि राखब उचित। अपनाकेँ आधुनिक वा फैशनेबुल देखएबाक फेरमे अपन भाषा, परम्परा, संस्कृति आदिसँ कटि रहल समस्त भारतीयकेँ एहि कटु सत्यपर अवश्य चिन्तन करबाक चाही। भारतीय भाषामे सेहो श्रेष्ठ काज संभव अछि आ भऽ रहल अछि, एहिपर विश्वास करए पड़त।

एहि पोथीक तैयारीमे हमरा अन्तसमे एक भारी द्वन्द्व केर स्थिति रहय, एक शोधप्रज्ञ आ एक साहित्यकार मध्य केर द्वन्द्व। कखनो शोधप्रज्ञ साहित्यकारकेँ बजारि दैत छल तऽ कखनो साहित्यकार शोधप्रज्ञकेँ पछारि दैत छल। एहि द्वन्द्वसँ एक लाभ अवश्य भेल जे नीरस शोधमे रम्यता आओल आ नाटक केर संवादमे शोध सम्बलित सत्य। शोध आ सृजन सर्वथा दू पृथक् विधा थिक आ हम एहिमे दुनूक मध्य कतेक सामंजस्य राखि सकलहुँ एकर आकलन करबाक भार सुधी विद्वान् सभपर छोड़ैत छी।

एहि पोथीक रचना करैत काल महाकवि कालिदासक सृजन प्रक्रियासँ हमर साक्षात्कार भेल, एहन दावी नहि कएल जा सकैछ मुदा, प्रस्तुत नाटक केर छठम दृश्यमे जखन महाकवि कामसेनाक समक्ष सूर्यास्त कालक दृश्य केर शब्द चित्र सभ प्रस्तुत करैत छथि आ भोरमे कामसेनाकेँ सुनएलाक बाद जे बिम्ब हुनका सभसँ बेसी नीक लागत ओहिमे अपन मनोलयसँ अपेक्षित उन्नयन करैत अपन रचनामे सम्मिलित करबाक बात कहैत छथि, तखन एहिसँ महाकविक सृजन प्रक्रिया विषयक एक अनुमान अवश्य कएल जा सकैछ।

नाटकक एहि पोथीक एक-एक आखर केर मूल स्वर महाकविक मैथिलत्वक उद्घोष अछि। एहि पोथीक गणना नाट्यविधा अन्तर्गत होएत। ई कहैत

हमरा कनियो दुविधा नहि अछि जे कोनो एक नाटकक लेल एतेक श्रमसाध्य शोध कहियो भेल होएत! कदाचित् मैथिली नाट्यविधाक विस्तृत शोधाश्रित ई प्रथमे नाटक हो! महाकविक माटरामे महाप्रयाणपर आधारित एहि नाटक केर तीन प्रस्तुति भेल अछि। प्रथम मंचन उच्चैठ-कालिदास महोत्सव, 2019मे श्री बमबमजीक निर्देशनमे भेल आ दोसर-तेसर मंचन राज्य स्तरीय युवा समारोह, 2020मे सेहो श्री इन्द्रभूषण रमण बमबमजीक निर्देशनमे भऽ चुकल अछि।

सुप्रसिद्ध रंगकार श्री महेन्द्र मलंगिया प्रस्तुत नाटक विषयक अपन सकारात्मक सुझाओसँ अनुगृहीत कयलनि। तदनुसार नाटकमे परिमार्जन कयलहुँ। एहि पोथीक भूमिका लिखबाक कृपा मलंगियाजी कयलनि एतदर्थ हुनका प्रति आभार प्रकट करैत छी।

मिथिलामे संस्कृतक सभसँ पैघ पाग पं. शशिनाथ झा, कुलपति, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा अपन शुभकामना संदेशसँ हमर मान बढ़ओलनि एहि लेल हुनका प्रति आदर सहित श्रद्धा निवेदित करैत छी।

मैथिली-हिन्दीक सुप्रसिद्ध हस्ताक्षर डॉ. नरेश कुमार विकलजी अत्यन्त नेहपूर्वक समस्तीपुर जिला स्थापना दिवसपर 14 नवम्बर 2009कैँ प्रकाशित स्मारिका 'उत्कर्ष'मे छपल अपन आलेख केर प्रति पठओलनि। ओ मिथिलामे महाकवि पोद्दार रामावतार अरुणक निर्देशनमे शिवरात्रि 10 मार्च 1956 ई.कैँ प्रथम-प्रथम समस्तीपुरक पटेल मैदानमे आयोजित अखिल भारतीय महाकवि कालिदास समारोह विषयक जानकारी देलनि। एहि महोत्सवमे पं. अरुणजीक प्रबंध काव्य 'कालिदास' केर विमोचन सेहो भेल छल। विकलजी अरुणजीक आत्मकथ्यात्मक उपन्यास 'कालिदास की आत्मकथा' विषयक जानकारी सेहो देलनि। उल्लेखनीय अछि जे एहि आयोजन केर अकल्पनीय सफलतासँ अभिभूत महान् सारस्वत व्यक्तित्व पं. सूर्य नारायण व्यास केर सत्प्रयाससँ उज्जैनमे सेहो महाकवि कालिदास समारोह 1958 ई.मे आरम्भ भेल जेकर उद्घाटन महामहिम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद कएने छलाह। ओना पद्मभूषण पं. सूर्य नारायण व्यास अपना स्तरसँ महोत्सव केर आयोजन पहिनेसँ करैत छलाह। पं. व्यासजी समस्तीपुरक कालिदास महोत्सवमे स्वयं नहि आबि सकल छलाह मुदा एहि समारोह लेल हुनकर शुभकामना संदेश अवश्य आएल छल। एहि महोत्सवमे राजा बहादुर विश्वेश्वर सिंह (दरभंगा राज), दीवान बहादुर कामेश्वर नारायण सिंह (नरहन स्टेट), श्रीधर वासुदेव सोहोनी (आयुक्त), बिहार विधान सभाक पूर्व माननीय अध्यक्ष पं. हरिनाथ मिश्र, सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं पूर्व प्राचार्य प्रो. पं. जगन्नाथ प्रसाद मिश्र प्रभृति मनीषी सभक उपस्थिति छल। उत्तर प्रदेशक तत्कालीन महामहिम राज्यपाल आ सुविख्यात

साहित्यकार पं. कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी (के एम मुंशी) एहि महोत्सव केर उद्घाटन कयने छलाह। बिहार सरकारक तत्कालीन माननीय सूचना मंत्री श्री महेश प्रसाद सिंह एहि महोत्सव केर स्वागताध्यक्ष छलाह। वृहत्तर पटेल मैदान दर्शक आ श्रोता सभसँ पूरा भरि गेल छल। 1956 ई.क एहि भव्य कालिदास महोत्सवसँ स्पष्ट अछि जे महाकवि कालिदास विषयक आयोजनमे मिथिला मध्य प्रदेशसँ दू डेग आगू अवश्य अछि। बिहार सरकार द्वारा राजकीय महोत्सव रूपमे वर्ष 2019सँ उच्चैठ कालिदास महोत्सव सेहो आरम्भ भेल अछि।

समस्तीपुर गजेटियर प्रकाशन कालसँ विकलजीक सहयोग आ आशीर्वाद भेटैत रहल अछि। विकलजीक सारस्वत सहयोगक लेल आभार प्रकट करैत छी। ठाम-ठाम संस्कृतक क्लिष्ट पदमे ओझरा गेलापर अपन दिशा-निर्देश आ आलोकसँ दुर्गम मार्गकेँ सुगम कयनिहार डॉ. रामचन्द्र ठाकुर, पूर्व विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी विभागक प्रति अपन कृतज्ञता ज्ञापित करैत छी।

एहि पोथीक मुखपृष्ठ श्री मिथिलेश कुमार, भा.प्र.से. (से.नि.) तैयार कयने छथि। महाकविक महाप्रयाण विषयक एहन प्राणवन्त आ मनभावन चित्रक लेल आदरणीय मिथिलेशजीक प्रति प्रणाम निवेदित करैत छी। एहि चित्रकेँ अपन पोथीक मुखपृष्ठपर स्थान दैत हम आनन्दक अनुभव करैत छी, प्रमुदित छी। अनेकश: साधुवाद श्रीमन्!

अपन सुझाओ विशेष रूपसँ उज्जैन विषयक अनुभवसँ मनोबल बढ़ओनिहार चेन्नईवासी मैथिल श्री ईश्वर करुणजीक प्रति विशेष स्नेहयुक्त आभार प्रकट करैत छी।

हम ओहि समस्त महानुभावक प्रति अपन आभार प्रकट करैत छियनि जिनकर कोनो तरहक सामग्री (प्रकाशित-अप्रकाशित, ऑनलाइन वा ऑफलाइन) केर उपयोग कयलहुँ। पासपोर्ट आदि तैयारीक बादो हमर माटरा भ्रमणक योजना कोरोना प्रकोपसँ फलीभूत नहि भऽ सकल एकर कचोट अछि। महाकविक चितास्थलीपर किछु निर्माण वा दू पुष्प अर्पित करबाक सेहन्ता पता नहि कहिया आ कोना पूर होयत!

कोनो प्रकारक अशुद्धि आ कोनो तरहक त्रुटि सभक लेल सुधी पाठकगणसँ क्षमायाचना करैत छी।

एहि पोथीक रचना कालमे गृहकार्यक जंजाल सभकेँ स्वयं सम्हारि एहि सभसँ हमरा मुक्त राखि सहधर्मिणी श्रीमती रेखा चौधरी महाकविक वन्दना लेल जे एकान्त समय उपलब्ध करओलनि ओ हमरा आ एहि पोथीक लेल सरिपहुँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि।

बिहारक एकमात्र दाण्डी यात्री 'मैथिल गाँधी' गिरिवरधारी चौधरी (कारो बाबू)क यशस्वी भातिज आ अनेक पोथी सभक रचयिता ऋषितुल्य रमापति चौधरीक कर्मनिष्ठ सुपुत्र अवकाशप्राप्त अपर सचिव श्री श्यामानन्द चौधरी (मोहनजी) अपन सुझाओसँ एहि पोथीक श्रीवृद्धिमे अमूल्य योगदान देलनि। हुनका सादर प्रणाम करैत छी।

अल्प समयमे राति-राति भरि हमरा संगे जागरण करैत श्री दीप नारायणजी एकर प्रकाशन ससमय आ एतेक सुन्दर ढंगसँ कयलनि एहि लेल श्री दीप नारायणकेँ हृदयसँ धन्यवाद दैत छी आ हुनक समस्त सपना, आशा वा इच्छा साकार होइत हुनक सहचरी बनए से आशीर्वाद दैत छियनि।

स्मृतिशेष पिता जगन्नाथ चौधरीक पुण्य पर्व (24 अप्रैल)पर हमसभ समारोहपूर्वक 'सद्गृहस्थ सन्त जगन्नाथ चौधरी सम्मान' मिथिला-मैथिलीसँ संबंधित स्तरीय शोधपर एक शोध विद्वान् केँ दैत छी। अखन धरि ई सम्मान सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. नरेश कुमार विकल (2018) आ सुधी शोध विद्वान् श्री भैरव लाल दास (2019)केँ प्रदान कयल गेल छनि। 2020मे ई सम्मान लोक चेतनाक पुरोधा डॉ. महेन्द्र नारायण रामकेँ देबाक नेयार छल मुदा कोरोनाक कारणेँ कार्यक्रम संभव नहि भेल। एहि बेर ई सम्मान हुनका देल जा रहल अछि।

महाकवि कालिदासपर रचित एहि पोथी विषयक कोनो सुझाओ वा प्रतिक्रिया केर स्वागत करब।

एक बेर फेर महाकवि कालिदासक स्मृति केर वन्दना करैत छी।

विदुषां वशंवद

रंगनाथ दिवाकर

(रंगनाथ दिवाकर)

'जय-राम', सुलतानपुर

सद्गृहस्थ सन्त जगन्नाथ चौधरी महाप्रयाण दिवस

24 अप्रैल 2022

महाकवि कालिदास
आ हुनक मैथिलत्व

महाकवि कालिदासक समय एवं जन्मस्थान

महाकवि कालिदासक कीर्त्तिकलश अक्षय अमृत बनि भारतवर्षे नहि अपितु सम्पूर्ण संसारक साहित्यकेँ अमरत्व देलक। सहस्राधिक वर्षसँ अखनो पाठककेँ निरभ्र करैत हुनकर रचना जनमानसकेँ अपन कमनीय भाव केर गंगा, लालित्यक मसृण यमुना आ सरस सरस्वतीक त्रिवेणीमे निमज्जित करा निरभ्र करैत चरम आनन्द केर अनुभूति करा रहल अछि। एहि 'न भूतो न भविष्यति' महाकवि केर वर्णन एतेक सरस आ सूक्ष्म अछि जे सब पाठककेँ ओ ओकर अपने वर्णन लगैत अछि। यैह कारण अछि जे बहुत क्षेत्रक विद्वान् हुनका अपने क्षेत्रमे उद्भूत मानैत छथि। महाकवि अपन जन्मस्थानक कतहु चर्च नहि कयने छथि तथापि बेसी क्षेत्र हुनका अपन कहैत अछि। सभक अपन-अपन दावी छैक। महाकविक जीवन हुनक कालेमे जनश्रुति, किम्वदन्ती आ दन्तकथा सभक केन्द्र-विन्दु बनि गेल छल जे अखनो धरि फरिछायल नहि अछि। इतिहाससँ एहन कोनो शिलालेख वा अभिलेख अखन धरि नहि अभरल अछि जे निर्णायक रूपसँ ई उद्घोष कऽ सकय जे महाकवि अमुक क्षेत्रक वासी वा अमुक समयमे भेल छलाह। पुलकेशिन् द्वितीय केर ऐहोल अभिलेखमे रविकीर्त्तिक तुलना साहित्य जगत् मे सुप्रतिष्ठित महाकवि कालिदास आ भारविसँ कयल गेल अछि—

जिनेवेश्म स विजयतां रविकीर्त्तिः
कविताश्रित कालिदास भारवि कीर्त्तिः।

ई अभिलेख कर्णाटक केर बीजापुर जिलाक ऐहोलमे बादामी चालुक्य शासक पुलकेशिन् द्वितीय द्वारा 634 ई.मे लगाओल गेल छल। एहिना हर्षवर्द्धन (606-647 ई.) कालीन बाणभट्टक हर्षचरित् केर प्रस्तावनामे व्यक्त उद्गार—

निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु।
प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मंजरीष्विव जायते।

कैं महाकवि कालिदासक प्राचीनतम प्रशस्ति मानल जाइत अछि।

(कलानाथ शास्त्री : कालिदास और उनका युग, संपादक— गोविन्द चन्द्र पाण्डेय, पृ. 35)

स्पष्ट अछि जे महाकविकेँ सातम शताब्दीक पूर्वार्द्ध बाद राखल नहि जा सकैत अछि। आब ई इतिहास सिद्ध अछि जे मौर्य सम्राट् वृहद्रथकेँ सेनापति पुष्यमित्र शुंग ईसापूर्व 185 ई.मे हत्या करैत शुंग राजवंशक स्थापना कयने छलाह। ईसापूर्व 149 ई.मे हिनकर मृत्युक बाद पुत्र अग्निमित्र राजा भेल छलाह। यैह अग्निमित्र महाकवि कालिदासक मालविकाग्निमित्रम् केर नायक छथि। स्पष्ट अछि जे एहिसँ पूर्व महाकविक समय नहि भऽ सकैछ। महाकवि रचित मालविकाग्निमित्रम् आ विक्रमादित्यक अस्तित्वक आधारपर एफ बी कावेल (बुद्धचरित् , परिचय, ऑक्सफोर्ड, 1893, पृ.10), एस आर राय (अभिज्ञान शाकुन्तलम् आफ कालिदास, परिचय, कलकत्ता, 1922, पृ. 27), डी सी सरकार (इंडियन हिस्टोरिकल क्वार्टरली, ज़िल्द 1, पृ.309-16), प्रो. क्षेत्रेश चन्द्र चट्टोपाध्याय (द डेट आफ कालिदास, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी स्टडीज, 1926, पृ. 84 व आगाॅ), हरि नारायण दुबे (कालिदास और उनका युग, संपादक— गोविन्द चन्द्र पाण्डेय, राका प्रकाशन, इलाहाबाद, 1998, पृ. 7-20), डा. भगवती लाल राजपुरोहित (कालिदास का वागर्थ, कालिदास अकादेमी, उज्जैन, 1956, पृ. 67-76) प्रभृति विद्वान् कालिदासक समय ईसापूर्व प्रथम आ दोसर शताब्दी मानैत छथि। डा. राजबली पाण्डेय अपन ग्रंथ विक्रमादित्य ऑफ उज्जयिनी (पृ. 204-209)मे विक्रमादित्यक कालिदास सहित सब नवरत्नक समय ईसापूर्व प्रथम शताब्दी मानैत छथि। डा. प्रभुदयाल अग्निहोत्री (महाकवि कालिदास, प्रथम संस्करण, 1998, दिल्ली, पृष्ठ 8) महाकवि कालिदासक समय ईसापूर्व दोसर शताब्दी मानैत छथि। बेसी इतिहासकार महाकविकेँ गुप्तकालीन मानैत छथि। एहिमे वी ए स्मिथ (अर्ली हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, पाद टिप्पणी, पृ. 304), बसाक (जर्नल आफ रायल एशियाटिक सोसाइटी, 1903, पृ 183 आ 1904 केर पृ.158), भगवत शरण उपाध्याय (कालिदास का भारत,दिल्ली, 2005, पृष्ठ 481), वासुदेव शरण अग्रवाल (कालिदास, 1958, पृष्ठ 53-57) प्रभृति मनीषी प्रमुख छथि। पंडित लक्ष्मण झा (महाकवि कालिदास, कहाँ और कब ?, पृष्ठ 178) महाकवि

कालिदासक समय 510-590 ई. मानैत छथि। कृष्णानन्द (कालिदास बिहार के थे, पृ. 36-44 आ पृ. 74-77) कालिदासक समय 360 ई.सँ 440-45 ई. अनुमान करैत छथि। के एस रामास्वामी (कालिदास, भाग 1, पृष्ठ 42) हिनका समुद्रगुप्तक सभाकवि कहैत छथि।

ए वी कीथ (संस्कृत साहित्यक इतिहास, पृष्ठ 80) महाकविक समय तेसर शताब्दी मानैत छथि। डी भी केतकर रघुवंशम् केर श्लोक 16/44क आधारपर महाकविक समय 280 ई. निश्चित करैत छथि। रामचन्द्र तिवारी (कालिदास और उनका युग, संपादक गोविन्द चन्द्र पाण्डेय, पृष्ठ 133-43) स्कन्दगुप्त द्वारा 455 ई.मे हूण सभक पराजयसँ महाकविक अनभिज्ञता आ बहराम गौड़ पंचमक 438 ई.मे मृत्युक आधारपर महाकविक समय 370-450 ई. मानैत छथि। परमार राजा भोज (999-1054 ई.) आ कालिदास विषयक किम्वदन्ती सेहो प्रसिद्ध अछि। ईसापूर्व दोसर शताब्दीसँ 11म शताब्दी अर्थात् एक हजार तीन सय वर्षक समय महाकविकेँ विद्वान् सभ देलनि। एहिसँ पैघ आर की भऽ सकैत अछि? कहबाक अभिप्राय मात्र एतबे जे महाकविक समय विवादग्रस्त अछि।

कालिदासक समयपर विभिन्न विद्वान् सभक मान्यताक समीक्षा करबाक क्रममे किछु बात ध्यानमे राखब उचित अछि जेना महाकवि द्वारा हूण वर्णन, बौद्ध प्रातिभ दिग्नागक चर्च, भारत आ श्रीलंकामे प्रचलित अनुश्रुति आ दुनू देशक इतिहास आदि।

कालिदास विषयक ईसा पूर्वक मत तऽ हूण सभक कालिदासक रघुवंशम् मे वर्णनसँ समाप्त भऽ जाइत अछि। कारण हूण सभक भारतवर्षमे स्पष्ट उल्लेख ईसापूर्व कतहु नहि भेल अछि। हूण सभक वर्णन आगू करब। शुंग राजवंशक तीन पीढ़ीक मालविकाग्निमित्रम् मे उल्लेख मात्र केर आधारपर ईसा पूर्वक मत मानल नहि जा सकैत अछि। मौर्य सम्राट् वृहद्रथकेँ सैन्य निरीक्षण करैत काल सेनापति पुष्यमित्र द्वारा हत्या आ राज्यारोहण ईसापूर्व 185-184 ई.मे भेल छल। कालिदास विषयक ईसापूर्व मत मानलापर पतंजलिकेँ कालिदासक समसामयिक मानऽ पड़त जे संभव नहि अछि। महाभाष्यमे पतंजलि कहैत छथि— *इह पुष्यमित्रं याजयामः*। एहिसँ स्पष्ट अछि जे पतंजलि पुष्यमित्र (राज्यकाल 36 वर्ष अर्थात् ईसापूर्व 148 ई.)क समकालीन छथि। पतंजलि कालिदासक कतहु चर्च नहि करैत छथि। हुनक दू अश्वमेध यज्ञमेसँ कोनोमे हुनक उपस्थितिक चर्च नहि अछि। जँ कालिदास हुनकर वा पुष्यमित्रक समकालीन रहितथि तखन एहन चर्च अवश्य भेल रहैत। पतंजलिक प्रभाव कालिदासपर छल एहिमे सन्देह नहि तेँ ई मत मान्य नहि भऽ सकैत अछि।

जयशंकर त्रिपाठी रघुवंशम् केर रचना कालपर विचार करैत (कालिदास और उनका युग, संपादक— गोविन्द चन्द्र पाण्डेय, पृष्ठ 61-71) महाकविक समय 5म शताब्दीक अंत आ छठम शतीक आरम्भ निर्धारित कयने छथि। हुनकर मान्यता अछि जे छठम शताब्दीक आरम्भिक दू दशकमे रघुवंशम्, मेघदूतम्, कुमारसंभवम् आ ऋतुसंहारक रचना महाकवि कयलनि। रघुवंशम् मे कुश कुशावतीसँ अयोध्या मार्गमे पश्चिमवाहिनी गंगा पार कयलनि—

तीर्थे तदीये गजसेतुबन्धात् प्रतीपगामुत्तरतोऽस्य गंङ्गाम्।
अयत्नबालव्यजनीबभूवुर्हंसा नभोलङ्घनलोलपक्षाः।।

(रघुवंशम् 16/33)

तेसर शताब्दीमे भारशिव सभक कालमे एतऽ तमसा नदी बहैत छलीह। भारशिव सभ एतहि कुषाण सभकेँ परास्त कऽ कान्तिपुरी राजधानी (वर्तमान कन्तित) बसओने छलाह। भारशिव सभक समय एतऽ पश्चिमवाहिनी गंगा नहि छलीह आर ई स्थान गंगा नदीक दहिना कात छल आब बामा कात अछि। तेसर शताब्दीक बाद गंगाक धारमे भारी परिवर्तन भेल आ गंगा नदी पश्चिम दिशामे बढ़ि चुकल तमसा नदीक धारामे बहऽ लगलीह आ गंगाक एहि पश्चिमवाहिनी धाराकेँ पार कऽ कुश कुशावतीसँ अयोध्या अयलथि।

ज्योतिर्विदाभरण नामक ज्योतिष ग्रंथक रचयिताक रूपमे सेहो कालिदासक चर्च होइत अछि। एहि दीर्घकाय ग्रंथमे उल्लिखित अछि—

श्रीविक्रमार्कनृपसंसदिमान्यबुद्धिस्तैरप्यहं नृपसखा किल कालिदासः।
काव्यत्रयं सुमतिकृद्रघुवंशपूर्वं पूर्वं ततो ननु कियच्छ्रुतिकर्मवादः।
ज्योतिर्विदाभरणकालविधानशास्त्रं श्रीकालिदासकवितो हि ततो बभूव।।

(22/19-20)

वर्षैः सिन्धुरदर्शनाम्बरगुणैर्याते कलौ संमिते
मासे माधवसंज्ञिके च विहितो ग्रन्थक्रियोपक्रमः।
नानाकालविधानशास्त्रगदितज्ञानं विलोक्यादरादूर्जे
ग्रन्थसमाप्तिरत्र विहिता ज्योतिर्विदां प्रीतये।।

(22/21)

ग्रंथकार स्पष्ट रूपसँ स्वयंकेँ रघुकार कहैत छथि आ ग्रंथक रचना काल 3068 कलि संवत् कहैत छथि। कलि संवत् 3102 ई.मे शुरू भेल छल अर्थात् रचना काल 24 विक्रमाब्द वा ईसापूर्व प्रथम शताब्दी होयत। ग्रंथमे विक्रमादित्यक नओ टा नवरत्नक नाम अछि—

धन्वन्तरि: क्षपणकामरसिंहशंकुवेतालभट्टघटखर्परकालिदासा:।
ख्यातो वराहमिहिरो नृपते: सभायां रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य। (10)

एहि श्लोकमे वर्णित नवरत्न सभक समसामयिकता सभ दिन संदेहास्पद रहल अछि। यैह श्लोक कालिदास-विक्रमादित्य विषयक समस्याक जननी अछि। ज्योतिर्विदाभरण ग्रंथक प्राचीनता आ विश्वसनीयतापर विद्वान् सभकेँ सन्देह अछि। डा. गौरी शंकर हीराचन्द ओझा एकर विश्वसनीयताकेँ मनगढ़ंत कहैत छथि (प्राचीन लिपिमाला, पृष्ठ 169)। शंकर बालकृष्ण दीक्षित (भारतीय ज्योतिष शास्त्र, पृष्ठ 476) एहि ग्रंथक रचना काल शकाब्द 1164 अर्थात् 1242 ई. निर्धारित कयलनि।

जैनग्रंथ कालकाचार्यक कथानक केर अनुसार जैनाचार्य कालक केर बहिनक अपहरण उज्जैनक कामी नरेश गर्दभिल्ल कयने छल। जैनाचार्य कालक केर कहलापर शक सभ उज्जैनपर आक्रमण कऽ गर्दभिल्लकेँ कैद कयलनि मुदा किछु समय बाद गर्दभिल्लक पुत्र आ विक्रम संवत् (ईसापूर्व 58) प्रवर्तक विक्रमादित्य उज्जैनसँ शक सभकेँ परास्त कऽ भगा देलनि। कथासरित्सागर, वृहत्कथामंजरी, सातवाहन नरेश हाल (प्रथम शती) कृत गाहासप्तशती, मेरुतङ्गाचार्य कृत पद्यावली आदि इतिहासेतर ग्रंथमे एहि विक्रमादित्यक शक विजय आ दानशीलता आदिक उल्लेख अछि। एतऽ ई ध्यानमे राखब उचित अछि जे साहित्यिक ग्रंथ सभमे इतिहास पूर्णतामे सुरक्षित रहय ई सभ ठाम संभव नहि अछि, अत्यन्त विरल अछि। शुंग राजवंशक कोनो नरेश विक्रमादित्यक विरुद धारण कयलनि एकर कोनो प्रमाण इतिहास नहि दैत अछि। मात्र अश्वमेध यज्ञ कयलासँ जँ विक्रमादित्यक विरुद भेटबाक गप्प हो तखन पुरा कालक जनमेजयकेँ सेहो विक्रमादित्यक विरुद होयबाक चाही जे नहि अछि। सातवाहन राजा शातकर्णि दू अश्वमेध यज्ञ कयलनि (नागनिकाक नानाघाट गुहालेख, पंक्ति 11, भाग 2), वाकाटक राजा प्रवरसेन प्रथम, कदम्बराज मयूरशर्मा आदि अश्वमेध यज्ञ करओलनि मुदा हुनका सभकेँ विक्रमादित्यक विरुद धारण करबाक पता इतिहासमे नहि अछि। गुप्त नरेश

समुद्रगुप्तक अश्वमेध यज्ञसँ संबंधित सिक्का सब उपलब्ध अछि तथापि समुद्रगुप्तक विरुद विक्रमादित्य नहि अछि। चन्द्रगुप्त द्वितीयक विरुद विक्रमादित्य अवश्य भेटैत अछि। एहि आधारपर पुष्यमित्रकेँ अश्वमेध यज्ञ करबाक कारणेँ विक्रमादित्य मानि लेब सर्वथा अनुचित होयत। आधुनिक युगमे 18 अप्रैल 1734 ई.मे जयपुर नरेश सवाई मानसिंह सेहो विधि-विधानपूर्वक अश्वमेध यज्ञ कयने छलाह। हुनक विरुद विक्रमादित्य नहि अछि। कहबाक अभिप्राय मात्र एतबे जे अश्वमेध यज्ञ कयलासँ विक्रमादित्यक विरुद भेटैत हो ई सत्य नहि अछि।

जोगीमारा गुफामे ब्राह्मी लिपिमे अंकित ईसापूर्व केर श्लोक—

सुतनुका नाम देवलासिक्यो
तां कमयिथ बलुनसेये
देवदिणे नाम लुवदखे

केर आधारपर सुतनुका आ देवदत्तक प्रणयकथाकेँ विद्योत्तमा आ कालिदासक प्रणयकथासँ जोड़ैत हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमलाक संस्कृत विभागाध्यक्ष राजेन्द्र मिश्रजी (कालिदास और उनका युग, संपादक— गोविन्द चन्द्र पाण्डेय, पृष्ठ 88-112)क ओज आ विद्वत्तापूर्ण रमणीय प्रस्तुतिकेँ कठिन कल्पना कहब उचित अछि। शोध विद्वान् वरेण्य राजेन्द्र मिश्रजीक 'पैठ आ उपलब्धि'क प्रति श्रद्धावनत रहितो हम आलेख केर अन्तमे यथानिवेदित 'अन्तिम सत्य'केँ स्वीकार नहि कऽ सकैत छी।

मेघदूतम् (पूर्वमेघ,14)मे महाकवि प्रकारान्तरसँ बौद्ध दार्शनिक आ प्रमाण शास्त्रक उद्भट विद्वान् दिग्नागक उल्लेख करैत छथि—

स्थानादस्मात्सरसनिचुलादुत्पतोदङ्मुख:
खं दिङ्गनागानां पथि परिहरन्स्थूलहस्तावलेपनम्।

दिग्नागक प्रमाण समुच्चय केर चीनी भाषामे अनुवाद 557-569 ई. मध्य भेल छल। हिनक समय डा. सतीश चन्द्र विद्याभूषण 450-520 ई. मानैत छथि। पं. राहुल सांकृत्यायन हिनका 425 ई.मे विद्यमान मानैत छथि। एहिसँ स्पष्ट अछि जे महाकविकेँ पाँचम शताब्दीसँ पहिने नहि राखल जा सकैत अछि।

महाकविक कुमारसंभवम् केर आठम सर्गमे 'उमासुरतवर्णन'पर वात्स्यायनक कामसूत्रक स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होइत अछि। महाकविक रचना संसारसँ स्पष्ट होइत अछि जे महाकवि कामसूत्रक गम्भीर अध्ययन कयने छलाह। अभिज्ञान शाकुन्तलम् मे ऋषि कण्व द्वारा शकुन्तलाकेँ देल गेल उपदेश—

शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने
पत्युर्विप्रकृताऽपि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः।
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी
यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः।।4/18

पर कामसूत्रक एहि श्लोकक प्रभाव केर अनुमान कयल जाय—

श्वश्रु-श्वसुर परिचर्याः तत्पारतन्त्र्यमनुत्तरवादिता
भोगेष्वनुत्सेकः परिजने दाक्षिण्यम्
नायकापचारेषु किंचित्कलुषतानात्यर्थं निवेदन्।
(कामसूत्र, 236)

एहिना प्रथम स्पर्श वा समागमपर रोमांच आ आँगुरसँ घाम अयबाक प्रसंग दुनूमे समान अछि।

कन्यास्तु प्रथम समागमे स्विन्नांगुलिः नम्रमुखी च भवति। पुरुषस्तु रोमाञ्चितो भवति।

कालिदास रघुवंशम् मे अज-इन्दुमती विवाह आ कुमारसंभवम् मे एहने चित्र उकेरित कयने छथि—

आसीद्वरः कंटकितप्रकोष्ठः स्विन्नाङ्गुलिः संववृते कुमारी
(रघुवंशम्, 7/22)

रोमोद्गमः प्रादुरभूदुमायाः स्विन्नाङ्गुलिः पुङ्गवकेतुरासीत्
(कुमारसंभवम्, 7/77)।

विरक्त प्रेमीकेँ चिन्हबाक लेल वात्स्यायन केर शब्द—

मित्रकृत्यमपिदिश्य अन्यत्रशते
(कामसूत्र, 323)

आ कालिदासक शब्द— मित्रकृत्यमपदिश्य पार्श्वत: (रघु. 11/31)

एकदम समान अछि। कामसूत्रमे शातकर्णी राजाक उल्लेख—

कर्त्तर्य्या कुन्तल: शातकर्णि: शातवाहनो महादेवी मलयवती जघान्

(कामसूत्र, 149)

देखि काशी प्रसाद जायसवालक मत अछि जे शातकर्णीपर खारवेल ईसापूर्व 171 ई.मे आक्रमण कयने छल (Journal of the Bihar Research Society, संख्या 111, पृष्ठ 441-42)। मात्र एहि आधारपर कामसूत्रकेँ ईसापूर्व केर रचना नहि मानल जा सकैछ। संभव जे कामसूत्रक किछु छिट-फुट अंश पूर्वसँ उपलब्ध रहल हो मुदा एकरा सुव्यवस्थित कयनिहार वात्स्यायने प्रथम छथि जे गुप्तकालीन प्रातिभ छलाह। वात्स्यायन केर समय चारिम शताब्दी बहुलांश विद्वान् मानैत छथि। एहि अवधारणासँ सेहो कालिदासकेँ ईसापूर्व प्रथम-दोसर शताब्दीमे नहि राखल जा सकैछ। पुष्यमित्र शुंग वा अग्निमित्रक समय देशक स्थिति वा आम जनजीवन, सम्पन्नता, संसाधन आदि एहन नहि छल जे महाकविक रचनामे अभरल अछि। इहो महाकविकेँ शुंगकालीन नहि मानबाक संकेत करैत अछि।

उपर्युक्त तथ्य सभसँ स्पष्ट अछि जे महाकविकेँ ईसापूर्व प्रथम वा दोसर शताब्दीमे नहि राखल जा सकैछ।

महाकविकेँ गुप्तकालीन मानबाक बहुत आधार अछि आ प्राय: बेसी विद्वान् यैह मानैत छथि। महाकविक रचनामे गुप्तकालीन समाजक समृद्धि, संस्कृति, स्थिति, वैभव विलासक लालसा, उल्लास, कला-संगीत-सौन्दर्य प्रियता, साहित्यिक प्रगति, ज्ञान-विज्ञान-दर्शनादि केर उच्चता, संपन्नता, सामान्य शान्ति आदि अपन उदात्त रूपमे अभरल अछि एहिमे कोनो सन्देह नहि।

इहो मानल गेल अछि जे कालिदास गुप्त नरेश समुद्रगुप्त (335-375 ई.)क कुमार सचिव छलाह आ हुनके कहलापर समुद्रगुप्त कृष्ण चरितक रचना कयलनि—

तुंग ह्यमात्यपदमाप्तयश: प्रसिद्धं भुक्त्वा चिरं पितुरिहास्ति सुहृन्ममायम्।
सन्धौ च विग्रहकृतौ च महाधिकारी विज्ञ: कुमारसचिवो नृपतीति दक्ष:।।

काव्येन सोद्य रघुकार इति प्रसिद्धो य: कालिदास इति लब्धमहार्हनामा।
प्रामाण्यमाप्तवचनस्य च तस्य धर्म्ये ब्रह्मत्वमध्वरविधौ मम् सर्वदैव।।

चत्वार्यन्यानि काव्यानि व्यदधाच्च लघूनि सः।
प्राभायच्च मां कर्तुं कृष्णस्य चरितं शुभम्।।

(समुद्रगुप्त, कृष्ण चरित, 23-25)

मुदा एहि ग्रंथकेँ असंदिग्ध नहि मानल गेल अछि। इहो महत्त्वपूर्ण तथ्य अछि जे समुद्रगुप्तक प्रयाग प्रशस्ति, जे हरिषेण विरचित अछि, मे कतहु कालिदास वा कृष्ण चरितक चर्च नहि अछि। प्रयाग प्रशस्तिक श्लोक 16मे समुद्रगुप्तकेँ 'सूक्तमार्ग्गः कवि-मति-विभवोत्सारणं चापि काव्यं' कहल गेल अछि मुदा कृष्ण चरितक चर्च एहि प्रशस्तिमे नहि अछि जखन कि प्रशस्तिक लेल ई गौरवपूर्ण, उपयुक्त आ अपरिहार्य तथ्य भऽ सकैत छल। समुद्रगुप्तक एरण शिलालेख, गया ताम्रपत्र लेख, सिक्का वा मुद्रा लेखादिपर कतहु एहन वर्णन नहि अछि। स्पष्ट अछि जे बादमे कोनो कवि कालिदासक नामपर एकर रचना कयलनि। ई सत्य अछि जे समुद्रगुप्तक हरिषेण विरचित प्रयाग प्रशस्तिक सर्व्वदक्षिणापथ राजग्रहण मोक्षानुग्रह जनित प्रतापोन्मिश्र महाभाग्यस्य (20) आ कालिदासक ग्रहीतप्रतिमुक्तस्य स धर्मविजयी नृपः (रघुवंशम् 4/43) केर भाव एकहि अछि। हरिषेणक 'प्रत्यर्प्पणा' (प्रयाग प्रशस्ति, 26) आ कालिदासक ऊपर उल्लिखित 'प्रतिमुक्त'मे पर्याप्त भावसाम्य अछि एहिमे कोनो सन्देह नहि मुदा समुद्रगुप्तक कोन कथा कोनो गुप्त नरेशक कोनो शिलालेख, भित्ति लेख, ताम्र-पत्र लेख, प्रशस्ति वा मुद्रा लेखमे कालिदासक कतहु चर्च नहि अछि। महाकवि कालिदासो अपन रचनामे कोनो गुप्त नरेशक पूर्ण नामोल्लेख तक नहि कयने छथि। यथार्थमे कोनो शिलालेखमे महाकवि कालिदासक उल्लेख प्रथम बेर पुलकेशिन् द्वितीय केर ऐहोल अभिलेखमे भेल अछि जेकर लेखक रविकीर्त्तिकेँ कालिदास समान कीर्त्तिवान् कहल गेल अछि—

येनायोजि नवेश्म स्थिरमर्थविधौ विवेकिना
जिनेवेश्म स विजयतां रविकीर्त्तिः
कविताश्रित कालिदासभारवि कीर्त्तिः

ऐहोल अभिलेखक काल निम्न पद—

पंचाशत्मुकलौ कालेषट्सु पंचशती सु च।
समासु समतीतासु शकानामपि भूभुजाम॥

सँ शकाब्द 556 अर्थात् 634 ई. निश्चित होइत अछि। मन्दसौर शिलालेख (विक्रम संवत् 529 ई.) कार वत्सभट्टिक भाषा अत्यन्त काव्यात्मक आ प्रांजल अछि। मन्दसौर प्रशस्तिक ऋतु वर्णन आ कालिदासक ऋतुसंहारमे भावसाम्य अछि—

रामा-सनाथ-रचने दर-भास्करांशु-वह्नि-प्रताप-सुभगे जल-लीन-मीने
चन्द्रांशु-हर्म्यतल-चन्दन-तालवृन्त-हारोपभोग-रहिते-हिम-दग्ध-पद्मे।।

(मन्दसौर प्रशस्ति, 31)

शिशिरमे सूर्य रश्मिक उष्णता आनन्ददायी होइछ। माछ पानिक भीतर रहैछ। प्रिया प्रियसँ भेंट करैछ मुदा एहि कालमे रमणी चन्दनक खुशबू लगा आ चन्द्रहार पहिरने छतपर बैसि निरभ्र इजोरियाक आनन्द सर्दीक कारणेँ नहि लऽ सकैछ। एहि भावपर कालिदासक कविता देखल जाय—

न चन्दनं चन्द्रमरीचिशीतलं न हर्म्यपृष्ठं शरदिन्दुनिर्मलम्।
न वायवः सान्द्रतुषारशीतलाः जनस्य चित्तं रमयन्ति साम्प्रतम्।।

(ऋतुसंहार, 5/3)

चन्द्र किरण समान शीतल चन्दन आ शरत्-चन्द्रसँ सुशोभित छत बरफसँ शीतल पवन केर कारणेँ शिशिरमे आनन्ददायी नहि होइछ। भावसाम्यक बादो दुनू पद केर चारुता अलग अछि। आब मन्दसौर शिलालेखकार वत्सभट्टिक एहि पद केर भाव-साम्य देखल जाय—

चलत्पताकान्यबला-सनाथान्यत्यर्थशुक्लान्यधिकोन्नतानि ।
तडिल्लता-चित्र-सिताब्भ्र-कूटतुल्योपमानानि गृहाणि यत्र।।

कैलास-तुङ्ग-शिखर-प्रतिमानि चान्यान्याभान्ति दीर्घ-बलभीनि सवेदकानि।
गान्धर्व्व-शब्द-मुखरानि निविष्ट-चित्रकर्म्माणि लोल-कदली-वन शोभितानि।

(मन्दसौर शिलालेख 10-11)

विद्युत्वन्तं ललितवनिताः सेन्द्रचापं सचित्राः
सङ्गीताय प्रहतमुरजाः स्निग्धगम्भीरघोषम्।
अन्तस्तोयं मणिमयभुवस्तुङ्गमभ्रंलिहाग्राः
प्रासादास्त्वां तुलयितुमलं यत्र तैस्तैर्विशेषैः।।

(उत्तरमेघ 1)

पताकायुक्त गगनचुम्बी कैलास पर्वत सदृश अट्टालिका जेना कड़कैत बिजुरीसँ चमकि रहल हो, एहिमे ललना सब वास करैत छथि आ गन्धर्व सभक संगीत ध्वनिसँ पर्वत गूँजि रहल अछि। वत्सभट्टिक भाव कालिदासमे अछि। मेघकेँ संबोधित करैत यक्ष कहैत अछि— अलकापुरीक ऊँच अट्टालिका तोरे सदृश अछि मेघ। तोरामे बिजुरी छौ तऽ एहि भवनमे चमकैत नारी, तोरामे इन्द्रधनुष छौ तऽ एहिमे रंग-बिरंगक चित्र, तोरामे मृदु आ गंभीर गर्जन छौ तऽ एतऽ संगीत संग मृदंग बजैत अछि। तोँ नील जलधर छेँ तऽ एतऽ धरतीमे नीलम जड़ल छैक आ तोँ जँ ऊँच तऽ इहो अटारी गगनचुम्बी अछि।

भावसाम्यक एहन बहुत उदाहरण प्रस्तुत कयल जा सकैत अछि मुदा भावसाम्यक आधारपर किनकासँ के प्रभावित छथि एकर निर्णय स्पष्ट रूपसँ करब कठिन अवश्य अछि। एक दोसराकेँ बिनु देखने-सुनने मात्र कल्पनाक आश्रयसँ सेहो दू प्रातिभक सृजनमे समान भावचित्र वा बिम्ब विधान संभव अछि। हँ, समान भावचित्रमे चारुता एक छोट-छीन संकेत अवश्य भऽ सकैत अछि जे पहिलुक भावचित्र देखि दोसरमे परिष्कार करैत सौन्दर्यमे वृद्धि कयल गेल अछि वा नहि। तथापि प्रशस्तिकार वत्सभट्टि प्रभावित छथि कालिदाससँ वा कालिदास प्रभावित छथि वत्सभट्टिसँ ई कहब कठिन अछि। एहि आधारपर दुनू प्रातिभक पूर्वापौर्यक निर्णय करब दुष्कर अछि। चारुतामे महाकवि कालिदास वत्सभट्टिसँ अवश्य आगाँ छथि एहिमे सन्देह नहि। ई अलग बात जे कालिदास ग्रंथावलीक परिशिष्टकार कालिदासकेँ अश्वघोषक परवर्ती आ अनुकर्ता कहबाक 'दुस्साहस' कयनिहार वा 'दिवास्वप्न' देखनिहारकेँ 'अपन उपहास कराबयवला' आ 'काव्यरसमर्मज्ञक लेल अरुन्तुद' मानैत छथि।

(कालिदास ग्रंथावली, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, पृष्ठ 692)।

जखन अश्वघोष (कुषाण कालीन प्रथम शती)क लेल एहन स्थिति अछि तखन वत्सभट्टि (कुमारगुप्त प्रथम कालीन पाँचम शताब्दी) कतऽ रहताह? एतेक सुन्दर ग्रंथ प्रस्तुत कयनिहारक प्रति आदर भाव रखितो ई कहबामे कोनो संकोच नहि अछि जे ई अनुदार भाव उचित नहि थिक। एकटा छोट उदाहरण देब उचित। अश्वघोषक श्लोक—

काष्ठं हि मथनन् लभते हुताशं भूमिं खनन्विन्दति चापि तोयम्
निर्बन्धिन: किञ्चन् नास्त्यसाध्यं न्यायेन युक्तं च कृतं च सर्वम्

(बुद्धचरित्, 13/60)क भाव आ भासक प्रतिज्ञायौगन्धरायणमे एहि भावक श्लोक देखल जाय—

काष्ठादग्निर्जायते मथ्यमानाद्भूमिस्तोयं खन्यमाना ददाति।
सोत्साहानां नास्त्यसाध्यं नराणां मार्गारब्धा: सर्वयत्ना: फलंति।।

(1/18)।

आब एहि आधारपर कालिदास जाहि भासक प्रति मालविकाग्निमित्रम् मे श्रद्धा निवेदित करैत छथि हुनका अश्वघोषक अनुकर्ता की कहल जा सकैछ? किन्नहु नहि। भावसाम्य, प्रभाव, अनुवर्ती, अनुकरण आ नकलमे जे सूक्ष्म पार्थक्य अछि ओहिपर ध्यान राखब उचित अछि।

चन्द्रगुप्त द्वितीय (375-414 ई.)सँ दृढ़तापूर्वक कालिदासकेँ जोड़ल जाइत अछि। चन्द्रगुप्त द्वितीयक पुत्री प्रभावतीक विवाह वाकाटक नरेश रुद्रसेन द्वितीय (385-90 ई.) संग भेल छल। मात्र 30 वर्षक आयुमे हिनक मृत्यु भऽ गेल छल। असमय विधवा होयबाक कारणेँ प्रभावतीक राज आ पुत्रद्वय-दिवाकर सेन आ दामोदर सेनक लेल चन्द्रगुप्त द्वितीय द्वारा कालिदासकेँ संरक्षक आ आचार्य रूपमे वाकाटक पठाओल गेल छल। पैघ पुत्र दिवाकर सेन 13 वर्षक अल्पायुमे काल-कवलित भऽ गेल। दोसर पुत्र दामोदर सेन प्रवरसेन द्वितीय केर नामसँ राजगद्दी सुशोभित कयलनि। प्रवरसेन द्वितीय (410-40 ई.) सेतुबन्ध महाकाव्यक रचयिता छलाह। 16म शताब्दीक रामदास भूपति (ज्ञात काल 1592 ई.)क सेतुबन्ध टीका ग्रंथ रामसेतु प्रदीपमे कहल गेल अछि जे विक्रमादित्यक कहलापर कालिदास सेतुबन्ध काव्यक शोधन कयने छलाह—

धीराणां काव्यचर्चाचतुरिमविधये विक्रमादित्यवाचा
यं चक्रे कालिदास: कविकुमुदविधु: सेतुनामप्रबन्धम्।

इह तावन्महाराजप्रवरसेननिमित्तं महाराजधिराजविक्रमादित्येनाज्ञाप्तो
निखिलकविचक्रचूडामणिकालिदासमहाशय: सेतुबन्धं चिकीर्षु:।
यं चक्रे कालिदास: कविकुमुदविधु: सेतुनाम प्रबन्ध:।।

भोजक श्रृंगार प्रकाश (आठम प्रकाश)मे कालिदास आ विक्रमादित्यक मध्य कुन्तल नरेश विषयक वार्त्ता केर चर्च आयल अछि—

असकलहसितत्वात् क्षालितानीव कान्त्या मुकुलितनयनत्वाद् व्यक्तकर्णोत्पलानि।
पिबति मधुसुगन्धीन्याननानि प्रियाणां त्वयि विनिहितभार: कुन्तलानामधीश:।

कालिदासक कथनकेँ किंचित् परिवर्तित करैत विक्रमादित्यक उत्तर—

पिबतु मधुसुगन्धीन्याननानि प्रियाणां मयि विनिहितभार: कुन्तलानामधीश:।

भोजक सरस्वतीकण्ठाभरण आ कालिदासक कथित कुन्तलेश्वरदौत्यमे सेहो आयल अछि। कालिदास कुन्तल नरेश ओतऽ चन्द्रगुप्त द्वितीय केर राजदूत बनि कुन्तल गेल छलाह। श्रृंगार प्रकाश आ क्षेमेन्द्र कृत औचित्य विचारक चर्चासँ एहि बातक पुष्टि होइत अछि। साहित्यमे भले उपर्युक्त तथ्य आयल हो मुदा गुप्त राजवंशक उपलब्ध कोनो शिलालेखादिसँ ई परिपुष्ट नहि होइत अछि।

इहो कम आश्चर्यजनक नहि अछि जे शकराजसँ पराजयक बाद सन्धिस्वरूप क्लीव राजा रामगुप्त द्वारा महारानी ध्रुवस्वामिनीकेँ शकराजकेँ सुपुर्द करबाक निर्णय आ अनुज चन्द्रगुप्त द्वारा ध्रुवस्वामिनीक भेषमे अरि शिविर जा ओकर हत्या करब सन महत्त्वपूर्ण घटना सेहो अचर्चिते रहल। एहि घटनाक अभिलेखीय प्रमाणमे राष्ट्रकूट अमोघवर्ष प्रथमक संजन ताम्रपत्र (शकाब्द 759), गोविन्द चतुर्थक काम्बे अभिलेख (930 ई.), सांगली अभिलेख (933 ई.) आ रामगुप्त/काचगुप्तक स्वर्णमुद्रा अवश्य उपलब्ध अछि। चन्द्रगुप्त द्वितीयक शौर्य प्रदर्शित करैत एहि घटनाक शिल्पांकन विदिशाक उदयगिरि गुहा सं. 6 (महावराह गुफा)मे भेल अछि। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्यक रुद्र सिंह तृतीय (ज्ञात काल 380 ई.) पर विजयक गुहामे शिल्पांकन एहि घटनाक प्रमाण थिक। साहित्यमे गुणचन्द्र/रामचन्द्र कृत नाट्यदर्पणमे देवीचन्द्रगुप्तम् नामक नाटकमे एहि घटनाक चित्रण भेटैत अछि। अप्राप्य एहि स्वतंत्र पोथीक लेखकपर मतैक्य नहि अछि। के पी जायसवाल (ज. बि. ओ. रि. सो., भाग 1, पृष्ठ 17), अल्तेकर (वैह, भाग 14, पृष्ठ 223), मिराशी (इण्डियन हि. क्वा. ए ई ,भाग 62, पृष्ठ 201) प्रभृति विद्वान् मुद्राराक्षसकार विशाखदत्तकेँ एकर लेखक मानैत छथि। बाणक हर्षचरित्, एकर शंकरार्यक टीका, काव्य मीमांसा, श्रृंगार प्रकाश, फारसी ग्रंथ भुजुमुलुत् तवारीख सन साहित्यिक स्रोतसँ सम्बलित अछि चन्द्रगुप्त विक्रमादित्यक ई वीरोचित काज। महाकवि कालिदास एकर वर्णन नहि कयने छथि।

संजन ताम्रपत्रमे राष्ट्रकूट राजा अमोघवर्ष प्रथम (814-80 ई.) कहैत छथि जे कोनो दानी गुप्त नरेश अपन भ्राताक राज आ रानी दुनू ग्रहण कऽ लेलक, ओ राजा दानमे लाख-करोड़ दान करबाक कथा मात्र लिखबैत छल, वास्तविकतामे ओ किछु दान नहि करैत छल। हम ओहि गुप्त नरेशसँ पैघ दानी छी।

हत्वा भ्रातरमेव राज्यमहरद् देवीं च दीनस्तथा
लक्षं कोटिमलेखयत् किल कलौ दाता स गुप्ताह्वयः।
येनात्याजि निजं शरीरमसकृद् बाह्यार्थकैः का कथा
ह्रीस्तस्योन्नतराष्ट्रकूटतिलको दातेति कीर्त्यामपि।।

चन्द्रगुप्त द्वितीय (375-414 ई.)क मृत्युक ठीक चारि सय वर्ष बाद एहन आक्षेप आश्चर्यजनक अछि। कालिदास ग्रंथावली (सम्पादक— ब्रह्मानंद त्रिपाठी, पृष्ठ 656)मे चन्द्रगुप्त द्वितीयकेँ एहि कारणेँ 'निन्दनीय' चरित्र कहब सेहो कम आश्चर्यजनक नहि अछि। अरि शकराजकेँ गृहलक्ष्मी सौंपि देबाक निर्णय कोनो दृष्टिएँ राजधर्म वा वीरोचित कर्म नहि कहल जा सकैछ। चन्द्रगुप्त द्वितीयक निर्णय उचित आ समयानुकूल छल। एकरा निन्दनीय वा कलंकक कथा कहब कोनो दृष्टिएँ उचित नहि अछि। एहन माननिहार अपन अज्ञानताक प्रदर्शन मात्र करैत छथि। ई राजधर्मक वीरोचित कृत्य आ गुप्त साम्राज्यक अपन गौरवगाथा थिक।

दोसर महत्त्वपूर्ण घटना जे अचर्चित अछि ओ अछि स्कन्दगुप्त (455-467 ई.) द्वारा गुप्त साम्राज्यक रक्षा आ हूण विजय। स्कन्दगुप्तक भितरी अभिलेखमे—

विप्लुतां वङ्श-लक्ष्मीं भुज-बल विजितारिर्य्यः प्रतिष्ठाप्य भूयः
जितमिति परितोषान्मातरं सास्त्र-नेत्रां हत- रिपुरिव कृष्णो देवकीमभ्युपेतः(16),

हूणैर्य्यस्य समागतस्य समरे दोर्भ्यां धरा कंपिता (18) आ
समुदित बल कोषान्पुष्यमित्रांश्च जित्वा क्षितिप-चरण-पीठे स्थापितो वाम-पादः(14)

सन पंक्ति स्कन्दगुप्तक हाथेँ हूण सभक पराजय आ हूण सभपर विजय केर सिंहनाद करैत अछि। जूनागढ़ शिलालेख (456 ई.), कहौम प्रस्तर स्तम्भ लेख (460 ई.), बिहार स्तम्भ लेख, गढ़वा लेख (467 ई.), सुपिया (460 ई.) लेखादिसँ स्कन्दगुप्तक विषयमे विस्तृत जानकारी भेटैत अछि मुदा कालिदास विषयक कोनो जानकारी एहि सभमे नहि अछि।

पूर्वमे रघुवंशम् मे हूण सभक उपस्थितिक चर्च भेल छल। हूण सभक उल्लेख महाभारत, पुराण, बाणक हर्षचरित,चन्द्र कृत प्राकृत व्याकरण प्रभृति रचनामे सेहो भेल अछि। महाभारतमे उल्लेख अछि—

चीनान् शंकास्तथा षोड्रान बर्बरान् वनवासिन:
वार्ष्णेयान हारहूणाश्च कृष्णान् हेमवतांस्तथा

(महाभारत, 1/55-1-3)

आ हूणा पारसिकै: सह (महाभारत, 1, 6885)।

एतऽ एकटा महत्त्वपूर्ण तथ्य सोझाँ अबैत अछि जे रामायणमे हूण सभक उल्लेख नहि अछि मुदा महाभारतमे अछि। महाभारत केर संकलन बाद तक होइत रहल संभवत: एहि कारणेँ हूण सभक चर्च आयल अछि। मिरासीक ग्रंथ कालिदास (पृष्ठ 21)मे चर्च अछि जे तेसर शताब्दीक पोथी ललितविस्तरमे बुद्ध द्वारा सीखल गेल लिपिमे हूण लिपि केर सेहो उल्लेख अछि। हिंग नु वा हूण चीनक एक बर्बर, खानाबदोश, म्लेच्छादि निकृष्ट कर्म करएवला जाति छल। ओ सब 'लुटि आनब कुटि खायब' सिद्धान्तकेँ मानैत छल। ईसापूर्व 165 ई.मे हूण सब चीनक यू ची जातिकेँ पश्चिमोत्तर प्रान्तसँ बाहर निकालि अपन वर्चस्व स्थापित कयलक। जनसंख्या विस्तारक बाद हूण ये-ति-लि-दो (ये दा वा श्वेत हूण वा इफ्थलाइट), हारहूण आदिमे विभक्त भेल। सब शाखा अपन विस्तार कयलक। एक शाखा यूराल पर्वत पार कऽ यूरोप आ दोसर भारतवर्षकेँ आयत्त करबाक लेल बढ़ल। पाँचम शताब्दीमे ईरान, काबुल आ कुषाण राज्यकेँ दलमलित करैत गुप्त साम्राज्यकेँ प्रभावित करऽ लागल। पारसीक सम्राट् बहराम पंचम (420-38 ई.) अपना जीवन कालमे हूण सभकेँ दमन करबामे सफलता प्राप्त कयलनि। 438 ई.मे हुनक मृत्युक बाद हूण सभकेँ सुअवसर भेटल आ गुप्त साम्राज्यपर आक्रमण शुरू भेल। कुमारगुप्त प्रथमक शासन-कालक अंतमे हूण सब गुप्त साम्राज्यक पश्चिम भाग केर नाकाबन्दी कयलक। विचलित गुप्त कुललक्ष्मीकेँ स्कन्दगुप्त पुन: स्थिर कयलनि। कालिदास रघुवंशम् (4/68)मे हूण सभक उल्लेख करैत छथि—

तत्र हूणावरोधानां भर्तृषु व्यक्तविक्रमम्।
कपोलपाटलादेशि बभूव रघुचेष्टितम्।।

रघु द्वारा हत हूण राजा सभक रानी कपार पीटैत ततेक क्रन्दन् कयलनि जे हुनका सभक गाल लाल भऽ गेल। एहि श्लोकसँ पूर्व श्रान्त अश्व द्वारा भूमिपर कयल लोट-पोटक कारणेँ देहपर लागल केसर-कुंकुमकेँ देह हिलाकेँ झारबाक चित्र—

विनीताध्वश्रमास्तस्य सिन्धुतीरविचेष्टनैः।
दुधुवुर्वाजिनः स्कन्धाँल्लग्नकुङ्कुमकेसरान्।।(4/67)

सँ स्पष्ट अछि जे ई केसर क्षेत्र रहल होयत। भानुगुप्तक एरण स्तम्भ लेख(गु.सं. 191 अर्थात् 510 ई.)मे वीर गोपराजक मृत्यु जाहि युद्धमे कहल गेल अछि ओ हूणे सभसँ भेल युद्ध छल। गोपराजक पत्नी स्वामीक शरीर संग सती भेल छलीह—

श्री भानुगुप्तो जगति प्रवीरो राजा महान्पार्थ समोऽति शूरः।
तेनाथ सार्द्धन्त्विह गोपराजो मित्रानुगत्येन किलानुयातः।।
कृत्वा च युद्धं समुहत्प्रकाशं स्वर्ग्गं गतो दिव्यनरेन्द्रकल्पः।
भक्तानुरक्ता च प्रिया च कान्ता भार्य्यवलग्नानुगताग्निराशिम्।।

(एरण स्तम्भ लेख)

सती होयबाक घटनाक प्रायः ई प्राचीनतम अभिलेखीय साक्ष्य अछि। आदित्य सेनक अपसढ लेख, जे गौड़क सूक्ष्मशिवा द्वारा विकटाक्षर (कुटिल लिपि) मे लिखित अछि, मे दामोदरगुप्तकेँ मौखरि हस्तिसेनाकेँ चूर कयनिहार आ हूण सभकेँ परास्त करबा लेल उद्धत कहल गेल अछि—

येन दामोदरेणेव दैत्या इव हता द्विषः।। (10)
यो मौखरेः समितिषद्धत-हूण-सैन्या
वल्गद्धटा-विघटयन्नुरु-वारणानां।(11)

हूण राजा सभक जे शिलालेख भेटल अछि ओहिमे हूण सम्राट् तोरमाणक एरण वराहमूर्त्तिलेख महत्त्वपूर्ण आ प्रथम अछि। एरणमे बुधगुप्तक स्तम्भ लेख (484 ई.) सेहो भेटल अछि। एतहिसँ समुद्रगुप्तक एरण स्तम्भ लेख आ भानुगुप्तक एरण स्तम्भ लेख सेहो भेटल अछि। बुधगुप्तक स्तम्भ लेखमे अधीनस्थ शासक मातृविष्णु आ हुनक अनुज धन्यविष्णु द्वारा भगवान् केर ध्वजस्तम्भ स्थापित करबाक बात

कहल गेल अछि तऽ तोरमाणक एरण प्रशस्तिमे धन्यविष्णुकेँ तोरमाणक सामन्त कहल गेल अछि। स्पष्ट अछि जे धन्यविष्णु तोरमाणक अधीनता स्वीकार कयलनि। इहो प्रमाणित अछि जे बुधगुप्तक बाद एरणपर हूण सभक सत्ता आबि गेल। तोरमाणक कुरा अभिलेखमे बौद्ध विहारक स्थापना आ मिहिरकुलक ग्वालियर प्रशस्तिमे मातृचेट द्वारा सुन्दर सूर्य मन्दिर स्थापना वर्णित अछि। ई तथ्यात्मक अछि जे स्कन्दगुप्त 455 ई.मे अपन अतुलित शौर्य आ प्रचंड पराक्रमसँ हूण सभकेँ पस्त कयलनि आ विक्रमादित्यक विरुद धारण कयलनि मुदा इहो सत्य अछि जे हिनक अवसानोत्तर गुप्त साम्राज्यक सूर्यास्त शुरू भऽ गेल। 467 ई.क बाद गुप्त साम्राज्यक पतन शुरू भेल जे 555 ई. तक कहुना घिचा सकल। 467 ई.सँ 477 ई. धरि पुरुगुप्त, नरसिंहगुप्त आ कुमारगुप्त द्वितीय कहुना शासन कयलनि।

हूण सब अपन शक्ति आ श्री बढ़एबाक प्रयासमे स्कन्दगुप्त हाथेँ पराजयक दिनसँ लागि गेल छल। स्कन्दसँ पराजित भेलाक बाद ई सब पश्चिमोत्तर प्रान्तमे शरण लेलनि आ बादमे एहि क्षेत्रकेँ जीति लेलनि। गुप्त नरेश बुधगुप्त (477-515 ई.), नरसिंहगुप्त बालादित्य एवं हूण सत्तामे जय-पराजय केर चक्र चलि रहल छल। नरसिंहगुप्त बालादित्य तोरमाणसँ भेल अपन पराजय केर प्रतिशोध ओकर पुत्र मिहिरकुलकेँ परास्त कऽकेँ लेलनि। बालादित्यक माताक कृपासँ मिहिरकुलक जान बाँचल छल। ओ कश्मीर भागि गेल। मालवाक शासक यशोधर्मन हूण सभक विरुद्ध गुप्त नरेशक अभियानमे संग देलनि। यशोधर्मनक मन्दसौर स्तम्भ लेखमे उल्लिखित अछि—

ये भुक्ता गुप्त-नाथेर्न्न सकल-वसुधाक्क्रान्ति-दृष्ट-प्रतापे—
र्न्नाज्ञा हूणाधिपानां क्षितिपति-मुकुटाद्ध्यासिनी यान्प्रविष्टा।।14।।

नीचैस्तेनापि यस्य प्रणति-भुजबलावर्ज्जन-क्लिष्ट-मूर्द्धा
चूडा-पुष्पोपहारैर्म्मिहिरकुल-नपेणाच्चिंत पाद-युग्मं।।16।।

गुप्त नरेश सभ जाहि क्षेत्रपर शासन नहि कऽ सकलाह वा जाहि क्षेत्रपर हूण सम्राट् केर आदेशो सभक प्रवेश नहि भेल छल ओहि सब क्षेत्रपर यशोधर्मनक शासन भेल।

यशोधर्मनक चरण युग्मपर राजा मिहिरकुल नत मस्तक भऽ अपन केशक पुष्प अर्पित कयलनि। यशोधर्मनक मन्दसौर शिलालेखमे मालव संवत् 589 अर्थात्

532 ई. अंकित अछि जे मध्य प्रदेशक मालवा क्षेत्रक मन्दसौर (प्राचीन नाम दशपुर)क एक इनारमे लागल छल।

हूण सभक संक्षिप्त शिलालेखीय अध्ययनसँ एक बात तऽ स्पष्ट अछि जे भारतवर्षक इतिहासमे हूण सभक चर्च स्पष्ट रूपसँ पाँचम शताब्दीसँ पूर्व नहि भेल अछि। साहित्यमे किछु पूर्वसँ ई चर्च अवश्य भेटैत अछि मुदा ओ महत्त्वहीन अछि। एहि ठाम साहित्य आ इतिहासक मध्य पार्थक्यपर गौर करब प्रासंगिक होयत।

इतिहास 'एना भेल छल' आ साहित्य 'एहिसँ हित होयत' केर आर्ष वाक्यपर आश्रित अछि। इतिहास मात्र अतीतक प्रतिबिम्बन अछि तऽ साहित्य अतीत, वर्तमान आ भविष्यसँ विषय लऽ कल्पनाक आश्रयसँ अभिनव सृजनक चित्र अछि। भारतीय परम्पराक शब्दमे कही तऽ इतिहासक अनिवार्य तत्त्व मात्र सत्यम् अछि आ साहित्यमे सत्यम्, शिवम् आ सुन्दरम् केर मिश्रण सेहो। ई आर कथा जे जखन कोनो कालखंडक इतिहास वर्णनमे इतिहासकार लोकनि बिनु कोनो आलोककेँ अन्हार घरमे भुतिआयल रहैत छथि तखन ओहि कालखंडक साहित्येमे रोशनीक रेख देखि अन्वेषणकेँ आगू बढ़बैत छथि। भले बादमे ओहिपर हँसैत होथि। वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद, वेदांग, सूत्र, निरुक्त, व्याकरण, भाष्य, संहिता, रामायण, महाभारत, पुराण, त्रिपिटक, महावंश, दीपवंश, जैन-आगमन प्रभृति अनमोल रचना सभसँ बहुत रास विस्मृत इतिहास सोझाँ आयल एहि तथ्यकेँ कोनो इतिहासकार नकारि नहि सकैत छथि। एहिना पाणिनीक व्याकरण, कौटिल्यक अर्थशास्त्र, पतंजलिक महाभाष्य, अश्वघोषक बुद्धचरित्, गाहासप्तशती, मिलिन्द पनहो, ललित विस्तर, दिव्यावदान, मंजूश्रीमूलकल्प, विभिन्न वंशग्रंथ, चुल्लवग्ग, समन्तपासादिका, विभिन्न सुत्त, हेमचन्द्रक परिशिष्टपर्वन्, वसुदेवहिन्डी, वृहत्कल्पसूत्रभाष्य, विशाखदत्त कृत मुद्राराक्षस, बिल्हण कृत विक्रमांकदेवचरित्र, परिमलगुप्त रचित नवसाहसांकचरित्र, भासक स्वप्नवासदत्तम् , कालिदासक मालविकाग्निमित्रम्, कल्हण केर राजतरंगिणी, सन्ध्याकरनन्दी कृत रामचरित, आपस्तम्बसूत्र प्रभृति रचना सभक ऐतिहासिक महत्त्व अवश्य अछि मुदा एहि सभमे इतिहास यथार्थ रूपमे सुरक्षित अछि ई असंदिग्ध रूपसँ नहि कहल जा सकैछ।

विषयानुसार मात्र भास आ कालिदास विषयक चर्च अपेक्षित।

मालविकाग्निमित्रम् केर आरम्भमे सूत्रधार परिपार्श्विकसँ कहैत छथि जे विद्वान् सभक सभा हुनका कालिदास कृत मालविकाग्निमित्रम् नाटकक आयोजन लेल कहने छथि तेँ संगीतक तैयारी करू। एहिपर ओ कहैत छथि जे भास, सौमिल्ल

आ कविपुत्र सन महान् आ प्रसिद्ध कवि सभक नाटक छोड़ि आइ-काल्हिक वर्तमान कवि कालिदासक नाटक केर मंचन उचित नहि।

परिपार्श्विक— *मा तावत्। प्रथितयशसां भाससौमिल्लकविपुत्रादीनां प्रबन्धानतिक्रम्य वर्तमानकवे: कालिदासस्य क्रियायां कथं बहुमान:। (अंक 1)*

भास केर कोनो रचना 1912 ई.सँ पहिने पूर्णतामे उपलब्ध नहि छल। यत्र-तत्र उपलब्ध हुनक रचना सभक उद्धरणसँ हुनका विषयमे सीमित जानकारी उपलब्ध छल। 1912 ई.मे त्रिवेन्द्रम् सँ टी गणपति शास्त्री अनन्तशयन ग्रंथमाला अन्तर्गत 13 टा नाटक प्रकाशित करओलनि आ एहि नाटक सभकेँ भास कृत नाटक कहलनि। एहिमे स्वप्नवासदत्तम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्, अविमारकम्, दरिद्रचारुदत्तम्, बालचरितम्, उरुभंगम्, दूतवाक्यम्, कर्णभारम्, दूतघटोत्कचम्, मध्यमव्यायोग:, पाञ्चरात्रम्, अभिषेक आ प्रतिमा नाटक सम्मिलित अछि। भासक समय निर्धारण विवादास्पद बनल अछि। ईसापूर्व छठम शताब्दीसँ 11म शताब्दी (राघवाचार्यक अनुसार) धरि हिनकर समय निर्धारित भेल अछि मुदा बाण (7म शती) आ राजशेखर (9म शती) द्वारा भेल भासक उल्लेखसँ ई निश्चित होइत अछि जे भासकेँ 7म शताब्दीक बाद नहि राखल जा सकैत अछि। अश्वघोषपर भासक प्रभावक उदाहरण पूर्वमे देल जा चुकल अछि। मुदा एहिसँ दुनूक पूर्वापौर्यक निर्णय करब कठिन अछि। शूद्रक भास केर चारुदत्तकेँ आधार बना मृच्छकटिक रचना कयलनि तेँ हुनको भासक परवर्ती मानऽ पड़त। भास अपन नाटक प्रतिमामे उल्लेख करैत छथि जे मातृक कैकेय प्रदेशसँ अयोध्या अबैत काल देवस्थानमे अपन मृत पूर्वज सभक प्रतिमामे दशरथ केर प्रतिमा देखि भरत अकानि लैत छथि जे पिता दशरथ देहत्याग कऽ चुकल छथि। एहि घटनासँ भासक समय केर किछु अनुमान कयल जा सकैत अछि। हड़प्पा सभ्यताक बात छोड़ि देल जाय तऽ भारतीय वाङ्मयमे मूर्त्तिक प्राचीनतम उल्लेख पाणिनी द्वारा भेल अछि। ऋग्वेदक मंत्र 4/24/10मे हमर इन्द्रक मूर्त्ति के मोल लेत एहन उल्लेख आयल अछि। ऐतरेय उपनिषद् (3.2), मैत्रायणी उपनिषद् (6.14) आ प्रश्न उपनिषद् (1.5)मे सेहो मूर्त्तिक अस्तित्वक बात अछि। भारतवर्षमे उपलब्ध प्राचीनतम मूर्त्ति जे प्राप्त भेल अछि ओ मगधक शिशुनाग वंश (727-366 ईसा पूर्व)क राजा सभक मूर्त्ति अछि। मथुरा संग्रहालयमे सुरक्षित मथुराक परखम गामसँ भेटल 8'8" ऊँच यक्षक मूर्त्तिकेँ बहुत विद्वान् भारतवर्षक मगधसम्राट् अजातशत्रु (मृत्यु 525 ईसा पूर्व)क प्रतिमा मानैत छथि। 50 ई.मे मथुरासँ भगवान् बुद्धक प्रतिमा निर्माणक साक्ष्य भेटल अछि। महाराज कनिष्क (78 ई.)क नामांकित (महाराज राजातिराज देवपुत्रो कनिष्को) मूर्त्ति मथुरासँ सेहो प्राप्त भेल अछि। कोनो राजाक नामांकित प्राय: यैह प्राचीनतम प्रतिमा भेटल अछि। करिकला चोल (दोसर शती)क

मूर्त्ति एकाम्बरेश्वर मंदिरमे अछि। गंगाइकोंड चोलापुरम् मन्दिरमे राजराजा चोल आ राजेन्द्र चोलक मूर्त्ति अछि। मौर्य-सातवाहनक समय केर अमरावतीसँ प्राप्त एक मूर्त्तिकेँ अशोकक मूर्त्ति अनुमानित कयल गेल। कुषाण सिक्का सभपर कनिष्क हुविष्कक चित्र एकदम स्पष्ट अछि। शिशुनाग वंशक राजा सभक मूर्त्तिमे किछु नाम सेहो उत्कीर्ण अछि मुदा दृढ़तापूर्वक किछु कहब अखनो कठिन अछि। राजा सभक साक्षात् मूर्त्ति निर्माण बादमे शुरू भेल पहिने भगवती, भगवान्, पशु-पक्षी, जानवर, अस्त्र-शस्त्र आदि केर मूर्त्ति बनल। मनुष्यक हुबहू प्रतिमा (जेहन ओ वास्तविक जीवनमे दर्शनीय छल वा जिनकर मूर्त्ति देखि ई चीन्हल जा सकय जे ई अमुक व्यक्तिक प्रतिमा छी)क निर्माण बहुत बादमे शुरू भऽ सकल। कमसँ कम प्रथम शताब्दीक बादे। एहि महत्त्वपूर्ण तथ्यक आधारपर ई निश्चित अनुमान कयल जा सकैत अछि जे भासकेँ दोसर शताब्दीसँ पहिने नहि राखल जा सकैछ।

भास केर किछु कृति सभ भेटल मुदा सौमिल्ल आ कविपुत्र केर कृति सभ प्राय: अन्हारेमे अछि। कविपुत्र केर एक पद सुभाषितावलीमे उद्धृत अछि—

भ्रूचातुर्य कुंचितान्ता: कटाक्षा स्निग्धा हावा लज्जितान्तश्च हासा:।
लीलामन्दं प्रस्थितं च स्थितं च स्त्रीणामैतद्भूषणं चायुयं च।।

(सुभाषितावली, सम्पादक— पीटर पिटर्सन, पद 2227)

भास केर नायक वत्सराज उदयनक संबंध महाजनपद युगसँ अछि। ओहि कालखंडमे वर्तमान सोलह जनपदमे एक जनपद वत्स सेहो छल जेकर राजधानी कौशाम्बी छल। अवन्तिराज प्रद्योत उदयनकेँ कैद कयलनि मुदा ओ हुनक पुत्री वासवदत्ताकेँ प्रणयजालमे फँसा फरार भऽ गेल। मगध केर राजकुमारी पद्मावती, अंगराज दृढ़वर्माक पुत्री, कलिंगसेना प्रभृतिसँ ओ अपन संबंध जोड़लक।

कालिदास सेहो मेघदूतम् मे— *'प्राप्यावन्तीनुदयनकथाकोविदग्रामवृद्धान्* (पूर्वमेघ, 32) आ *'प्रद्योतस्य प्रियदुहितरं वत्सराजोऽत्र'* (पूर्वमेघ, 35) कहि उदयनक प्रणयकथा केर चर्च करैत छथि।

भारतीय इतिहासमे अपन पराक्रमक लेल कम आ अपन प्रणय कथाक लेल बेसी चर्चित उदयन भारतीय वाङ्मयमे प्रणयराजक महत्त्वपूर्ण स्थानक अधिकारी भेलाह। पुराण, बौद्ध वाङ्मय, वृहत्कथा आ कथासरित्सागर सभमे एहि प्रणयराजकेँ स्थान भेटल। उदयनक चरित्रसँ इतिहास आ साहित्यमे की अन्तर अछि, ई सहजतासँ जानल जा सकैछ। उदयनक राज उदयनक मृत्यु संग लगभग समाप्त भऽ गेल। उदयनक पुत्रक नामपर पुराण, बौद्ध वाङ्मय आ कथासरित्सागरमे मतभिन्नता

अछि। पुराण उदयन पुत्रक नाम वहीनर, बौद्ध वाङ्मय बोधि आ कथासरित्सागर नरवाहनदत्त कहैत अछि। आधिपत्यक जनपदीय संघर्षमे मध्य देशक मुख्य रूपसँ अवन्ती, काशी, कोसल, मगध आ बज्जिसंघ सम्मिलित छल। कालक्रममे वत्सक अस्तित्व अवन्तीमे विलीन भऽ गेल छल। कोसल केर पराजयक बाद तऽ मात्र दू पैघ प्रदेश मगध आ अवन्ती बाँचल रहल जे अजातशत्रुक मृत्युक बाद मगध साम्राज्यमे विलीन भेल।

उदयन साहित्यक पात्र बेसी रहल छलाह आ इतिहासक अल्प वा जँ ई कही जे साहित्यक प्रणयपात्रक कारणेँ उदयन इतिहासमे चर्चित भेलाह तऽ कोनो अत्युक्ति नहि। कथासरित्सागरमे उदयनक अतिरिक्त बहुत रास काल्पनिक आ अव्यवहारिक कथा सब सेहो अछि। लोहजंघ आ आन कथा सब पोथीक विश्वसनीयतापर प्रश्नचिह्न लगबैत अछि। उदयन केर काल ईसापूर्व छठम- पाँचम शताब्दी अछि। उदयनकेँ नायकत्व प्राप्त करबामे संसाधनक अभाव, अस्थिरता, यातायातक दुरूहता आदि कारणेँ पर्याप्त समय लागल होयत। तेँ बेसी विद्वान् भासक समय दोसर-तेसर शताब्दीमे निर्धारित करैत छथि। जखन भासक समय दोसर-तेसर शताब्दी तखन हुनक आदर सहित उल्लेख कयनिहार महाकवि कालिदासकेँ ईसापूर्व प्रथम-दोसर शताब्दीमे कोना राखल जा सकैत अछि? दुर्भाग्यवश संस्कृत साहित्यक किछु गोटपकड़े विद्वान् सभ संस्कृतक प्राचीनता प्रदर्शन निमित्त महाकविकेँ ईसा पूर्वक प्रमाणित करबाक फेरमे इतिहास संग अन्याय तऽ करिते छथि ओ साहित्य संग सेहो अन्याय करैत छथि। अनुश्रुति प्रायः निर्मूल नहि रहैत अछि मुदा पूर्ण ऐतिहासिक सत्यता ओहिमे रहबे करत ई आवश्यक नहि। कालिदास विक्रमादित्य विषयक जतेक अनुश्रुति अछि ओहिसँ किंचिते कम कालिदास भोज विषयक अनुश्रुति अछि। भोज तऽ बहुत बादक छथि। अनुश्रुति तऽ इहो अछि जे त्रिशतककार राजा भर्तृहरि विक्रमादित्यक अग्रज छलाह आ गोरखनाथ द्वारा देल गेल अमर फलकेँ रानी, नायक आ नर्तकीक हाथसँ घुमैत अपना हाथ अयलापर नग्न यथार्थ जानि राज-पाट अनुज विक्रमादित्यकेँ दैत वैरागी भऽ गेलाह। आब एहि विक्रमादित्यकेँ जँ विक्रम संवत् केर प्रवर्तक मानी तऽ दशम शताब्दी बादे हुनकर समय मानऽ पड़त। जे सर्वथा अनुचित होयत।

आश्चर्यक गप्प ई अछि जे ईसापूर्व प्रथम दोसर शताब्दीक कोनो राजा विक्रमादित्य छलाह वा विक्रमादित्यक विरुद धारण कयलनि एकर कोनो प्रमाण अखन इतिहास नहि दैत अछि। शुंग राजवंशक कोनो नरेश विक्रमादित्यक विरुद धारण नहि कयलनि। भर्तृहरि वा हुनक अनुज केर समय बहुत बादक अछि। विक्रम

संवत् प्रवर्तक आ शकारि विक्रमादित्यक परिकल्पना बहुत बादक शताब्दीमे अभरल। विभिन्न साहित्यिक स्रोत एहि परिकल्पनाकेँ खाद-पानिसँ सिंचित कयलक आ कालान्तरमे भारतीय समाजमे विक्रम संवत् आ विक्रमादित्य रूढ़ भऽ गेलाह। जाधरि विक्रमादित्य विषयक आर किछु ठोस प्रमाण नहि अबैत अछि ताधरि विक्रमादित्यक स्थिति अस्पष्टे रहत।

गुप्त नरेश सभक शिलालेखादि अध्ययनसँ एक बात तऽ स्पष्ट अछि जे एहि सभमे सेहो विक्रमादित्य शब्दक अत्यल्प उपयोग भेल अछि।

समुद्रगुप्तक प्रयाग प्रशस्ति आ अन्य शिलालेखमे विक्रमादित्य शब्द नहि भेटैत अछि। विक्रम शब्दक उपयोग मात्र भितरी शिलालेखमे भेटैत अछि—
विनय बल-सुनीतैर्व्विक्क्रमेण क्क्रमेण (भितरी स्तम्भलेख)। गुप्त नरेश सभक स्वर्ण आ रजत मुद्रापर ई शब्द बहुत ठाम उत्कीर्ण अछि जेना—

स्वर्ण मुद्रा :

- ➢ क्षितिमवजित्य सुचरितैर्दिवं जयति विक्रमादित्य:
- ➢ कुमारगुप्तो युधि सिंहविक्रम:
- ➢ श्रीविक्रम: विक्रमादित्य:
- ➢ अजित विक्क्रम: सिंहविक्रम:
- ➢ चक्रविक्रम: श्री महेन्द्र:
- ➢ अप्रतिध: क्क्रमादित्य:

रजत मुद्रा :

- ➢ परमभागवत महाराजाधिराज श्रीचन्द्रगुप्त विक्रमादित्य:
- ➢ श्री गुप्त कुलस्य महाराजाधिराज श्रीचन्द्रगुप्त विक्रमादित्य:
- ➢ परहितकारी राजा जयतिदिवं श्रीक्रमादित्य:
- ➢ परमभागवत महाराजाधिराज श्रीस्कंदगुप्त क्रमादित्य:
- ➢ परमभागवत श्रीविक्रमादित्य स्कंदगुप्त:
- ➢ परमभागवत श्रीस्कंदगुप्त क्रमादित्य:

गुप्त नरेश सभमे कुमारगुप्त, चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त मात्र केर विरुद विक्रमादित्य भेटैत अछि। ईसा पूर्वक कोनो राजाक विरुद विक्रमादित्य नहि भेटैत अछि। एहि

आधारपर सेहो महाकवि कालिदासकेँ ईसापूर्व प्रथम-दोसर शताब्दीमे राखब उचित नहि अछि। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्यकेँ शकराजक मूलोच्छेद करबाक कारणेँ शकारि कहबामे कोनो समस्या नहि अछि। इहो ऐतिहासिक तथ्य अछि जे चन्द्रगुप्त द्वितीय शक सभकेँ परास्त कयलनि आ उज्जयिनीकेँ अपन दोसर राजधानी बनओलनि। विक्रम संवत् ओ शुरू कयलनि वा नहि ई विवादक विषय भऽ सकैत अछि मुदा ओ प्रतापी नरेश छलाह एहिमे कोनो विवाद नहि अछि। नव संवत् केर आरम्भ करबासँ पूर्व राजा सहित समस्त प्रजाक सभ तरहक ऋण अदायगीक बाध्यता आ एकरा साकार करबाक क्षमताक अनुमान गुप्त नरेश मात्रसँ कयल जा सकैत अछि। ईसा पूर्वक पुष्यमित्र वा अग्निमित्र समयमे तऽ आर्थिक स्थिति एहन नहि छल जे समस्त प्रजाक ऋण अदायगी स्वयं प्रजा द्वारा वा राजा द्वारा भेल हो। कमसँ कम ई अनुश्रुति विक्रमादित्यक सन्दर्भें तऽ अछि। पुष्यमित्र वा अग्निमित्रक विषयमे तऽ एहन कोनो अनुश्रुतियो नहि अछि।

सातवाहन नरेश हाल (प्रथम शती)क गाहासप्तशतीक प्रभाव महाकवि कालिदासक रचनापर पड़ल छल। महाकवि स्वयं रघुवंशम् मे कहैत छथि जे कहाँ रघु आ रामकेँ जन्म देनिहार सूर्य समान तेजस्वी रघुकुल आ कहाँ छोटछीन नौका लऽ समुद्र पार करबाक चौल करैत अल्प बुद्धि-विवेक वला हम। तथापि विश्वास जे वाल्मीकि आदि पुराकवि अपन रचना रूपी वाणीसँ एहि वंशक द्वार पहिने खोलि देने छथि जाहिसँ प्रवेश कऽ वंश वर्णन ओहिना होयत जेना छिद्रित मणिमे डोरा पैसायब—

क्व सूर्यप्रभवो वंश: क्व चाल्पविषया मति:।
तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्।।(1/2)

अथवा कृतवाग्द्वारे वंशेऽस्मिन्पूर्वसूरिभि:।
मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गति:।।(1/4)

'वंशेऽस्मिनपूर्वसूरिभि:'मे बहुत रास पुरा प्रातिभ छथि जिनकासँ महाकवि अनुप्राणित छथि एहिमे सन्देह नहि। महाकविपर एहन पूर्वसूरिभि सभक प्रभावक चर्च मात्रपर किछु अनुदार आचार्य सभक 'अग्निश्च वायुश्च' होयबाक भयकेँ कात राखि किछु आचार्य सभक वर्णन वा संकेत पूर्वमे कयल जा चुकल अछि। एहने एक 'पूर्वसूरिभि' सातवाहन नरेश हाल सेहो छथि। डा. श्रीधर वासुदेव सोहोनी कालिदास, हाल सातवाहन

एण्ड चन्द्रगुप्त द्वितीय (जर्नल ऑफ बिहार रिसर्च सोसाइटी, भाग 41, पृष्ठ 229-40) मे स्पष्ट रूपसँ स्वीकार करैत छथि जे कालिदासपर हाल केर प्रभाव छल। ओतहि ओ आगू इहो कहैत छथि जे ऋतुसंहारक वानस्पतिक विवरणी गाहासप्तशतीसँ मेल खाइत अछि आ कालिदासक शिव-पार्वती विषयक प्रसंग गाहासप्तशतीसँ कच्चा माल (raw material) ग्रहण कऽ कालिदास अपन साहित्यिक कार्यशालामे ओकरा परिष्कृत कऽ प्रस्तुत कयने छथि। राजेश कुमार मिश्र आ देवी प्रसाद तिवारी 'गाथासप्तशती और कालिदास साहित्य' (कालिदास और उनका युग, पृष्ठ 124-30)मे विस्तृत उदाहरण दैत कालिदासपर गाथासप्तशतीकार केर प्रभावक दिग्दर्शन करबैत महाकविकैँ हालक अनुवर्ती प्रमाणित कयने छथि। विस्तार भयसँ एकमात्र उदाहरण दैत छी—

रइकेलिहिअणिअंसणकरकिसलअअरुद्धणअणखुअलस्स ।
रुद्दस्स तइअणअणं पव्वइपरिउम्बिअं जअइ।।

(हाल : गाथासप्तशती, 5/55)

रतिक्रीड़ा काल अनावृत कयलापर पार्वती लज्जावश दुनू हाथेँ शिवजीक दुनू नेत्र मूइन दैत छथि मुदा शिवजी तेसर आँखि खोलि दैत छथि। पार्वती चुम्बित शिवजीक तेसर नेत्रक जय हो। आब महाकवि कालिदासक यैह भाव साम्य देखल जाय—

शूलिनः करतलद्वयेनसा सन्निरुध्य नयने हृतांशुका।
तस्य पश्यति ललाटलोचने मोघयत्नविधुरा रहस्यभूत्।।

(कालिदास : कुमारसंभवम्, 8/7)

एहन भावचित्र सभक कालिदासक रचनामे बहुलता अछि। एहिसँ स्पष्ट अछि जे महाकवि कालिदास हालक रचना गाथासप्तशतीसँ परिचित छलाह। स्पष्ट अछि जे ओ हाल केर परवर्ती छथि। हाल ऐतिहासिक व्यक्तित्व छथि। सातवाहन नरेश हालक समय निर्धारित अछि। मानल जाइत अछि जे सातवाहन नृपति हाल प्रथम शताब्दीमे मात्र पाँच वर्ष 20-24 ई. तक राज्य कयलनि। हिनका कुन्तल क्षेत्रमे शासन करबाक कथा कहल जाइत अछि। हालक समयमे प्राकृत भाषा आ साहित्यक काफी प्रगति भेल। हाल स्वयं प्राकृत ग्रंथ गाहासप्तशतीक रचना

कयलनि आ हिनके शासन-कालमे गुणाढ्य वृहत्कथा तैयार कयलनि। प्राकृत ग्रंथ लीलावैसँ ज्ञात होइत अछि जे हालक सेनापति विजयानन्द लंका तक जा अपन राजा हालक पताका फहरा आयल छलाह। एहि ग्रंथसँ हालक सैन्य अभियान आ उपलब्धिपर अभिनव प्रकाश पड़ैत अछि। हालक समय ऐतिहासिक रूपसँ प्रथम शताब्दी निर्धारित अछि तखन हुनकासँ अनुप्रेरित महाकवि कालिदास कोना ईसापूर्व प्रथम-दोसर शताब्दीमे राखल जा सकैत छथि ?

पं. लक्ष्मण झा अपन ग्रंथ महाकवि कालिदास कहाँ और कब? (पृष्ठ 170-88)मे कालिदासक ऋतुसंहारक एक श्लोक उद्धृत करैत ऋतुसंहारक रचना कालक अनुमान सं. 642 मानैत छथि। श्लोक अछि—

रसनिगमनवेन्दुक्लृप्तसंख्ये शुभेब्दे
गणपति तिथि युक्ते मंगले शुक्लपक्षे।

सुखदशुचिसुमासे प्रापितोयं समाप्तिं
सरसबुधकवीन्द्रैरीक्षणीयो निबन्धः।।

पं. झा षट् रस, चारि वेद,नवेन्दु अर्थात् द्वितीयाक चन्द्रमाक आधारपर एकर रचनाकाल 642 मानैत छथि। शुभेब्द कारणेँ अंकस्य वामा गतिः ओ नहि मानि कहैत छथि जे सं. 642 वा 585 ई.क आषाढ़ मासक शुक्लपक्ष केर चौठ आ मंगल दिन ऋतुसंहारक रचना भेल। कालिदासक समय 510-90ई. मानैत छथि। ई काल निर्धारण सेहो सर्वमान्य नहि भेल।

यैह हाल महाकविक जन्मस्थलीक अछि। महाकविकेँ उज्जैन, विदर्भ, देवगिरि, कविल्ठा, कश्मीर, बंगाल, विन्ध्य, मिथिला आदि क्षेत्रक वासी कहल गेल अछि। के. कृष्णमूर्त्ति (कालिदास, साहित्य अकादेमी, दिल्ली, पृष्ठ 21) कालिदासकेँ विदर्भवासी कहैत छथि तऽ डा. भगवती लाल राज पुरोहित (कालिदास का वागर्थ, पृष्ठ 144) हिनका गढ़वालक देवगिरिक निवासी कहैत छथि। किछु विद्वान् (राजेन्द्र मिश्र,कालिदास और उनका युग,पृष्ठ 102) सभक मेघदूतमे चित्रित क्रौञ्च रन्ध्रक आधारपर मान्यता अछि जे कालिदास रुद्र प्रयागक कविल्ठा गामक वासी छथि। केसर आ सूर्यपूजाक कारणेँ किछु विद्वान् (डा. भगवत शरण उपाध्याय, डॉ. रमा शंकर तिवारी, प्रो. कल्ला) हिनका कश्मीर वासी सिद्ध करबाक

प्रयास कयलनि। प्रो. लक्ष्मीधर कल्ला (The Birthplace of Kalidas, दिल्ली, 2000 ई., पृष्ठ 67-68) महाकविकेँ कश्मीरी कहलनि। कश्मीर समर्थक विद्वान् इन्दुमतीक स्थानपर सुनन्दा द्वारा अजकेँ वरमाला पहिरायब, प्रत्यभिज्ञान दर्शन, अलकापुरीक अवस्थिति, केसर केर चर्च आदि आधारपर महाकविकेँ कश्मीरी मानैत छथि। कल्हण द्वारा कश्मीरक प्रातिभ सभक चर्चमे कालिदास विषयक एहन कोनो उल्लेख नहि करब एकर स्पष्ट खंडन अछि। सुनन्दा द्वारा अजकेँ स्वयंवरमे वरमाला पहिरायबसँ मात्र एतेक स्पष्ट अछि जे इन्दुमती अज केर चयन कयलनि। विवाह एकर बाद होइत अछि। प्रत्यभिज्ञान दर्शन केर आदि आचार्य वसुगुप्त (8म शताब्दी)क छथि जे 77 शिवशिलापर उत्कीर्ण सिद्धान्त सभकेँ लिपिबद्ध कयलनि। सोमानन्द केर पुत्र आ शिष्य उत्पलाचार्यक ईश्वर प्रत्यभिज्ञा ग्रंथक नामपर एकर नामकरण भेल। कश्मीरक ई शैव दर्शन अद्वैत दर्शने केर एक भाग अछि ओहिना जेना मिथिलाक भावाद्वैत दर्शन। कालिदासक रचनामे शैव दर्शन केर व्यापकता देखि हुनका एहि दर्शन केर आचार्य कहब अन्याय होयत। इन्द्रियाख्यानिव रिपूंस्तत्त्वज्ञानेन संयमी (रघु. 4/60)सँ सांख्य दर्शनक तत्त्व केर अभिव्यक्ति भेल अछि—

मरणं प्रकृति: शरीरिणां विकृतिर्जीवितमुच्यते बुधै:।
क्षणमप्यवतिष्ठते श्वसन्यदि जन्तुर्ननु लाभवानसौ।।8/87।।

एहिमे बुधसँ सांख्यवेत्ता सभक संकेत अछि जे मृत्यकेँ स्वाभाविक मानैत छथि आ जीवित रहबकेँ विकार।

ब्राह्मं सर: कारणमाप्तवाचो बुद्धेरिवाव्यक्तमुदाहरन्ति (रघु. 13/60)

सँ सेहो अव्यक्त अर्थात् प्रकृतिसँ बुद्धि तत्त्व ज्ञात होयब सांख्य योगक भाव प्रकट करैत अछि। एहि आधारपर की महाकविकेँ सांख्य दर्शन केर आचार्य कहब उचित होयत? एहि आधारपर महाकविकेँ कश्मीरी मानब उचित नहि। सुप्रसिद्ध हिन्दी काव्य ग्रंथ 'कामायनी' सेहो प्रत्यभिज्ञान दर्शन केर प्रतिपादन करैछ तखन की जयशंकर प्रसादजीकेँ कश्मीरी कहल जाय? महाकवि कालिदासक रचनामे अनेक दर्शन प्रतिपादित अछि। महाकवि वेदान्त दर्शन केर भावना स्वीकार करैत छथि मुदा अन्य पौराणिक दर्शन केर उपेक्षा नहि करैत छथि। विक्रमोर्वशीयम् केर प्रथम श्लोक—

वेदान्तेषु यमाहुरेकपुरुषं व्याप्य स्थितं रोदती
यस्मिन्नीश्वर इत्यनन्यविषयः शब्दो यथार्थाक्षरः।
अन्तर्यश्च मुमुक्षुभिर्नियमितप्राणादिभिर्मृग्यते
स स्थाणुः स्थिरभक्तियोगसुलभो निःश्रेयसायाऽस्तु वः।।

मे वेदान्त, द्वैत, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, भावाद्वैत, सेश्वरसांख्य, योग, भक्ति आदि दर्शन केर भावाभिव्यक्ति भेल अछि। महाकवि परमात्माक स्वतंत्र आ आनन्दमय स्वरूप मानितो परमात्मा ब्रह्म केर अवतार स्वरूपकेँ सेहो स्वीकार करैत छथि। श्रीराम आ श्रीकृष्णकेँ विष्णुक अवतार कहैत छथि— रामाभिधानो हरिरित्युवाच (रघु. 13/1), कार्यान्तरमानुषस्य विष्णो: (रघु. 16/82), गोपवेषस्य विष्णोः (पूर्व मेघ, 15) आदि। कहबाक अभिप्राय अछि जे महाकविक रचनामे भारतीय दर्शन केर सार समाहित अछि आ एहि आधारपर हुनका प्रत्यभिज्ञान दर्शन आ ताहि आधारपर कश्मीरी नहि कहल जा सकैछ। एहिना अलकापुरीक अवस्थितिसँ सेहो महाकविकेँ कश्मीरी नहि मानल जा सकैछ। अलकापुरी यक्ष केर घर अछि। कैलास प्रक्षेत्रमे स्वर्णिम कमलसँ सुशोभित मानसरोवर अछि। एहि क्षेत्रमे अलकापुरी अवस्थित अछि। ई समस्त क्षेत्र पश्चिम हिमालयमे अछि ई तथ्यात्मक थिक मुदा अपन घरक जे पता महाकवि शंख-पद्म चित्रसँ दैत छथि ओ मिथिलेक निशानी थिक।

भगवती कालीक कृपा, धानक बिहनिकेँ उखाड़ि फेर दोसर खेतमे रोपब— *फलैः संवर्धयामासुरुत्खातप्रतिरोपिताः* (रघु. 4/37) आ धनखेतमे कमल फूलक प्रस्फुटनसँ किछु विद्वान् हिनका बंगालकेँ मानैत छथि। कालिदासपर कालीक कृपा केर कथासँ बेनीपट्टीक उच्चैठ भगवती प्रसिद्ध छथि। मिथिलामे अनादि कालसँ बिराड़मे धानक बिआ बाउग होइत अछि, बिआ-बिच्चनिकेँ बिराड़सँ उखाड़ि दोसर ठाम आ तेसर ठाम रोपल जाइत अछि। एकरा खाउर कहल जाइत अछि। अदौ कालसँ धानक खाउर करब मिथिलामे अखनो प्रचलित अछि। 'उत्खात' आ खाउरक एकहि भाव अछि। एहि सभक आधारपर कालिदासकेँ बंगाली कहब उचित नहि। किछु बंगाली विद्वान् कालिदासकेँ मुर्शिदाबाद जिलाक गढ़सिंगरू गामकेँ कालिदासक जन्मस्थान मानैत छथि। एतऽ एक पोखरि खुनाओल गेल जेकर नाम कालिदास सागर राखल गेल। (वी वी मिरासी, कालिदास, 1956 ई., बम्बई, पृष्ठ 53-54)। बंगालमे प्रचलित जनश्रुतिक अनुसार बंगालक राजा विक्रम केर सुन्दरी आ गुणवन्ती पुत्री पद्मिनीसँ हुनक सहपाठी आ पिताक प्रधान मंत्रीक पुत्र विद्यासागर विवाह करऽ चाहैत छल। पद्मिनीक मना कयलापर ओ छलपूर्वक मूर्खसँ राजकुमारीक विवाह करा देलक। भेद खुजलापर मूर्ख कालिदासकेँ राजमहलसँ भगा देल गेल। ओ भगवती काली मन्दिरमे भगवतीक सेवामे लागि गेलाह आ भगवतीक कृपासँ महाकवि भेलाह।

महाकविक पाँती ‘आषाढ़स्य प्रथमे दिवसे’सँ बंगाली विद्वान् सभक दावी अछि जे बंगालक दिन गणनामे पक्ष आओर तिथि केर उपयोग नहि होइत अछि। ई दावी तथ्यात्मक नहि अछि। गुप्त साम्राज्यक चन्द्रगुप्त विक्रमादित्यक सेनापति आम्रकार्दन केर साँची शिलालेख केर अन्तमे उल्लिखित ‘सम्वत् 93 भाद्रपद दि. 4’ आ कुमारगुप्तक कालमे मनकुवार नामक स्थानसँ प्राप्त मूर्त्तिपर ‘सम्वत् 129 ज्येष्ठ मास दि. 18’ केर उल्लेख करैत कृष्णानन्द (कालिदास बिहार के थे, पृष्ठ 51-52) एकर खंडन करैत छथि। रघुक दिग्विजयमे बंगालक भेल भयंकर पराजय केर उल्लेख भेल अछि (रघु. 4/36) मिथिला वा मगध केर नहि। ई तथ्य सेहो बंगालक दावीकेँ निराधार प्रमाणित करैत अछि।

उज्जैनवासी सभ तऽ सहज रूपसँ महाकविकेँ उज्जैनवासी मानि गर्वित छथिए। एहिमे उज्जैनक ज्योतिषाचार्य पंडित मोरेश्वर नीलकंठ शास्त्री (नवप्रभातम्, अंक 219, कानपुर)क दावी अछि जे महाकवि प्रभव संवत्सरमे उत्पन्न भेलाह जे कलि संवत् 3030 (विक्रमाब्दक शुरू होइसँ 14 वर्ष पूर्व)मे विद्यमान छलाह। हिनक जन्मक नाम चन्द्रचूड़ वा चन्द्र मौलि, राशिक अनुसार नाम कालिदास छल। महाकविक उज्जैन जन्मस्थली वा कर्मस्थली एहिपर अन्यत्र विस्तृत विचार भेल अछि।

अखन जे महाकविक सातटा रचना सर्वमान्य अछि ओहि सभमे कतहु महाकवि अपन जन्मस्थान आ समय विषयक कोनो जानकारी नहि देने छथि। एहन स्थितिमे मात्र हुनक रचना सभमे हुनकर मैथिलत्वक संकेत सभक तलाश कयल जा सकैछ। कालिदासक संबंधमे मिथिलाक अपन दावी सेहो अछि जे उच्चैठ भगवतीक कृपासँ वज्रमूर्ख कलुआ महाकवि कालिदासमे परिणत भेल छलाह। पं. आद्या चरण झा, डा. आदित्य नाथ झा, आचार्य बलदेव मिश्र, पं. दिगम्बर झा, पं. लक्ष्मण झा, डॉ. देव नारायण झा, डॉ. भारती श्रीवास्तव, डॉ. रामचन्द्र ठाकुर, कृष्णानन्द, आर आर दिवाकर, रामप्रकाश शर्मा, अनन्त शयनम आयंगर आदि विद्वान् महाकविक मैथिलत्व केर उद्घोष करैत छथि। मिथिलाक समर्थनमे कयल एहि दावी सभक समीक्षा कालिदासक रचनामे आएल विभिन्न वर्णन, रीति रिवाज, पावनि-तिहार, इतिहास, भाषा वैज्ञानिक आ राजस्व अभिलेखादि आधारपर मीमांसा करब हमर अभिप्रेत अछि।

रचनामे व्यक्त विचार सभक आधारपर महाकविक मैथिलत्व

महाकविक अमर रचना सभमे रचनाकार रूपमे हुनकर नाम उद्धृत नहि छल। मेघदूतम्, रघुवंशम् आदि रचना महाकवि कालिदासेक थिक ई ज्योतिर्विदाभरणसँ स्थापित भेल। आश्चर्यजनक अछि जे जाहिसँ ई स्थापित भेल जे महाकवि कालिदासे एहि कृति सभक रचनाकार छथि ओहि ज्योतिर्विदाभरणकेँ मूल कालिदासक रचना नहि मानल गेल। अछि ने ई आश्चर्यजनक कथा ? जखन महाकवि अपन नाम तक अपन रचनामे नहि देलनि तखन जन्मस्थान आ समय केर कथे कोन ? तथापि महाकविक रचनामे अभरल विभिन्न तथ्य, आन्तरिक संकेत आ भाषाक स्वरूपसँ हुनकर परिचिति भेटि सकैत अछि।

महाकविक रचना संसारसँ कालिदासक जन्मस्थान निर्धारित कयल जा सकैछ। विभिन्न स्थलक दावी सभक समीक्षासँ स्पष्ट होयत जे महाकवि मैथिल छथि। मात्र केसर उत्पादन स्थल आ सूर्यपूजाक चित्रण सभक कारणेँ कालिदासकेँ कश्मीरवासी कहब अन्याय होयत एहि प्रचंड प्रातिभ संग। कश्मीर वा गढ़वाल सन शीतल क्षेत्रक दावी तऽ कालिदासक धारागृहमे शीतल जल फुहारक कल्पना यन्त्रधारागृहत्वम् (पूर्व मेघ, पद 65) आ जल केर फुहारसँ शीतल भेल समीर स्वजलकणिकाशीतलेनानिलेन (उत्तर मेघ, 40)सँ निर्मूल कयल जा सकैछ। शीतल क्षेत्रक लोक सभक लेल एहन कल्पना करब कठिन अवश्य अछि। एहिना शरद ऋतु केर पूर्णिमा रातिक सुहावन चारु चाँदनीक चित्रण परिणतशरच्चन्द्रिकासु (उत्तर मेघ, पद 53) जँ कोजागरा रातिक निरभ्र चन्द्र किरणक स्मरण करा दिए तऽ कोनो अतिशयोक्ति नहि। सूर्यपूजाक जे स्वरूप बिहारमे अछि ओ अन्यत्र कतऽ? आस्थाक महापावनि छठि अखनो मिथिलामे प्रचलित अछि जे स्पष्टतः सूर्यपूजे थिक। केसर केर उत्पादन कश्मीरमे होइत अछि ई जानकारी किनका नहि अछि! केसर केर चर्च मात्रसँ हुनका कश्मीरी नहि कहल जा सकैछ। केसर केर उत्पादन संबंधी सूक्ष्म जानकारी एकर संकेत अवश्य करैत मुदा महाकवि एहन कोनो

तकनीकी बात एकर उत्पादन संबंधी नहि कयने छथि। धानक बिच्चनिकेँ बिराड़सँ उखाड़ि अन्यत्र खाउर करबाक जे सूक्ष्मता महाकविक रचनामे वर्णित अछि ओ हिनका मैथिल होयबाक दिशि अवश्य संकेत करैत अछि।

धानक खेतमे मलकोकाक फूल (कमल) तऽ मिथिलाक कोशिकन्हाक कोनो गाममे आइयो देखल जा सकैछ। हम स्वयं अपन गाममे ई दृश्य कतेक बेर देखने छी। उज्जैनक प्रति महाकवि अपन अतिरिक्त आसक्ति अवश्य दर्शओने छथि मुदा एकर कारण उज्जैनकेँ जन्मस्थली होयब नहि अपितु कर्मस्थली होयब अछि। ई तथ्यात्मक अछि जे उज्जैनक वर्णन मार्मिक अछि मुदा रघुवंशम् (षष्ठ सर्ग) मे वर्णित इन्दुमतीक स्वयंवरमे प्रथम आ दोसर स्थानपर मगध आ अंगकेँ स्थान देलाक बाद तेसर स्थानपर महाकवि अवन्ती (उज्जैन)क चर्च करैत छथि।

असौ शरण्य:शरणोन्मुखानामगाधसत्त्वो मगधप्रतिष्ठ:।
राजा प्रजारञ्जनलब्धवर्ण: परन्तपो नाम यथार्थनामा।।6/21।।

जगाद चैनामयमङ्गनाथ: सुराङ्नाप्रार्थितयौवनश्री:।
विनीतनाग: किल सूत्रकारैरैन्द्रं पदं भूमिगतोऽपि भुङ्क्ते।।6/27।।

अवन्तिनाथोऽयमुदग्रबाहुर्विशालवक्षास्तनुवृत्तमध्य: ।
आरोप्य चक्रभ्रममष्णतेजास्त्वष्ट्रेव यत्नोल्लिखितो विभाति।।6/32।।

ई तथ्यात्मक अछि जे इन्दुमतीक विवाह अजसँ भेल छल आ महाकवि एहिमे कोनो परिवर्तन नहि कऽ सकैत छलाह मुदा राजा सभक क्रम आ वैशिष्ट्यक वर्णनमे महाकवि मगध नरेशकेँ अनायासे नहि प्रथम स्थानपर रखने छथि। एहिमे हुनक अपन गृहक्षेत्रक राजाक प्रति अतिरिक्त स्नेह आ आदर अवश्य अभरल अछि। मगध नरेशक विषयमे महाकवि कहैत छथि जेना असंख्य तारा, ग्रह आ नक्षत्र सभक बादो राति तखने चाँदनी राति मानल जाइए जखन चन्द्रमा खिलैत हो तहिना सहस्राधिक राजाक रहैत पृथ्वी मगधराजेक कारणेँ राजा युक्त कहाइत अछि।

कामं नृपा: सन्तु सहस्रशोऽन्ये राजन्वतीमाहुरनेन भूमिम्।
नक्षत्रताराग्रहसङ्कुलाऽपि ज्योतिष्मती चन्द्रमसैव रात्रि:।।6/22।

मगध नरेश परंतप, अंगराज, अवन्तिराज, अनूप नरेश, मथुरा नरेश सुषेण, कलिंग नरेश हेमांगद, नागपुर नरेश (पाण्ड्य नरेश) आ रघुपुत्र अजक वर्णन अछि। एहिमे इन्दुमती मगध नरेश दिशि तकैत छथि कि दुबिमे गाँथल हुनक महुआ केर माला सरकि जाइत अछि आ ओ मात्र प्रणाम कऽ आगू बढ़ि जाइत छथि। आन राजाकेँ तऽ इन्दुमती बिनु कोनो अभिवादन कयने आगू बढ़ि जाइत छथि आ अजकेँ वरण करैत छथि।

उल्लेखनीय जे मिथिला कालिदासक समयमे मगधे क्षेत्रमे छल। इहो वरेण्य इतिहासकार सभ द्वारा स्वीकृत आ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तथ्य अछि जे महाकवि कालिदास 397 ई.मे चन्द्रगुप्त विक्रमादित्यक शक विजय केर बाद हुनकर संग अपर राजधानी उज्जैन गेल छलाह। इहो कहल जाइछ जे उज्जैनक पण्डितसभामे हुनकर परीक्षण सेहो भेल छल—

श्रूयते चोज्जयिन्यां काव्यकार परीक्षा।

(राजशेखर : काव्य मीमांसा,10)

महाकवि अपन रचनामे यत्र-तत्र मिथिलाक मत्स्य ध्वजाकेँ व्योममे फहराइत-मत्स्य ध्वजा वायुवशाद्विदीर्णै (रघुवंशम् 7/40) देखा अपन मातृभूमिक गौरव पताका फहराबैत दृष्टिगोचर होइत छथि। ई उल्लेखनीय तथ्य अछि जे मिथिलाक मत्स्य ध्वजा अनादि कालसँ प्रसिद्ध अछि। एकर एक प्रमाण तऽ कुम्भ मेला सेहो प्रस्तुत करैत अछि। कुम्भमे प्राय: प्रत्येक क्षेत्रसँ लोक अनादि कालसँ जाइत छथि। एहन जन सैलाव अन्यत्र नहि अबैत अछि। एहन जन सैलावमे भुतिया जायब सहज अछि तेँ पहचानक लेल प्रत्येक क्षेत्रक पंडाजी वा व्यवस्थापक अपन संबद्ध लोक सभक लेल अलग-अलग पड़ाओ बनबैत छथि आ खूब ऊँच बाँसपर अपन झंडा लगबैत छथि ताकि भुतिआयल लोक दूरसँ देखि अपन पड़ाओकेँ चीन्ह सकय। मिथिलाक पंडाजी सेहो अपन पड़ाओपर मिथिलाक मत्स्य ध्वजा लगबैत छथि। दरभंगा राज केर परिचिति अखनो यैह मत्स्यध्वजा अछि।

रघुवंशम् मे रघु दिग्विजय क्रममे सूह्म, बंग, उत्कल, कलिंग, पाण्ड्य, मलय क्षेत्र, दुर्दुर क्षेत्र, सह्याद्रि, केरल, त्रिकुट क्षेत्र, पारसी क्षेत्र, सिन्धु क्षेत्र, हूण क्षेत्र, कम्बोज (काबुल), हिमालय क्षेत्र, पर्वत प्रदेश, प्राग्ज्योतिषपुर लोहित क्षेत्र, कामरूप क्षेत्रक राजा सभकेँ पराजित देखाओल गेल अछि। विजेता नृप केर मूल क्षेत्र रहबाक कारणेँ एहिमे मगध वा मिथिला क्षेत्रक नाम नहि अछि। महाकविक ई कौशल अपन जन्म क्षेत्रक प्रति अतिरिक्त स्नेहक परिचायक तऽ अवश्ये थिक।

महाकवि कालिदासक मन राजर्षि जनककेँ मैथिल आ सीताकेँ मैथिली कहबामे अत्यधिक रमैत अछि। रघुवंशम् केर एहन किछु श्लोक सभक आनन्द लेल जाय—

तं न्यमन्त्रयत सम्भृतक्रतुर्मैथिल: स मिथिलां व्रजन्वशी।
रघवावपि निनाय बिभ्रतौ तद्धनु:श्रवणजं कुतूहलम्।।11/32।।

यूपवत्यवसिते क्रियाविधि कालवित्कुशिकवंशवर्धन:।
राममिष्वसनदर्शनोत्सुकं मैथिलाय कथयाम्बभूव स:।।11/37।।

व्यादिदेश गणशोऽथ पार्श्व गान्कार्मुकाभिहरणाय मैथिल:।
तैजसस्य धनुष: प्रवृत्तये तोयदानिव सहस्रलोचन:।।11/43।।

दृष्टिसारमथ रुद्रकार्मुके वीर्यशुल्कमभिनन्द्य मैथिल:।
राघवाय तनयामयोनिजां रूपिणीं श्रियमिव न्यवेदयत्।।11/47।।

मैथिल: सपदि सत्यसङ्गरो राघवाय तनयामयोनिजाम्।
सन्निधौ द्युतिमतस्तपोनिधेरग्निसाक्षिक इवातिसृष्टवान।।11/48।।

एवमात्तरतिरात्मसम्भवांस्तान्निवेश्य चतुरोऽपितत्र स:।
अध्वसु त्रिषु विसृष्टमैथिल: स्वांग प्रिं दशरथो न्यवर्तत।।11/57।।

मैथिलस्य धनुरन्यपार्थिवैस्त्वं किलानमितपूर्वमक्षणो:।
तन्निशम्य भवता समर्थये वीर्यश्रृङ्गमिव भग्नमात्मन:।।11/72।।

स जहार तयोर्मध्ये मैथिलीं लोकशोषण:।
नभोनभस्ययोर्वृष्टिमवग्रह इवान्तरे।।12/29।।

संरम्भं मैथिलीहास: क्षणसौम्यां निनाय ताम्।
निवातस्तिमितां वेलां चन्द्रोदय इवोदधे:।।12/36।।

इत्युक्त्वा मैथिलीं भर्तुरङ्के निविशतीं भयात्।
रूपं शूर्पणखा नाम्न: सदृशं प्रत्यपद्यत।।12/38।।

कलेवर विस्तार भयसँ ओहि श्लोक सभक संक्षिप्त रूप केर दिग्दर्शन कयल जा रहल अछि जाहिमे महाकविक मोन मिथिलेश जनककेँ मैथिल आ जानकीजीकेँ मैथिली कहि अघायत नहि अछि—

स रावणहृतां ताभ्यां वचसाऽऽचष्ट मैथिलीम् (रघु.,12/55),
रामेण मैथिलसुतां दशकण्ठकृच्छ्रात् प्रत्युद्धृतां धृतिमतीं भरतो ववन्दे (रघु.,13/77),
मैथिलीतनयोद्गीतनि:स्पन्दमृगमाश्रमम् (रघु.,15/37),
तं दधन्मैथिलीकण्ठनिर्व्या पारेण बाहूना (रघु.,15/56),
मैथिलेयौ कुशलवौ जगतुर्गुरुचोदितौ (रघु.,15/63),
स तावाख्याय रामाय मैथिलेयौ तदात्मजौ (रघु.,15/71),
ता: स्वचारित्रमुद्दिश्य प्रत्याययतु मैथिली (रघु.,15/73),
न मैथिलेय: स्पृहयाम्बभूव भर्त्रे दिवो नाप्यलकेश्वराय (रघु.,16/42)

प्रभृति प्रयोग महाकवि कालिदासक मिथिलाक प्रति अतिरिक्त स्नेहक स्पष्ट प्रमाण प्रदर्शित करैत अछि।

रघुवंशम् मे राम द्वारा सीताक परित्यागपर सीता द्वारा रामक प्रति सहज आक्रोश आ क्षोभ राम काव्य परम्परामे आन ठाम अत्यन्त विरल अछि। सीताक प्रश्न आ क्षोभसँ जेना स्वयं महाकवि अपन भावनाकेँ स्वर देने होथि। एहि ठाम हुनक खाँटी मैथिल स्वरूप हमरा सभक सोझाँ अबैत अछि। मिथिलाक सभसँ बेसी रूपवती आ गुणवंती बेटीक एहन अनुचित परित्यागपर जेना मैथिल कालिदासक हृदय आक्रोशित भेल हो तखन तऽ उच्च रघुकुलांश रामसँ प्रश्न होयत अछि—

वाच्यस्त्वया मद्वचनात्स राजा वह्नौ विशुद्धामपि यत्समक्षम्।
मां लोकवादश्रवणादहासी: श्रुतस्य किं तत्सदृशंकुलस्य।।14/61।।

वनमे छोड़लाक बाद परित्यागक बात सुनि सीता कुररी जकाँ कानऽ लगलीह। हुनक करुण क्रन्दन् सुनि मोर नाचब त्यागि देलक, गाछ फूलक नोर बहायब शुरू कऽ देलक आ हरिण सब मुँहमे लेल घासक ग्रास उगील देलक। सीताक दुखसँ सम्पूर्ण वनक्षेत्र जेना कानि रहल हो एहन मार्मिक स्थितिमे जखन महर्षि वाल्मीकि ससत्वा सीताकेँ आशीर्वाद दैत कहैत छथि— बेटी वैदेही। हम योगबलसँ जानि गेल

छी जे अहाँक पति मिथ्या अपयशसँ डरि अहाँके घरसँ बाहर कऽ देलनि अछि। पुत्री! अहाँ अपन पितेक घर आयल छी तेँ आब शोकक त्याग करू। यद्यपि राम त्रिलोकक क्लेशहर्त्ता छथि, सत्यप्रतिज्ञ छथि, आत्मप्रशंसा नहि करैत छथि तथापि ओ जे अहाँ संग अनुचित व्यवहार कयलनि ई देखि हमरा हुनकापर भारी क्रोध आबि रहल अछि। अहाँक ससुर हमर मित्र, अहाँक पिता संसारक बंधनसँ मुक्ति दिएनिहार आ अहाँ स्वयं पतिव्रता नारीमे सर्वश्रेष्ठ तेँ अहाँपर हम अनुकम्पा नहि करी एहन कोनो कारण नहि अछि।

जाने विसृष्टां प्रणिधानतस्त्वां मिथ्यापवादक्षुभितेन भर्त्रा।
तन्मा व्यथिष्ठा विषयान्तरस्थं प्राप्तासि वैदेही! पितुर्निकेतम्।।14/72।।

उत्खातलोकत्रयकण्टकेऽपि सत्यप्रतिज्ञेऽप्यविकत्थनेऽपि।
त्वां प्रत्यकस्मात् कलुषप्रवृत्तावस्त्येव मन्युर्भरताग्रजे मे।।14/73।।

तवोरुकीर्त्तिः श्वशुरः सखा मे सतां भवोच्छेदकरः पिता ते।
धुरि स्थिता त्वं पतिदेवतानां किं तन्न येनासि ममानुकम्प्या।।14/74।।

एहि वर्णनमे महाकवि ओहि आम मैथिल पिता जकाँ सामने अबैत छथि जिनकर सर्वगुण संपन्ना सुताकेँ अकारण पति द्वारा परित्याग कऽ देल गेल हो। हुनक भावना ओहिना अछि। एहि मर्मन्तुद प्रसंगक सान्द्र चित्रण मैथिल कालिदास द्वारा भेल अछि एहिमे सन्देह नहि।

रामक उज्ज्वल कुलपर उठल ई प्रश्न एहि तथ्यसँ आर दृढ़ होयत अछि जे मिथिलामे कोनो पिता विवाहपंचमी दिन विवाहक शुभ मुहूर्त रहलाक बादो अपन बेटीक विवाह ओहि दिन नहि करैत छथि। ई अपन सर्वश्रेष्ठ पुत्रीकेँ शील-शक्ति-सौन्दर्य समन्वित श्रीराम सन सुयोग्य वरसँ भेल विवाहक बादो सीताक कष्टमय जीवनक प्रतिकार स्वरूप आम मैथिलक नैराश्य केर परिणाम अछि जेकर उत्स महाकविक एहि आक्रोशमे देखल जा सकैछ। एहि भाव केर विस्तार अन्य अध्याय सभमे भेल अछि।

प्रकृति वर्णनमे महाकविक मैथिलत्व

महाकवि कालिदासक प्रकृति वर्णनमे अनेकशः एहन प्रसंगक अन्वेषण कयल जा सकैत अछि जे यथार्थमे मिथिलेमे संभव अछि। वायु प्रवाहक कारणेँ बाँसक छिद्रसँ बहराइत सुमधुर ध्वनि— दरी मुखोत्थेन समीरेण (कुमार संभवम् 1/8) केर उल्लेख हो वा चूड़ा-गुड़ केर चर्च हो—

प्रचुरगुडविकारः स्वदुशालीक्षुरम्यः प्रबलसुरतकेलिर्जातकन्दर्पदर्पः

(ऋतुसंहार, 5/16)

दुनू ठाम महाकविक मैथिलत्वे सोझाँ अबैत अछि। पाकल धानक खेत आ आम केर गाछीमे जेना महाकविक मोन रमि गेल हो—

पक्व कलमावृतभूमिभागाः प्रोत्कण्ठयन्ति न मनो भुवि कस्य यूनः

(ऋतुसंहार, 3/5)

आ आम्रिमंजुलमंजरी वरशरः

(ऋतुसंहार, 6/38)

मे महाकविक बालपनमे देखल बिम्ब अभरल अछि। वर्षा बाद धरतीसँ अबैत सोन्हगर सुगंध—

सद्यःसीरोत्कषण सुरभि क्षेत्र मारूह्य मालं

(पूर्वमेघ,16),

जामुन केर वन जमुनटोकीक चित्र— *वान्तवृष्टिर्जम्बूकुञ्जप्रतिहतरयं*

(पूर्वमेघ, 21),

परिणतफलश्यामजम्बूवनान्ताः

(पूर्वमेघ, 25)

आ शेफालिका (सिंगरहार)सँ महमह करैत वातावरण एवं विपुल जलराशिमे चिड़ै-चुनमुनीक कलरव—

शेफालिका-कसुमगन्धमनोहराणि स्वस्थास्थिताण्डजकुलप्रतिनादितानि

(ऋतुसंहार, 3/14)

मिथिला छोड़ि आनठाम कतऽ पाबी?

महाकविक प्रकृति चित्रण अद्‌भुत अछि। हम एकर साहित्यिक सौन्दर्य वा विलक्षण स्वरूपपर नहि जायब। महाकविक जे भाव हुनकर मैथिलत्वपर इजोत दैत अछि ओहन किछु भाव सभक चर्च करब।

महाकवि गंगाजीक वर्णन करैत छथि। एहिमे महाकवि बिहारक दू छोट स्थान सभक वर्णन करैत छथि—

प्रत्यग्रहीत्पार्थिववाहिनीं तां भागीरथीं शोण इवोत्तरङ्ग।।(5/36) एवं
तीर्थे तोयव्यतिकरभवे जह्नुकन्यासरय्वोर्देहत्यगादमरगणनालेख्यमासाद्य सद्य: (8/95),

एहि ठाम अजकेँ महाकवि प्रतिपक्षी राजा सभक बाढ़िकेँ समक्ष सोन नदीक उत्ताल तरंग जकाँ चित्रित कएने छथि जे गंगाजीक प्रबल धारा तककेँ रोकि लैत अछि। गज-ग्राह युद्धमे श्रीहरिक पावन चरणसँ पवित्र भेल भगवान् विष्णुक प्राकट्य स्थली सोनपुरकेँ उच्च गरिमा दैत महाकवि अपन जन्मस्थान क्षेत्रक लेल अधिमान प्रकट करैत छथि। एहिना दोसर पदमे महाकवि कहैत छथि जे एहि ठाम प्राणत्याग कएलासँ अज तत्काल देवता बनि आर बेसी सुखभोग करैत छथि। ई दुनू वर्णन महाकविक अपन क्षेत्रक लेल अतिरिक्त नेह केर प्रकटन अछि।

मेघदूतम् मे महाकवि किछु एहन संकेत कयने छथि जे ओ अन्यत्र प्रवासी रहितो अपन मातृभूमिकेँ नहि बिसरि सकलाह। मेघक पथमे यत्र-तत्र महाकवि मिथिलाक संकेत करैत छथि। मेघदूतम् केर शुरूआत सीताक वन्दनासँ होइत अछि।

कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्त:
शापेनाऽस्तङ्ममितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तु:।

यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु
स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु।।1।।

अत्यन्त कुशलतापूर्वक महाकवि सीताक चरण वन्दना, मिथिलेश जनक आ श्रीरामक नामसँ मेघदूत केर श्रीगणेश करैत छथि। जनकसुता सीताक स्नानसँ पवित्र भेल सरोवर आ घनगर छाहरियुक्त गाछ सभसँ सुशोभित रामगिरि आश्रममे कोनो यक्ष कर्तव्यच्युत् भेलापर निर्वासन केर दंड कारणेँ पत्नी वियोगक समय व्यतीत

करबाक लेल अपन आवास बनओलनि। एहि ठाम जनकतनया जानकीक महत्ता स्पष्ट अछि जे स्नानार्थ जानकीक चरणकमलक पोखरिमे प्रवेशक पश्चाते एहि पोखरि केर जल पवित्र भेल। महाकविक जनकतनया जानकीक लेल श्रद्धा आ मात्सर्य भाव केर उच्चताक स्पर्श कयल जाय। मेघदूत केर एहि पाँतीपर विचार कयल जाय—

रत्नच्छायाव्यतिकर इव प्रेक्ष्यमेतत्पुरस्ताद्वल्मीकाग्रात्प्रभवति धनुःखण्डमाखण्डलस्य।
येन श्यामं वपुरतितरां कान्तिमापत्स्यते ते बर्हेणेव स्फुरितरुचिना गोपवेषस्य विष्णोः।।15।।

सूर्यकिरणसँ दमकैत इन्द्रधनुष लगैत अछि जे बहुत रास रत्नरश्मि एकठाम सुशोभित अछि। जखन उधिआइत श्यामल बादल एहि सतरंगी इन्द्रधनुषसँ सटैत अछि तखन लगैत अछि जे मोरमुकुट पहिरने साक्षात् श्रीकृष्ण सुशोभित छथि। प्रकृति चित्रणक एहि अनुपम बिम्ब केर साहित्यिक सौन्दर्यक अनुमान पाठक स्वयं करथि। हम एकर धनुःखण्डमाखण्ड केर व्याख्यासँ अपन लक्ष्य दिशि बढ़ब। सुन्दर इन्द्रधनुष आकाशमे शोभायमान अछि आ श्यामल बादल गतिशील! जखन श्याम वर्ण बादल ओहि इन्द्रधनुषकेँ यत्र-तत्र आवृत करैत अछि तखन इन्द्रधनुष खण्डित होइत अछि। एहन स्थिति अबैत अछि जखन श्यामवर्ण बादल आ इन्द्रधनुष केर खण्ड मिलि माथमे मोरमुकुट पहिरने श्रीकृष्ण लगैत अछि। खंडित सप्तवर्णी इन्द्रधनुष केर भाग मोरपंखक विभिन्न रंगसँ सुशोभित अछि। एहि ठाम कारी बदरी आ खंडित इन्द्रधनुषक उत्प्रेक्षा अपूर्व बनि गेल अछि। खंडित धनुष केर कल्पनासँ महाकवि अपन मातृभूमिक संकेत करैत छथि। सब जनैत छथि जे श्रीराम द्वारा धनुर्भंग कयलाक बादे सीतासँ हुनकर विवाह भेल छल। खंडित धनुषक भाग अखनो मिथिलाक धनुषा (नेपाल)मे विद्यमान अछि। धनुखंडसँ महाकवि अपन मातृभूमि मिथिलाक स्मरण आ वंदन करैत छथि। एहिमे कोनो संशय नहि अछि। एहिना पूर्व मेघक पाँती—

सद्यःसीरोत्कषणसुरभि क्षेत्रमारुह्य मालं
किञ्चित्पश्चाद् व्रज लघुगतिर्भूय एवोत्तरेण।।16।।

यक्ष मेघसँ विनती करैत कहैत अछि जे हऽरसँ तुरन्त जोतल खेतसँ जे सोन्हगर सुरभि बहरा रहल अछि ओहि खेतपर अहाँ अवश्य बरखा करब। हमसब जनैत छी जे सद्यः चासल, समारल आ तेखारल खेतसँ एक अलगे सुगन्ध अबैत अछि आ

जँ ओहिपर एक अछार पानि पड़ि जाय तखन ओ सोन्हगर सुगन्ध अत्यन्त मनोहारी भऽ जाइत अछि। मुदा एहि ठाम महाकविक मात्र एतबे अभिप्राय नहि अछि। एतऽ ई सोन्हगर सुगन्ध सीताक लेल आएल अछि। अनावृष्टिक बाद राजा जनक द्वारा स्वयं पुनौराधाम (सीतामढ़ी)मे हऽर चलएबाक आ एकर फाड़सँ सीताक उत्पत्तिक आख्यानसँ हमसब परिचित छी। सीता यैह सुरभि छथि जिनकर उत्पत्तिक बाद भारी बरखा भेल छल। महाकवि तेँ हऽर चलएबाक क्रिया केर पूर्णता देबाक लेल मेघसँ एक अछार बरसि जयबाक लेल अनुरोध करैत छथि। एतऽ इहो महत्त्वपूर्ण अछि जे राजा जनक केर हऽर चलएबाक कारणेँ हलधर रूपसँ सीताक उत्पत्तिक कथा मिथिला छोड़ि आर कतहु केर प्रसिद्ध नहि अछि। एहन स्थितिमे ई सहज अनुमेय अछि जे एहि चित्रसँ महाकवि अपन गृहभूमि दिशि संकेत कयने छथि। भूमिसँ प्रस्फुटित ई सुरभि सिया सुकुमारी छथि। उल्लेखनीय अछि जे महाकविक जन्मस्थली बेनीपट्टी प्रक्षेत्रसँ सीतामढ़ी, जनकपुर, धनुषा प्रभृति स्थल बहुत दूर नहि अछि मात्र 50 कि. मी. केर परिधिमे अछि। एहन संकेत किएक? निश्चित रूपसँ ई महाकविक अपन मातृभूमि दिशि संकेत अछि। मात्र अभिधेयार्थसँ मेघदूत काव्य केर सम्पूर्ण आनन्द नहि लेल जा सकैत अछि। एहि लेल विशेष दृष्टि अपेक्षित अछि। आनन्द तऽ प्रथम बेर पढ़लापर सेहो अबैत अछि मुदा बेर-बेर मनन कयलासँ जे विशिष्ट भाव प्रकट होइत अछि ओ अनुपम अछि, विलक्षण अछि। तेँ कहल गेल अछि— *मेघे माघे गतं वय:*। अर्थात् मेघदूत आ महाकवि माघक मननमे उम्र गुदश्त भऽ गेल। ई विशिष्ट भाव महाकविक मैथिलत्व केर स्पष्ट संकेत अछि। विस्तार भयसँ मात्र किछु संकेत कएल गेल अछि। एहन अनेक सन्दर्भ उद्घाटित कएल जा सकैछ।

पर्वतराज हिमालय आ मेघ केर मार्गपर किछु विचार करब उचित। महाकवि हिमालयपर बाल्यकालेसँ मुग्ध छलाह। मिथिलासँ हिमालय हुनका समयमे तऽ निश्चित रूपसँ देखाइत रहल होयत। कालान्तरमे प्रदूषण कारणेँ ई आब दृष्टिगोचर नहि होइत अछि। कोरोना कालमे जखन अभूतपूर्व रूपसँ सब किछु बन्द छल आ प्रदूषण बहुत कम भऽ गेल छल तखन अपन गाम सुलतानपुर (दरभंगा)मे छतसँ हम सेहो हिमालयक दर्शन कयने रही। महाकविक समय तऽ ई आर स्पष्ट रहल होयत। महाकविक समय एकर अपूर्व छवि संभव अछि तखन तऽ महाकविक हिनका देवतात्मा आ पृथिव्या इव मानदण्ड: (कु. सं. 1/1) कहने छथि।

हमसब जनैत छी जे पर्वतराज हिमालय भारत केर उत्तरमे अवस्थित अछि। पूरबसँ पश्चिम धरि हिमालय केर लम्बाई लगभग 2400 कि. मी. अछि। पूर्वी हिमालयमे कंचनजंघा (8586 मीटर) सभसँ ऊँच अछि तऽ पश्चिमी हिमालयमे नन्दा देवी (7816 मीटर), के 2 (8613 मीटर) आ सगरमाथा वा एवरेस्ट (8849

मीटर) चोटी अवस्थित अछि। यमद्वार, स्वर्ग, देवनगरी, अलका, कैलास आदिक जे परिकल्पना अछि ओ पश्चिमी हिमालयमे अछि। अलका कुबेरक नगरी छल। पूर्वी हिमालयमे नेपालक अंतिम जिला झापा अछि जेकर काकरभिट्ठामे भारत-नेपाल सीमा अछि। नेपालक उत्तरी भागमे इलाम, पाँचथर आ अंतिम जिला तापलेजुंग अछि। एहि तापलेजुंगक पाथीभारामे पार्वतीक प्राचीन मंदिर अछि। सुञ्सरी जिलाक धरानमे अवस्थित सुप्रसिद्ध दन्तकाली मंदिरे जकाँ पाथीभाराक इहो स्थान एक शक्तिस्थल मानल जाइत अछि। दूर-दूरसँ एहि स्थलक दर्शन करए लोकसभ जुटैत छथि। पूर्ण संभव अछि जे महाकवि अपन आरम्भिक अवस्थामे एकर दर्शन कयने होथि। हिनक रचनामे जे हिमाच्छादित शैल श्रृंगक वर्णन अछि ओहिसँ मिलैत-जुलैत एहि पूर्वी हिमालय केर शोभा अछि। पाथीभारा जिलाक बाद नेपालमे जंगल पहाड़ अछि। पूर्वी हिमालय आ पश्चिमी हिमालय केर भेद जखन समाप्त होइत अछि तखन सम्पूर्ण हिमालय एक होइत अछि आ एकर उपत्यका क्षेत्रमे महाकविक जन्मस्थान अछि। महाकवि जेकर संकेत हिमालय क्षेत्रमे करैत छथि।

महाकवि मेघदूतम् मे रामगिरि, विन्ध्याचल, नर्मदा, दशार्ण देश आ राजधानी विदिशा, वेत्रवती नदी, नीच पहाड़ी, निर्विन्ध्या नदी, अवन्ति देश, विशाला नगरी, वत्सराज उदयन, शिप्रा नदी, उज्जैन, महाराज प्रद्योत, प्रद्योतपुत्री वासवदत्ता, नलगिरि हाथी, महाकाल मन्दिर, गंधवती नदी, गंभीरा नदी, देवगिरि पहाड़, कुमार स्कन्द, चर्मण्वती नदी, राजा रन्तिदेवक आश्रम, दशपुर, ब्रह्मावर्त देश, कुरुक्षेत्र, कौरव-पाण्डव, बलराम, रेवती, सरस्वती नदी, कनखल आश्रम, गोमुख, गंगाजी, हिमालय, शिवजीक पयरक छाप, क्रौञ्च-रन्ध्र, परशुराम, मानसरोवर, स्वर्णिम रंग केर कमल, कैलास, अलकापुरी आदि केर चर्च करैत छथि। दिशा संकेत रूपमे रामगिरि पहाड़ीसँ उत्तर दिशामे जयबाक संकेत अछि। फेर सोझे चलबाक निर्देश अछि। महाकवि जखन किछु पश्चिम घुमि फेर झटपट उत्तर दिशि मेघकेँ बढ़बाक लेल कहैत छथि आ वक्रपंथा होयबाक बादो उज्जैनमे महाकालक दर्शन करबाक लेल कहैत छथि तखन हुनक अभिप्राय यैह अछि जे ओ हमर मातृभूमिक दर्शन करए।

मेघमार्गमे मिथिला, जनक नगरी, उच्चैठ वा अपन गामक प्रत्यक्ष चर्च महाकवि नहि कयने छथि। ई सत्य अछि मुदा पूर्वमे दर्शाओल गेल जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु, सद्यः सीरोत्कषण सुरभि, धनुःखण्डमाखण्डलस्य, शङ्खपद्मौ च दृष्ट्वा आदिसँ जे परोक्ष संकेत महाकवि कयने छथि ओहि सभकेँ नकारल नहि जा सकैछ। इहो विचारणीय अछि जे विदिशा आ उज्जैनक वर्णनमे महाकवि कटगर भौंहवाली कामिनीक अधरपानक स्वाद वेत्रवती नदीक जल समान मीठ कहैत छथि—

तीरोपान्तस्तनितसुभगं पास्यसि स्वादु
यस्मातसभ्रूभङ्गं मुखमिव पयो वेत्रवत्याश्चलोर्मि।।

(पूर्वमेघ, 26),

एतऽ केर रसिक वेश्या सभक संग सम्भोग करैत काल जाहि सुगंधित पदार्थ सभक प्रयोग करैत छथि तेकर महककेँ गुफासँ अयबाक चर्च महाकवि करैत छथि—

यः पण्यस्त्रीरतिपरिमलोद्गारिभिर्नागराणामुद्दामानि प्रथयति शिलावेश्मभिर्यौवनानि।।

(पूर्वमेघ, 27),

एहिना बिजुरीसँ डरि चंचल कटाक्ष (पूर्वमेघ 29), महाकाल मन्दिरमे वेश्या सभक नृत्य आ नखक्षतपर मेघक शीतल फुहार पड़लासँ सुख भेटलापर दीर्घ कटाक्ष केर चित्र—

वेश्यास्त्वत्तो नखपदसुखान्प्राप्य वर्षाग्रबिन्दूनामोक्ष्यन्ते
त्वयि मधुकरश्रेणिदीर्घानकटाक्षान्

(पूर्वमेघ, 39),

हो वा अन्हार रातिमे अभिसार हेतु जाइत अभिसारिका सभक लेल बिजुरी छिटका मार्ग देखएबाक बिम्ब हो—

गच्छन्तीनां रमणवसतिं योषितां तत्र नक्तं
रुद्धालोके नरपतिपथे सूचिभेद्यैस्तमोभिः।

सौदामिन्या कनकनिकषस्निगधया दर्शयोर्वी
तोयोत्सर्गस्तनितमुखरो मा स्म भूर्विक्ल्वास्ताः।।41।।

एवं भिनसरबामे अपन पत्नीक मनुहार करैत आ नोर पोछैत ओहन पति सभक चित्र हो जे पत्नीकेँ एसकर छोड़ि अन्य रमणी संग राति व्यतीत करैत आपस आयल हो (पूर्वमेघ, 43), सभ ठाम रास-रंग, विलास, केलि सम्भोग सभक बाहुल्य अछि। काव्यमे एहिसँ रस आ आनन्द अवश्य निहित भेल मुदा जँ साँच कही तऽ ई अतिरेक तऽ अवश्य थिक। यौवन केर खेल आ चंचल कटाक्ष केर दर्शन भेल आब महाकविक अपन क्षेत्रक स्त्री विषयक वर्णन देखल जाय—

इक्षुच्छाया निषादिन्यस्तस्य गोप्तुर्गुणोदयम्।
आकुमार कथोद्घातं शालिगोप्यो जगुर्यशः ।।20।।

धानक जजाति केर रक्षामे लागल कुसियारक छाहरिमे बैसलि रखवारिन सब अपन राजाक कीर्त्तिगाथाक गीत बना गाबि रहल छथि। एहिना कृषक सभक भोल स्त्री सभ मेघ दिशि आदर आ स्नेहसँ देखैत छथि किएक तऽ हुनका सभकेँ भौंह चला पटिआबऽ नहि अबैत अछि आ खेती तऽ एकमात्र मेघेपर आश्रित रहैछ—

त्वय्यायत्तं कृषिफलमिति भ्रूविलासानभिज्ञैः
प्रीतिस्निग्धैर्जनपदवधू लोचनैः पीयमानः ।16।।

सुधीजन अवगत छथि जे पूर्वमे विवेचित एहि श्लोक केर दोसर पाँती सद्यःसीरोत्कषणसुरभि... केर व्याख्या करैत एकर संबंध मिथिलासँ प्रमाणित कयने छलहुँ। आब महाकविक एहि चातुर्यपर के नहि मुग्ध होयत! अपन जन्मभूमि वा अपन क्षेत्रक स्त्रीगण केर विषयमे एतेक सरल आ निश्छल भाव आ अपन कर्मभूमिक स्त्रीगण विषयक सरस आ उद्दाम यौवनक चित्रसँ महाकविक मनोदशा सरलतासँ जानल जा सकैत अछि। ई मनोवैज्ञानिक तथ्य अछि जे अपन गामक गुप्तकथा सभक विषयमे लोक बाहर नहि बजैत अछि। महाकविक प्रकृति एहिसँ पृथक् नहि रहल होयत तेँ महाकविक कौशल केहन विलक्षण अछि एकर अनुमान कयल जाय। प्रकारान्तरसँ वक्रपंथा एहि लेल भेल अछि। जँ निष्पक्षतापूर्वक मेघ मार्ग केर मूल्यांकन करी तऽ ई कहबामे कोनो दुविधा नहि अछि जे मेघक ई मार्ग एक सीमा धरि नैसर्गिक अछि। पूर्ण रूपसँ ई नैसर्गिक नहि अछि। रामगिरिसँ अलका धरि मार्गमे उत्तर, पश्चिम, उत्तर फेर क्रौञ्च-रन्ध्रसँ उत्तर बढ़बाक संकेत अछि। एक बेर वक्र पथ केर मात्र चर्च अछि।

एतऽ ई महत्त्वपूर्ण अछि जे हिमालय अयलाक बाद स्वाभाविक रूपसँ पूर्वी-पश्चिमी हिमालयक भेद समाप्त भऽ जाइत अछि। महाकवि मेघदूतम् मे मातृभूमि मिथिलाक संकेत अवश्य करैत छथि।

उपर्युक्त विवेचनसँ महाकविक मस्तिष्कमे क्रियाशील मातृभूमि मिथिलाक लेल उद्भूत मनोलय केर कल्पना कएल जा सकैछ। एहि मनोलयमे महाकविक मैथिलत्वक मनोरम चित्र अभरल अछि जेकर संकेत भेल अछि।

रीति-रिवाज व पावनि-तिहारक चर्चमे महाकविक मैथिलत्व

महाकवि कालिदास रीति-रिवाज वा पावनि-तिहारक वर्णनमे मिथिलामे प्रचलित रीति रिवाज आ पावनि-तिहारक विन्दुपर विशेष सचेष्ट रहल छथि। कुमार संभवम् मे धानक लावासँ विवाहक अग्निमे हवन आ बादमे होमधूपकैं सूँघब (7/80,81), विवाह वेदी लऽग जरैत अग्निक धुआँसँ लाल भेल आँखिक वर्णन— विवाह धूमारुण लोचन (रघुवंशम्, 13/28), वर-वधूकैं संग बैसा दुर्वाक्षतसँ आशीर्वाद— लौकिक मेषणीयम् (कुमारसंभवम्, 7/88), नव वर-वधूकैं चतुर्थी तक भूमिपर शयन (7/94), वराह तीर्थक चर्च (8/20), देवोत्थान एकादशीक वर्णन (उत्तर मेघ, 47), राजा रघु द्वारा जलपात्रसँ कौत्स मुनिक सत्कार, ससत्वा शकुन्तलाक विदागरी काल आँचरमे फल देब, पलवलसँ बहराइत सुगर सभक वर्णन आ वप्रक्रीड़ा रत वृषभ केर पंकमग्न सींग (रघुवंशम्, 3/24)सँ हाड़ा- हूड़ी आ सामा चकेबा पावनि-तिहारक चर्च, ग्राम बाला सभक खेतमे गायन, ऋषि कण्वक शकुन्तलाक विदागरी काल कौंढ़ फाटिकैं विह्वल होयब—

वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः
पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुखैर्नवैः

आ *द्वारोपान्ते लिखितवपुषौ शंखपद्मौ च दृष्ट्वा* (उत्तर मेघ, 20) कहि घरपर शंख आ कमलक चित्रसँ घरक पता देब प्रभृति उदाहरण महाकविक मैथिलत्वक अमर उद्घोष करैत अछि। ई सब रीति-रिवाज आ पावनि-तिहार अखनो मैथिल परम्परामे अक्षुण्ण अछि। पंडित बलदेव मिश्र विक्रम पत्रिका केर कालिदास विशेषांक आ *संस्कृत साहित्य में मैथिल विद्वानों का कृतित्व : श्री राम चरित्र अभिनन्दन ग्रंथ*मे महाकवि कालिदास द्वारा वर्णित वैवाहिक विधि आ रीति-रिवाजकैं मैथिल विधि सिद्ध करैत कालिदासकैं स्पष्ट रूपसँ मैथिल प्रमाणित कयने छथि। डॉ. देव

नारायण झा अपन संस्कृत ग्रंथ *संस्कृत सुकवि समीक्षा* (मनीष प्रकाशन, रोहित नगर कालोनी, वाराणसी-5, पृष्ठ 47)मे महाकवि कालिदासक मैथिलत्वक वैदुष्यपूर्ण दिग्दर्शन करओने छथि।

कुमारसंभवम् केर सर्ग सातमे जखन विवाह लेल प्रस्तुत पार्वती श्रृंगारक बाद हाथमे अएना नेने क्षीर सागरक फेनिल लहरि वा सोम सुशोभित शारदीय रात्रि सन सुन्दर लगैत छलीह तखन माता मेना पार्वतीसँ कुलदेवताकेँ प्रणाम करओलाक बाद श्रेष्ठ सभक चरण स्पर्श करबैत छथि—

तामर्चिताभ्य: कुलदेवताभ्य: कुलप्रतिष्ठां प्रणमय्य माता।
अकारयत् कारयितव्यदक्षा क्रमेण पादग्रहणं सतीनाम्।।7/27।।

ई विधि अखनो मिथिलामे प्रचलित अछि। विवाह हेतु श्रृंगार आ जाँट गुहलाक बाद गहनादि पहिरने बेटी उपस्थित सब श्रेष्ठक चरणस्पर्श कऽ आशीर्वाद लैत अछि। श्रेष्ठ सभकेँ बजा बेटीक कुमारि मुह देखएबाक आ बेटी द्वारा प्रणाम करबाक ई दृश्य अखनो मिथिलाक कोनो विवाहमे देखल जा सकैछ। फेर बरियाती देखबाक उत्कंठा (कु.सं., 7/56-64) हो वा महादेवकेँ आसनपर बैसा रत्न, अर्घ्य, मधु, दही आ दू नव वस्त्र देब (कु.सं., 7/72), अग्नि प्रदक्षिणा आ धानक लावाक हवन (कु.सं., 7/80) हो वा वेदीक धुआँसँ लाल भेल लोचन आ मुहपर घामक चुहचूही- तदीषदार्द्रारुणगण्डलेखमुच्छ्वासि (कु.सं., 7/82)क वर्णन हो वा ध्रुव ताराक दर्शन ध्रुवेण भर्त्रा ध्रुवदर्शनाय (कु.सं., 7/85) हो वा लौकिकमेषणीयमार् द्राक्षतारोपणमन्वभूतम् (कु.सं., 7/88)सँ दुर्वाक्षत देबाक रूप हो वा कौतुकागारमे राखल कलश एवं भूमिपर लागल बिछानक वर्णन हो—

कनककलशयुक्तं भक्तिशोभासनाथं
क्षितिविरचितशय्यं कौतुकागारमागात्

(कु.सं., 7/94)

ई सब मिथिलामे अखनो प्रचलित अछि। कोबरा घरमे नगहरमे जल भरल रहैत अछि जाहिसँ चतुर्थी दिन पालोपर बैसा वर-वधूकेँ स्नान कराओल जाइत छैक। मिथिलामे पहिने चतुर्थीक बादे कोबर घरमे पलंग देल जाइत छल। कुमारसंभवम् मे विवाहक बाद महादेव एक मास धरि सासुरमे रहैत छथि—

एवमिन्द्रियसुखस्य वर्त्मन: सेवनादनुग्रहीतमन्मथ:।
शैलराजभवने सहोमया मासमात्रमवसद्वृषध्वज:।।8/20।।

विवाहोपरान्त सासुरमे रहब मात्र मिथिलेमे प्रचलित अछि। आन सब ठाम विवाहोपरान्त बरियाती संगे कनिञाकेँ आनबाक रीति छैक। यद्यपि आब मिथिलासँ सेहो एकर लोप भऽ रहल अछि तथापि ई अखनो मिथिलामे प्रचलित अछि।

एकटा महत्त्वपूर्ण विन्दु अछि विवाहमे फेरा लगएबाक। मिथिलामे मात्र तीन फेरा लगाओल जाइत अछि जखन कि आन ठाम सप्तपदी अर्थात् सात फेरामे सात वचन लेबाक प्रचलन अछि। महाकवि जँ उज्जैनी व आन ठामक रहितथि तखन शिव पार्वतीक विवाहमे सात फेरा लगैत मुदा कुमारसंभवम् मे मात्र तीन फेराक वर्णन अछि—

तौ दम्पती त्रिः परिणीय वह्निमन्योन्यसंस्पर्शनिमीलिताक्षी।
स कारावास वधूं पुरोधास्तस्मन्समिद्धार्चिषि लाजमोक्षम्।।(8/80)

मिथिलामे शिशु सभक अक्षरारम्भ वा भट्ठा धरायब भूमिकेँ नीपि ओहिपर भट्ठासँ लिखा सम्पन्न होइत अछि। रघुवंशम् मे एहन अक्षरारम्भ केर चर्च—

न्यस्ताक्षरामक्षरभूमिकायां कात्स्न्र्येन गृह्णाति लिपिं न यावत्
(रघु.,18/46)

करैत महाकवि अपन मैथिलत्व प्रदर्शित करैत छथि। एहिना शकुन्तलाकेँ पतिगृह जाइत काल किछु दूर जलाशय तक अरियातब—

ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्य इति श्रूयते। तदिदं सरस्तीरम्।
(अभि.शा., चतुर्थ अंक— शाङ्गर्रव केर उक्ति)

आ भ्राता रूपमे शाङ्गर्रव एवं शारद्वत तथा श्रेष्ठा लोकधिन रूपमे गौतमीकेँ शकुन्तला संग हस्तिनापुर जायब सेहो मैथिल परम्पराक निर्वहन अछि। द्विरागमनमे नवकनिञा संग अखनो मिथिलामे भ्राता आ मड़राइन अबिते छैक। मेघदूतम् मे नेना सभक खेल— हाथमे बालु वा धूरामे औंठी, मोरपंख वा अन्य कोनो वस्तु राखि आँखि झाँपि अन्यत्र लऽ जा ओहि धूरामे राखल वस्तु ताकबाक बालक्रीड़ा गुप्तमणि वा गूढ़मणि खेल केर चर्च हो— *अन्वेष्टव्यैः कनकसिकतामुष्टिनिक्षेपगूढ़ैः सङ्क्रीडन्ते मणिभिरमरप्रार्थिता यत्र कन्याः*
(उत्तरमेघ, 6),

घरपर बनल शंख आ पद्म केर चित्रसँ घर चिन्हबाक संकेत- द्वारोपान्ते लिखितवपुषौ शङ्खपद्मौ च दृष्ट्वा (मेघदूतम्, उत्तर मेघ, 20) निदेश हो वा तन्वी श्यामा शिखरिदशना पक्वबिम्बाधरोष्ठी (उत्तर मेघ, 22) अर्थात् तिलकोड़क फऽर जकाँ लाल ठोरसँ प्रियाक अधर केर उपमा हो, ई सब महाकविक मैथिलत्वकेँ परिपुष्ट करैत अछि।

कुमारसंभवम् मे महाकवि महाकोशीप्रपात आ एकरे निकट सप्तर्षि सभक आकाशगंगा स्नान केर उल्लेख करैत छथि—

ते प्रभामण्डलैर्व्योम द्योतयन्तस्तपोधनाः।
सारुन्धतीकाः सपदि प्रादुरासन्पुरः प्रभोः।।6/4

आप्लुतास्तीरमन्दारकुसुमोत्करवीचिषु ।
व्योमगङ्गाप्रवाहेषु दिङ्नागमदगन्धिषु।।6/5

मुक्तायज्ञोपवीतानि बिभ्रतो हैमवल्कलाः।
रत्नाक्षसूत्राः प्रव्रज्यां कल्पवृक्षा इवाश्रिताः।।6/6

अधःप्रस्थापिताश्वेन समावर्जितकेतुना।
सहस्ररश्मिना साक्षात्सप्रणाममुदीक्षिता।।6/7

आसक्तबाहुलतया सार्धमुद्धृतया भुवा।
महावराहदंष्ट्रायां विश्रान्ताः प्रलयापदि।।6/8

मिथिलाक नेपाल क्षेत्रक सुन्सरी जिलाक महावराह क्षेत्र (धरानसँ लगभग 25 किमी उत्तरमे अवस्थित) ऊँच-ऊँच पहाड़ आ मनोहारी हरीतिमाक मध्य अवस्थित अछि। सुरम्य वातावरणमे महावराह क्षेत्रसँ सप्तकोशी (सून कोशी, भोटिया कोशी, ताम्बा कोशी, लिखू कोशी, दूध कोशी, अरुण कोशी आ ताम्बर कोशी) नदीक धार सब निकलैत अछि जे एक भऽ महाकोशी नदी बनि बहैत अछि। पहाड़ सभसँ खसैत कोशी सभक धार विलक्षण दृश्य आ ध्वनि उत्पन्न करैत अछि। नीचासँ देखलापर ई अनुपम दृश्य अखनो आकाशसँ खसैत गंगा जकाँ लगैत अछि। महाकवि एहि

मनोरम दृश्यकेँ देखि एकर उपमा आकाशगंगासँ देलनि। ई तथ्य हिनकर मैथिलत्व दिशि संकेत करैत अछि। हम एहि दृश्यक अनुभव कयने छी आ महाकविक एहि वर्णनसँ ओ अनुपम दृश्य एक बेर फेर आँखिक सोझाँ साकार होइत अछि। एहि क्षेत्रक अपन एक भ्रमणमे एतऽ केर पाथर सभक एक विशेषता लक्षित कयने छलहुँ जे सभक आकार वराह (सुगर) जकाँ अछि। महावराह मन्दिरक आगू एक प्राचीन वराह आकारक चमकैत पाथर राखल अछि। लोक ओकरा उठा वा हिला भगवान् वराहक कृपा प्राप्त करैत छथि। मैथिल रहबाक कारणेँ स्वाभाविक रूपसँ कालिदास सेहो एहि दिव्य उद्गमस्थल केर दर्शन कयने होयताह तेँ ई वर्णन चर्चित आ एतेक स्वाभाविक बनल अछि।

एहने एकटा महत्त्वपूर्ण प्रसंग अछि पार्वतीक अपना हाथसँ माटिक महादेव बना ओकरा वास्तविक महादेव मानि पुछब जे लोक सभ कहैत अछि जे अहाँ सभक मोनक बात जानि लैत छी फेर हमर मोनक बात अहाँ किएक नहि जानै छी आ हमर प्रेमकेँ किएक नहि स्वीकार करैत छी—

यदा बुधैः सर्वोत्तम सर्वगतस्त्वमुच्यसे न वेत्सि भावस्थमिमं कथं जनम्।
इति स्वहस्तोल्लिखितश्च मुग्धया रहस्युपालभ्यत चन्द्रशेखरः।।

(कुमारसंभवम्, 5/58)

मिथिलामे अनादि कालसँ माटिक महादेव बना तरहत्थीपर ओकर पूजन केर परम्परा अछि। जँ *स्वहस्तोल्लिखितश्च*सँ हाथसँ उकेरित महादेवक चित्र केर कल्पना करब तखन प्रश्न उठत जे निर्जन हिमालयमे तपस्या करैत पार्वतीकेँ रंग-कूची आदि चित्र तैयार करबाक सामग्री सब कतऽसँ भेटल होयत! तेँ एकरा माटिक महादेव मानल जयबाक चाही। ई प्रसंग सेहो महाकविक मैथिलत्व दिशि संकेत करैत अछि।

भाषा वैज्ञानिक आधारपर महाकविक मैथिलत्व

महाकवि कालिदास कृत अभिज्ञान शाकुन्तलम् नाटकमे नटी केर भाषा शुद्ध संस्कृत नहि अछि। महाकवि कालिदासक गौरवग्रंथ विक्रमोर्वशीयम् केर चारिम अंकमे प्राकृत-अपभ्रंश मिश्रित 17 पद आ शुद्ध अपभ्रंशक 14 पद भेटैत अछि। नेपथ्यसँ अबैत स्वर, चित्रलेखा आ सखी सहजन्याक वार्त्तालाप वा निम्न कोटिक पात्र सभक भाषा सेहो शुद्ध संस्कृत नहि अछि। कलेवर विस्तार भयसँ विक्रमोर्वशीयम् सँ प्राकृत-अपभ्रंशक मात्र किछु पद उद्धृत करैत छी—

1. विशुद्ध अपभ्रंशक पद :

मइ जाणिअ मिअलोअणि णिसिअरु कोई हरेइ।
जाव णु णवतडसामलि धाराहरू वरिसेई।।4/8।।

जलहर संहर कोपइं आढत्तओ अविरलधारासारदिसामुहकंतओ।
ए मइं पुहविं भमंतो जइ पिअं पेक्खमि तव्वे जं जु करीहिसि तं तु सहीहिमि।।4/11।।

रे रे हंस किं गोइज्जइ गइअणुसारें मइं लक्खिज्जइ।
कइं पइं सिक्खउ ए गइ लालस सा पइं दिट्ठी जहणभरालस।।4/32।।

ऊपर उल्लिखित पद सभक अतिरिक्त पद संख्या 4/14, 4/20, 4/24, 4/36, 4/45, 4/50, 4/53, 4/59, 4/69, 4/72 आ 4/76 सेहो विशुद्ध अपभ्रंशक पद अछि।

(कालिदास ग्रंथावली, संपादक- ब्रह्मानंद त्रिपाठी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, पृष्ठ- 526-49)

2. प्राकृत-अपभ्रंश मिश्रित पद:

पिअसहिविओअविमणा सहिसहिआ व्वाउला समुल्लवइ।
सूरकरफंसविअसिअतामरसे सरवरुच्छंगे।।4/1।।

सहअरिदुक्खालिद्धअं सरवरअम्मि सिणिद्धअं।
वाहोवग्गिअणअणअं तम्मइ हंसीजुअलअं।।4/2।।

पुव्वदिसापवणाहअकल्लोलुग्गअबाहओ
मेहअंगे णच्चइ सललिअं जलणिहिणाहओ।

हंसविहंगमकुंकुम संखकआभरणु
करिमअराउलकसणकमलकुआवरणु ।

वेलासलिलुव्वेल्लिअहत्थदिण्णतालु
ओत्थरइदसदिओत्थरइदसदिसरुंधेविणुणवमेहआलु।।4/54।।

अहिना पद संख्या 4/4, 4/5, 4/6, 4/12, 4/19, 4/23, 4/28, 4/29, 4/35, 4/41, 4/43, 4/48 आ 4/64 प्राकृत-अपभ्रंश मिश्रित पद अछि।

(कालिदास ग्रंथावली, यथा पूर्वोक्त)

एहि पद सभकेँ सब विद्वान् अपभ्रंश मानैत छथि मुदा ई कालिदास रचित पद अछि एहिपर हुनका सभमे मतैक्य नहि अछि। सर्वप्रथम याकोबी (भविसयत् कहा, पृष्ठ-58) सन्देह कयलनि फेर भविसयत् कहा केर भूमिका (पृष्ठ 37)मे पी डी गुणे आ ओकरे भूमिका (पृष्ठ 56-66)मे डा. एस पी पंडित, सुनीति कुमार चटर्जी (द ओरिजिन एण्ड डवलपमेंट ऑफ द बेंगाली लैंग्वेज, पृष्ठ 88) प्रभृति विद्वान् एहि पद सभकेँ अप्रामाणिक मानलनि। विद्वान् सभक दोसर आ पैघ वर्ग एहि पद सभकेँ प्रामाणिक आ कालिदास विरचित मानैत अछि। एहि वर्गमे पंडित भगवद्दत्त (भाषा का इतिहास, पृष्ठ 285), पिशेल (प्राकृत भाषा व्याकरण, पृष्ठ 60), डा. एच डी वेलंकर (विक्रमोर्वशीयम्, पृष्ठ 66 व आगाँ), हीरालाल जैन (णयकुमार चरिउ केर भूमिका, पृष्ठ 25), आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी (हिन्दी साहित्य की भूमिका, पृष्ठ 20), डा. अग्रवाल (कीर्त्तिलता, पृष्ठ 64), डा. देवेन्द्र कुमार शास्त्री (अपभ्रंश प्रकाश, पृष्ठ 28), डा. तगारे (पुरुषार्थ पत्रिका, जून 1942) प्रभृति विद्वान् छथि।

डा. रमाकान्त पाठक केर प्रेरणा आ निर्देशनमे तैयार शोधग्रंथ *मिथिलापभ्रंश के आकर स्रोत* (डॉ. रामचन्द्र ठाकुर)मे आ *हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में मिथिला का योगदान* (डॉ. रंगनाथ दिवाकर)मे एहि पद सभक विस्तृत समीक्षा करैत महाकवि कालिदासकेँ भाषिक आधारपर मैथिल प्रमाणित कयल गेल अछि।

एहि पद सभक भाषिक प्रवृत्ति स्पष्ट रूपसँ पूर्वी अछि। संक्षिप्त संकेत मात्र कयल जा रहल अछि। जेना—

1. 'क्ष' केर 'क्ख'मे विकास— मिथिलापभ्रंशक विशेषता अछि। वर्ण रत्नाकर आ कीर्त्तिलतामे यैह प्रवृत्ति अछि। जेना विचक्षणा > वियक्खनि, द्राक्षा > दाख आदि।

2. 'ए' आ 'ओ' केर ह्रस्व उच्चारण— पूर्वी अपभ्रंशक ई निजी विशेषता अछि अपवादेमे दीर्घ उच्चारण भेटत। पश्चिमी अपभ्रंशमे 'ए' आ 'ओ' केर ह्रस्व उच्चारण अपवादेमे भेटत। विक्रमोर्वशीयम् मे को (4/11), गीए हिं, तूरंहि (4/12), कारणं (4/17) काणणं (4/35) आदिमे ए एवं ओ केर ह्रस्व उच्चारण प्राप्त होइत अछि। उक्तिव्यक्ति प्रकरण, वर्णरत्नाकर आ कीर्त्ति ग्रंथमे सर्वत्र यैह प्रयोग स्वीकृत अछि।

3. करण कारकमे निरनुनासिक 'ए' विभक्ति— पूर्वी अपभ्रंशमे 'ए' विभक्ति निरनुनासिक होइत अछि जखन कि पश्चिमी अपभ्रंशमे एहिमे अनुनासिकता अनिवार्य रहैत अछि। विक्रमोर्वशीयम् केर एहि पद सभमे एकर पालन भेल अछि। मिअंक सरिसे वअणे (4/20)- मृगांक सदृशेन वदनेन आदि।

4. संबंध परसर्ग 'क'— मिथिलापभ्रंशक निजी विशेषता अछि जेना संखकआभरणु (4/54)क टीका शंखकृताभरण कयलासँ अर्थमे विप्रतिपत्ति नहि अबैछ।

5. लोकगीतक टेक केर प्रयोग— विवेच्य पदमे 'ओ' केर प्रयोग टेक रूपमे भेल अछि। मिथिलाक सोहर, चैतावर, स्वयंवर, विरहा, बटगवनी, बारहमासा प्रभृति लोकगीतमे अद्यतन 'ओ', 'यौ', 'रे', 'ए','हो', 'जान' आदिक प्रयोग टेक रूपमे होइत अछि। यैह 'ओ' मात्रा वृद्धि वा श्रुतिक कारणेँ 'यो', 'यौ' रूपमे मैथिली लोकगीतमे आयल अछि—

चैत हे सखी फूलल बेली भ्रमर लेल निज वास यौ।

***

तेजि मोहन गेल मधुपुर हमर कोन अपराध यौ।

***

कथी लै देव देवालय भक्ति अराधल रे।

***

आजु जनकपुर मंगल भूप सब आयल हे।

***

उत्तर बनिज सँ एलै खोदापारनी रे जाँन।

***

बारह वरख पर भैया अयला मेहमानवाँ ए जान।

विक्रमोर्वशीयम् केर विवेच्य पद सभ सेहो लोकगीते रूपमे प्रयुक्त अछि। उपर्युक्त संक्षिप्त विचारण विक्रमोर्वशीयम् केर एहि पद सभकेँ पूर्वी वा मिथिलापभ्रंश प्रमाणित करबाक लेल यथेष्ट अछि। जेना सुप्तावस्थामे सहसा चोट लगलापर चौंकिकेँ उठैत मनुक्खक प्रथम स्वर 'माय' होइत अछि तहिना विक्षिप्तावस्थामे प्रलाप मातृवाणीए मात्रमे होइत अछि। उर्वशीक विरहमे पुरूरवा चेतन-अचेतन केर भेद बिसरि संज्ञाशून्य भऽ मोर, कोयल, चक्रवाक, हाथी, पर्वत, मृग, लतादिसँ उर्वशीक पता पुछैत छथि। एहने अवस्थामे मेघदूतम् केर यक्ष सेहो चेतन-अचेतनक भेद बिसरि जाइत छथि। भवभूतिक राम सेहो एहन अवस्थामे शिला, लतादिसँ सीताक सुधि एहि मार्मिकतासँ पुछैत छथि जे पाथरक करेजा फाटि जाइत अछि— अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्। एहने मर्मन्तुद अवस्थामे तुलसीक राम लता सभसँ 'तुम देखी सीता मृगनयनी' कहि सीताक पता पुछैत छथि। एहन भावुक दृश्यमे जँ पुरूरवाकेँ संस्कृत आ अपभ्रंशक भेद ध्यानमे नहि रहल तऽ ई महाकविकेँ अवसरानुकूल भाषा प्रयोगक असाधारण उच्चता मानल जयबाक चाही। भाव केर तादात्म्यक एहन उच्चताक स्पर्श कालिदास, भवभूति, तुलसी प्रभृति विरल रचनाकारे करैत छथि। विस्तृत अध्ययनक लेल डा. रामचन्द्र ठाकुर केर पोथी 'मिथिलापभ्रंश के आकर स्रोत' आ प्रस्तुत लेखक केर 'हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में मिथिला का योगदान' केर अवलोकन कयल जा सकैत अछि जाहिमे एहि विषयपर विस्तृत विचार करैत भाषा वैज्ञानिक दृष्टिसँ महाकवि कालिदासक मैथिलत्व प्रमाणित कयल गेल अछि।

वस्तुतः ई मिथिलांचल केर सौभाग्य अछि जे मिथिलापभ्रंशक आदिकवि कालिदास आ अंतिम कवि विद्यापति दुनू एहि मिथिला धरतीक वरद् पुत्र छलाह।

राजस्व अभिलेखक आधारपर महाकविक मैथिलत्व

महाकवि कालिदासकेँ कथित रूपसँ अपन कहयवला हर क्षेत्र तखन मौन भऽ जाइत अछि जखन उच्चैठ (थाना संख्या 89)क साबिक सर्वेमे कालिदासडीह नामसँ खाता भेटैत अछि। ई विवरणी निम्नांकित अछि—

मौजे- उच्चैठ, थाना नं. 89, थाना- बेनीपट्टी, जिला- दरभंगा

खाता	***खेसरा***	***रकबा***
231	*883*	*1-9-2*
	885	*1-3-17*
192	*880*	*1-0-8*

राजस्व अभिलेख केर कैफियतमे अंकित अछि— कालिदास डीह। लगभग दू सय वर्षसँ बेसी पुरान एहि राजस्व अभिलेख केर तोड़ भारतवर्षक कोनो क्षेत्रक हाथमे नहि अछि। हाल राजस्व खतियानमे ई प्रविष्टि निम्न प्रकारसँ अछि—

खाता	***खेसरा***	***रकबा***
494	*2138*	*12 डिस्मिल*
	2139	*26 डिस्मिल*

महाकवि कालिदास समिति स्थान-उच्चैठ

खाता	***खेसरा***	***रकबा***
497	*2137*	*1 एकड़ 1 डिस्मिल*

अनाबाद बिहार सरकार गढ़ कालिदास डीह।

एहिमेसँ किछु जमीन लोक अपना नामसँ वन्दोवस्त करा नेने छथि मुदा अधिकांश भाग ओहिना अक्षुण्ण अछि। आजुक सरकारी आ सार्वजनिक भूमि कब्जा करबाक प्रतिस्पर्धामे सेहो ई भूमि बाँचल अछि। कालिदास डीह एक ऊँचगर टीला जकाँ अछि जेकरा पूर्व अनुमंडल पदाधिकारी, बेनीपट्टी रघुनाथ पहाड़पुरीजी कंक्रीट केर विभिन्न मूर्त्ति आ फलकसँ सुशोभित करा देलनि। परोपट्टाक लोकमे एहि भूमिक लेल अशेष श्रद्धा अछि। एहि डीह केर माटिसँ भट्ठा बना लोक अपन नेना सभक अक्षरारम्भ करबैत छथि। सम्पूर्ण मिथिला (नेपाल सहित)मे ई डीह अत्यन्त प्रशस्त अछि।

भारतवर्षक कोनो राज्य, क्षेत्र वा नगरक पुरान राजस्व अभिलेख वा साबिक सर्वेमे एक बित्ता जमीन महाकवि कालिदासक नामपर कतहु नहि छल आ ने अखनो अछि। एहि क्षेत्रमे साबिक सर्वे 1896 ई.मे भेल छल। 1904ई. मे सर्वे खतियान पूर्णरूपेण तैयार भऽ गेल छल। प्राचीन राजस्व अभिलेखसँ समर्थित मिथिलाक उच्चैठ गामक दावीक आगू आन सभ क्षेत्रक दावी निर्मूल भऽ जाइत अछि।

कालिदासकेँ मैथिल प्रमाणित करबामे पं. आद्याचरण झा, पं. जीवनाथ झा, पं. जयमन्त मिश्र (किं कालिदासो मिथिलावासी?), पं. बलदेव मिश्र, पं. लक्ष्मण झा, पं. दिगम्बर झा प्रभृति मनीषी सभक नाम श्रद्धा सहित लेल जाइत अछि। अपन ग्रंथ द्वय— 'महाकवि कालिदास: कहाँ और कब' आ 'Kalidas : A Heritage of Mithila'मे शोध विद्वान् वरेण्य पं. लक्ष्मण झा विस्तार पूर्वक कालिदाससँ जुड़ल तथ्य सभक मीमांसा करैत महाकवि कालिदासकेँ मिथिलाक वरद् पुत्र प्रमाणित कयलनि। ओ उच्चैठक प्राचीन नाम अचमितपुर कहैत छथि। पं.लक्ष्मण झा अपन ग्रंथमे कालिदासक भगैत सभक उल्लेख करैत छथि। पं. झा लोकगाथामे कालिदासक मैथिलत्व प्रशस्त करैत छथि मुदा हमरा जनैत ई भगैत ज्योति पजियारक पौत्र आ कारिख पजियारक पुत्र भगत कालिदास पजियारक थिक महाकवि कलिदासक नहि! पं. दिगम्बर झा अपन दीर्घकाय ग्रंथ *मिथिला एवं कालिदास* (कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा) मे विस्तारपूर्वक महाकविक मैथिलत्व प्रमाणित कयने छथि। आनो आन विद्वान् सब एहि तथ्यकेँ परिपुष्ट करैत छथि।

इतिहास आ साहित्यक अनुशीलनसँ महाकविक मैथिलत्व

इतिहासक अनुशीलनसँ कालिदासक विषयमे बहुत रास जानकारी भेटैत अछि। सर्वप्रथम महाकविक इतिहास बोधपर एक लघु टिप्पणीसँ यात्रा शुरू करब।

ई सत्य अछि जे महाकविक इतिहास बोध गम्भीर अछि मुदा महाकविक ऐतिह्य वर्णनमे कतेक ठाम विचलन सेहो आएल अछि। जेना एकठाम महाकवि इन्दुमतीक स्वयंवरमे मथुराक राजा सुषेणक उपस्थिति (रघु.6/45)क चर्च करैत छथि आ दोसर ठाम कहैत छथि जे मधुरा वा मथुराकेँ अज केर पौत्र शत्रुघ्न बसओलनि— *निर्ममे निर्ममोऽर्थेषु मथुरां मधुराकृतिः*(15/28)। एहिना अज केर *समय लङ्केश्वरेणोषितमाप्रासादात्* (6/40) लंकेश रावण केर चर्च वा इन्दुमतीक स्वयंवरमे लङ्काधिपतिः प्रतस्थे (6/62)सँ रावण केर चर्चसँ कालदोष उपस्थित भऽ जाइत अछि। एहिना अभिज्ञान शाकुन्तलम् मे मातलि केर संवाद— *अस्ति कालनेमिप्रसूतिर्दुजयो नाम दानवगणः* (अंक 6)सँ स्पष्ट अछि जे कालनेमि पुत्र दुर्जय छथि। एहि कालनेमिकेँ अभिज्ञान शाकुन्तलम् (7/3)मे दुष्यन्त मारैत छथि आ रघुवंशम् मे रामपुत्र कुशक हाथसँ दुर्जय केर वध एवं एहि युद्धमे कुशक वीरगति— *जघान समरे दैत्यं दुर्जयं तेन चावधि* (17/5) प्राप्त करबाक चर्चसँ सूक्ष्म इतिहास दृष्टिमे व्यवधान अबैत अछि। तथापि सामान्य रूपसँ महाकविक इतिहास ज्ञान स्तरीय अछि। सहस्राधिक प्रसंगमे एक-आध प्रसंगक इतिहास दृष्टिसँ विचलनपर हुनक ऐतिह्य ज्ञानपर प्रश्न ठाढ़ करब उचित नहि।

मालविकाग्निमित्रम् मे महाकविक इतिहास बोध कतेक इतिहासकार सभक लेल मार्गदर्शक भेल। सुखद आश्चर्य तखन होइत अछि जखन महाकविक रचनामे वर्णित शिव विषयक भाव ओहिना शिवपुराणमे उल्लिखित भेटैत अछि। पुराण बहुत सीमा धरि भारतवर्षक आदि इतिहासे थिक। एहिसँ महाकविक इतिहास बोध केर एक आकलन अवश्य कयल जा सकैछ।

आगू विभिन्न अध्यायमे साहित्य आ इतिहासक अनुशीलनसँ महाकविक मैथिलत्वपर विचार करब।

महाकवि कालिदास आ सीताक चरित्र-चित्रण

रघुवंशम् मे सीताक चरित्र-चित्रण अद्भुत अछि। एहि तथ्यपर सुधी विद्वान् सभक दृष्टि किएक नहि पड़ल ई आश्चर्यजनक अवश्य अछि। महाकवि सीताक चरित्र-चित्रणमे ओहिना साकांक्ष छथि जेना कोइ पिता अपन पुत्री वा कोनो भाए अपन बहिन विषयक वर्णन करैत काल गरिमापूर्ण रहैत छथि। रघुवंशम् मे सीताक कतहु उद्दाम श्रृंगारक वर्णन नहि अछि। एहि ग्रंथमे महाकवि सीताक चरित्रक शुचिता, विशालता, प्रगल्भता, अनन्य पति परायणता प्रभृति गुण सभक बेसीसँ बेसी वर्णन करैत छथि आ हुनक रूप-सौन्दर्य आ केलि केर कमसँ कम। संक्षिप्त वर्णन देखल जाय।

यद्यपि कैकेयी रामसँ राजलक्ष्मी हटा देलनि तथापि रामक पाछू चलैत सीता ओहिना शोभित छथि जेना गुण केर पाछू चलैत साक्षात् लक्ष्मी—

बभौ तमनुगच्छन्ती विदेहाधिपते: सुता।
प्रतिषिद्धाऽपि कैकेय्या लक्ष्मीरिव गुणोन्मुखी:।।(12/26)

हनुमान द्वारा सीताक सुधि लेलाक बाद जखन सीताक द्वारा देल चूड़ामणि रामकेँ देल जाइत अछि तखन राम आनन्द-विभोर होइत छथि जेना स्तन स्पर्श नहि स्वयं सीता शरीरसँ सटि गेलि हो—

अपयोधरसंसर्गां प्रियालिङ्गननिर्वृतिम्(12/65)

लंकासँ आपसी काल समुद्रक सौन्दर्य वर्णन करैत राम कहैत छथि— हे सुनयनी! समुद्र तट केर वायु अहाँक मुखपर केतकी केर पराग पसारि रहल अछि जेना

ओकरा पता नहि हो जे हम अहाँक अधरपानक लेल धरफराएल छी आ आर कोनो शृंगारक प्रतीक्षा नहि करब—

वेलानिलः केतकरेणुभिस्ते सम्भावयत्याननमायताक्षि!
मामक्षमं मण्डनकालहानेर्वेत्तीव बिम्बाधरबद्धतृष्णम्।।(13/16)

आगू सीताकेँ महाकवि हाथीक सूँड सन जाँघवाली मृगनयनी कहलनि—

कुरुष्व तावत्करभोरु! पश्चान्मार्गे मृगप्रेक्षिणी(13/18)

सीता शृंगार सन्दर्भित मात्र एतबे पद अछि जखन कि आन सभक उत्कट शृंगार प्रदर्शित अछि। सीताक वर्णनमे उद्दाम शृंगार, रति-रमण वा सहवास-सम्भोगक वर्णन नहि आयल अछि मुदा आन राजा-रानी विषयक एहन बहुत रास प्रसंग वर्णित अछि।

रघुवंशम् मे ऋतुस्नानक बाद सुदक्षिणाकेँ देखि दिलीपक ई सोचब जे जँ अखन सम्भोग नहि करब तऽ गृहस्थी गड़बड़ा जाएत आ एहि फेरमे कल्पवृक्षक छाहरिमे बैसलि कामधेनुक उपेक्षा भऽ गेल—

धर्मलोपभयाद्राज्ञीमृतुस्नातामिमां स्मरन्
प्रदक्षिणक्रियार्हायांतस्यां त्वं साधु नाचरः।(1/76)

देवदारक पादपकेँ पार्वतीजीक सोनाक कलश सन स्तनसँ दुग्धपिया पोसबाक बात—

यो हेमकुम्भस्तननिः सृतानां स्कन्दस्य मातुः पयसां रसज्ञः(2/36)

हो, इन्दुमतीकेँ केराक थम्ब समान जाँघवाली—

अनेन यूना सह पार्थिवेन रम्भोरु! (6/34)

कहब, इन्दुमतीकेँ गहीँर नाभिवाली— *तमावर्तमनोज्ञनाभिः* (6/52) कहब, मथुरा नरेश सुषेणक जलविहारमे रानीक स्तनपर लागल चन्दनकेँ यमुना जलमे मिज्झर भेलाक बाद मथुरामे गंगा-यमुना संगम केर दृश्य उपस्थित होयबाक चर्च हो—

यस्यावरोधस्तनचन्दनानां प्रक्षालनाद्वारिविहारकाले।
कलिन्दकन्या मथुरां गताऽपि गङ्गोर्मिसंसक्तजलेव भाति।(6/48)

गर्भिणी सुदक्षिणाक कारी भेल घुन्डी युक्त स्तनक शोभासँ कमलयुगलपर बैसल भ्रमरक शोभाक पराजय केर चित्र—

दिनेषु गच्छत्सु नितान्तपीवरं तदीयमानीलमुखं स्तनद्वयम्।
तिरश्चकार भ्रमराभिलीनयो: सुजातयो: पङ्कजकोशयो: श्रियम्।।(3/8)

हो, सर्वत्र शृंगार प्रदर्शित अछि। राजा कुश आ रानी सभक सरयू विहारक वर्णन बेसी उत्कट अछि। अग्निवर्णक केलि-वर्णनमे तऽ जेना सभटा सीमा वा वर्जना ध्वस्त भऽ गेल हो। ओ नर्तकी, दासी स्त्री, सेवक सभक स्त्री संग सम्भोग करैत छथि। रघुवंशम् मे एहन मांसल केलि वर्णन अद्‌भुत अछि। विस्तार भयसँ मात्र दू उदाहरण प्रस्तुत अछि—

तस्य निर्दयरतिश्रमालसा: कण्ठसूत्रमपदिश्य योषित:।
अध्यशेरत बृहद्‌भुजान्तरं पीवरस्तनविलुप्त चन्दनम्।।(21/32)

निर्दय रतिश्रमसँ अलसायल स्त्री अपन वृहत् पयोधरसँ राजाक छातीक चन्दन पोछैत एना सूति रहैत छथि जेना सम्भोगक कण्ठसूत्र आसनमे लीन हो। एकटा आर केलि वर्णन —

तं पयोधरनिषिक्तचन्दनैर्मौक्तिकग्रथितचारुभूषणै:।
ग्रीष्मवेषविधिभि: सिषेविरे श्रोणिलम्बिमणिमेखलै: प्रिया:।।(21/45)

ग्रीष्म कालमे स्तनपर चन्दन लेपि मोतीक माला पहिरि नितम्बपर मणिजटित करधनीक आभूषणसँ सजल ओ रमणी सभ सम्भोगसँ राजाकेँ प्रसन्न कऽ दैत छलीह।

एहन केलि-वर्णन प्रसंग राम-सीता संग सेहो संभव छल मुदा महाकवि अपन मैथिलत्वक कारणेँ मैथिली सीताक प्रति विशेष अनुराग आ आदर भावसँ

शृंगारकेँ गरिमामय आवरण देने रहलाह। सीता-राम रमण केर चर्च करैत महाकवि कहैत छथि—

स पौरकार्याणि समीक्ष्य काले रेमे विदेहाधिपतेर्दुहित्रा।
उपस्थितश्चारु वपुस्तदीयं कृत्वोपभोगोत्सुकयेव लक्ष्म्या।।

तयोर्यथाप्रार्थितमिन्द्रियार्थानासेदुषोः सद्मसु चित्रवत्सु।
प्राप्तानि दुःखान्यपि दण्डकेषु सञ्चिन्त्यमानानि सुखान्यभूवन्।।(14/24-25)

सीता-रामक रमण केर गरिमापूर्ण चित्रण करैत महाकवि कहैत छथि जे सही समयसँ समाज संबंधित सब राज-काज निबटा राम सीता संग रमण करैत छलाह। ई ओहिना लगैत अछि जेना स्वयं राज्यलक्ष्मी राम संग रमण केर इच्छासँ सीताक सुन्दर रूप धारण कयने हो। दुनू ओहि भवनमे इच्छानुसार भोग-विलास करैत छलाह जाहिमे वनवासकालीन चित्र टाँगल छल। ओहि चित्रकेँ देखि दण्डकारण्यक कष्ट सभक स्मरण भेलाक बादो सुख भेटैत छल। सीता गर्भिणी कालमे *'कृशाङ्गयष्टिं वर्णान्तराक्रान्तपयोधराग्राम्'* होइत छथि जे पूर्णतः स्वाभाविक वर्णन अछि। एहिमे गर्भक लक्षण केर संकेत मात्र अछि। मात्र दू श्लोकमे सीताक केलि केर वर्णन आ ओहूमे एकमे राज्यलक्ष्मी आ दोसरमे दण्डकारण्यक चित्र केर परिकल्पनासँ महाकवि की कहऽ चाहैत छथि, ई सहज अनुमेय अछि। जँ महाकवि मैथिल नहि आ सीता मैथिली नहि रहितथि तखन एहि रमणमे एक बेर फेर कविता कामिनीक कुच आ कंचनजंघा अनावृत भेल रहैत, श्लील-अश्लीलक प्रश्न जुआयल गहुमन सर्प जकाँ ठाढ़ भेल रहैत, उद्दाम शृंगारक नव प्रतिमान गढ़ल गेल रहैत, काव्यक ब्रह्मानन्द सहोदर सरिपहुँ चरम आनन्दक अभिनव आस्वादनक वाहिका भेल रहैत। एना किएक भेल एहि कारणक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण आह्लादकारी अछि। प्रथम कारण तऽ स्पष्ट अछि जे मिथिलाक सर्वकालिक सर्वश्रेष्ठ सुता सीता प्रसंगे तमाम मैथिल गर्वित छथि। प्रत्येक मैथिलक मानसमे माता मैथिली स्नेह, आदर, श्रद्धाक अलग-अलग रूपमे विद्यमान छथि। किनको मोनमे सीता माता, किनको मानसमे अनुजा-अग्रजा, किनको दृष्टिमे पुत्री, किनको हृदयमे मात्र प्रेरक प्रकाशपुंज, किनको लेल मिथिला मात्र केर गौरव तऽ किनको अन्तसमे साक्षात् जगदम्बा रूपमे विराजमान छथि। प्रत्येक मिथिलावासी सीताक प्रति जे अपनत्व आ अतिरिक्त अनुरागक अनुभूति करैत अछि से अनुपम अछि। अपनत्वक यैह अनुपम भाव महाकवि कालिदासकेँ राम-सीता केलि-वर्णन कालमे नियंत्रित राखलक। अपन बहिन वा बेटीक उत्कट केलि-वर्णन के करए चाहत?

दोसरो कारण एहि भावभित्तिपर आश्रित अछि। रघुवंशम् मे जतेक रानी सभक वर्णन अछि ओहिमे सीता सभसँ अलग छथि। ओ जगदम्बा स्वरूप छथि। ओना महाकवि हुनक एहि स्वरूपक वर्णन नहि करैत छथि मुदा आन सहज मानवीय गुण सभक उत्कर्षक दिग्दर्शन अवश्य करबैत छथि। सीताक एहने उदात्त चरित्र-वर्णन महाकविक अभीष्ट छल जे जँ नग्न केलि सभक वर्णन भेल रहैत तऽ ओ बादमे उदात्त चरित्र-वर्णन काल अनसोहाँत लगैत, एहि कारणेँ सेहो महाकवि राम-सीताक केलि-वर्णनकेँ गरिमामय राखलनि। मुदा एकर सभसँ पैघ कारण अछि महाकवि कालिदासक सुच्चा मैथिल होयब।

सीताक चरित्र तऽ महाकवि एहने रचलनि जे सीता अशोकवाटिकामे रामक मायावी मस्तक देखि मूर्च्छित भेलीह। फेर त्रिजटा द्वारा मस्तक रहस्य उद्घाटित कयलापर हुनक शोक तऽ दूर भेल मुदा एहि बातक लज्जा रहबे कयल जे पतिक मृत्युक समाचार भेटलाक बादो ओ जीवित कोना रहि गेलीह—

कामं जीवति मे नाथ! इति सा विजहौ शूचम्।
प्राङ्मत्वा सत्यमस्यान्तं जीविताऽस्मीति लज्जिता।।(12/75)

लंकासँ घुरलाक बाद जखन कौशल्या आ सुमित्रा अपन वीरवर पुत्रद्वय केर देहपर अरि दलक शस्त्रसँ लागल घाव केर निशान स्थलकेँ हँसोथैत भाव-विह्वल भेलीह जेना ओ घाव अखनो ताजा हो, एहि समय ओतए जानकी अबैत छथि आ स्वर्गवासी ससुरक दुनू रानीक एकसमान भक्तिपूर्वक चरण-स्पर्श करैत सीता कहैत छथि जे अपन पतिकेँ कष्ट दिएनिहारि हमही कुलक्षणा सीता छी—

क्लेशावहा भर्तुरलक्षणाऽहं सीतेति नाम स्वमुदीरयन्ती।
स्वर्गप्रतिष्ठस्य गुरोर्महिष्यावभक्तिभेदेन वधूर्ववन्दे।।(14/5)

तखन भाव-गंगाक प्रवाह अद्भुत भऽ जाइत अछि। जखन पयरपर खसलि सीताकेँ उठबैत दुनू रानी कहैत छथि जे उठू पुत्री! अहाँक शुचिता आ पतिव्रताक बलसँ राम-लक्ष्मण एहि भारी संकटसँ पार पओलनि तखन तऽ जेना सीता, कौशल्या आ सुमित्राक भाव-त्रिवेणी रसोत्कर्षक अप्रतिम उदाहरण बनि जाइत अछि—

उत्तिष्ठ वत्से! ननु सानुजोऽसौ वृत्तेन भर्ता शुचिना तवेव।
कृच्छ्रं महत्तीर्ण इति प्रियार्हां तामूचतुस्ते प्रियमप्यमिथ्या।।(14/6)

महत्त्वहीन जनप्रवादपर ससत्वा सीताक परित्याग रामक धवल चरित्रपर करिखा जकाँ अछि। राम-काव्य-परम्पराक विद्वान् लोकनि एकर व्याख्यामे विभिन्न तर्क दैत छथि। जनमत केर सम्मान, राम राज्यमे मर्यादापुरुषोत्तम रामक विवशता, शील-शक्ति-सौन्दर्य समन्वित श्रीरामक स्वरूपमे समदर्शी, न्यायप्रियता आ त्यागी रूप केर समावेश आदि आदि। भले ई सभ विशेषण तगमा बनि श्रीरामक चरित्रकेँ सुशोभित कयने हो मुदा ई तर्क-तरकश एकमात्र प्रश्न, जे सीतासँ बिनु किछु पुछने वा बिनु हुनकर पक्ष जानबाक जिज्ञासा कयने छलपूर्वक सीताकेँ वन कोना पठा देल गेल, सँ रिक्त भऽ जाइत अछि। शम्बूक वध आ सीता परित्याग रामक विराट् आ विरल व्यक्तित्वक श्वेत आभापर करिखाक रेख अवश्य अछि, हुनक न्यायप्रियतापर प्रश्नचिह्न अवश्य लगबैत अछि।

इहो महत्त्वपूर्ण तथ्य अछि जे सीता परित्यागक एहि वर्णनमे तऽ महाकवि अपन मैथिलत्व नुकाओ नहि सकलाह। सीता केलि-वर्णनमे तऽ महाकविक प्रच्छन्न मैथिल स्वरूप सोझाँ अबैत अछि मुदा सीता परित्याग वर्णनमे तऽ ओ स्पष्ट रूपसँ वाल्मीकि रूपमे सोझाँ आबि जाइत छथि। लक्ष्मण केर मुखसँ श्रीराम द्वारा अपन परित्यागक कथा सुनि सीता विचलित होइत छथि, विह्वल होइत छथि, कुररी जकाँ कनैत छथि। परित्याग कालक सीताक क्रन्दन् वा सीता-लक्ष्मण संवाद 'हमर अभाग हुनक नहि दोष'क भाव अवश्य रखैत अछि मुदा सीता एहि अन्यायकेँ चुपचाप स्वीकार नहि करैत छथि। ओ रामक यशस्वी कुलपर प्रश्न-चिह्न ठाढ़ करैत छथि—

वाच्यस्त्वया मद्वचनात्स राजा वह्नौ विशुद्धामपि यत्समक्षम्।
मां लोकवादश्रवणादहासीः श्रुतस्य किं तत्सदृशं कुलस्य।।(14/61)

अहाँ राजाकेँ हमर वाणीमे पुछबनि जे जखन ओ अपने सोझाँमे अग्निपरीक्षामे हमरा विशुद्ध पओने छलाह तखन मात्र लोकापवाद सुनि अपयशक भयसँ हमर परित्याग कयलनि, से कृत्य की हुनक प्रसिद्ध कुलक अनुरूप थिक? ई प्रश्न चिह्न उपस्थित करब अत्यन्त साहस केर बात अछि। कहाँ श्रीरामक हिमाद्रि तुंग शृंग विराट् व्यक्तित्व, कहाँ लंकेश सन प्रतापी दशानन विजेता दशरथनन्दन, कहाँ चक्रवर्ती सम्राट् अयोध्यानाथ रघुनाथ, कहाँ लक्ष्मण-भरत- शत्रुघ्न सन वीरवर भ्राताक अग्रज सर्वशक्तिमान रघुनन्दन, कहाँ अंगद-सुग्रीव- हनुमान सन महाबली सभक शील-शक्ति-सौन्दर्य समन्वित स्वामी श्रीराम आ कहाँ भयंकर जन्तु सभक

क्षेत्र निर्जन वनमे ठाढ़ि एसकर, असहाय, अस्वस्थ, अबला, गर्भिणी, परित्यक्ता पवित्र मैथिली! एहन विषमताक बादो प्रश्न-चिह्न लगएबाक साहस अद्‌भुत! ई साहस संस्कृत रामकाव्य परम्परामे विरल सेहो अछि।

लक्ष्मण जखन सीताकेँ वनमे एसकर छोड़ि वनसँ परोक्ष होइत छथि तखन निराश, निर्धन, नि:सहाय, निरूपाय, निष्प्राण जकाँ सीताक कष्टक कल्पना मर्मन्तुद अछि। महर्षि वाल्मीकि आबि सीताकेँ बोल-भरोस दैत छथि। ओ कहैत छथि— हे पुत्री वैदेही! हम योगबलसँ जानि गेल छी जे अहाँक पति मिथ्या अपयशसँ डरि अहाँकेँ घरसँ निष्कासित कऽ देने छथि। अहाँ शोक जुनि करू किएक तऽ अहाँ अपन पिताक घर आबि गेल छी। यद्यपि राम त्रिलोकक कष्ट निवारणकर्ता छथि, अपन प्रतिज्ञाक पक्का पालक छथि, आत्मप्रशंसा कखनो नहि करैत छथि तथापि अहाँ संग जे ओ ई अनुचित व्यवहार कयलनि एकरा देखि हमरा हुनकापर भारी क्रोध आबि रहल अछि—

जाने विसृष्टां प्राणिधानतस्त्वां मिथ्यापवादक्षुभितेन भर्त्रा।
तन्मा व्यथिष्ठा विषयान्तरस्थं प्राप्तासि वैदेहि! पितुर्निकेतम्।।

उत्खातलोकत्रयकण्टकेऽपि सत्यप्रतिज्ञेऽप्यविकत्थनेऽपि।
त्वां प्रत्यकस्मात् कलुषप्रवृत्तावस्त्येव मन्युर्भरताग्रजे मे।।

(रघुवंशम्, 14/ 72, 73)

रामक अनुचित व्यवहारपर आदिकविक क्रोध बहुत छोट चीज नहि अछि। सीताक लेल हुनकर पुत्री सम्बोधन आ ई कहब जे अहाँ अपन पितृगृह आएल छी, सरिपहुँ भावविभोर करैत अछि। महाकविक सीताक प्रति ई स्वाभाविक अपनत्व आ स्नेहक प्रकटन थिक। लगैत अछि जेना स्वयं महाकवि कालिदास आदिकविक स्वरमे अपन भावोद्‌गार प्रकट कयने होथि। आगू ओ कहैत छथि जे अहाँक यशस्वी ससुर हमर मित्र, अहाँक पिता अपन ज्ञानोपदेशसँ भवसागरक बंधनसँ पार करबैत छथि, अहाँ स्वयं पतिव्रता सभमे सर्वश्रेष्ठ छी तखन फेर एहन कोन कारण अछि जे हम अहाँपर अनुकम्पा नहि करी—

तवोरुकीर्ति: श्वशुर: सखा मे सतां भवोच्छेदकर: पिता ते।
धुरि स्थिता त्वं पतिदेवतानां किं तन्न येनासि ममानुकम्प्या।।

(रघुवंशम्, 14/74)

ई तीनू श्लोक महाकविक मैथिलत्व दिशि स्पष्ट संकेत करैत अछि। स्वयं आदिकवि वाल्मीकि अपन रामायणमे सीताकेँ कनैत देखि समझा-बूझा हुनका आश्रम लऽ जाइत छथि। आदिकविसँ पृथक् भाव महाकवि कालिदास प्रदर्शित कयने छथि ई अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बात अछि। सीताक दशा देखि द्रवित महाकविक मैथिलत्व जागि गेल, साधारणीकरणक प्रवाह प्रलयकारी बाढ़ि बनि रचना आ रचनाकारक भेद समाप्त कऽ देलक आ श्रीरामपर महाकवि कालिदासक क्रोध आक्रोश बनि बहि गेल। एतऽ इहो ध्यातव्य जे महाकवि सीतापर अनुकम्पाक जे तीन कारण सभक उल्लेख करैत छथि एहिमे ससुर दशरथसँ अपन मित्रता, भवसागर पार उतारएवला पिता राजर्षि जनक केर दिव्य ज्ञान आ स्वयं सीताकेँ संसारक समस्त पतिव्रता स्त्री सभमे सर्वश्रेष्ठ चित्रित करैत छथि। एहि तीनू कारणमे सभसँ बेसी जोर सीताक सर्वश्रेष्ठ पतिव्रता रूपपर अछि एहिमे कोनो संशय नहि। महर्षि वाल्मीकि अपन रामायणमे प्रायः यैह कहि अपन आश्रममे सीताक स्वागत करैत छथि—

स्नुषा दशरथस्य त्वं रामस्य महिषी प्रिया।
जनकस्य सुता राज्ञः स्वागतं ते पतिव्रते।

(वाल्मीकि रामायण, 49/11)

स्नुषा दशरथस्यैषा जनकस्य सुता सती।
अपापा पतिना त्यक्ता परिपाल्या मया सदा।

(वाल्मीकि रामायण, 49/22)

पउम चरिउमे मुनि मात्र एतबे कहैत छथि जे जेना सीताक परित्याग कयलहुँ तेना जैन धर्मक परित्याग नहि करब। महाकवि कालिदास सीताक अग्नि परीक्षा प्रसंगमे सेहो कतहु कोनो चातुर्य (जेना कि किछु विद्वान् अग्नि परीक्षा सन अशोभन कृत्यकेँ अपन विद्वत्ताक कपटपूर्ण आवरण देलनि जे वास्तविक सीताकेँ स्पर्श कयलासँ रावण जरिकेँ भस्म भऽ जाएत तेँ वास्तविक सीताकेँ अग्नि देवक संरक्षणमे राखल गेल अछि आ हुनकासँ वास्तविक सीता आपस लेबाक लेल अग्नि परीक्षाक नाटक भेल)क प्रदर्शन नहि कयने छथि। यथार्थमे ई अग्नि परीक्षाक नाटक रामक चरित्र केर विशालता प्रदर्शन निमित्त उचित भऽ सकैत अछि, वैदेही चरित्रक उत्कर्ष एहिसँ

नहि होइत अछि। वैदेही चरित्रक उत्कर्ष हुनक सतीत्वसँ होइत अछि। महाकवि कालिदास अग्नि परीक्षापर कोनो नाटक नहि करैत छथि ओ मात्र *'जातवेदोविशुद्धां प्रगृह्य प्रियां'* लिखि सभकेँ पुष्पक विमानसँ अयोध्याक लेल विदा करा दैत छथि। राम-काव्य-परम्परामे रामपर क्रोधक प्रकटीकरण विरल अछि।

गोस्वामी तुलसीदासक रामचरितमानस केर आधारपर रामानंद सागर कृत दूरदर्शन केर इतिहासक सर्वाधिक जनसमुदाय द्वारा देखल गेल धारावाहिक रामायणमे एकठाम लक्ष्मण सीताक अग्निपरीक्षा प्रसंगपर व्यथित भऽ विद्रोहक स्वर उठबैत अवश्य छथि मुदा अग्निदेवसँ सीता आपस लेबाक बातसँ ओ सेहो चुप भऽ जाइत छथि। संस्कृत राम-काव्य-परम्परामे कतहु महाकवि कालिदास जकाँ सीता परित्याग कयनिहार रामपर स्पष्ट क्रोध वा आक्रोशक अभिव्यक्ति नहि भेल अछि। ई महाकविक निजी विशेषता अछि जेकर मूलमे महाकविक मैथिलत्व मात्र अछि जे मिथिलाक धिया मैथिलीक प्रति भेल अन्यायपर यथासाध्य प्रतिकार करैत छथि, सेवा-सहायतार्थ सतत् साकांक्ष रहैत छथि।

सीताक पाताल प्रवेश एहिना विचारणीय अछि। रामकाव्य परम्परामे सीता परित्याग प्रसंगपर मतैक्य नहि अछि। वाल्मीकि रामायणक उत्तर रामायण भागकेँ बहुत विद्वान् प्रक्षिप्त मानैत छथि मुदा आम भारतीय एहि प्रसंगकेँ सत्य मानैत अछि। महाभारत केर रामकथामे सीता निर्वासन प्रसंग नहि अछि। आदिकवि वाल्मीकि (रामायण), महाकवि कालिदास (रघुवंशम्), विमलसूरि (पउम चरिय), रविषेण (पद्मचरित्), सोमदेव (कथासरित्सागर), हरिभद्रसूरि (उपदेशपद),भद्रेश्वर (कहावली) आदि एहि प्रसंगक वर्णन कयने छथि। हिन्देशियाक सेरीराम, जावा केर सेरतकण्ड, मलेशियाक हिकायत महाराज रावण, थाइलैंडक रामकिएन, कम्बोडियाक रामकेत्ति, वर्माक रामवत्थुमे सेहो ई प्रसंग आएल अछि। सभ ठाम एकर मूलमे लोकापवाद वा रावणक चित्र बनएबाक कारणेँ रामक मोनमे सीतापर सन्देह उत्पन्न होयब अछि। बँगला आ असमी भाषाक रामायणमे ई प्रसंग आर गम्भीरतासँ वर्णित अछि। दुनूमे रामकेँ सीता परित्यागक कारणेँ बहुत बात सुनऽ पड़ैत अछि। कृत्तिवास आ कन्दलीक सीता सभ किछु चुपचाप सहनिहारि नहि छथि। ओ मुखरतासँ अपना संग भेल अन्यायक प्रतिकार करैत छथि।

14म शताब्दीमे असम-त्रिपुराक महाराज महामाणिक्यक अनुरोधपर माधव कन्दली द्वारा रचित रामायणमे रावणवधक बाद राम सीताक पवित्रतापर सन्देह करैत हुनक परित्यागक विचार करैत छथि आ सीतासँ लक्ष्मण-भरत वा

विभीषण-सुग्रीवमे कोनो एककेँ वरण करबाक लेल कहैत छथि। एहिपर सीता कुपित होइत रामक खिधाँस करैत छथि—

दुबरि वचन शाले शालिलेक हिये।
धीरे धीरे बुलि लन्त जनकर जीये।

उत्तम कुलत मोक बापे बिया दिल।
आमाक इतर नारी सम देयिलाहा।

न सुमरा मोर एक दिबसर गुण।
निर्दय पुरुष जाति किनो निदारुण।

(माधव कन्दली रामायण, गुवाहाटी, 1972, पृष्ठ 449-50)

कृत्तिवासक रामायणमे सीता सेहो रामक खिधाँस करैत हुनका यम तक कहैत छथि। आदिकवि वाल्मीकि अपन रामायणमे सीताकेँ शालीन, रामक प्रति अनन्य अनुरागी आ अपन परित्यागक मूल पूर्व जन्मक कोनो पापकेँ माननिहारि चित्रित कयने छथि। आदिकवि वाल्मीकिक सीताक प्रति निश्छल नेहक प्रतिबिम्ब ओ पद सब अछि जतए ओ सभा मध्य घोषणा करैत छथि— सीता सुव्रता आ धर्मचारिणी छथि। लोकापवाद कारणेँ परित्यागक बाद हमर आश्रममे वास कयलनि। हम प्रचेताक दशम पुत्र छी। कहियो कखनो मिथ्या नहि बजलहुँ। हम सत्य कहैत छी जे लव-कुश रामक पुत्र छथि। जँ सीतामे कोनो दोष हो तखन हमरा सहस्त्र वर्षक अपन तपस्याक कोनो फल प्राप्त नहि हो—

इयं दाशरथे सीता सुव्रता धर्मचारिणी।
अपवादात् परित्यक्ता ममाश्रमसमीपतः।(96/16)

लोकापवादभीतस्य तव राम महाव्रत।
प्रत्ययं दास्यते सीता तामनुज्ञातुमर्हसि।(96/17)

इमौ तु जानकीपुत्रावुभौ च यमजातकौ।
सुतौ तवैव दुर्धर्षौ सत्यमेतद् ब्रवीमिते।(96/18)

प्रचेतसोऽहं दशमः पुत्रो राघवनन्दन्।
न स्मराम्यनृतं वाक्यमिमौ तु तव पुत्रकौ।(96/19)

बहुवर्षसहस्राणि तपश्चर्या मया कृता।
नोपाश्रीयां फलं तस्या दुष्टेयं यदि मैथिली।(96/20)

आदिकवि वाल्मीकि सीताक शुचिता, पतिव्रता, पवित्रतापर अपन सम्पूर्ण तपस्याक फल दाओँपर लगा दैत छथि। ओ सीताक के छथि ? केओ नहि! संकटग्रस्त सीताकेँ सुरक्षा देनिहार अनजान साधु! मुदा सम्पूर्ण नारी जातिक अपमानपर जेना आदिकवि विलाप कऽ रहल होथि तथापि श्रीराम लोकापवादक कारणेँ सीतासँ अपन शुचिता प्रमाणित करबाक लेल कहैत छथि। आश्चर्य जे छोटसँ छोट स्तर केर मनुक्खक बातकेँ पाथरपर लिखल शिलालेख माननिहार राम देवतुल्य आदिकविक एतेक पैघ वचन वा दाओ केर अनादर करैत सीताकेँ स्वयं लोकापवाद समाप्त करबाक आज्ञा दैत छथि। एहिपर सीता तेहन प्रमाण दैत छथि जे युग-युगान्त धरि सभकेँ भाव-विह्वल करैत अमिट शिलालेख बनि गेल। सीता कहैत छथि जे जँ मनसा-वाचा-कर्मणा हम राघवसँ अनन्य भाव रखने हो, कोनो आनक विषयमे नहि सोचने हो तखन हे माता पृथ्वी! हमरा अपन कोरामे स्थान देल जाय—

यथाहं राघवादन्यं मनसापि न चिन्तये।
तथा मे माधवी देवी विवरं दातुर्महति।(97/14)

मनसा कर्मणा वाचा यथा रामं समर्थये।
तथा मे माधवी देवी विवरं दातुर्महति।(97/15)

धरती फटैत अछि आ देदीप्यमान सिंहासन नेने धरतीमाता प्रकट होइत सीताक वचन सत्य प्रमाणित करैत छथि आ हतप्रभ रामकेँ अहुरिया काटैत छोड़ि सीताकेँ अपन कोरामे बैसा धरतीमे समा जाइत छथि। महाकवि कालिदासक सीता केर पाताल प्रवेश प्रायः एहिना अछि। यज्ञमे वाल्मीकि रचित रामकथाक लवकुशक मधुर स्वरमे गायन सुनि आ रामक अनमन बालरूप दुनू लवकुशमे देखि सभ आश्चर्यचकित होइत छथि मुदा ओहूसँ बेसी आश्चर्यचकित लोक एहिसँ होइत

अछि जे राजा द्वारा देल दान ओ अस्वीकार करैत आपस कऽ दैत छथि। रचयिताक विषयमे जानि राम महर्षि वाल्मीकि ओतऽ जाइत छथि। ओतहि महर्षि स्पष्ट रूपसँ रामकेँ कहैत छथि जे ई दुनू गायक कुमार सीताक गर्भसँ उत्पन्न अहींक पुत्र छथि। आब अहाँ सीताजीकेँ स्वीकार कऽ लियऽ—

स तावाख्याय रामाय मैथिलेयौ तदात्मजौ।
कविः कारुणिको वव्रे सीतायाः सम्परिग्रहम्।।

(रघुवंशम्, 15/71)

एहिपर राम कहैत छथि जे सीता यद्यपि हमरा समक्ष अग्निसँ पवित्र भेल छथि तथापि जँ सीता अपन शुद्धताक प्रमाण दैत प्रजाकेँ विश्वास दिया सकैत छथि तऽ हम पुत्र सहित हुनका अहाँक आज्ञासँ ग्रहण करब। राजा रामक एहि कथनपर सीता आश्रमसँ बजाओल जाइत छथि। दोसर दिन समस्त प्रजा सभक समक्ष आयोजित सभामे वाल्मीकि लव, कुश आ सीता संग रामक सोझाँ अबैत छथि। दुनू पुत्रक संग राम लऽग जाइत सीता ओहिना लगैत छथि जेना स्वर आ संस्कार संग गायत्री स्वयं सूर्य समीप जाइत हो। गेरुआ वस्त्र पहिरने भूमि दिशि तकैत भूमिजा सीताक शान्त शरीरसँ शुचिताक शोभा सर्वत्र पसरि रहल छल। प्रजा सहित सभक मस्तक धानक फूटल शीश जकाँ एहि लज्जासँ झुकि गेल जे व्यर्थ एहन सती साध्वीपर कलंक लगएलहुँ। रामक समक्ष वाल्मीकि सीतासँ कहैत छथि— बेटी! प्रजाक मोनमे जे अहाँक चरित्रपर सन्देह अछि तेकर मेटा दियऽ—

स्वरसंस्कारवत्याऽसौ पुत्राभ्यामथ सीतया।
ऋचेवोदर्चिषं सूर्यं रामं मुनिरुपस्थितः।।(15/76)

काषायपरिवीतेन स्वपदार्पितचक्षुषा।
अन्वमीयत शुद्धेति शान्तेन वपुषैव सा।।(15/77)
जनास्तदालोकपथात्प्रतिसंहृतचक्षुषः।
तस्थुस्तेऽवाङ्मुखाः सर्वे फलिता इव शालयः।।(15/78)

तां दृष्टिविषये भर्तुर्मुनिरास्थितविष्टरः।
कुरु निःसंशयं वत्से! स्ववृत्ते लोकमित्यशात्।। (15/79)

एहि बेर सीता फेर कोनो अग्निपरीक्षा नहि दैत छथि, ओ अपन सतीत्वक प्रमाण एहि लेल नहि दैत छथि जे फेर श्रीरामक संग आरामसँ रहब। एहि बेर ओ अपन सतीत्वक प्रमाण एहि लेल दैत छथि जे समस्त नारी जाति गर्वित रहि सकय। पवित्र जल आँजुरमे लैत ओ भूमिजा अपन धारित्रीसँ कहैत छथि जे जँ मन, वचन वा कर्मसँ हम अपन पातिव्रत्य भंग नहि कयने होइ तऽ हे माता! हमरा अपन कोरामे नुका लेल जाय—

वाङ्मनः कर्मभिः पत्यौ व्यभिचारो यथा न मे।
तथा विश्वम्भरे देवि! मामन्तर्धातुमर्हसि।।(15/81)

पतिव्रता भूमिजाकेँ ई कहैत मातर भूमि फाटि गेल। विद्युत समान चमकैत तेजपुंजसँ निकलैत नागफणपर राखल सिंहासनपर समुद्रक करधनी पहिरने बैसलि धरती माता प्रकट भेलीह आ सीताकेँ अपन कोरामे बैसा पाताल प्रवेश कऽ गेलीह। राम हा-हा करिते रहि गेलाह। आदिकवि वाल्मीकि आ महाकवि कालिदासक सीता पाताल प्रवेश प्रायः समान अछि। भवभूतिक उत्तर रामचरितमे सीता निष्प्राण रामकेँ प्राणदान दैत छथि। लव-कुशसँ राम लक्ष्मण आदि केर परिचय, अरुंधती, कौशल्या, जनकादिसँ मिलन होइत नाटक उत्तर रामचरित सुखान्त रूपसँ समाप्त होइत अछि। एहिमे सेहो सीता द्वारा रामक प्राण रक्षा प्रसंगसँ सीताक महत्ता वर्णित अछि। अद्भुत रामायणमे सीताक महत्ता विशेष रूपसँ वर्णित अछि। ओ आदिशक्ति आ आदिमाया रूपमे चित्रित छथि। वाल्मीकि आ कालिदासक वर्णनमे सीताक महत्ता सोझाँ अबैत अछि जखन कि भवभूतिक वर्णनमे रामक महिमा। पार्थक्यक एहि कारणकेँ जानऽ पड़त। रघुवंशम् मे सेहो सीता पाताल प्रवेशोपरान्त पृथ्वीपर प्रत्यर्पणेच्छासँ श्रीराम क्रुद्ध होइत छथि आ धनुष उठा लैत छथि मुदा मुनि वशिष्ठ हुनका शान्त करबामे सफल होइत छथि। वाल्मीकि आ कालिदासक सीता प्रजा सभक लोकापवादकेँ रामक प्रति एकनिष्ठ होयबाक वचन केर पतिया दैत धरतीमाताक आह्वान करैत छथि आ ओ पूर्ण होइत अछि। सीता एहनो वचनक पतिया दऽ सकैत छलीह जे सभक सन्देहो मेटा जयतए आ सीता सुखपूर्वक रहबो करितथि मुदा नहि! एक बेर अग्नि परीक्षा देलाक बादो फेर प्रमाणक आवश्यकता!! कोन ठेकान जे फेर ककरो मोनमे सन्देह उत्पन्न भऽ जाय। सामाजिक जीवनमे तऽ ई हरदम संभव छैक तेँ सदा सर्वदाक लेल एहि लोकापवादकेँ समाप्ते कऽ दी जाहिसँ बेर-बेर एहन अपमानजनक स्थितिक सामना नहि हो। सीताक इहो सोच संभव जे मानहीन जीवन

केर कोन मोल! नारी गरिमाक लेल प्राणोत्सर्ग करैत सीता, अपन शुचिताक लेल प्राण अर्पित करैत सीता, दू टा अबोध नेनाकेँ बिलटैत छोड़ि अपन आनक लेल धरतीमे प्रवेशोत्सुक आ तत्पर सीताक मर्मन्तुद चित्र यथार्थमे रामक पराजय केर चित्र थिक। बादक लवकुश प्रसंग वर्णनमे तऽ बहुत कविगण राम सेनाक पराभव, महाबली हनुमानकेँ रस्सामे बान्हि सीताकेँ टहल-टिकोरा लेल आनब, मेघनाद वध कएनिहार वीरश्रेष्ठ लक्ष्मणक मूर्च्छा, लवणासुर हन्ता वीरवर शत्रुघ्नक अंतिम स्थिति, संजीवनी बूटी युक्त पर्वतकेँ हनुमान सहित खसा दएनिहार वीरपुंगव भरत आ स्वयं दशानन हन्ता शौर्यक सीमा श्रीरामक लवकुश हाथेँ भेल दुर्दशाक भावचित्र उकेरित कयने छथि। मिथिला क्षेत्रमे तऽ ई चित्र कने आर भकरार आ जगजियार अछि।

सीताक परित्यागपर विभिन्न रचनामे कतहु-कतहु किछु आक्रोश अभरल भेटैछ। कवीश्वर चन्दा झा एकरा अनीति कहैत छथि—

कहलनि मुनि वाल्मीकि विचारि। सती शिरोमणि सीता नारि।
त्यागल पर-अपवादक रीति। अहह रघूत्तम कयल अनीति।।

(चन्दा झाक रामायण, उत्तर काण्ड, पृष्ठ 406)

आगू कवीश्वर चन्दा झा आदिकविक व्याजेँ सीताक सतीत्वक शपथपूर्वक घोषणा करैत छथि। सीताक शुचितापर अपन सम्पूर्ण तप फल जोखि देबाक क्षमता रखैत छथि—

ई कुश-लव छथि अहाँक किशोर। सुनथि रघूत्तम बह दृग नोर।।
यमल जात एक तरहक गात। जेहने अपने हिनकर तात।।
वरुणक हमछी दशम कुमार। शपथ करै छी बारंबार।।
तप-फल हमरा आब न काज। जौँ दुष्टा सीता महराज।।

(चन्दा झा : रामायण, उत्तर कांड, पृष्ठ 407)

एतेक कहलाक बादो राम नृपता दोषक चर्च करैत छथि—

क्षमा करब मुनि नृपता दोष।
त्यागल सती शिरोमणि रोष।

रामक कहलापर सीता सभामध्य शुचिताक शपथ लैत छथि मुदा फेर निष्कलंकी प्रमाणित होइत राजा रामचन्द्रक रानी भऽ राज करबाक लेल नहि अपितु अपन शुचिताक प्रमाणपत्र ओ ध्रुवतारा जकाँ कालक कपालपर अनन्त कालक लेल अटल रूपसँ अंकित करएबाक लेल। सीताक आनकेँ सत्य मानि धरती फटैत अछि आ बहरायल सिंहासनपर बैसलि माताक कोरामे बैसि भूमिजा सीता भूमिमे समा जाइत छथि।

मुंशी रघुनन्दन दास (जन्म 1860, महाप्रयाण 1945 ई.)क वीर बालकमे लव-कुश केर शौर्य सभकेँ चमत्कृत करैत अछि। एहि मैथिली खण्ड काव्यमे लक्ष्मण सुत चन्द्रकेतु, दू भरतसुत आ लक्ष्मणसँ लव-कुशक युद्ध होइत अछि। रामदल केर वीर सभक प्रतिष्ठा अपन अद्‌भुत चातुर्यसँ बचा लैत छथि कविश्रेष्ठ रघुनन्दनजी। ओना आम मैथिलक आक्रोशकेँ महाकवि नुका नहि सकलाह। ओ एहि कृत्यकेँ भ्रष्ट ज्ञानक भावना आ अन्याय कहैत छथि। वीरवर लक्ष्मण आ गुरु वशिष्ठक मादे अवधेशसँ पुछैत छथि—

भू-सुता राजर्षि जनकक ललिता सुकुमारि।
जे अजन्मा पतिव्रता छथि अति प्रशंसित नारि।।

दिव्य मे कुलपति समक्षहिँ अग्नि शोधल जाहि।
भ्रष्ट ज्ञानक भावना सँ की तेजब थिक ताहि।।

(मुंशी रघुनन्दन दास रचनावली, वीर बालक, प्रथम सर्ग, पृष्ठ 250)

जनक कहु, सीता पवित्रा अग्नि शोधित भेलि।
इतर जनक क्रोधित कथन पर वास वन की देल।।
नीति रघुवंशक प्रशंसित अहँक सन गुरु पाय।
तदपि मम दुहिताक दुर्गति कएल की बुझि न्याय।।

(मुंशी रघुनन्दन दास रचनावली, वीर बालक, पृष्ठ 273)

विधुजीक सीतायनमे ई आक्रोश वाल्मीकि केर कामना रूपमे अछि जे बादमे सिद्ध भेल आ रामदलकेँ सीता परित्यागक मोल अपन पराजयसँ चुकबय पड़ल—

वाल्मीकिक मनमे छल कुश लव हय पकड़ि घोरतर युद्ध करथि।
रिपुसूदन भरत लखन राघव तनकेँ शरसँ से विद्ध करथि।

(वैद्यनाथ मल्लिक विधु : सीतायन, तेसर सर्ग, पृष्ठ 604)

कुश रामसँ कहैत छथि— पौरुषहीन पुरुषकेँ जगमे प्रशंसा नहि भेटैछ, जे पवित्र गर्भिणी सतीकेँ भयंकर वनमे बाघ-सिंहक भोज्य बना पठा देलक जँ अहाँ वैह राम छी तखन अहाँ सीता परित्यागक पापसँ पराजित अवश्य होयब। बादमे ओ म्रियमाण राम सहित चारू भायक वस्त्र उतारि लैत छथि। सीता वस्त्र चीन्ह दुनू पुत्रकेँ गंजन करैत छथि फेर युद्ध क्षेत्र आबि कहैत छथि—

जँ हो निश्छल प्रेम हमर, सीता सतीत्व जँ साँच।
जागी एहि द्रुत निद्रासँ, भऽ जाय पुनः ई जाँच।

(वैद्यनाथ मल्लिक 'विधु' : सीतायन, पृष्ठ 616)

मायक अपमान केर प्रतिशोध लैत श्रीरामक स्पष्ट पराजयक ई चित्र मैथिली साहित्यमे विरल अछि।

अध्यात्म रामायणक आधारपर सुप्रसिद्ध पुराणवेत्ता अन्धराठाढ़ी गाम गौरव पं. कालीकान्त झाक मैथिली काव्य 'हनुमान चरित' मे ई चित्र प्रमुखतासँ अभरल अछि। एहिमे शत्रुघ्न, भरत, लक्ष्मण आ हनुमान लव-कुश हाथेँ पराजित होइत छथि। सागर फानि लंका विध्वंस कयनिहार आ सुदूर उत्तरसँ संजीवनी बूटी सहित पर्वत लंका लऽ जाकेँ लक्ष्मणकेँ प्राणदान दएनिहार महाबली हनुमानक पराजयक स्पष्ट वर्णन अछि—

रण-अजेय बलशाली वीर क शिशु-कर भेल पराजय।

आ लव-कुशक एहि अपूर्व पराक्रमपर हनुमानक उक्ति—

अंजलिबद्ध मुदित मारुति कह 'अम्ब न हमर पराभव।
कोटि विजय सँ अधिक नीक दुई अनुजक हाथहि हारब'।।

(हनुमान चरित : पं. कालीकान्त झा, पद 39)

मैथिलीक मैथिल दुग्ध शक्ति-स्वरूप भागिनेयक स्वाभाविक जयघोष अछि। आगू युद्धमे रामपक्षक सभ महाबली बेरा-बेरी पराजित होइत छथि। सीता अपन शुचिताक प्रतापसँ सभकेँ जिया दैत छथि—

परमसती मिथिलेश नन्दिनी कय पति-पद-युग ध्यान,
कहलनि 'यदि कखनहुँ हम पति तजि नहि सुमिरी किछु आन।

त' सौमित्र सहित सब सेना लगले जीवन पाबथु,
मम अनजान सुतक अपमानक बात ध्यान नहि लाबथु।

(कालीकान्त झा : हनुमान चरित, पद 37)

पं. सीताराम झाक अम्ब चरितमे सीताक जन्म विषयक कथा अछि जे सीताक जन्म मन्दोदरीक गर्भसँ होइत अछि आ मन्दोदरी मिथिला आबि धरतीमे गाड़ि दैत छथिन जे राजा जनककेँ हऽरक फाड़ लागि भेटैत छथि।

सीता निर्वासनकेँ डॉ. कांचीनाथ झा 'किरण' 'पराशर'मे अभिनव रूप देबाक प्रयास कयलनि। राम अश्वमेध यज्ञ करबाक नेयार करैत छथि। सीता एकरा अहंकारक प्रकटन कहैत छथि—

जन-धन-बल सामर्थ्यक अहंकारे ने रहैछ
अश्वमेध सन यज्ञक जड़िमे।

अहंकार स्वयं थिक महापाप
पापसँ पुण्यक जन्म तर्कहीन असंगत।

(डॉ. कांचीनाथ झा किरण : पराशर, ऋचापाठ, पृष्ठ 11)

सीता मिथिलाक चिन्ता करैत छथि जे मैथिल अश्वमेधक अश्व पकड़ि लेत आ भारी विनाश होयत। एहिसँ पूर्व हमरे मारि देल जाय। क्रुद्ध राम एकरा राजद्रोह मानि हुनका निर्वासित करैत छथि।

धारावाहिक सभमे दर्शक संख्या केर समस्त कीर्त्तिमान ध्वस्त करएवला धारावाहिक रामानंद सागरक रामायण/उत्तर रामायणमे सेहो किछु एहने कथा अछि। अश्वमेधक अश्व लव-कुश पकड़ि लैत छथि आ क्रमसँ सेनापति, शत्रुघ्न आ लक्ष्मण बेरा-बेरी लव-कुश हाथेँ मूर्च्छित होइत छथि। फेर भरत संग आयल हनुमान बन्दी बनैत छथि आ भरत एवं सुग्रीव बेहोश होइत छथि। राम स्वयं अबैत छथि आ भयंकर प्रहारपर पुत्रद्वयकेँ महर्षि द्वारा कहलापर चिन्हैत छथि। 'जानकी जीवन' ग्रंथमे लव-कुशसँ चन्द्रकेतु, शत्रुघ्न, लक्ष्मण आओर रामकेँ पराजित देखाओल गेल अछि। 'वनस्थली'मे सेहो प्राय: यैह कथानक अछि आ अंतमे युद्ध स्थलपर महर्षि वाल्मीकि लव-कुशसँ रामक परिचय करबैत छथि। आचार्य श्री तुलसीक अग्नि परीक्षा (प्रकाशक— आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली- 6, 1961)मे सेहो

जनमानस केर आक्रोश अभरल अछि। वनमे क्रन्दन् करैत सीताकेँ पुण्डरीकपुरक राजा बज्रजंघ अपना ओतऽ लऽ जाइत छथि। एतहि कुश-लव केर जन्म होइत अछि आ फेर लव-कुशक सेना अयोध्यापर आक्रमण करैत अछि आ रामदल केर सभक स्थिति खराब कऽ दैत अछि। रामकाव्य परम्परामे अनेक ठाम एहन चित्र अभरल अछि। विस्तार भयसँ राधेश्याम रामायणमे वर्णित एहन प्रसंगपर प्रकाश दैत एकर पटाक्षेप करब।

राधेश्याम रामायणमे सीता परित्याग आ पाताल प्रवेशक अत्यन्त रमणीय वर्णन अछि। कदाचित् खड़ीबोलीमे एहिसँ नीक आ लोकप्रिय रामकथा कोनो दोसर नहि अछि। राधेश्याम कथावाचक (जन्म 25 नवम्बर 1890- महाप्रयाण 26 अगस्त 1963) पारसी थियेटरसँ संबद्ध छलाह। अल्फ्रेड पारसी थिएटर कम्पनी हेतु तैयार हुनक नाटक वीर अभिमन्यु, भक्त प्रह्लाद, श्रवण कुमार आदि अत्यधिक लोकप्रिय भेल छल। हुनकर स्वर आ गायन अद्‌भुत छल। बरेली उत्तर प्रदेशमे जन्मक बादो मिथिलासँ हुनक संबंध प्रगाढ़ रहल। हुनक रामायणक प्रस्तुति मिथिलामे अत्यन्त लोकप्रिय छल। हुनकर एक विशिष्ट गायनशैली, भास वा धुनकेँ हाल तक मिथिलामे राधेश्यामी रूपमे लोकप्रियता छल।

राधेश्याम रामायण हुनकर बेमिसाल कृति अछि। राधेश्यामजीकेँ एहि कमनीय कृतिक कारणेँ अपूर्व यश आ लोकप्रियता भेटल। हिनक प्रस्तुतिसँ लोक भावविभोर भऽ जाइत छल। कालान्तरमे पहिने प्रदेश आ फेर देश भरिक समस्त रामलीला सभक आधार ग्रंथ यैह राधेश्याम रामायण बनल। एहिमे सीता परित्याग आ सीता पाताल प्रवेशक विलक्षण आ मार्मिक प्रस्तुति अछि। एहने एक ठाम कुश कहैत छथि—

है विदित हमें धर्मज्ञ राम जनता के पालनहारे हैं।
पर त्रिभुवनविजयी होकर भी नारी के द्वारा हारे हैं।।

सीता साध्वी के कष्टों ने कर दिया नष्ट उनके बल को।
अब नहीं बड़ाई जग देता लंका किष्किन्धा कौशल को।।

इसलिए जगत् का धर्म हुआ उनसे सिंहासन ले लेना।
जो व्यक्ति योग्य हो शासन के उसको ही शासन दे देना।।

सीता परित्याग केहन क्रूर आ अन्यायपूर्ण छल ओकर अनुमान कुशक एहि कठोर शब्दसँ लगाओल जा सकैत अछि जाहिमे ओ स्पष्ट रूपसँ विद्रोहक बात करैत छथि। सती साध्वी सीताकेँ परित्यागक कारणेँ भेल कष्ट रामकेँ बलहीन करैत अछि। युद्धमे लक्ष्मण मूर्च्छित होइत छथि। फेर भरत जामवन्त आ हनुमान संग युद्धभूमि अबैत छथि। हनुमान बन्दी होइत छथि आ जामवन्तकेँ एकहि बाणसँ रामक राजसभा पहुँचा देल जाइत अछि। रणभूमिक हाल सुनि विभीषण उत्तेजित होइत छथि, रणभूमि अबैत छथि। युद्धभूमिमे हुनकर बातपर लव-कुश व्यंग्य करैत छथि। तामसे विभीषण गदा प्रहार करैत छथि जेकरा बीचहिमे काटि लव-कुश हुनका मूर्च्छित कऽ दैत छथि। दुनू भाय स्वयं रामसँ नुकाकेँ बालि वध किए तथा कुलद्रोही विभीषणसँ भेद लऽकेँ रावण वध किए ई प्रश्न करैत छथि। फेर पुछैत छथि—

न्यायी राजा होकर भी ऐसा अन्याय किया तुमने।
सीता की अग्निपरीक्षा ली फिर भी वनवास दिया तुमने।।

लव-कुशक प्रश्न राधेश्याम रामायणमे आमजन केर प्रश्न बनि रामकेँ किंकर्तव्यविमूढ़ करैत अछि। एहि प्रश्नक उत्स महाकवि कालिदासक पूर्व प्रदर्शित आक्रोशमे देखल जा चुकल अछि।

रामकेँ आन भ्राते जकाँ मूर्च्छित करबाक लेल सन्नद्ध लव-कुश आ प्रहारोत्सुक रामकेँ वाल्मीकि आबि रोकैत छथि। ओ अपन तपोबल पूत जलसँ सभक मूर्च्छा समाप्त करैत छथि। सभ सभकेँ चीन्हैत छथि आ सभ सभसँ मिलैत छथि। सीता स्वीकार करबाक बातपर रामक खटराग फेर सोझाँ अबैत अछि। जनताक लक्ष्य करैत ओ कहैत छथि—

वनवास वही दे सकती है रनिवास वही दे सकती है।

हनुमान पहिने जनताकेँ समझा-बुझा मना लेबाक आ नहि मानलापर युद्धक बात करैत छथि ताकि अपना दमपर माता सीताकेँ रनिवासमे प्रवेश करा सकी। राम नहि डिगलाह आ सभा आयोजनक निर्णय भेल।

सभामे राजा रामक राज्यकेँ चारू भ्राताक दू-दू पुत्र अर्थात् आठ भागमे बाँटि देबाक निर्णयपर जनता अपन अनुमोदन दैत अछि मुदा कुश राज्य ग्रहण अस्वीकार करैत छथि—

तब कुश ने उठकर कहा सुने सभी दरबार।
कोसलपुर का राज्य है हमें नहीं स्वीकार।।

जो जनता जनप्रिय राजा से रानी का त्याग कराती है।
सतवन्ती के पावन सत् पर मिथ्या सन्देह उठाती है।।

जिसके विचार भ्रम भूल भरे क्या गण की हद तक जाते हैं।
उस जनता को गुरुकुल से ही हमदोनों शीश नवाते हैं।।

कुशक कथन छल जे जखन माता संन्यासिन तऽ हम सब राजा कोना ? पहिने माताक निर्णय हो अन्यथा ई निर्णय अस्वीकार्य अछि। हनुमान गर्जना संग माताकेँ पवित्रताक घोषणा करैत छथि। ओ स्पष्ट कहैत छथि जे ब्रह्मा दूषित भऽ सकैत अछि मातामे कोनो दोष नहि अछि। राजसभामे ठाढ़ भऽ त्रिजटा सेहो सीताक शुचिताक संबंधमे अपन बात कहैत छथि—

ऐसी सतवन्ती का त्यागन सचमुच अति पाप हो गया है।
दुर्दैव अवध के खेतों में अपयश का बीज बो गया है।

यदि बदला इसका लेने को जगजननी शीश उठायेगी।
सूरज काला पड़ जायेगा पृथ्वी चौपट हो जायेगी।

वाल्मीकि ठाढ़ भऽ घोषणा करैत छथि जे पुत्री सीता निष्कलुष छथि। हमर तप बलसँ ई प्रमाणित अछि। मुनि वशिष्ठ समाधिस्थ भऽ स्वयं एकर जाँच कऽ सकैत छथि। मुनि वशिष्ठ समाधिस्थ भऽ जाँच करैत छथि आ सीताकेँ निष्कलुष पाबि घोषणा करैत छथि—

सबलोक सुने सबलोग सुनें तम हटा रविप्रभा उदय हुई।
सतवन्ती सीता देवी की इस भरी सभा में विजय हुई।।

प्रजा पश्चात्तापक अग्निमे जरि रहल छल—

जिस जनता ने त्यागा तुझको अति दु:खी आज होती है वह।
निज भूल और निज करनी पर खुलखुलकर अब रोती है वह।

रो उठी सारी प्रजा था वह हार्दिक क्लेश।
पानी पानी हो गया मानो अवध प्रदेश।।

बोले सब करते हुए पश्चात्ताप महान्।
माता जो आए यहाँ कर दें क्षमा प्रदान।।

ठुकराए वह तब भी हम ऊपर उठायेंगे शीशों को।
इन लज्जित आँखों के जल से धोयेंगे उन श्रीचरणों को।।

हमसब बड़भागी आज हुए हममें उजियाली आज हुई।
महलों की महिमामयी मातु फिर महलोंवाली आज हुई।।

मिथ्या कलंक वा प्रवादपर प्रजासमूहक पश्चात्ताप देखि सीता कहैत छथि—

शंकावादी दल का विनाश बस एक शाप पर रखा था।
पर मेरी सहनशक्ति ने ही वह शाप रोककर रखा था।।

अब क्षमा माँगने के कारण सब दूर हृदय की व्यथा हुई।
मैं हुई यहाँ की साम्राज्ञी यह प्रजा फिर यहाँ की प्रजा हुई।।

अपन शुचिता आ अपन स्थान पुनः प्राप्त कयलाक बाद सीता रामत्यागक निर्णय करैत छथि—

माँ पृथ्वी यदि स्वामी तज पुरुष न निरखा और।
तो तुम अपने गर्भ में दो सीता को ठौर।।

फेर धरती फटैत अछि आ बहरायल सजल सिंहासनपर बैसि सीता धरतीमे समा जाइत छथि।

राधेश्याम रामायणक विशेष उल्लेख एहि लेल कयल गेल अछि जे जन-भावनाकेँ देखैत एकर रचना भेल अछि। हुनकर राम आमजन छथि आ हुनकोसँ

प्रश्न होइत अछि। रामक चारित्रिक औदात्य सीता परित्यागसँ स्खलित भेल अछि आ सीताक चारित्रिक औदात्य सतीत्वक बलेँ उत्तरोत्तर प्रशस्ततर आयामक स्पर्श करैत अछि। राधेश्यामजी मिथिलासँ अत्यन्त प्रभावित छलाह आ सीता परित्यागक कारणेँ आम मैथिलक मोनमे जे अवधेश रामक लेल आक्रोश वा भावना देखने-सुनने छलाह ओ हुनकर वाणीमे प्रतिध्वनित भेल। अवध क्षेत्रक वासी रहितो हुनकर मिथिलासँ स्वाभाविक स्नेह-सूत्र जुड़ल रहल। अन्धराठाढ़ीक सुन्दर झाक सुपुत्र शिवनाथ झा उर्फ फ़ुच्ची झा राधेश्यामी भास केर लब्धप्रतिष्ठ गायक छलाह। ओ गढ़बनैली राज केर राजगायक छलाह। सब साल दुर्गा पूजामे पड़ीबसँ पंचमी धरि दुर्गा स्थान, ठाढ़ीमे हिनक विशिष्ट गायन सुनबाक लेल ग्रामीण आ परोपट्टाक लोक जुटैत छल आ हिनकर गायन केर प्रतीक्षा करैत छल। ठसाठस भरल दुर्गा स्थान परिसरमे ऊँचगर टेबलपर हारमोनियम राखि स्वयं ठाढ़ भऽ जखन वादन आ गायन केर हिनक महफ़िल जमैत छल तखन लोक मंत्रमुग्ध भऽ जाइत छल। विलक्षण आ अत्यन्त कर्णप्रिय स्वरक आरोह-अवरोह एवं हारमोनियम केर सूक्ष्म स्वरलिपिक ज्ञान जेना महफ़िलपर कोनो जादू-टोना कऽ दैत हो। मंत्रमुग्ध लोक हुनक स्वर-संगीत सरितामे निमज्जित होइत निरभ्र भऽ जाइत छल। फ़ुच्ची बाबूक राधेश्यामी बड़ प्रसिद्ध छल। 1965-66 ई.मे मिथिला-अवधक ई संगीत-सेतु दरकि गेल। मिथिलामे राधेश्यामी शैलीक संगीत-सरिता सुखा गेल। फुच्ची बाबूक दुनू पुत्र स्वर्गीय भऽ गेलाह। फुच्ची बाबूक जेठ वैमात्र भाइ घुटरू झाक अधिवक्ता पौत्र श्री निशिकान्त झा आ पं. महेश झा फुच्ची बाबू विषयक जनतव देलनि। दुनू महानुभावक प्रति आभार प्रकट करैत छी।

महिषीक ताराचरण मिश्र (ज. 1940, देहावसान जून 2021 ई.) बंगट गवैया नामसँ इलाका भरिमे प्रसिद्ध छलाह। एहि परोपट्टाक ओ प्रसिद्ध राधेश्यामी गवैया छलाह।

रामकाव्य परम्पराक संक्षिप्त विश्लेषणसँ एक आर बात सोझाँ अबैत अछि जे लक्ष्मण प्राय: सभठाम सीताक अग्निपरीक्षा वा परित्यागक विरोध करैत छथि। पउमचरियंमे लक्ष्मण जखन सीता परित्यागक विरोध करैत छथि तखन सेनापति कृतान्तवदनकेँ कहि राम सीताजीकेँ वन पठबैत छथि (विमलसूरिक पउमचरियं, अनु. डॉ. हरमन जेकोबी, 93/24-30)। महेश्वर कृत कहावलीमे एहने कथा अछि। स्वामी करपात्रीजी, रामायण मीमांसा, पृष्ठ 643)। मलेशियाक रामकथा हिकायत महाराज रावणक अनुसार लंकाविजय केर बाद सात मास धरि रामदल

लंकामे छल। एकदिन सुप्तावस्थामे सीताक देहपर रावणक बेटी रावणक चित्र राखि देलनि। सीता नीनेमे ओहि चित्र केर चूमैत छथि आ राम ई दृश्य देखि सीताकेँ कोड़ासँ मारैत छथि आ लक्ष्मणकेँ वन लऽ जा हिनकर हत्या कऽ प्रमाणस्वरूप सीताक हृदय आनबाक आदेश दैत छथि। लक्ष्मण सीताकेँ नैहर पहुँचा एक बकरीक हृदय आनि विश्वास दिया दैत छथि जे आदेशक पालन भेल। (रामायण मीमांसा, पृष्ठ 644) सीताक नैहर नेपालमे सेहो एक लोकनृत्यमे एहने प्रसंग अबैत अछि। बकरीक हृदय केर स्थानपर मृगक माँसु लक्ष्मण अनैत छथि। रान्हल गेलाक बाद ओ एकर भक्षण करबाक रामक आदेश नहि मानैत छथि जे हम गर्भिणी सीताक माँसु नहि खा सकैत छी। (साहित्य अकादेमी आ ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा द्वारा 14-16 मई 1989केँ पूर्वांचलीय भाषामे रामायण विषयक आयोजित सेमिनारमे पठित श्री आर पी लामाक आलेख, उद्धृत सीता चरित, ले. श्री उमाकान्त झा, मैथिली अकादमी,पटना, 2021 ई., पृष्ठ 9)।

स्वामी करपात्रीजी महाराजक शोधपूर्ण 1049 पृष्ठक पोथी रामायण मीमांसा (प्रकाशक—राधाकृष्ण धानुका प्रकाशन संस्थान, रमणरेती, वृन्दावन-281121(मथुरा), तृतीय संस्करण, 2001) रामकथा विषयक अनेक अश्रुत प्रसंग सभक विलक्षण मीमांसा करैत अछि।

लक्ष्मण केर सीताक प्रति स्नेह आ आदर प्राय: सभ ठाम अभरल अछि। रामक पति रूप मिथिलामे अग्राह्य भेल मुदा लक्ष्मण केर देओर रूप सभठाम ग्राह्य। एहि कारणेँ श्रीराम सन स्वामी हो एहन कामना कोनो मैथिलानीक नहि रहैछ मुदा लक्ष्मण सन दिओर हो ई सभक इच्छा रहैछ। एहि पार्थक्यपर जँ ध्यान देब तखन श्रीरामक प्रति सहज आक्रोशक अनुमान भऽ जायत।

ई सर्वथा सत्य अछि जे मिथिला क्षेत्रमे श्रीराम सेहो समादृत छथि, पूजित छथि। अनेकश: हुनकर मन्दिर आ स्थल अछि। मुदा ई आदर दशानन विजयी श्रीरामक मात्र अछि। जखने सीताक अग्निपरीक्षा आ सीता परित्यागक प्रसंग अबैत अछि आम मैथिल रामक लेल कोनो मात्सर्य नहि रखैत छथि। मिथिलाक सर्वकालिक सर्वश्रेष्ठ सुता सीता संग भेल अनुचित परित्यागक दंशपर मैथिल मानस कतेक विचलित छल ओ एहि तथ्यसँ स्पष्ट होइछ जे अनेक सहस्राब्दी व्यतीत भेलाक बादो विवाहपंचमी दिन विवाहक शुभ मुहूर्त रहितो अखनो मैथिल अपन बेटीक विवाह ओहि दिन नहि करैत छथि। एहिसँ मैथिल आक्रोशक गाम्भीर्य अकानि सकैत छी।

यैह कारण अछि जे मिथिलामे रामकाव्य परम्पराक श्रीगणेश कतेक सहस्राब्दीक बादे (17म 18म शताब्दीक सीतायण) होइत अछि। महात्मा सूर किशोर आ महात्मा चतुर्भुज गिरि द्वारा जनकपुरक अधिमान्यतासँ नवस्फूर्तिक संचार आरम्भ भेल। सूरकिशोरक सत्प्रयाससँ अवध मिथिला संबंध सेतुपर जमल बर्फ सीताक प्रति अतिशय आदर आ भक्तिक आरतीक धाहसँ पसीझ गेल। संत रामप्रियाशरण दासक सीतायण (1701-2 ई.) जे नवद्वार खोललक ओहि मार्गकेँ कवीश्वर चन्दा झा आ पं. लालदास आर प्रशस्त कयलनि। मैथिलीमे कवीश्वर चन्दा झाक मिथिला रामायण (पूर्ण 1886 ई., प्रथम प्रकाशन 1892 ई.) जाहि रामकाव्य परम्पराक श्रीगणेश करैत बन्द द्वार अनावृत कयलक ओहि मार्गकेँ लालदासक रामायण, मुंशी रघुनन्दन दासक वीर बालक, पं. सीताराम झाक अम्बचरित, वैद्यनाथ मल्लिक 'विधु'जीक सीतायन, आ. रामलोचन शरणक मैथिली श्रीरामचरितमानस, खड्गवल्लभ दास 'स्वजन'जीक सीताशील, हीरालाल झा 'हेम'जीक सीताचरितामृत, भुवनेश्वर प्रसाद 'अध्यापक'जीक मैथिली बालरामायण, काञ्चीनाथ झा 'किरण'जीक पराशर, पं. जीवनाथ झाक रावणवध, पं. कपिलेश्वर मिश्र 'वैयाकरण'क सीतादाइ, पं. कालीकान्त झाक हनुमान चरित, श्री राजेन्द्र लाल दासक सीताक प्रस्थान प्रभृति कृति आर प्रशस्त कयलक।

महाकवि पं. लालदास रामक लेल बिनु कोनो आक्रोश प्रकट कयने अपन रमेश्वरचरित रामायणमे पुष्कर काण्डक रचना कऽ ओहिमे म्रियमाण राम केर सीता द्वारा महाकाली बनि रक्षा आ राम द्वारा सीताक स्तुति करा अपन अधिमान स्थापित कऽ देने छथि। पुष्कर काण्ड आ अपन पृथक् जानकी रामायण ग्रंथसँ महाकवि पं. लालदास मैथिली रामकाव्य परम्पराक स्वर रूपमे समादृत छथि।

मिथिलाक रामकाव्य परम्परामे सीता परित्यागपर अभरल आक्रोशक स्वर केर चर्च पूर्वमे भेल अछि। एहि सभक उत्स महाकवि कालिदासक रघुवंशम् (श्लोक 14/61) अछि। एहि पावन गंगोत्रीसँ निस्सरित भाव सम्पूर्ण संसारमे पसरि गेल।

उच्चैठ, उज्जैन आ महाकवि कालिदास

उच्चैठ भगवतीक कृष्ण प्रस्तर केर चतुर्भुजी दुर्गाक प्रतिमा खंडित अछि। प्रतिमा सिंहपर राखल कमल दलपर शान्त सुखासन मुद्रामे बैसल अछि आ छिन्न मस्तिका प्रतिमा निर्माणक विधान केर अनुपालन एहि प्रतिमामे नहि भेल अछि। प्रतिमाक एक पयर शान्त सिंहक पुट्ठापर अछि आ दोसर बाम पयर दहिना जाँघक निकट अछि। तड़वामे चक्र चिह्न स्पष्ट रूपसँ अंकित अछि। विदेशी विद्वान् सभसँ प्रभावित किछु लोक एहि प्रतिमाकेँ कर्णाटकालीन कहबाक धृष्टता करैत छथि। प्रतिमा चूँकि खंडित अछि तेँ निष्कर्ष देब दुष्कर अवश्य अछि मुदा मन्दिरमे राखल मुण्ड मूर्त्ति सब रहस्य अनावृत कऽ दैत अछि। जँ एहि मुण्डकेँ गौरसँ देखल जाय तऽ एहि मूर्त्तिक माथपर उत्कीर्ण एकरंग श्रृंगारक ठोप-पंक्ति एकरा स्पष्ट रूपसँ गान्धार कलाक कृति प्रमाणित करत।

गान्धार कला वर्तमान अफगानिस्तानक गान्धार (वर्तमान कन्दहार वा कान्धार) क्षेत्रमे विकसित मूर्त्ति निर्माणक कला शैली छल। यूनानी मूर्त्तिकला शैलीक प्रभावसँ ई विकसित भेल छल आ देशी मूर्त्तिकला प्रभावसँ मथुरा मूर्त्तिकला शैली विकसित भेल रहए। भारतवर्षमे आरम्भिक मूर्त्ति निर्माण मथुरा आ गान्धारे मूर्त्तिकला शैलीसँ भेल अछि।

सुधी विद्वान् सुशान्त कुमार दूरभाषिक वार्त्तामे एहि मुण्डकेँ गान्धारकालीन बुद्ध मूर्त्ति कहैत छथि। ल. ना. मिथिला विश्व विद्यालय, दरभंगाक प्राचीन भारतीय इतिहास, पुरातत्त्व व संस्कृति विभागक विभागीय शोध पत्रिका मिथिला प्राच्य प्रभा (2012 ई.)मे एहि मुण्डकेँ डॉ. सुशान्त कुमार भगवान् बुद्ध केर माथ मानैत छथि (यथोक्त, पृष्ठ 126)। एहि तथ्यसँ ई निष्कर्ष तऽ निश्चित रूपसँ निष्पन्न होइत अछि जे एहि मुण्डसँ भगवतीक भग्न प्रतिमा बेसी पुरान होयत कारण तखने ई मुण्ड पूर्वसँ अवस्थित मन्दिरमे राखल गेल होयत। एहि मुण्ड विषयक दरभंगा जिला गजेटियरमे

पी सी रायचौधरी दरभंगा जिला गजेटियर, पृष्ठ 755) उल्लेख करैत छथि जे दरभंगा महाराजाधिराज सर रमेश्वर सिंह भगवतीक खंडित प्रतिमार्कें जोड़बाक अभिलाषासँ भगवतीक मस्तक केर निर्माण करओलनि। धड़सँ मुण्ड जोड़बाक लेल जे समय निर्धारित भेल ओहिसँ पूर्व महाराज आ पुजेगरीकेँ समान स्वप्न भेल जे हम स्वयं अनेक सृजन कयने छी। हमर सृजन करब की उचित होयत? मुण्ड जोड़बाक बात त्यागि देल गेल मात्र पुजेगरी महाराजसँ मुण्ड ग्रहण कऽ मन्दिरमे राखि देलनि। संभवत: ई कथा बादमे रूढ़ भेल कारण ई मुण्ड भगवतीक नहि लगैछ। पुरुष आ स्त्रीक मुण्ड मूर्त्तिमे जे सूक्ष्म पार्थक्य होयबाक चाही से एहिमे अछि। स्त्रीक आँखि, नाक, कान, गाल, माथ, गर्दनि आ केश सभक विन्यास पुरुषसँ भिन्न होइत अछि। आभूषण से एकटा पैघ आधार थिक जे एहि मुण्डकेँ पुरुष केर मुण्ड प्रमाणित करैत अछि। पूर्वमे कहल जा चुकल अछि जे ई गान्धार कला शैलीमे निर्मित भगवान् बुद्ध केर मस्तक अछि। गान्धार कालीन कला केर समय प्रथम शताब्दीसँ अधिकतम चारिम शताब्दी अछि। एहि तथ्यसँ सेहो भगवतीक एहि प्रतिमाकेँ कर्णाट कालसँ काफी पूर्व केर मानऽ पड़त। कर्णाट कालीन कमनीयता एहि प्रतिमामे नहि अछि आ ने कर्णाट कालीन प्रतिमा निर्माणक विधान केर एहिमे अनुसरण भेल अछि तेँ एहि मूर्त्तिकेँ कर्णाट कालीन कहब उचित नहि। एहि प्रतिमा आ मन्दिर विषयक किम्वदन्ती वा आस्था तऽ यैह अछि जे राम, लक्ष्मण आ मुनि विश्वामित्र जनकपुर जयबाक क्रममे एतऽ पूजा कयने छलाह। पाण्डव सभ सेहो एहि मन्दिरमे दर्शन कयने छलाह। श्री सुनील कुमार मिश्र अपन ग्रंथ मिथिला के मन्दिर, गढ़ एवं पुरातत्त्व (पृष्ठ 158)मे एहि उच्चैठ भगवती मन्दिर (निर्देशांक 26° 27’ 50.69’’ N, 85° 52’ 40.87 ’’E) क अस्तित्व ईसापूर्व प्रथम शताब्दीसँ कतेक वर्ष प्राचीन अनुमान करैत छथि। पं. दिगम्बर झा अपन दीर्घकाय ग्रंथ मिथिला एवं कालिदास (पृष्ठ 396)मे एहि भगवती प्रतिमाकेँ गुप्तकालीन अनुमान करैत कमसँ कम 2000 वर्ष पुरान मानैत छथि। पं. दिगम्बर झा मिथिलामे प्रचलित जनश्रुति पुराण आधारित किछु रमणीय प्रसंग सभक उल्लेख करैत छथि। कालिदासक ऐतिह्यपर एहन प्रसंग सभक निर्णायक स्वर भले प्रत्यक्ष रूपसँ स्पष्ट नहि भेल हो मुदा परोक्ष रूपसँ कालिदासक मैथिलत्वपर प्रकाश अवश्य दैत अछि। ई प्रसंग उच्चैठमे घटित भेल छल। प्रश्नोत्तर रूपमे एहि रमणगर पद सभक (पृष्ठ 401-04) आनन्द लेल जाय—

सखी सभक माध्यमसँ विद्योत्तमाकक प्रश्न आ बाबा भेषधारी कालिदासक उत्तर देखल जाय—

प्रश्न—

अनिलस्यागमो नास्ति द्विपदो नैव दृश्यते
वारि मध्ये स्थितं पद्मं कम्पते केन हेतुना

अर्थात् ने हवा चलि रहल अछि ने मनुक्खक गमनागमन अछि तखन पोखरि मध्य फुलायल ई कमल कम्पित कोना भऽ रहल अछि?

उत्तर—

अनलोच्छिष्ट वर्णानां शर्बरीकृत बन्धनात्
सूर्योदयस्य वेलेयं कम्पते तेन हेतुना

अर्थात् कोयला सन कारी भ्रमर अपन प्रिया कमल संग गलबाँही बंधनमे रहि एकाकार भऽ राति बिता देलक। सूर्योदय भऽ गेलै आ आब कान्त भ्रमर प्रस्थान करताह एहि भावी विरह केर आशंकासँ कान्ता कमल कम्पित भऽ रहल अछि।

प्रश्न—

काष्ठस्य भेदने शक्तिस्तथा वंशगणस्य च
अत्यन्त कोमलं पद्मं कस्माद्धेतो: न भिद्यतै?

अर्थात् कठोर काठ आ बाँस छेदनमे कुशल भ्रमर अत्यन्त कोमल कमलदल केर छेदन किएक नहि करैत अछि?

उत्तर—

अत्यन्त कोमलं पद्मं भ्रमर: प्रेमरक्षक:
तस्मान् न भिद्यते पद्मं भवत्या: सदृशो न हि

अर्थात् अत्यन्त कोमल कमलदलकेँ सरलतासँ भ्रमर भेदन कऽ सकैछ मुदा ओ प्रेम केर रक्षक अछि, अहाँ जकाँ अविवेकी स्नेहशून्य नहि जे कान्ताक क्लेशक कारण बनत।

विद्योत्तमा स्वयंकेँ अविवेकी आ स्नेहशून्य कहलापर अनुमान करैत छथि जे ई व्यंग्य बाण हुनकेपर सन्धान कयल गेल अछि। ओ स्वयं संतुष्ट होयबाक लेल माँसु रान्हैत अघोरी भेषधारी कालिदाससँ प्रश्न करैत छथि। ई रमणीय प्रश्नोत्तर अछि—

भिक्षो! मांस-निषेवनं प्रकुरुषे? किन्तेव मद्यं विना
मद्यं चापि तव प्रियम्? प्रियमहो वाराङ्गनाभि: सह।

वेश्याऽप्यर्थरूचि: कुतस्तव धनम्? द्यूतेन चौर्येण वा
चौर्यद्यूतपरिग्रहोऽपि भवत: ? भ्रष्टस्य काऽन्या गति:?

प्रश्नोत्तर रूपमे भावार्थ—

विद्योत्तमा : भिक्षुदेव! अपने माँसु खाइत छी?
अघोरी : बिनु मदिरा माँसाहार कोन भोजन?
विद्योत्तमा : तऽ की मदिरो चाही?
अघोरी : मदिरा चाहबे करी। जँ वारांगनाक साहचर्य भेटि जाय तऽ आर उत्तम।
विद्योत्तमा : वारांगना पाइपर भेटैत अछि। अहाँक संग पाइ अछि?
अघोरी : धन केर कोन कमी! चोरी आ जुआ आबाद रहय।
विद्योत्तमा : ओह! तऽ अहाँ चोर आ जुआरी सेहो छी?
अघोरी : भ्रष्ट केर आर कोन गति?

उपर्युक्त प्रश्नोत्तरसँ महाकविक ऐतिह्यपर प्रकाश नहि पड़ैत अछि मुदा *भ्रष्टस्य काऽन्या गति:*सँ पं. दिगम्बर झा अनुमान करैत छथि जे तिरस्कारक भ्रष्ट शब्दसँ महाकविक दशा विद्योत्तमा जानि जाइत छथि आ हुनका आदर सहित राजभवनमे बजा लैत छथि जतऽ अस्ति कश्चित् वाग्विशेष: प्रसंग घटित होइत अछि।(पृष्ठ 404-5)

उच्चैठ भगवतीक कृष्ण प्रस्तरक प्रतिमाक प्राचीनता जे हो मुदा महाकवि कालिदास हिनके कृपासँ विश्वविश्रुत भेल छलाह ई तथ्य जन-मनमे अत्यन्त प्राचीन कालसँ पसरल अछि। कमसँ कम 788 वर्षसँ तऽ एकर अभिलेखीय प्रमाण अछि।

एहि अभिलिखित प्रमाणमे तिब्बती बौद्ध धर्मयात्री धर्मस्वामिन् (1197-1264 ई.) केर जीवनी Biography of Dharmsvamin (Chag lo tsa- ba Chos-rje-dpal), जीवनीकार— उपासक चोस-दार, अनुवादक डॉ. जॉर्ज रोएरिक, दर्शनशास्त्र विभागाध्यक्ष, Institute of Oriental Studies, The Academy of Science, मास्को, सोवियत रूस, प्रकाशक— के पी जायसवाल रिसर्च इन्टीट्यूट, पटना, 1959, पृष्ठ 82-85कैं राखल जा सकैछ। धर्मस्वामिन्

तिब्बतसँ नेपाल होइत मिथिला, मगध, नालन्दा आदि स्थल केर यात्रा 1234-36 ई. मध्य कयने छलाह। नेपालसँ बोधगयाक यात्रामे ओ अबैत काल मिथिला प्रवासक जानकारी नहि दैत छथि। आपसी यात्रामे ओ मिथिलामे सोमनाथ शिवलिंग केर समक्ष साष्टांग दंडवत् कयलापर शिवलिंगकेँ खंडित होयबाक घटना, सिमराँवगढ़मे कर्णाट राजा रामसिंहसँ भेंट, राजधानी पटमे छ: लाख घर केर उल्लेख आदि कयने छथि। अध्ययनसँ इहो स्पष्ट होइछ जे ओ नेपालसँ तीन मासमे बोधगया आबि सकलाह। नेपालसँ बोधगया बिनु मिथिला आ गंगाजी पार कयने संभव कहाँ अछि! अनुमानत: ओ अबिते काल वर्तमान नेपाल-मटिहानी-मधवापुर-बेनीपट्टी मार्गसँ मिथिला आ गंगाजी पार करैत बोधगया गेल होयताह। वज्रासन (बोधगया)सँ दक्षिण एक मासक यात्रापर ओ गैर बौद्ध मन्दिर सोमनाथक चर्च करैत छथि (पृष्ठ 82)। आगू ओ मगधमे गैर बौद्ध भगवती काली (ल्हा-मो नाग-मो) प्रतिमाक चर्च करैत छथि। मन्दिरक आगू एक भथल इनार आ अव्यवस्थित पाथरक ढेरसँ मन्दिरक पूर्वाभिमुख एक द्वारक सेहो चर्च करैत छथि (पृष्ठ 82)। एहि मन्दिरसँ संबंधित ओ कथा कहैत छथि जे एक राजाक गुणवती राजकुमारी छलीह। विवाह योग्य भेलापर ओ राजकुमारी कहलनि जे हम अपनासँ पैघ विद्वानेसँ विवाह करब। जेहन-तेहन संग नहि जायब। राजा सोचिकेँ कहलनि जे वररूचि संस्कृतक पैघ विद्वान् छथि हुनके संग अहाँक विवाह कऽ दैत छी अहाँ हुनके संग जाउ। राजकुमारी कहलनि जे हम वररूचिसँ पैघ विद्वान् छी तेँ हम हुनका स्वीकार नहि करब। वररूचि ई जानि कुपित भेलाह आ मूर्खसँ राजकुमारीक विवाह करएबाक लेल मूर्खक खोज शुरू कयलनि। मूर्खक उदेसमे कालिदासकेँ जाहि डारिपर बैसल ओकरे काटैत देखि प्रसन्न भेलाह। मूर्ख गाछक शाखा कटिते धड़ामसँ भूमिपर खसि पड़ल। वररूचि ओकरा राजकुमारीसँ विवाहक प्रलोभन देलनि आ सिखा-पढ़ाकेँ राज दरबारमे आबि कहलनि जे ई महापण्डित हमर गुरु छथि। हिनका राजकुमारी संग विवाह करा दुनूकेँ विदा कएल जाय। राजा कहलनि जे ई अहाँक गुरु छथि तखन राजकुमारी स्वयं निर्णय लऽ सकैत छथि। हमरा कोनो आपत्ति नहि अछि। ओहि समय भारतवर्षमे कोनो प्रार्थनासँ पूर्व आशीर्वाद स्वरूप कोनो श्लोक पढ़बाक प्रथा छल। वररूचि ओहि मूर्खकेँ ऊँ स्वस्ति कहबाक अभ्यास करा देने छलाह मुदा ओहि मूर्खसँ ई संभव नहि भेल आ ओ कहुना *उशंरटं* केर उच्चारण कऽ सकल। वररूचि चटसँ श्लोक बना सुना देलनि—

__उ__मा सहितो रुद्र:
__शं__कर शूलपाणि भृत्।
__र__क्षतु त्वां महीपाल
__टं__कार बलगर्वित:।।

एहि श्लोककेँ वररूचि माता सरस्वतीक कंठहार कहलनि। राजा आ राजकुमारीकेँ ई स्वीकार्य भेल। राजकुमारीक विवाह होइत मातर वररूचि लंक लेलनि। किछुए कालमे स्थिति स्पष्ट भऽ गेल। जमायकेँ तिरस्कार वा भगएलासँ अपयशक भय छल तेँ राजा गुम लाधि लेलनि। राजकुमारी अपन पतिसँ घृणा करऽ लगलीह। मूर्ख भागिकेँ एहि मन्दिरमे आबि अपन मृत्युक कामनासँ भगवतीक गोहारि शुरू कयलक। दू दिन बाद राजकुमारी सोचलनि जे जँ भूखल-पियासल पति मरि गेलाह तखन नीक नहि होयत। ओ अपन धायकेँ किछु भोजन आ पान-सुपारी लऽ मन्दिर पठओलनि। ओ धाय मन्दिरमे हकासल-पियासल मूर्खक मुहमे आइँठ पान जबर्दस्ती ठूसि देलक। भगवती सभटा देखि रहल छलीह। ओ सोचलनि जे ई नौड़ीन् तक एकर तिरस्कार करैत अछि। किछु चमत्कार होयबाक चाही। भगवती प्रकट होइत नौड़ीन् केर गालपर हल्लुक चपत दैत मूर्खसँ पुछलनि की वरदान चाही? मूर्ख बाजल जे हम संस्कृतक विद्वान् बनऽ चाहब। क्षण भरिमे ओ भारी विद्वान् बनि गेल। अपन दहिना हाथमे सख्त डंटीपर प्रस्फुटित कमल जे गुलाब जकाँ लगैत छल आ बाम हाथमे सुकोमल कमल नाल युक्त नीलकमल नेने राजकुमारीक द्वारपर आबि बाजल— हे कमलनयनी! हमर दहिना हाथमे कमल अछि जे गुलाब सन अछि आ बामा हाथमे नीलकमल अछि। अहाँ की लेब? एहि श्लोक केर काव्यानुवाद अछि—

अहाँक मुखकमलसँ लजा एक हाथक गुलाब भेल कमल।
हे कमलनयनी! हमर दोसर कर शोभित अछि नीलोत्पल।।

करकमल कमलमय कमल, अपनेकेँ चाही कोन कमल।
कमलमुखीक मुखकमलसँ आइ निकसल दू नीलकमल!

राजकुमारी ओहि रमणगर कवितापर प्रसन्न भेलीह आ दुनू गोटे सुखपूर्वक जीवन गुदश्त कयलनि। कालिदास कालिपा व्याकरण सहित अनेक रचना कयलनि।

(यथोक्त ग्रंथ, पृष्ठ 82-85)

एहि प्रसंगक चर्च करबाक उद्देश्य स्पष्ट रूपसँ ई दर्शायब अछि जे कमसँ कम 788 वर्ष पूर्वसँ बेनीपट्टीक भगवतीक संग एहन जनश्रुति होयबाक तऽ

लिखित प्रमाण अछि। एहि ठाम इहो उल्लेखनीय जे बोधगया वा मगध केर कोनो मन्दिरक संग एहन अनुश्रुति प्रचलित नहि अछि। धर्मस्वामिन् नेपालसँ बोधगया जाइत काल मटिहानी-मधवापुर-बेनीपट्टीक मार्गपर अवस्थित एहि मन्दिरक आगूसँ गेल छलाह मुदा एकर वर्णन मगध क्षेत्रक अधीन एहि लेल कयलनि जे आन गैर बौद्ध मन्दिर सभक चर्च ओ आपसी कालेमे करैत छथि। इहो उल्लेखनीय तथ्य अछि जे बोधगयाक प्रसिद्ध मंगलागौरी शक्ति स्थल अवश्य मानल जाइछ मुदा एहि सुप्रसिद्ध प्राचीन मन्दिर संग मूर्ख कालिदासकेँ महापण्डित बनएबाक कोनो अनुश्रुति नहि अछि। बिहारक एकमात्र उच्चैठ भगवती विषयक एहन अनुश्रुति अछि आन कोनो मन्दिर विषयक एहन अनुश्रुति वा मान्यता नहि अछि। धर्मस्वामिन् महोदय भ्रमवश मिथिलाक स्थानपर मगध कहि देलनि। इहो तथ्यात्मक अछि जे ओहि समय मिथिला मगधे केर भाग छल। दुर्भाग्य जे एहि ग्रंथक तिब्बती मूल भागमे सेहो मगधे लिखल अछि। तेँ एकरा धर्मस्वामिन् महोदयक भ्रमे कहब उचित थिक। धर्मस्वामिन् महोदय केर एहन अनेक भ्रम सभक उल्लेख कएल जा सकैछ जेना बोधगयाक मन्दिर 52 फीट ऊँच अछि (पृष्ठ 66), बोधगया मन्दिरक आगू जरैत दीप कहियो मिझा नहि सकैछ (पृष्ठ 72), तिरहुतक राजधानी पटमे छः लाख परिवार अछि (पृष्ठ 58), सोमनाथ शिवलिंग बौद्ध आचार्यक साष्टांग दंडवतसँ खंडित भेल (पृष्ठ 82), कालिदास कालिपा संस्कृत व्याकरण रचलनि (पृष्ठ 85) आदि आदि। स्पष्ट रूपसँ हुनकर कालिदास विषयक अनुश्रुतिक सम्पूर्ण विवरण उच्चैठ भगवती विषयक थिक भ्रमवश मिथिलाक स्थानपर मगध लिखा गेल अछि।

उपर्युक्त विश्लेषणसँ एतेक तऽ स्पष्ट अछि जे उच्चैठ भगवती आ कालिदास विषयक अनुश्रुति अत्यन्त प्राचीन अछि। धर्मस्वामिन् महोदयकेँ सेहो ई जानकारी मुखस्थ परम्परेसँ भेटल होयत कारण एकर लिखित प्रमाण अन्यत्र प्राचीन ग्रंथ सभमे उपलब्ध नहि छल। एक बौद्ध भिक्षु भेलाक बादो ओ मुखस्थ परमपरामे सुरक्षित देवी विषयक अनुश्रुतिपर विश्वास कयलनि एहिसँ एतेक धरि तऽ निर्विवाद मानल जा सकैछ जे ई अनुश्रुति ओहि समय सेहो कतेक शताब्दी पूर्वसँ प्रचलित रहल होयत। एहिसँ उच्चैठ भगवती मूर्त्ति, मन्दिर आ कालिदास विषयक प्रसंग केर प्राचीनता प्रमाणित होइछ। यद्यपि महाकविक रचनामे उच्चैठ वा काली विषयक विशेष चर्च केर अभावक कारणेँ किछु विद्वान् एहि प्रसंगकेँ मात्र दन्तकथा मानि एकर अनादर करैत छथि। एहि भाव केर समीक्षा आवश्यक अछि।

उच्चैठ भगवती आ कालिदासक कथा मिथिलाक कण-कणमे व्याप्त अछि। उच्चैठ भगवतीक प्रस्तर प्रतिमा अत्यन्त प्राचीन अछि। तथापि महाकवि कालिदासक रचनामे महाकालीक विशेष वर्णन/चित्रण नहि देखि किछु गोटे कालिदास-उच्चैठ

भगवती विषयक प्रसंगकेँ मात्र किम्वदन्ती वा काल्पनिक कथा कहि उपेक्षा करैत छथि। एहन विद्वान् सभसँ निवेदन जे एक बेर फेर महाकविक रचना सभक अध्ययन कयल जाय विशेष रूपसँ चिद्गगनचन्द्रिका केर। कुमारसंभवम् मे सहो महाकालीक वर्णन अछि—

तासां च पश्चात्कनकप्रभाणां काली कपालाभरणा चकासे।
बलाकिनी नीलपयोदराजी दूरं पुरःक्षिप्तशतह्रदेव।।

(कुमारसंभवम्, 7/39)

अर्थात् स्वर्ण समान चमकैत कान्तियुक्त सप्त मातृका सभक पाछू श्वेत खप्परक आभूषणसँ सुशोभित भद्रकाली चलि रहल छथि। ई ओहिना शोभायमान छथि जेना बगुला सभक पाँति आ देर तक चमकैत बिजुरीसँ शोभायमान नीलवर्णी घटा चलि रहल हो। महाकवि अपन उपास्य भगवतीक अवसरानुकूल वर्णन करैत छथि। सरस्वती भवन ग्रन्थमालासँ 1980 ई.मे प्रकाशित चिद्गगनचन्द्रिका आ बादमे आन्ध्रप्रदेशक कर्राशास्त्री अग्निहोत्री विरचित चिद्गगनचन्द्रिका केर टीकासँ स्पष्ट परिलक्षित होइत अछि जे सिद्धनाथ रचित काली स्तुति देखि एहि क्रममे हम कालिदास एहि पुस्तिकाक रचना कयलहुँ। अपनेक कृपासँ वाग्विलासकेँ प्राप्त कऽ हम कालिदास अपनेक शरणमे आयल छी। हे उमे! हे कालि! अहाँक कृपासँ हमरा दिव्यचक्षु प्राप्त भेल। हम मात्र अहाँक महिमाक वर्णन करैत छी—

सिद्धनाथकृतत्वत्क्रमस्तुतेः कालिदासरचितां च पञ्चिकाम्।

(चिद्गगनचन्द्रिका, 305)

कालिदासपदवीं तवाश्रितः त्वत्प्रसादकृतवाग्विजृम्भणः।

(चिद्गगनचन्द्रिका, 306)

प्राप्तदिव्यनयनैर्विलक्षणैर्वीक्ष्य कालि! महिमाऽनुवर्ण्यते।
केवलं तदनुवर्णनेऽप्युमे! त्वन्मुदे तदपि दासजल्पितम्।।

(चिद्गगनचन्द्रिका, 272)

महाकवि कालिदासक ई वाणी स्पष्ट रूपसँ उच्चैठ भगवती विषयक कथा दिशि संकेत करैत अछि। भगवतीक प्रति कालिदास कृतज्ञ भावसँ स्पष्ट उद्घोष करैत

छथि जे अपनेक कृपासँ वाग्दान आ दिव्य दृष्टि भेटल। एहि पद सभसँ उच्चैठ भगवती आ महाकवि कालिदास विषयक अद्‌भुत कथा वा अनुश्रुति सभक सत्यता साफ दर्पण जकाँ झलकि जाइत अछि। एकर बाद सन्देह केर स्थान नहि रहि जाइत अछि।

सिद्धनाथपर विचार करैत पं. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी हुनका लघुसप्तशतीस्तोत्रक आधारपर अभिनवगुप्तक गुरु शम्भुनाथ सिद्ध करैत छथि आ मानैत छथि जे एहिसँ महाकविक ईसापूर्व प्रथम शताब्दीक प्राचीनता सन्देहमे पड़ि जायत।

(पं. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी : कालिदास ग्रन्थावली, परिशिष्ट, पृष्ठ 683)

अभिनवगुप्त अपन तीन ग्रंथ— क्रम स्तोत्र, भैरव स्तोत्र आ ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविवृत्तिमे एकर रचना कालक स्पष्ट उल्लेख कयने छथि—

षट्षष्ठिनामके: वर्षे नवभयामसितेऽहनि
मयाभिनवगुप्तेन मार्गशीर्षे स्तुत: शिव

(क्रम स्तोत्र)

इतिहास नवतितेमेऽस्मिन् वत्सरान्ये युगांशे
तिथिशशिजलधस्थे मार्गशीर्ष वसाने।
जगति विहितबोधां ईश्वरप्रत्यभिज्ञां
व्यवृणुत परिपूर्णा प्रेरित: शम्भुपादै:।

(ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविवृत्ति)

एहि सभसँ अभिनवगुप्तक समय 950-1025 ई. प्राय: निर्धारित अछि। महाकवि कालिदासक ईसापूर्व प्रथम शताब्दीक कथित प्राचीनता केर खंडन अन्यत्र भेल अछि। इहो उल्लेखनीय जे अभिनवगुप्त अपन गुरुक नाम शम्भुनाथ दैत छथि सिद्धनाथ नहि। सिद्धनाथ आ शम्भुनाथकेँ कठिन कल्पना करैत एक मानबाक ने कोनो औचित्य आ ने कोनो प्रयोजन। सिद्धनाथ अलग छथि आ अभिनवगुप्त केर गुरु शम्भुनाथ अलग। चिद्‌गगनचन्द्रिकाकार कालिदासक गुरु सिद्धनाथ छथि जिनकर समय पाँचम-छठम शताब्दी अछि।

डॉ. एकान्त बिहारी अपन चर्चित आलेख (साप्ताहिक हिन्दुस्तान, 18 अक्टूबर 1964 अंकमे प्रकाशित)मे कहैत छथि जे उज्जैनसँ किछु दूर भैरवगढ़मे

शिप्रा नदीक कातमे दू शिलालेख भेटल जाहिमे उल्लेख अछि जे कालिदास अवन्तिमे उत्पन्न भेल छलाह आ हुनक समय शुंगराज अग्निमित्रसँ विक्रमादित्य तक छल। ई शिलालेख महाराज विक्रमादित्यक आज्ञासँ हरिस्वामी नामक एक उच्च पदाधिकारीक आदेशसँ तैयार भेल छल। आगू कहैत छथि जे कार्तिक शुक्ल एकादशी रविकेँ 95 वर्ष केर आयुमे महाकविक मृत्यु भेल छल। महाकविक समय ईसापूर्व 56 ई. मानब उचित होयत। कालिदास विषयक एतेक महत्त्वपूर्ण शिलालेख केर विस्तृत प्रकाशन नहि भेल ई सन्देह उत्पन्न करैत अछि। इतिहासक निकषपर मूल्यांकन करब तखन एहि स्थापनाकेँ सत्य नहि मानल जा सकैछ। ईसापूर्व 185 ई.मे सेनापति पुष्यमित्र मौर्य सम्राट् वृहद्रथकेँ मारि शासनसूत्र अपना हाथमे नेने छलाह। हुनक शासन 36 वर्ष आ पुत्र अग्निमित्रक शासन 8 वर्ष रहल छल। 185-44(36+ 8) = 141 ईसापूर्वमे दुनूक समय समाप्त भऽ गेल। महाकवि एकर बादो 141-56 = 85 वर्ष जीवित रहलाह। अर्थात् जँ एहि कठिन कल्पनाकेँ मानि ली तखन महाकविक आयु कमसँ कम 125 वर्ष मानए पड़त किएक तऽ अग्निमित्र केर समय महाकविक आयु कमसँ कम 40 वर्ष तऽ मानहे पड़त। 125 वर्ष केर आयु मानब उचित नहि होयत। दोसर जे शुंग राजवंशक बाद विक्रमादित्य किनका कहल जाय ई यक्ष प्रश्न सेहो उपस्थित होयत। शुंग राजवंशक पतन ओहिना भेल छल जेना एकर स्थापना। शुंग वंश केर अंतिम राजा देवभूतिकेँ मंत्री वासुदेव सुरधाम पठा कण्व वंश केर स्थापना कयलनि। कण्व वंशमे वासुदेवक बाद भेल तीनू राजा भूमिमित्र, नारायण आ सुशर्मन कमजोर राजा सिद्ध भेलाह। फेर सातवाहन राजवंश सत्ता सम्हारलक। एहि वंशमे योग्य शासक भेलाह मुदा प्रश्न अछि जे विक्रमादित्य किनका कही। गाथासप्तशती (दोसर शताब्दी)मे हाथमे लक्ष आलक्तकसँ सुशोभित जाहि विक्रमादित्यक कथा नायिका पयर जँतैत कहि रहल छथि—

संवाहण सुहरतोसियेण देन्तेण तुहकरे लक्खम्
चललेण विक्कमाइत्त-चरिअं अनुसिक्खियं तिस्स(564)

हुनका वा कोनो आन चक्रवर्ती राजाकेँ ई निर्धारित करब दुष्कर अवश्य अछि। डॉ. राजपुरोहित सेहो एहने एक मुद्रा विषयक प्रसंगक उल्लेख करैत कहैत छथि जे उज्जैनक गढ़कालिका क्षेत्रसँ 1976 ई.मे एक मृद् मुद्रा श्रीनारायण भाटीजीकेँ भेटल छल। एकर वर्णन हिनक वरीय सहयोगी डॉ. वि. श्री. वाकणकर तरुण भारत

(मराठी), दीपावली विशेषांक, पृष्ठ 83-88मे प्रकाशित करओलनि। सम्प्रति ई मृद् मुद्रा विक्रम विवि केर पुरातत्त्व संग्रहालयमे संरक्षित अछि। एहिमे मकारयुक्त स्वास्तिक चिह्न आ चारू कात ब्राह्मी लिपिमे 'कतस उजेनीय' अंकित अछि। एकरा ईसापूर्व प्रथम शताब्दीक 'कृतस्य उज्जयिन्या:' मानि लेल गेल (डॉ. भगवती लाल राजपुरोहित, कालिदास का वागर्थ, पृष्ठ 69)। एकरा भगवानेक कृपा कहब उचित जे ब्राह्मी लिपि देखलाक बाद एकर समय ईसापूर्व प्रथमे शताब्दी मानल गेल। सम्राट् अशोकक अनेक शिलालेख ब्राह्मी लिपिमे अछि। जँ हुनकर समय केर एहि मृद् मुद्रा मानि लेने रहितथि तखन आर विकट स्थिति होइत। संभव जे ई कृत केर मुद्रा हो। उपर्युक्त शिलालेख आ मृद् मुद्रा सभक विस्तृत अध्ययन जाबत नहि होइत अछि ताबत एकरा सभकेँ महाकविक समय आ स्थान निरूपित कयनिहार निर्णायक वा अकाट्य प्रमाण नहि मानल जा सकैछ। सन्देहक निवारण बिनु देखने संभव नहि।

महाकवि कालिदास सन्दर्भित उज्जैन विषयक किछु चर्च पूर्वमे भेल अछि। मगधराज एवं अंगराजक बादे अवन्तिनरेशक चर्च आ उज्जैनक वार बनिता सभक उत्कट चित्रण विषयक भावोल्लेख अन्यत्र भेल अछि ओकरा दोहरायब उचित नहि। एहि ठाम उज्जैनक दू महत्त्वपूर्ण स्थल हरसिद्धि मन्दिर आ गढ़कालिका मन्दिरपर विचार आवश्यक अछि। हरसिद्धि भगवतीकेँ राजा विक्रमादित्य केर कुलदेवी मानल जाइछ। हरसिद्धि मन्दिर, उज्जैन (मध्य प्रदेश)क मन्दिरमे लागल शिलालेखपर उत्कीर्ण अछि—

पूज्यनीया सदादेवी सर्वैनागिरिकैर्जनै:
माननीया शिवाशक्ति: सर्वकामार्थ सिद्धिदा।

नवम्यां पूजिता देवी हरसिद्धि हर्रप्रिया
तुष्टा नृणां सदा व्यास ददात्य नवमं फलम्।।

चक्रस्थानं महातीर्थं सर्वतीर्था धिकं शिवे
त्रिदशायत्रवा र्च्छन्ति तव नैवेद्य मुक्तमम्।।

एहि मन्दिरमे महादेवी सरस्वती आ महादेवी लक्ष्मीक मध्य महादेवी अन्नपूर्णा विराजमान छथि। गर्भगृहमे एक शिलापर श्रीयंत्र सुशोभित अछि। एहि महादेवी विषयक अनेक दन्तकथा आ अनुश्रुति सब पसरल अछि जे विक्रमादित्य प्रतिदिन

अपन शीश देवीकेँ अर्पित करैत छलाह आ फेर नवजीवन पबैत छलाह। रातिमे एतऽ आ दिनमे गुजरातमे रहैत छथि महादेवी। आदि आदि। एहि सभपर विचार करब समय केर अपव्यय थिक। एकरा सभक कोनो वैज्ञानिक आधार नहि। आब उज्जैन केर गढ़कालिका मन्दिरमे लागल सूचना देखल जाय—

कांचीपुरे तु कामाक्षी, मलये भ्रामरी तथा केरले तु कुमारी सा,
अम्बा नर्तेषु संस्थीता करवीरे महालक्ष्मी, कालिका मालवेषुसा

प्रयागे ललितादेवी विन्ध्ये विन्ध्य निवासिनी वाराणस्यां विशालाक्षी
गया यां मंगलावती, वंगेषु सुन्दरी देवी, नेपाले गुह्येश्वरी।

इति द्वादश रूपेण, संस्थीता भारते शिवा।
एतांशा दर्शना देवी, सर्व पाप: प्रमुच्यते।।

अशक्तो दर्शने नित्यं स्मरेत प्रात: समाहित:।
तथाप्युपासक: सर्वेरपराधैर्वि मुच्यते।।

एहि12 पाप नाशिनी स्थलमे उल्लिखित कोनो मन्दिरक संग मूर्खकेँ विद्वान् बनएबाक कोनो कथा अनुस्यूत नहि अछि। गयाक मंगलागौरी संग सेहो एहन कोनो कथा रूढ़ नहि अछि जे धर्मस्वामिन् द्वारा उल्लिखित मूर्खसँ विद्वान् बनओनिहारि मगध केर भगवती हिनका मानल जाय।

गढ़कालिका मन्दिर (निर्देशांक 23.1839839 N, 75.7707646 E)मे प्रदर्शित सूचनापट्टमे उल्लेख अछि जे लोक परम्परानुसार गढ़कालिका महाकवि कालिदासक इष्टदेवी मानल जाइत छथि। एहि ठाम शुंगकाल (ईसापूर्व प्रथम शती), गुप्तकाल (चारिम शती) आ परमारकाल (दशम शती)क प्रतिमा आ नींव भेटल छल। सम्राट् हर्षवर्द्धन 606 ई.मे एकर जीर्णोद्धार करओने छलाह। दशम शताब्दीमे परमार राजा द्वारा कयल जीर्णोद्धारक पता सेहो चलल छल। विक्रम संवत् 2001(1944 ई.)मे परम्परागत पुजेगरी सिद्धनाथजी महाराज द्वारा एहि मन्दिरक जीर्णोद्धार सेहो भेल छल। गढ़कालिका मन्दिरक प्रचीनता असंदिग्ध अछि। महाकवि कालिदाससँ एहि मन्दिरक संबद्धतापर कोनो प्रश्न ठाढ़ करब सेहो

उचित नहि अछि। एहि ठाम जे एक महत्त्वपूर्ण तथ्य ध्यान आकर्षित करैत अछि से थिक एतऽ केर विशिष्ट पूजन परम्परा। ई पूजन परम्परा थिक मैथिल पूजन परम्परा। ई आश्चर्यजनक अछि जे गढ़कालिका मन्दिरक पुजेगरी परम्परानुसार मैथिल होइत छथि। एहिसँ ई निष्कर्ष सोझाँ अबैत अछि जे एहि प्राचीन मन्दिरकेँ मैथिल महाकवि कालिदास अपना संग जोड़ने छलाह। मिथिलाक गाम-गाममे ब्रह्मबाबा, डिहवार बाबा आ पूजास्थल केर परम्परा रहल अछि। प्रत्येक घरमे दुर्गा, काली, भवानी, ज्वालामुखी, बाग्लामुखी, घुमावती, चण्डिका, तारा, कस्तूरा, शाकम्भरी, भ्रामरी, कंकाली, मातंगी, विषहरि, शीतला, गहील, बौकी देवी, लाठी देवी, हिरमणि, कबूतरा माई आदि विभिन्न रूपमे भगवती स्थापित छथि। देवता रूपमे धर्मराज, सोखा, सोमनाथ, जयराज, उदयराज, राघवसिंह, कालिदास, कारिख, काली, बन्दी, गोंरैया, राहु, वारमल्ल, भैरव आदि सिरागू घरमे रहिते छथि। बेसी घरमे भगवती काली पूजागृहमे विराजमान छथि। सिरागू घरमे बेंत, लाठी, फरसा, भाला, कत्ता, तरुआरि आदि अस्त्र-शस्त्र राखल रहैछ। प्रचीन कालसँ ई परम्परा रहल अछि। ई सहज अनुमेय अछि जे समस्त सिरागूघर ओहि परिवारक शस्त्रागार रहल होयत, शक्तिस्थल रहल होयत। मैथिल सेहो अपन एहि परम्पराक निर्वहन करैत छथि। ओ बाहरो जाइत छथि तऽ अपन कुलदेवी-देवताक त्याग नहि करैत छथि आ प्रतीक स्वरूप घरक कोनो कोणमे पूजास्थल रखिते छथि। संभवत: मैथिल कालिदास जखन उज्जैन प्रवास कयलनि तखन ओ गढ़कालिका भगवतीकेँ अपन आराध्य कुलदेवी रूपमे पूजन करैत हुनकर पूजन मैथिल परम्परासँ शुरू कयलनि। इहो संभव अछि जे ओ भगवतीक मन्दिर हुनके द्वारा व्यवस्थित कएल गेल हो। राजा विक्रमादित्यक इष्टदेवी हरसिद्धिकेँ रहैत हुनकर आन रत्न सभक पृथक् भगवतीक अस्तित्वक कल्पना कने कठिन अवश्य अछि। कथित नवरत्नमे सम्मिलित आन कोनो रत्नक पृथक् कुलदेवीक अस्तित्वक प्रमाण उज्जैनमे तऽ नहि अछि। विक्रमादित्यक कथित नवरत्नक समकालीन होएब सेहो असंदिग्ध नहि अछि। एहन स्थितिमे गढ़कालिका भगवतीक पूजन मैथिल परम्परासँ होयब, पुजेगरीक मैथिल होयब आ गढ़कालिका भगवतीक कालिदास पूजित होयबाक लोक परम्परा वा अनुश्रुति यथेष्ट प्रमाण अछि जे महाकवि कालिदास मूलत: मैथिल छलाह जे बादमे मालवा क्षेत्रक उज्जैनकेँ अपन कर्मक्षेत्र बनओलनि। ऐतिहासिक रूपसँ ई प्रमाणित अछि जे गुप्तकुल केर चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य (380-415 ई.) शक सभकेँ 397 ई.मे परास्त कयने छलाह आ तखन ओ पाटलिपुत्रसँ चलि अपन

दोसर राजधानी उज्जैनमे स्थापित कयलनि। इहो मानल गेल जे महाकवि अपन आश्रयदाता चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य संग पाटलिपुत्रसँ उज्जैन आबि गेल छलाह। एहि स्थापनासँ महाकविक गुप्तकालीन होयबाक संगति तऽ बैसि जाइत अछि मुदा सिंहल नरेश धातुसेना वा कुमारदास (513-522 ई.)सँ हुनकर समसामयिकतापर प्रश्नचिह्न लगैत अछि।

किछु विद्वान् (जयशंकर त्रिपाठी : रघुवंश महाकाव्य की रचना का देश-काल, महाकवि कालिदास और उनका युग, राका प्रकाशन, इलाहाबाद, 1998, पृष्ठ 61-71) महाकविक समय पाँचम-छठम शताब्दी मानैत छथि। ओ हूणहन्ता आ स्कन्द समान पराक्रमी यशोधर्माकेँ महाकवि कालिदासक समकालीन कहैत छथि। हुनकर आकलन अछि जे 503-518 ई. मध्य कालिदासक काव्य सृजित भेल। यशोधर्मा गुप्त राजवंशक क्षरण कालमे एक उल्का जकाँ चमकैत भारतीय नभपर उदित भेल छलाह आ अपन अतुलित आभासँ सभकेँ चकचोन्ही लगबैत फेर अस्त भऽ गेलाह। हिनक पुरखा क्षीण होइत गुप्त साम्राज्यमे सामन्त रहल छलाह। आदित्यवर्धन् 490 ई.मे अपन स्वतंत्रताक घोषणा करैत औलिकार राजवंशक स्थापना कयलनि।

मन्दसौरक रिष्ठलपुरसँ प्राप्त प्रकाशधर्मन् केर पाषाण फलकसँ स्पष्ट होइछ जे ओ हूण तोरमाणकेँ 515 ई.सँ पूर्व पराजित करैत अधिराजक उपाधि ग्रहण कयलनि। हिनक पुत्र यशोधर्मन् एहि कुल केर सर्वश्रेष्ठ रत्न सिद्ध भेल छलाह। कोनो आश्चर्य नहि जे यशोधर्मन् एहि युद्धमे पिता प्रकाशधर्मन् संग तोरमाणक पराजयक पटकथा तैयार कयने होथि। युवराजत्व कालमे तोरमाण आ राजत्व कालमे मिहिरकुल केर नत कयने होथि। हूण नरेश तोरमाणक पराजयक पटकथा लेखक यशोधर्मन् मे महाकवि भारतवर्षक मुक्तिदाताक छवि देखने होथि ई निष्कर्ष एकदम सहज आ स्वाभाविक अछि।

सोंधनी स्तम्भ, मन्दसौर प्रशस्ति आ मन्दसौर लेख यशोधर्मनक विषयमे बहुत जानकारी दैत अछि। प्रशस्तिमे कहल गेल अछि जे हिनक चरण वन्दना सम्पूर्ण संसार कयलक। ओ लौहित्य नदी (ब्रह्मपुत्र नदी, असम)सँ पश्चिम समुद्र तक आ हिमालयसँ महेन्द्र पर्वत तक केर क्षेत्रक विजय कयलनि। जिनकर माथ भगवान् स्थाणु (शिव)क अतिरिक्त किनको आगू अभिवादनमे नत नहि भेल ओहि यशोधर्मन् केर चरणकमलपर मिहिरकुल अपन माथ टेकलनि। हूण नरेश मिहिरकुल पस्त भऽ अपन मस्तकपर शोभित पुष्प हिनकर चरणपर चढ़ओलनि—

आ लौहित्यौपकण्ठात्तलवन-गह[नो]पत्यकादा महेन्द्रा-
दा गङ्गाश्लिष्ट-सानोस्तुहिनशिखरिण)(पश्चिमादापयोधे:।
सामन्तैर्यस्य बाहु-द्रविण-हृत-म[दै]: पादयोरानमद्भि-
श्चूडा-रत्नाङ्शु-राजि-व्यतिकर-शबला भूमि-भागा: क्रियन्ते।।15

स्थाणोरन्यत्र येन प्रणति-कृपणतां प्रापितं नोत्तमाङ्गं
यस्याश्लिष्टो भुजाभ्यां वहति हिमगिरिर्दुर्ग्ग-शब्दाभिमान[म्]।
नीचैस्तेनापि यस्य प्रणति-भुजबलावर्ज्जन-क्लिष्ट-मूर्द्धा
[चू]डा-पुष्पोहारैर्म्मिहिरकुल-नपेणाच्चिंत[ ] पाद-युग्मं।।16

(डा. वासुदेव उपाध्याय : गुप्त अभिलेख, पृष्ठ 225)

ई ऐतिहासिक तथ्य अछि जे मिहिरकुलकेँ यशोधर्मन् परास्त कयने छलाह। एहिसँ पूर्व तोरमाण केर पराजयक बात सेहो होइत अछि आ गुप्त नरेश बालादित्य द्वारा सेहो मिहिरकुलकेँ कैद करबाक आ माताक हस्तक्षेपपर कारागारसँ मुक्ति केर कथा सभ अछि। ई प्रश्न उठैत अछि जे की यशोधर्मन् गुप्त नरेश बालादित्यक सामन्त रूपमे मिहिरकुलकेँ पस्त कयलनि वा स्वयं स्वतंत्र शासक रूपमे मिहिरकुलकेँ नत कयलनि। एहि विषयक निर्णायक स्वर अखन धरि नहि आएल अछि। बुधगुप्त केर एरण प्रशस्ति (गुप्त सं. 165 अर्थात् 485 ई.)मे हिनक अधीनस्थ शासक मातृविष्णु आ धन्यविष्णु द्वारा विष्णु ध्वजदंड स्थापित करबाक उल्लेख भेल अछि। एरणपर 500 ई.क पूर्व बुधगुप्त केर शासन छल। 500 ई.क लगभग तोरमाण एहि क्षेत्रपर अपन आधिपत्य स्थापित कयलक। संभवत: मातृविष्णु आ धन्यविष्णु दुनू भाय एकर बाद तोरमाणक अधीनता स्वीकार कयने छलाह। भानुगुप्त केर एरण स्तम्भलेख (गुप्त सं. 191 अर्थात् 510 ई.)मे प्रमुख सामन्त गोपराज केर शहादत आ हुनक प्रिया द्वारा स्वामीक शव संग सती होयबाक चर्च पूर्वमे भेल अछि। एहि युद्धक परिणामपर मतैक्य नहि अछि। किछु विद्वान् एहि युद्धमे तोरमाणक पराजय मानैत छथि मुदा एहि युद्धमे गोपराज केर शहादत आ बादक अभिलेखमे एहि युद्ध विषयक कोनो चर्च केर अभाव किछु प्रश्न-चिह्नक संकेत करैत अछि। ओना डी आर दास Proceedings of Indian History Congress, 1966, vol 28, p 121-22मे एहि युद्धक परिणाममे भानुगुप्तकेँ विजेता मानैत छथि। हुनक भाव तथ्यात्मक लगैछ। 515 ई.क ग्वालियर किलासँ प्राप्त मिहिरकुलक सूर्य मन्दिर

लेखसँ ज्ञात होइछ जे मातृतुलाक पौत्र आ मातृदासक पुत्र मातृचेता एहि सूर्य मन्दिरक कल्पना कयलनि। 515 ई.क रिष्ठलपुर शिलालेख केर चर्च पूर्वमे भेल अछि जे ओहि युद्धमे तोरमाणक निर्णायक पराजय भेल छल। 532 ई.क यशोधर्मन् केर मन्दसौर प्रशस्तिसँ स्पष्ट होइछ जे हूणराज मिहिरकुल पस्त भेल छलाह। मिहिरकुलक पराजय 528 ई.मे मन्दसौरमे भेल छल। सम्राट् यशोधर्मन् केर समय 500 ई.सँ 543 ई. तक मानल जा सकैछ। 515 ई.मे हूण सभक पराजय देखि महाकविक मोन अवश्य हर्षित भेल होयत। ई संभव अछि जे यशोधर्मन् मालवा क्षेत्रक आ गंगाक किनार सभक छोट-छोट राजा सभकेँ पराभूत कयने होथि आ हूण सभक प्रतिरोधमे बनल संघ केर नेतृत्व कयने होथि। अल्प अवधिमे समस्त उत्तर भारतपर अधिकार करब आ चक्रवर्ती राजा जकाँ पूरबमे ब्रह्मपुत्र नदी (असम)सँ पश्चिममे अरब सागर धरि आ उत्तरमे हिमालयसँ दक्षिणमे महेन्द्र पर्वत धरि राज्य विस्तार करब छोट काज नहि छल। ई असाधारण व्यक्तित्व महाकवि कालिदासकेँ अवश्य आह्लादित कयने होयत। जँ महाकविक श्रीलंकासँ सकुशल आपसी संभव भेल रहैत तखन 528 ई.मे यशोधर्मन् द्वारा हूण नरेश मिहिरकुल केर निर्णायक पराजय ओ देखने रहितथि आ महाकविक वाणी यशोधर्मन् केर गुणगान अवश्य कयने रहैत। महाकवि मन्दसौरक प्राचीन नाम दशपुर केर चर्च कयने छथि।

ई उल्लेखनीय तथ्य अछि जे मन्दसौर मालवा क्षेत्रे केर भाग थिक। उज्जैन सेहो एहि मालवा क्षेत्रक एक जिला अछि ओहिना जेना मिथिला क्षेत्रक एक जिला अछि दरभंगा। मन्दसौर आ उज्जैनक मध्य सड़क मार्गसँ दूरी मात्र 150 किमी अछि। उज्जैनपर यशोधर्मन् केर शासन अवश्य रहल छल। यशोधर्मन् केर व्यक्तित्वमे महाकविकेँ भारतवर्षक नव भविष्य दृष्टिगोचर भेल हो ई कोनो आश्चर्यजनक बात नहि लगैछ।

जाट विद्वान् ठाकुर देशराज (जाट इतिहास, महाराजा सूरजमल स्मारक शिक्षा संस्थान, दिल्ली,1934, दोसर संस्करण, 1992, पृष्ठ 712) मालवाक एहि प्रतापी शासक यशोधर्मन् केर राजसभामे महाकवि कालिदासकेँ विद्यमान मानैत छथि। ओ कहैत छथि जे तीन कालिदासमे दोसर कालिदास, जे ज्योतिर्विदाभरण आ रघुवंशम् केर रचयिता छलाह, एहि यशोधर्मनक सभाक रत्न छलाह। हुनक मान्यता अछि जे लोक यशोधर्माकेँ चक्रवर्ती सम्राट् आ विक्रमादित्य मानैत छल। कक्कपुत्र बासुल रचित आ गोविन्द द्वारा उत्कीर्ण यशोधर्मनक मन्दसौर स्तम्भलेखसँ ज्ञात होइछ जे यशोधर्मनक सत्ता ओहि क्षेत्र सभपर छल जेकर भोग गुप्त राजा सेहो नहि कऽ सकल छलाह आ ने जतऽ हूण सभक आज्ञाक प्रवेश भेल छल—

ये भुक्ता गुप्त-नाथैर्न्न सकल-वसुधाक्क्रान्ति-दृष्ट-प्रतापैर्न्नाज्ञा
हूणाधिपाणां क्षितिपति-मुकुटाद्ध्यासिनी यान्प्रविष्टा।।4।।

(गुप्त अभिलेख : डॉ. वासुदेव उपाध्याय, ISBN 978-93-83021-30-7, पृष्ठ 225)

एकर तेसर पंक्तिमे यशोधर्मनकेँ मनु, भरत, मांधाता आ अलर्क समान सम्राट् (सम्राडिति मनु-भरताल्लर्क[मान्धा]तृ...।। 3।। कहल गेल अछि। स्पष्टत: ओ यशस्वी सम्राट् छलाह। यशोधर्मनक व्यक्तित्व विशाल छल तथापि ई आश्चर्यजनक अवश्य अछि जे कालिदास आ यशोधर्मन् विक्रमादित्यक समकालीनतापर इतिहासमे विशेष घमर्थन किएक नहि भेल। जखन कि काल आ परिस्थितिक आधारपर ई बेसी उपयुक्त आ ऐतिहासिक लगैछ। कमसँ कम राजा भोज (भर्तृहरिक भ्राता, 10म शताब्दी)संग कालिदासक चर्चसँ बेसी सटीक तऽ ई अवश्य अछि तथापि इतिहासमे एहिपर विशेष चर्च नहि भेल। हिनके समय महाकवि श्रीलंकाक यात्रा 521 ई.क बाद शुरू कयलनि। महाकविक श्रीलंकासँ जँ सकुशल आपसी भेल रहैत तखन सभटा किन्तु-परन्तु केर गँठी सरिया गेल रहैत।

महाकविक ईसापूर्व केर अवस्थिति वा हुनक गुप्तकालीन विद्यमानता केर भारी द्वन्द्वमे महाकविक यशोधर्मन् कालमे उपस्थितिक स्वर मन्द पड़ि गेल। ई सत्य जे महाकविक रचनासंसारमे जे शान्ति, श्री, सम्पन्नता आ वातावरण प्रस्तुत अछि ओ गुप्त युगक क्षरणकालमे पूर्णरूपेण संभव नहि रहल होयत मुदा ई ओतबो प्राचीन नहि भेल छल जे जनमानसमे स्मृति सभक लोप भऽ जाय। स्कन्दगुप्त (455-67 ई.)क बाद शुरू क्षरणकेँ यशोधर्मन् (515-43 ई.) सम्हारि लेलनि। पचास बरखसँ कम समयमे सामाजिक जीवन केर स्थिति प्राय: गुप्तकालीने जकाँ रहल होयत। भविष्यद्रष्टा महाकविक अतीतक दिग्दर्शनसँ प्रशस्त भविष्यक आकांक्षा आ योजनापर प्रश्नचिह्न नहि उपस्थित कयल जा सकैछ। यैह आकांक्षा आ योजना महाकविक अभिप्रेत रहल हो ई पूर्णतया संभव अछि। आ तखन महाकविक मिथिलामे जन्म, मालवा-उज्जैन कर्मक्षेत्र आ माटरामे महाप्रयाण सभमे अद्भुत संगति बैसि जाइत अछि।

महाकवि कालिदासक श्रीलंका यात्रा

महाकवि कालिदास अपन मित्र कुमारदाससँ भेंट करबाक लेल श्रीलंकाक यात्रा कयने छलाह जतऽ एक राजनर्तकी कामसेना लोभवश माहुर खुआ हिनक हत्या कयने छलीह। एहि प्रसंगपर किछु आपत्ति सेहो भेल जे ब्राह्मणक लेल समुद्र पार जायब वर्जित छल तेँ नहि तऽ समुद्र पार करैत महाकवि कुमारदास कहियो भारत अयलाह आ ने महाकवि कालिदास कहियो समुद्र पार कऽ श्रीलंकाक यात्रा कयलनि। ई तऽ बुद्धिक बलिहारी छोड़ि किछु नहि अछि। पंकज चटर्जी महोदय Journal of the Department of Letters, University of Kolkata, vol. XVI, The poet Kalidas and Sea Voyageमे एहिपर बहुत विद्वत्ता झाड़ने छथि जे महाकवि समुद्र पार करबाक कतहु चर्च नहि कयने छथि। समुद्र पार करब अत्यन्त दुर्गम तेँ महाकवि समुद्र पार नहि गेल छलाह। एहिमे परम्परा आ ब्राह्मणत्वक आश्रय सेहो लेल गेल तथापि ई साधारण बात हुनका कोना नहि ध्यानमे आयल जे परम्पराय महाबली हनुमान सेहो समुद्र लंघन कयने छथि।

मिथकीय वा पौराणिक इतिहासक प्रसंग छोड़ि देल जाय जे ऋग्वेद[1], रामायण[2], महाभारत[3], पुराण[4], स्मृति[5] आदिमे भारतीय सभक अनेकशः समुद्र यात्राक उल्लेख आयल अछि। वृहत्कथामे समुद्र पारक अनेक कथा संकलित अछि। अलंकारवती लम्बक, रत्नप्रभा लम्बक, शशांकवती लम्बक आदिमे समुद्र पार स्नेह सम्बन्ध सभक मनोरंजक कथा सभ संकलित अछि। धारक सुप्रसिद्ध राजा भोज विरचित युक्तिकल्पतरु नौकाशास्त्रपर प्राचीन पोथी थिक। एहि ग्रंथमे नौका निर्माण हेतु काष्ठ केर चयन, नौकाक प्रकार, पाल हेतु वस्त्रादिक चयन, हिमशैल वा चुम्बकीय क्षेत्रसँ बचबाक लेल लौहकील उपयोग केर मनाही सन सूक्ष्म सूचना, 24×6 फीट केर नौकासँ 264×33×26 फीटक पोतक वर्णन, मौसम केर अनुमान आदि विषयक विस्तृत जानकारी उपलब्ध अछि। नौकाशास्त्रक एहन उन्नत स्वरूप

शताधिक वर्षक अनुभव आ शोधसँ आएल होयत। एहिसँ सहज अनुमेय जे समुद्र यात्रा अति प्राचीन कालसँ भारतीय सभक लेल सामान्य छल।

महावंशमे अनेक ठाम भारत-श्रीलंका गमनागमन केर चर्च आयल अछि। महावंशक अनुसार भगवान् बुद्ध स्वयं तीन बेर- ज्ञानप्राप्तिक प्रथम वर्षक नवम मासमे महियांगन (महावंश 1/18-18), पाँचम वर्षमे दू नाग राजा चोलोदरा आ महोदरामे रत्नजड़ित सिंहासनक संघर्षक फरिछौट करबा लेल नागदीप आ आठम वर्षमे नाग राजा मणिक्किकाक अनुरोधपर 500 बौद्ध भिक्षु संग केलानिय श्रीलंका आयल छलाह। एहि तेसर प्रवासमे ओ सामन्तकूटा, दिवा गुहावा, दीघवापी आदि ठाम प्रवास कयलनि। जँ ई यात्रा कनियो दुर्गम रहैत तखन की एतेक संख्यामे भिक्षु संग भगवान् बुद्ध केर आगमन श्रीलंकामे संभव छल ? इहो सर्वमान्य अछि जे श्रीलंकाक अस्तित्वक मूलमे समुद्र यात्रे अछि जे छठम शताब्दी ईसा पूर्वमे विजयकेँ 700 संगीक संग भारतवर्षसँ श्रीलंका पठा देल गेल। महावंशमे विजय केर आगमन (षष्ठ परिच्छेद), विजय केर विवाह हेतु उपयुक्त कनिञा लेल मधुरा नगर जा राजाकेँ पत्र देब (7/51) आ मधुरा केर राजकुमारी संग 700 कुमारिका सभक महातीर्थमे पोतसँ उतरब (7/58), विजयक मृत्युक बाद पाण्डु वासुदेवकेँ 32 अमात्य सभक संग महाकन्दर नदीपर उतरब, (8/10-13) फेर भद्र कात्यायनी संग हुनक 32 सखी सभक श्रीलंकाक गोणग्रामपट्टन बन्दरगाहपर आगमन आ पाण्डु वासुदेव संग विवाह करब (8/25-28), देवानांपिय द्वारा अपन भागिन महारिष्ठ आ तीन अन्य संग तीन जातिक मणि, आठ प्रकारक मोती, दक्षिणावर्त शंख आ रत्नादि सेना सहित जम्बूकोल (सम्बलतुरि)सँ ताम्रलिप्त होइत पाटलिपुत्र अशोककेँ पठायब (11/20-24) आ अशोक द्वारा अमूल्य प्रति उपहार आ अमात्य श्रीलंका पठायब (11/40-41), महेन्द्र केर श्रीलंका आगमन (13/21), भगवान् बुद्धक धातुक श्रीलंका आगमन (17/6-8,13-15), अरिष्ठ अमात्यकेँ संघमित्राकेँ श्रीलंका आनबाक हेतु जम्बूकोल बन्दरगाहसँ नाव द्वारा महासमुद्र पार करैत पाटलिपुत्र पहुँचब (18/5-8); विशाल स्वर्ण कड़ाहमे महाबोधिक शाखा स्थापित कऽ संघमित्रा, महारिष्ठ आ बादमे बोधाहार कुल रूपमे प्रसिद्ध बगुत, सुमित्त, सन्दगोत्र, देवगोत्र, दामगोत्र, हिरुगोत्र, सिसिगोत्र आ जुतिन्धर सभकेँ ताम्रलिप्तसँ जम्बूकोल पहुँचब (19/21-22); महास्तूप स्थापना समारोहमे राजगृहसँ इन्दगुत्त संग 80 हजार, ऋषिपत्तन (सारनाथ)सँ महास्थविर संग 12 हजार, जेतवनारामसँ प्रियदर्शी संग 60 हजार, वैशालीक महावनारामसँ उरुबुद्ध संग 18 हजार,

कौशाम्बीक घोषितारामसँ उरुधम्मरक्षित संग तीस हजार, उज्जैनक दक्षिण गिरि विहारसँ चालीस हजार, पुष्पपुर(पटना)क अशोकारामसँ मितिण्ण स्थविर संग एक लाख साठि हजार, कश्मीर मण्डलसँ स्थविर उतिण्ण संग दू लाख अस्सी हजार, पल्लव (फारस)सँ महामति संग चारि लाख अड़सठ हजार, अलसन्दा (एलेक्जेंड्रिया)सँ योग महाधम्मरक्षित संग तीस हजार, बोधि मण्ड विहारसँ चित्तगुत्त संग तीस हजार, वनवास (बोधगया) प्रदेशसँ चन्दगुत्त संग अस्सी हजार आ कैलाससँ महास्थविर सुरियगुत्त संग 96 हजार भिक्षु सभक उपस्थिति(29/29-44) क चर्च बिनु सुगम अबरजात केर संभव नहि। एहि संख्यामे अतिशयोक्ति संभव अछि तथापि एहिसँ दुनू देशक मध्य सुगम यातायात केर संकेत अवश्य भेटैत अछि। बोधिवृक्ष श्रीलंका आननिहार सभक बोधाहार कुल रूपमे प्रसिद्धिक चर्च (19/67), एलार द्रविड़ राजाकेँ चोल देशसँ श्रीलंका आगमन (21/15), सात दामिल (द्राविड) राजा सभक ससैन्य महातीर्थमे उतरब आ कोलम्बालकमे राजाकेँ पराजित करब (33/39-42), छठम शताब्दीक शुरूमे मिहिरकुल द्वारा रानीकेँ भगवान् बुद्ध पादांकित ब्लाउज पहिरने देखि श्रीलंका जा राजाकेँ अपदस्थ करैत दोसरकेँ राजा बना चोल आ कर्णाट विजय करैत कश्मीर आगमन (कल्हण कृत राजतरंगिणी, भाष्यकार रघुनाथ सिंह, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी, प्रथम तरंग, पद 294-300, पृष्ठ 293-304) प्रभृति प्रसंग प्राचीन कालसँ भारत-श्रीलंका मध्य गमनागमन केर प्रमाण अछि। आगूक वर्णनसँ सेहो स्पष्ट होयत जे दू देशक मध्य ई यात्रा एकदम सहज आ सुगम छल।

ईसापूर्व 2400 ई.मे लोथल बन्दरगाहक अस्तित्व उत्खननसँ प्रमाणित भेल अछि। एतऽ जहाज सभक मरम्मत हेतु पैघ कर्मशालाक भग्नावशेष भेटल अछि। ताम्रलिप्त, सोपारा आ भरूच आन प्रसिद्ध प्राचीन बन्दरगाह छल। प्रथम शताब्दीक पेरीप्लस ग्रंथमे चोल, दाभोल, राजपुर, मालवण, गोवा, चेन्नानूर, कोट्टयम, कन्याकुमारी, कोणार्क, मसुलीपत्तन, नागपट्टम् प्रभृति बन्दरगाह सभक चर्च अछि। श्रावस्तीक भारतीय व्यापारी सभकेँ सिंहलसँ आनजान छल—

ततः कदाचित् वानिजाः श्रावस्तीपुरावासिनः
मकाराकारमूर्त्तिया सिंहल द्वीपम् आयायुः[6]

भारतीय नौसेनाक एक वेवसाइट joinindiannavy.gov.inपर उपलब्ध आधिकारिक सूचनानुसार नन्द आ मौर्यक समय यूनान आ रोमसँ समुद्री व्यापारक प्रमाण भेटैछ। मेगास्थनीजक वर्णनक आधारपर कहल गेल अछि जे मगध साम्राज्यक

जलसेना विश्वक प्रथम जलसेना छल। अर्थशास्त्रमे युद्ध कार्यालय रूपमे सामुद्री सेनाक भाग आ नवध्यक्ष (पोत सभक अध्यक्ष)क उल्लेखसँ सेहो स्पष्ट अछि जे समुद्रपर नियंत्रण लेल नौसेनाक समर्पित भाग छल। सातवाहन वंश (ईसापूर्व 200 सँ 200 ई.) केर सम्बन्ध रोम साम्राज्यसँ छल आ हिनका सभक सिक्कापर दीर्घ पोत केर चित्र उत्कीर्ण छल जाहिसँ सामुद्रिक यात्रा आ सम्बन्ध स्पष्ट होइत अछि। चोल साम्राज्यक नौसेना सेहो प्रसिद्ध छल।

सिन्धु घाटी सभ्यतामे बन्दरगाह सभक प्रमाण भेटल अछि। पिनसिलवेनिया विश्वविद्यालयक उत्खनन टीम एहि तथ्यकेँ पता कयने छल जे हड़प्पा कालीन प्राचीन नगर अपना समयक प्रसिद्ध बन्दरगाह छल। हड़प्पा सभ्यतामे लोक लगभग चारि हजार वर्ष पूर्व अरब सागर केर तटपर बहुत रास बन्दरगाह सभक निर्माण कयने छलाह आ ओ सब प्रसिद्ध व्यापारी छलथि। लोथल केर उत्खननसँ ई बात आओर स्पष्ट होइत अछि किएक तऽ ओतऽ बहुत पैघ बन्दरगाहक प्रमाण भेटल अछि।[7] प्रागैतिहासिक कालसँ भारत-श्रीलंकामे सम्बन्ध रहल अछि। विस्तार भयसँ एहि सभमे उपलब्ध समुद्र यात्रा प्रसंग छोड़ि मात्र किछु इतिहास सिद्ध तथ्य राखब।

महाकवि कुमारदास जानकीहरण केर प्रथम अध्यायमे भारतीय नगर काञ्चीक उल्लेख कयने छथि—

भुजंगा सम्प्रार्थिता सेव्यवेला
काञ्ची गुणाकरसिता सार्थालोका
दिग्दक्षिणा कारकासायत्नभोग्या

(कुमारदास : जानकीहरण,1/18)

इहो महत्त्वपूर्ण तथ्य अछि जे ओहि समय सिंहल द्वीप आ भारतवर्षक तमिल प्रदेशमे एहन सम्बन्ध नहि छल जेहन वर्तमान समयमे अछि। भारतवर्षक तमिलनाडु आ श्रीलंकाक मध्य प्राचीन कालसँ सम्बन्धपर बहुत रास स्तरीय शोधपत्र प्रस्तुत भेल अछि। एहने एक शोधपत्रमे Osmund Bopearachchi 1997मे केलानिय लऽग पिलापितीय गाममे भेल उत्खननसँ प्राप्त प्रागैतिहासिक कालक श्याम आ लाल मृद्भाण्डपर बनल प्रतीक आ तमिलनाडुक कोडुमनालमे भेटल ओहने बर्तन, तमिलनाडुक अरिकमेडु निर्मित मनका (Beads) केर अनुराधापुर, केलानिया, रिदियागामा, तिस्समहारामा आदि स्थलपर प्राप्ति आ एहि चारू स्थलपर भेटल

विभिन्न सिक्का सभक तमिलनाडुक विभिन्न स्थलपर प्राप्ति सभक आधारपर प्रमाणित कयलनि जे दुनू क्षेत्रमे अनादि कालसँ सांस्कृतिक आ व्यापारिक सम्बन्ध छल।[8] अदौ कालसँ विभिन्न स्रोतसँ ज्ञात होइत अछि जे भारतवर्ष आ श्रीलंकाक तमिल सभक बीच सामाजिक आ सांस्कृतिक सम्बन्धसेतु विकसित छल बहुत किछु भारत-नेपालक सम्बन्ध जकाँ। यद्यपि अखन एहि सम्बन्धपर प्रश्नचिह्न लागब सेहो शुरू भेल अछि तथापि दुनू महान् देशक मध्य बेटी-रोटीक ई सम्बन्ध एतेक तन्नुक नहि अछि जे किछु दुर्जनक कारणेँ सहस्राधिक शताब्दीक स्नेहसम्बन्ध सहसा समाप्त भऽ जाय। भारत-श्रीलंका मध्य सम्बन्धसेतु शनैः शनैः क्षीण भेल।

रामसेतुक अस्तित्व प्रमाणित अछि। हम स्वयं रामेश्वरम् सँ धनुषकोडी जा मन्दिरसँ आगाँ बढ़ि समुद्रमे रामसेतुक दर्शन कयने छी। एहि ठाम भरि डाँड़सँ बेसी पानि बहुत दूर तक नहि अछि। बहुत लोक मानैत छथि जे पानिक अन्दर रामसेतुक उपयोगसँ आ किछु दूर हेलिकेँ धनुषकोडीसँ तलाईमन्नार (श्रीलंका) 1480 ई. तक पहुँचल जा सकैत छल। एहि वर्ष आएल चक्रवातसँ क्षत्तिग्रस्त भेलापर ई पथ नष्ट भेल। ई तथ्यात्मक अछि जे एम्हरका समुद्र बेसी गहीँर नहि अछि प्रायः एक मीटरसँ दस मीटर तक। कम गहराइक कारणेँ एकरा shallow sea मानल जाइछ आ आधुनिक पैघ जहाज सभक लेल एहि पथकेँ ओतेक उपयुक्त नहि मानल जाइत अछि। एहि ठाम समुद्रकेँ हेलि पार करबाक कतेक अभिलेख अछि।

World Open Water Swimming Association (WOWSA) केर निदेशक मंडलक सदस्य आ 2019 Ice Swimming World Championship Olympic Club Rough Water Commissioner क्विन फिट्जगेराल्डक विवरणिका (enwaterswimming.com)सँ ज्ञात होइछ जे पाक स्ट्रेट (Palk Strait) एक कम गहीँर (shallow) स्ट्रेट अछि। एहि ठाम समुद्रक चौड़ाई 53.8 किमी अछि। स्थान, समय आ परिस्थिति सभक अनुसार एहिमे परिवर्तन स्वाभाविक अछि। तितीर्षु सब प्रायः एतहि हेलिकेँ समुद्र पार करब पसीन करैत छथि। श्रीलंकाक भेल्सिटीथुराइ (VVT)सँ भारतक कैलिमेयर प्वाइंट तक हेलिकेँ 1954 ई.मे 26 घंटा 50 मिनटमे पार करबाक गौरव प्राप्त कयनिहार मुरुगापिल्लई नवरत्न स्वामी प्रथम अभिलिखित मनुष्य छथि। हिनक भागिन आनन्दन 1963मे 42 घंटामे ई कारनामा कयलनि। फेर 1974मे आनन्दन 51 घंटामे VVTसँ कैलिमर प्वाइंट आ प्वाइंट कैलिमरसँ आपस VVT अयबाक अनुपम कीर्त्तिमान स्थापित कयलनि। सुप्रसिद्ध तैराक मिहिर सेन 6 अप्रैल 1966केँ 59 किमी केर दूरी 25 घंटा

44 मिनटमे हेलि गेलाह। जन्मसँ गौंग, बहीर आ दहिना आँखिसँ आन्हर तारानाथ नारायण शेनॉय एतहि हेलिकेँ 1980मे समुद्र पार कयलनि। सुप्रसिद्ध तैराक बुला चौधरी चक्रवर्ती 20 अक्तूबर 2004केँ 13 घंटा 52 मिनटमे एकरा हेलैत पार कयलनि। 2 मार्च 2011केँ राजीव त्रिवेदी आ बालासाहेब रामचन्द्र घड़गे संग-संग 12 घंटा 31 मिनटमे एकरा पार कयलनि। एस पी मुरलीधरण तलाईमन्नारसँ अरिचामुनई 2012मे 13 घंटा 53 मिनटमे पार कयलनि। मात्र 12 वर्षक आयुमे कुत्रलीश्वरन् 10 अप्रैल 1994केँ 16 घंटामे ई पार कयलनि। 24 मार्च 2018केँ राजा ईश्वर प्रभु 11 घंटा 58 मिनटमे पार कयलनि। एम तुलसी चैतन्य मात्र 8 घंटा 25 मिनटमे पार कयलनि। जय जसवंत मात्र 10 वर्षक आयुमे 28 मार्च 2018केँ 30 किमीक दूरी साढ़े दस घंटामे पार कयलनि। एडम मॉस आ एडी हू 26 जनवरी 2020केँ तलाईमन्नार-धनुषकोडीक 29 कि.मी. केर दूरी 10 घंटा 18 मिनटमे पार कयलनि। एहि विवरणसँ स्पष्ट होइत अछि जे श्रीलंका-भारत केर जलीय दूरी 1954मे 53.8 कि.मी.सँ 2020मे 29 कि.मी.क मध्य परिवर्तित होइत रहल अछि। स्थान, समय आ परिस्थितिक कारणेँ ई परिवर्तन भेल अछि। एतऽ इहो महत्त्वपूर्ण अछि जे आइ जतऽ हिमालय अछि कहियो ओतऽ टेथिस नामक समुद्र छल। भारतीय आ यूरेशियन प्लेटक भूगर्भीय टकरावसँ टेथिस सागरपर हिमालय केर जन्म भेल। ओहिना जेना कोनो पलंगपर नीकसँ बिछाओल गेल चद्दरिपर दुनू हाथकेँ अलग-अलग राखि दवाब दैत जखन दुनू हाथकेँ नजदीक आनल जायत अछि तखन चद्दरि बीचसँ उठि जाइत अछि। एहि रूपसँ उत्पन्न पहाड़केँ young fold mountain कहल जाइत अछि। जेना-जेना धरतीक भीतर दवाब बढ़ैत छैक तेना-तेना पहाड़ ऊँचगर होइत जाइ छैक। हिमालय एक वर्षमे एक सेंटीमीटर बढ़ैत अछि। भूगर्भीय संरचनामे परिवर्तन केर असरि ऊपर थलपर पड़ब एकदम स्वाभाविक अछि।

इहो उल्लेखनीय अछि जे भारत श्रीलंका मध्य कहियो फेरी सेवा चलैत छल। राज्य सभा प्रश्न संख्या 4545क सन्दर्भमे 17. 5. 2012केँ देल गेल सरकारी उत्तरसँ स्पष्ट अछि जे तूतीकोरिन-कोलम्बो फेरी सेवा 13 जून 2011सँ 17 नवम्बर 2011 तक चलल आ 18 नवम्बर 2011सँ बन्द भेल। तलाईमन्नारसँ धनुषकोडी फेरी सेवा 1964 केर तूफान बाद बन्द भेल आ रामेश्वरम् सँ चालू भेल सेवा 1984सँ पुनः बन्द अछि।

रामेश्वरम् सँ पहिने समुद्रपर बनल दीर्घ रेलपुलपर दौड़ैत रेलगाड़ी आ सड़क पुलपर भागैत गाड़ी सभक दृश्य अखनो रामेश्वरम् मे देखल जा सकैछ।

आकाशवाणी वा दूरदर्शनपर अक्सर ई खबरि अबैत रहैत अछि जे भारतीय नौसेना वा तटरक्षक श्रीलंकन मछुआराकेँ आ श्रीलंकन नौसेना वा तटरक्षक भारतीय मछुआरा सभकेँ समुद्रमे अवैध शिकार करैत पकड़ैत अछि। एहि तरहक घटना एहि तथ्यकेँ परिपुष्ट करैत अछि जे एहि दुनूक बीच गमनागमन सहज अछि। भगवान् बुद्ध केर श्रीलंका यात्रापर प्रश्नचिह्न ठाढ़ कयल जा सकैछ जे ई सब आँखिक देखल नहि अछि मुदा इतिहास ग्रंथ सभक आँखिसँ देखब तऽ सम्राट् अशोकक पुत्र महेन्द्र आ पुत्री संघमित्राक श्रीलंका यात्रापर कोनो सन्देह नहि होएत। देवानांपिय तिस्स अनुराधापुरमे स्तूप सभक जाल बिछा देलनि। एहि सभमे भगवान् बुद्धक धातु (शरीरक अवशेष) रखबाक उद्देश्यसँ भारतवर्षसँ धातु आनबाक लेल देवानांपिय तिस्स श्रमणेर सुमनकेँ सम्राट् अशोक लऽग भारतवर्ष पठओलनि। सम्राट् अशोक भगवान् बुद्धक भिक्षापात्रमे पवित्र धातु संग्रह करैत सुमनक संग श्रीलंका पठा देलनि। समारोहपूर्वक एहि पावन धातुकेँ विभिन्न स्तूप सभमे सुरक्षित राखल गेल। भगवान् बुद्धक दन्तावशेष आ केश समारोह पूर्वक भारतवर्षसँ श्रीलंका गेल छल। चूलवंशमे उल्लेख अछि जे भिक्षु शिलाकला राजा मोग्गलान (कुमार धातुसेनाक पिता)क समयमे भारतवर्षसँ केश धातु आनलनि। भगवान् बुद्धक पवित्र केश धातुपर एक स्तूप बनाओल गेल आ शिलाकलाकेँ ओकर रक्षक नियुक्त कएल गेल (चूलवंश, 39/49-53)। श्रीलंकामे भारतवर्षक हस्तक्षेप सभक इतिहास अत्यन्त प्राचीन कालसँ रहल अछि। गुप्त सम्राट् समुद्रगुप्तक प्रयाग प्रशस्तिमे उल्लेख अछि—

दैवपुत्र शाहिशाहानुशाहि शकमुरूण्डैः सैंहलकादिभिश्च...

एहि वर्णनसँ प्रकट होइछ जे समुद्रगुप्तक प्रताप हिमालयसँ श्रीलंका आदि द्वीप तक विस्तृत छल। समुद्रगुप्तक समकालीन सिंहल राज मेघवर्ण अपन चातुर्यसँ समुद्रगुप्तसँ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध विकसित कयलनि। दूतक माध्यमसँ समुद्रगुप्तकेँ अमूल्य रत्नादि पठाओल गेल। बोधगयामे बौद्ध मठ निर्माणक आज्ञा लऽ मेघवर्ण ओतऽ कलापूर्ण भव्य बौद्ध मठ केर निर्माण करओलनि आ रत्नजड़ित भगवान् बुद्धक प्रतिमा स्थापित करओलनि। हुनका द्वारा निर्मित एहि मठमे श्रीलंकासँ आयल बौद्ध सब विश्राम करैत छलाह।[१] ह्वेनसांग अपन यात्रा वृत्तान्तमे बिनु राजा आ हुनक भ्राताक नाम देने एहि विषयक लिखैत छथि जे सिंहल नरेशक बौद्ध

धर्मानुयायी भ्राताकेँ जखन बौद्ध स्थल सभक यात्रामे उचित सत्कार नहि भेल तखन आपस जा ओ अपन राजा संग अपन दुख बाँटलनि। राजा दूतक माध्यमसँ भारतक राजाकेँ उपहार पठओलनि। राजा दूतकेँ कहलनि जे हम की प्रत्युपकार कऽ सकैत छी ? दूत लंका जा सब कथा कहलनि तखन सिंहलराज अपन मंत्रीकेँ पठओलनि। ओ भारत आबि सब कथा निवेदित कयलनि आ बुद्ध सम्बन्धी स्थल सभपर निर्माणक इच्छा प्रकट कयलनि। एकठाम निर्माणक अनुमति भेटल। सिंहल देशमे विचारोपरान्त बोधिवृक्ष लऽग संघाराम बनएबाक निर्णय भेल। एहि लेल सभ प्रकारक सामग्री आ सम्पत्ति श्रीलंकासँ आयल आ भगवान बुद्धक प्रतिमा सोना-चानीक मिश्रणसँ ढालिकेँ बहुमूल्य पाथर व रत्नादिसँ अलंकृत करैत एहि संघाराममे स्थापित कएल गेल। स्थान निर्माणमे उच्च कोटिक कारीगरी भेल अछि आ चित्रकारीक रंग बहुत पुष्ट अछि। एहि संघाराममे भगवान् बुद्धक शरीरावशेष सेहो सुरक्षित राखल गेल। सिंहल देशक अनेक साधु एहिमे निवास करैत छथि।[10] पटना संग्रहालयमे उपलब्ध प्रख्यात कीर्त्ति अभिलेखसँ ज्ञात होइत अछि जे 500 ई.मे श्रीलंकाक राज परिवारक एक सदस्य महाबोधि (बोधगया) आबि मूर्त्ति सभक निर्माण करओलनि आ दान कयलनि। बोधगया अभिलेखमे महानामा द्वारा श्रीलंकन बौद्ध यात्री सभक विश्राम लेल मठ निर्माणक चर्च अछि। एहि बोधगया अभिलेख केर प्रथम प्रकाशन जॉन फेथफुल फ्लीट Inscriptions of the Gupta Kings and their Successors, p 274मे कयने छलाह। अभिलेखक अनुसार लंका द्वीपमे उद्‌भूत महानामा बोधगयामे लोक सभक कल्याण निमित्त वर्ष 267 केर 8 चैत्र सुदी अर्थात् 586-87 ई.मे सुन्दर प्रासादक निर्माण करओलनि। सेनार्थ पारानविताना एहि महानामाकेँ महावंशकार प्रमाणित करबाक प्रयास कयलनि मुदा ई सर्वमान्य नहि भेल।[11] महानामा राजा धातुसेनाक माम छलाह जिनकर समय 459-477 ई. सर्वमान्य अछि आ तेँ राजा धातुसेनाक मृत्युक 109 वर्ष बाद 586-87 ई.मे हुनक जेठ माम महानामाक जीवित रहबाक संभावना संदेहरहित नहि भऽ सकैछ। श्रीलंकन यात्री सभक बोधगयामे उपलब्ध उद्यात्री रेकॉड्र्स (Udyatri Records) सँ ज्ञात होइत अछि जे बौद्ध सभ श्रीलंकासँ बोध गया आबि दान- पुण्य करबाक क्रम जारी रखने छलाह।[12] प्रसिद्ध चीनी यात्री कुंग वंशी फाहियान अपन जन्मस्थल पिंग्यांगक वायांगसँ 399 ई.मे भारत आयल छलाह। हुनक यात्रा वृत्तान्तसँ स्पष्ट अछि जे ओ 413 ई.मे भारतवर्षक ताम्रलिप्त बन्दरगाहसँ जहाजसँ विदा भऽ ओ 14 दिनमे सिंहल पहुँचल छलाह। दू वर्ष बाद ओ सिंहलसँ 200 यात्रीवला जहाजसँ

जावा तीन मासमे पहुँचलाह। तूफानसँ जहाजमे छेद भेल आ कहुना जहाज 13 दिनमे किनार आबि सकल। मरम्मत केर बाद फेर यात्रा शुरू भेल आ ओ जावा अयलाह। पाँच मास बाद चीनवला जहाज भेटल। तीने दिन बाद फेर तूफानसँ सामना भेल। 200 यात्रीमे बहुत अंधविश्वासी ब्राह्मण सभ हिनका अभिशप्त आ दोषी मानि जहाजसँ उतारबाक निर्णय कयलनि। लोई नामक एक यात्री प्रतिवाद कयलनि जे हमरा उतारि दियऽ हम हेलैत जा राजासँ शिकायत करब। एहि धमकीक बाद फाहियानकेँ उतारबाक निर्णय स्थगित भेल। कहुना जहाज सिंगचाउ पहुँचल। लोईक अनुरोधपर फाहियान नौ मास एतहि रहि नानकिंग गेलाह। एहि प्रसंगसँ इहो प्रवाद खंडित होइत अछि जे ब्राह्मण समुद्र यात्रा नहि करैत छलाह। फाहियानकेँ समुद्रमे उतारबाक षड्यंत्र हुनका संग यात्रा करैत किछु ब्राह्मणे सब कयने छलाह। भारतवर्षसँ पाँचम शताब्दीमे बुद्धदत्त थेरा आ बुद्धघोष थेरा श्रीलंका गेल छलाह। बुद्धदत्त थेरा श्रीलंकाक पालि रचना सभपर भेल सिंहल विवेचन सभक संग्रह कयने छलाह। बुद्धघोष भारतवर्षसँ अनुराधापुर जा एक प्रतिष्ठित नागरिक जकाँ जीवन यापन कयलनि।

एहि विवेचनसँ स्पष्ट अछि जे अतीतमे भारतवर्ष आ श्रीलंकाक मध्य आवागमन सुगम छल। तमिल शासक अनुराधापुर तक कतेक बेर आक्रमण कयने छलाह आ भारतवर्षक पाण्ड्य राजा सेहो श्रीलंकाक राजासँ पराजित भेल छलाह। छः तमिल शासकमे पीठ्यकेँ मारि धातुसेना द्वारा पुनः अनुराधापुरमे श्रीलंकाक राज स्थापनाक कथा पाछू कहल गेल अछि। चोल साम्राज्यक विस्तार अनुराधापुर तक भेल छल। कलिंग आ अनुराधापुरक संबंध सर्वविदित अछि। कलिंगराज जयगोप आ रानी पार्वतीक पुत्र सुप्रसिद्ध राजा निशांकमल्ल (राजकाजक समय 1187-1196 ई.) कलिंग लोकेश्वर नामसँ सेहो प्रसिद्ध छलाह। सुप्रसिद्ध सिंहल नरेश पराक्रमबाहु प्रथम रामेश्वरम् तक अधिकार कयने छलाह। निशांकमल्ल केर समय धरि एहने स्थिति रहल। निशांकमल्ल एतऽ एक मन्दिरक जीर्णोद्धार करा एहि मन्दिरक नाम निशांकेश्वर रखने छलाह।[13] ई सब की बिनु सामुद्रिक यातायातक सुगमताकेँ संभव अछि?

भारत-श्रीलंकाक प्राचीन संबंधपर विचार करैत राज सोमदेव आनिसीक्रेटस (4 BC), मेगास्थनीज (3 BC), इरोटोस्थेंस (3 BC), स्ट्रेबो, प्लिनी आदि केर सामुद्रिक विषयक सामग्रीपर प्रकाश दैत छथि। ओ एहि बातक सेहो उल्लेख करैत छथि जे राजा काकावनतिस्साक समय 145 BCसँ 101 BCक बीच सात

समुद्री जहाजमे भरि बहुमूल्य वस्तुजात तिस्समहारामाक पोर्टपर आयल छल। राज सोमदेवक एहि ग्रंथमे 250 BCक तीन शिलालेख केर चर्च सेहो अछि जाहिमे भारत श्रीलंका व्यापारिक संबंध केर उल्लेख अछि।[14] JRASCB XXXV : 54-56मे अनुराधापुरक अभयगिरिय शिलालेखमे नाविक कारवाँक विशेष चर्च आयल अछि। *भारतीय संस्कृति का विश्व संचार ग्रंथ*मे डॉ. शरद् हेबाल्कर भारतवर्षसँ कौण्डिनकेँ कम्बोडियाक रानीकेँ वस्त्रदान दैत अपन अनुगामिनी बनएबाक कथा कहैत छथि। श्रीविजय केर सुमात्रा आ अश्वबर्मन केर बोरानाडा यात्राक विवरण ओ सेहो दैत छथि। जावामे अगस्त मुनिक यात्रा, हुनक ग्रंथ अगस्त पर्वक प्रतिष्ठा, बालीतुंग द्वारा दशम शताब्दीमे महामुनि अगस्तक पाषाण प्रतिमाक स्थापना, जावाक राजकुमारी लारा जोग्रोक द्वारा एक रातिमे छः देवालय बनएबाक शर्त्त आ एहि कार्यमे व्यवधान कयलाक कारणेँ शापसँ पाषाण कुमारी बनबाक कथा, काश्यप मातंग, धर्मरक्ष, कुमारजीव, संघभूति, गौतम संघदेव, पुण्यत्रात, विमलाक्ष, गुणवर्मन आदि केर चीन जा बौद्ध धर्मक प्रचार करबाक वर्णन[15] आदि बिनु सहज सामुद्रिक यात्राकेँ संभव नहि अछि।

भगवान् कृष्णकेँ आचार्य सांदीपनि संग सागरमार्गसँ प्रभाषपत्तन जयबाक उल्लेख भविष्य पुराणमे आयल अछि। अद्भुत रामायणमे राम द्वारा सागर पार जा सहस्रमुख रावणसँ युद्ध आ सीता द्वारा सहस्रमुख रावणक संहार कथा आएल अछि। कविवर लालदासक रामायणमे पुष्कर काण्ड एहि भावभित्तिपर आधृत अछि। ई सब समुद्र यात्रा नहि छी की?

इहो एक ऐतिहासिक तथ्य अछि जे अनुराधापुरमे जे राजा पराजित वा राजच्युत होइत छलाह ओ भागिकेँ रोहुणा क्षेत्र वा भारतवर्षमे शरण लैत छलाह। राजा महनाम पुत्र सोत्थिसेना (तमिल मातासँ उत्पन्न)केँ राजा बनिते बहिन संधा (राज महिषीसँ उत्पन्न) द्वारा हत्या आ भ्राताक छत्रवाहक अपन स्वामीकेँ राजा बनायब आ साल भरिक अन्दर हुनक मृत्यु बाद मित्तसेनाकेँ राजा बनलापर तमिल राजा पाण्डु द्वारा मित्तसेनाक कत्लसँ ई बात तऽ अवश्य प्रमाणित होइछ (चूलवंश 38/10-11)। अनेकशः एहन प्रसंग वंशग्रंथ आ श्रीलंकाक इतिहास ग्रंथ सभमे भरल पड़ल अछि। विस्तार भयसँ उदाहरण स्वरूप मात्र किछुए प्रसंगक चर्च कयल गेल अछि। सेना संग श्रीलंका आयब-जायबसँ स्पष्ट अछि जे प्राचीन कालमे दुनू देशक बीच आवागमन सहज उपलब्ध छल। पंकज चटर्जी महाशय केर ई अनुमान जे महाकवि कतहु अपन समुद्री यात्राक उल्लेख नहि कयलनि एहि कारणेँ

सत्य भेल जे महाकविक ई यात्रा हुनक महाप्रयाणे प्रमाणित भेल। महाकवि एहि यात्रासँ आपस आबि नहि सकलाह तेँ ई प्रसंग हुनक कृतिमे अचर्चित रहि गेल। रघुवंशम् मे रघुक विजय क्रममे बंगीय राजा सभक जलसेना आ गंगा सागरमे जय स्तम्भ ठाढ करबाक चर्च महाकविक वर्णनमे आयल अछि—

वङ्गानुत्खाय तरसा नेता नौसाधनोद्यतान्।
निचखान जयस्तम्भान्गङ्गास्रोतोऽन्तरेषु सः।।

(रघुवंशम्, 4/36)

महाकवि कालिदास अनेक ठाम सागर वर्णन कयने छथि जे अप्रतिम अछि। ओना इहो सत्य अछि जे महाकवि बहुत रास महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक तथ्य सभकेँ सेहो अचर्चित छोड़ने छथि आ किछु अनैतिहासिक तथ्य सभक सेहो वर्णन कयने छथि जाहिपर यथास्थान प्रकाश देब। एतऽ यैह कहल जा सकैछ जे महाकविक महाप्रयाण संबंधी अनुश्रुतिकेँ मात्र समुद्र पार नहि करबाक कथित प्रवादक कारणेँ अमान्य करब उचित नहि अछि। भारत-श्रीलंका मध्य अनादि कालसँ गमनागमन रहल अछि आ तेँ महाकवि कालिदासक श्रीलंका यात्रा पूर्णरूपेण संभव छल। अनुश्रुति, परम्परा, विभिन्न ग्रंथ आ वर्तमान माटरा शहर (श्रीलंका) केर नीलवाला बाइपासक दक्षिणी लेनमे सी ए अरियातिलक मवाथा जाइवला सड़क केर ठीक सोझाँ चौरस्तामे उत्तरी लेनसँ बहरा रहुला रोड धरि जाइवला 0.48 किमी केर मार्गक कालिदास रोड नामकरण प्रमाणित करैत अछि जे महाकवि कालिदासक सम्बन्ध माटरासँ अवश्य छल।

कुमारदासक कथित पिता मानकेँ पारानविताना महोदय अग्रबोधि तृतीयक युवराज आ कुमारदासक पिता कहैत छथि। कतहु मान केर आत्महत्या करैत तऽ कतहु रनिवासक स्त्री सभक संग अभद्र व्यवहारक लेल मंत्री द्वारा हत्या करबाक बात करैत छथि। कतहु अग्रबोधिक एक गुप्त पियक्कड़ दूत द्वारा माटरामे एक वेश्या ओतऽ कुमारदासक हत्याक बात आ बादमे मानवम्मा द्वारा संस्कार स्थलपर स्तूप बनएबाक चर्च करैत छथि। कतहु कुमारदासक हत्याक बाद हुनक चिता सजा मानवम्मा द्वारा एहिमे प्रवेश करबाक कथा कहैत छथि। यथार्थमे पारानविताना महोदय 12म शताब्दीक परम्परा पुस्तक आ जानकीहरण केर मद्रास पाण्डुलिपिमे उल्लिखित श्लोक चतुष्टय एवं मादिल्ल शिलालेखक बिनु वैज्ञानिक समीक्षा कयने

किछु पाश्चात्य विद्वान् सभक मान्यताक आधारपर भ्रममे पड़ि अपन स्थापना निश्चित कयलनि आ कालिदासकेँ श्रीलंकाक राजा मोग्गलानक एक सभासद केर पुत्र कहि देलनि। कलकत्ता विश्वविद्यालय केर शोधपत्र A Critical Study of Jankiharan by Kumardasमे रत्ना चन्द्रा Anecdotes about Kumardas and his Life, shodhganga.inflibnet.ac.in, पृष्ठ 28-30मे पारानवितानाक उल्लेख करैत उपर्युक्त विवरण प्रस्तुत कयने छथि।

ई ओहिना अनर्थकारी आ अनैतिहासिक अछि जेना हालमे नेपालक एक पैघ नेता द्वारा भगवान् रामकेँ भारतवर्षक अयोध्यावासी नहि मानि नेपालक चितवन लऽग कथित मादी अयोध्याक वासी कहि प्रवाद शुरू कयल गेल अछि। एहि तरहक प्रवाद निहित स्वार्थवश पसारल जाइत अछि आ एहन मिथ्या प्रवाद शनैः-शनैः कालक गालमे स्वयं बिला जाइत अछि। सायाश प्रसारित प्रवाद प्रबुद्ध जन-मनमे प्रतिष्ठा नहि पाबि सकैत अछि आ ने दीर्घजीवी भऽ सकैत अछि। श्रीलंकाक जनमनमे कालिदास-कुमारदास विषयक अनुश्रुति पसरल अछि। यैह सत्य अछि आ शाश्वत सत्य सरिपहुँ सत्ये रहत। सत्य यैह अछि जे पूर्वमे स्वयं पारानविताना महोदय Epigraphia Zeylanica vol 4मे Nagirikanda Rock Inscription of Kumardas (पृष्ठ 115-28)मे लिखैत छथि—

Thus the whole name reads Maha Kumaratasa. This stands etymoligically for Sanskrit Maha - Kumardasa.

....

No Sinhalese king of this name occurs in the Mahavamsh ; but the ruler who is called Kumar Dhatusena in that chronicle, is referred to in all Sinhalese historical writings from the Puzavali (13th Century) downwards as Kumardasa (Sin. Kumardas).

....

This inscription proves that there was actually a king called Kumardas sometime in the 6th century and in view of the fact that there was only one king of Ceylon known from any source, who bore this name, and the similarity of the names Kumar Dhatusena and Kumardas, we may be certain that the present record is of that monarch.[16]

आगू पारानविताना महोदय अपन विद्वत्तापूर्ण शोधपत्रमे नागिरीकाण्डा शिलालेखक विस्तृत व्याख्या करैत कहैत छथि जे नागिरीकाण्डाक प्राचीन नाम बामन नगरी (ब्राह्मण नगरी) मानल जा सकैछ आ एतऽ धनखेत कीनि राजा कुमारदास वामन नगरी धर्मस्थलकेँ दान देलनि।

उपर्युक्त विवेचनसँ निष्कर्ष यैह अबैत अछि जे भारत श्रीलंकाक सम्बन्ध अति प्राचीन कालसँ रहल अछि। दुनूमे यातायात अत्यन्त सुगम छल आ दुनू देश सांस्कृतिक आ व्यापारिक दृष्टिसँ एक दोसरासँ जुड़ल छल। महाकवि कालिदास सिंहल नरेश कुमार धातुसेना, जे महाकवि कुमारदास एवं जानकीहरणकार रूपमे समादृत छथि, केर आह्वानपर हुनकासँ भेंट करबाक लेल श्रीलंकाक यात्रा कयने छलाह जतऽ एक वेश्या द्वारा माहुर खुआ हिनक हत्या भेल छल आ रहस्य अनावृत भेलापर राजा कुमारदास महाकवि कालिदासक राजकीय चितामे प्रवेश करैत दुनू संग-संग अनन्त पथ हेतु महाप्रयाण कयलनि।

सन्दर्भ—

1. *i) वेदा यो वीना यदमत्तारक्षेण पतयाम् वेदनाव: समुद्रिय: (1-25-7)।*
ii) उवासोषा उच्छाच्च भुदेवी जीरा स्थानाम्
ये अस्या आदरणेषु दध्रिरे न श्रवस्य व: (1-48-3)।
iii) तं गूर्तयो नमान्निष: परीणस: समुद्रं न संचरणे सनिप्यव:
पतिदक्षस्य विदमस्य ने सहो गिरिं न वेना अधिरोह तेजसा (1-56-2)।

2. *वाल्मीकि रामायणमे सीता हरणक बाद सीता भेटबाक संभावनावला स्थलमे समुद्र, पर्वत, पत्तन, यवद्वीप (जावा), स्वर्णद्वीप (सुमात्रा), चीन आदि केर चर्च अछि—*

समुद्रमवगाढॉश्च पर्वतान् पत्तनानि च
भूमिञ्च कोपकाराणां भूमिञ्च रजताकराम्
यत्नवन्तो यवद्वीपं सप्तराज्योपशोभितम्
ततो रक्तजलं भीमं लोहितं नाम सागरम्।

3. *सागरद्वीप वासाँश्च नृपतीन् म्लेच्छ योनिजान्*
निपादान् पुरुषाढाँश्च कर्ण प्राधरणानपि
द्वीपं नामानाह्वयञ्चैव वेश करेत्वा महामति:

4. वामन पुराणमे व्यापारी गोकर्णक समुद्र पार यात्राक क्रममे समुद्रमे विलीन होयबाक घटना आ एक व्यापारीकेँ रत्न परीक्षक सभक संग मोतीक उदेसमे समुद्र यात्राक उल्लेख अछि—

पुनस्तत्रैव गमने वणिग्भावे मतिर्गता
समुद्रयाने रत्नानि महास्थौल्यानि साधुभिः
रत्नपरीक्षकैः सार्धमानयिष्येबाहूनि च
एवं निश्चित्य मनसा महासार्थपुरः सरः।

5. याज्ञवल्क्य स्मृति : व्यवहाराध्याय— ये समुद्रगा वृद्धया धनं गृहीत्वा अधिलाभार्थ प्राणधन विनाशशङ्कास्था न समुद्रं गच्छन्ति ते विंश विंश शतं मासि मासि दधः।

6. JRASB, Vol lxii, part 1, p 211, Study of Sanskrit in Ceylon.

7. प्रो. राधा कृष्ण चौधरी : प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, भारती भवन, पटना, 1996, पृष्ठ 36।

8. Osmund Bopearachchi - Ancient Sri Lanka and Tamilnadu : Maritime Trade (South Indian Horizons, p 539-51) , F Gros Felicitation Volume.

9. डा. वासुदेव उपाध्याय : गुप्त अभिलेख, ISBN 9789383021307, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादेमी, पटना, 2015, पृष्ठ 264-65।

10. चीनी यात्री ह्वेनसांग की भारत यात्रा, मूल लेखक ह्वेनसांग, अनुवादक— ठाकुर प्रसाद शर्मा, प्रकाशक— आदर्श हिन्दी पुस्तकालय, 492, मालवीय नगर, इलाहाबाद, 1972, प्रथम संस्करण, पृष्ठ 287-290।

11. S. Paranavitana- Mahanama, the Author of the Mahavamsh, University of Ceylon Review, 20 (1962), p 269-286।

12. ओम प्रकाश प्रसाद : बिहार एक ऐतिहासिक अध्ययन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2013, पृष्ठ 183।

13. जी सी मेंडिस, *Early History of Ceylon, Asian Educational Service,* *ISBN 81-206-0209-9, p 65-66।*

14. राज सोमदेव : *Urban Origins in Southern Srilanka, Postgraduate Institute of Archaeology, University of Kelaniy, No 407, Bauddhaloka Mavatha, Colombo 7, Sri Lanka, 2006,* पृष्ठ *56।*

15. डॉ. शरद् हेवाल्कर : भारतीय संस्कृति का विश्व संचार, पृष्ठ *7-8, 59-60, 114।*

16. *Epigraphia Zeylanica, vol 4* मे एस. पारानवितानाक आलेख *Nagirikanda Rock Inscription of Kumardas, p 121-22।*

कालिदास, कुमारदास आ श्रीलंका

महाकवि कालिदासक जीवन केर सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अध्याय हुनक महाप्रयाण श्रीलंका, कुमारदास, कुमार धातुसेना वा कुमार धर्मसेना संग अनुस्यूत अछि। श्रीलंकाक इतिहासक आधारभूत पोथी विभिन्न वंशग्रंथ, सिंहल ग्रंथ आ परम्परा, पुरातात्त्विक साक्ष्य, शिलालेखादिक विश्लेषणसँ महाकवि कालिदास आ महाकवि कुमारदास विषयक अनुश्रुति केर सम्यक् मूल्यांकन करबाक प्रयास करैत छी।

अनुश्रुति यैह अछि जे कालिदास अपन मित्र जानकीहरणकार श्रीलंकाक राजा कुमारदाससँ भेंट करबाक लेल श्रीलंका गेल छलाह। ओतए कालिदासक हत्या एक नर्तकी द्वारा लोभवश कयल गेल छल आ राजा कुमारदास अपन मित्र कालिदासक चितामे कुदि मित्रताक मोल चुका देने छलाह। श्रीलंकाक इतिहासमे कुमार धातुसेनासँ कुमारदासक संगति बैसाओल गेल अछि। यद्यपि किछु विद्वान् केँ ई स्वीकार्य नहि अछि। विभिन्न अत्थकथा, दीपवंश, महावंश, चूलवंश, राजावलीय, पूजावली, श्रीलंकाक इतिहास ग्रंथ, शिलालेखादिक आधारपर विषयानुसार एक अध्ययन प्रस्तुत अछि।

श्रीलंकाक इतिहासक विभिन्न प्राचीन ग्रंथमे उल्लेख अछि जे सात तमिल शासक सोलीसँ सात सहस्त्र सेनाक संग श्रीलंका आबि राजा मित्तसेनाक 432 ई. (कतहु-कतहु 434 ई.क उल्लेख)मे हत्या कऽ अनुराधापुरक राज हथिया लेलनि। 432 ई.सँ 459 ई. तक क्रमशः पाण्डु, परीन्दा, खुद्दा परीन्दा, त्रितारा, दाथिया आ पीठ्य अनुराधापुरक राजा बनि 27 वर्ष राज कयलनि। नेना दशनकेलीय अनुराधापुरक दीघसन्दन परिवेणा महाविहार, जेकर निर्माण भारतवर्षक सम्राट् अशोकक पुत्र महेन्द्रक आवास लेल श्रीलंकाक राजा देवानांपिय तिस्सक सेनापति दीघसन्द द्वारा कराओल गेल छल, मे अपन माम आ बौद्ध विद्वान् महानामाक संग हुनक छत्रछायामे रहैत छलाह। चूलवंशक अनुसार एक दिन गाछ तऽर पवित्र शिक्षा

ग्रहण करैत काल अकस्मात् शुरू भेल बरखासँ भीजैत पोथी आ नेना दशनकेलीयक रक्षा निमित्त फण काढ़ने नागराजकेँ देखैत मातर महानामाकेँ विश्वास भऽ गेल जे एहि बालकमे विशेष दैवीय अंश अछि। दोसर घटना छल जे देहपर गोबर फेकलाक बादो नेनाक ध्यान भंग नहि भेल छल। तत्कालीन राजाकेँ मोरिय राजकुलक एहि बालकपर किछु सन्देह छल तेँ ओ बालक केर हत्या लेल प्रयासरत छल। महानामा ओहि नेनाक सुरक्षा लेल यत्र-तत्र बौआइत रहलाह। एकठाम तऽ एहन भेल जे स्वप्नमे आक्रमण देखि जखने दुनू जगह छोड़लनि तखने हत्या करबाक लेल दूत सभ पहुँचल छल। कालान्तरमे नेना दशनकेलीय सुदृढ़ युवक रूपमे विकसित भेलाह आ अपन माम आ गुरु महानामाक प्रेरणासँ आम प्रजाक अनुरोधपर निज देशक लेल ओ वैराग्यक सब निशानी तोड़ैत मातृभूमिक मुक्तिदाता योद्धा रूपमे राजधानीमे प्रवेश कयलनि आ ओहि समय शासन करैत तमिल राजा पीठ्यकेँ मारि 459 ई.मे राजगद्दीपर बैसलाह। ओ मातृभूमिक मुक्ति लेल गुरिल्ला युद्ध किछु दिन पूर्व शुरू कयने छलाह। जनप्रिय धातुसेना 477 ई. तक अर्थात् 18 वर्ष राज कयलनि। एहि बीच ओ कलावेआ (अनुराधापुर) आ योदावेआ (मन्नार जिला) सहित विभिन्न क्षेत्रमे 18 विशाल पोखरि खुनओलनि। कलावापी विहार(औकाना बुद्ध भगवानक विशाल प्रतिमा सहित), धातुसेना विहार (उत्तरी प्रान्त), देवगाम व सलवाना विहार (रोहुणा क्षेत्र) सहित 18 विहारक निर्माण आ सुधार काज करओलनि। 18 यज्ञ कयलनि। कृषि आ सिंचाई योजनापर ध्यान देलनि। एहन प्रजा वत्सल राजाक अन्त अत्यन्त दर्दनाक छल।

धातुसेनाक दू पुत्र आ एक पुत्री। प्रथम पुत्र कश्शप (काश्यप, कासुबू वा कस्सब) राजकुलसँ हीन स्त्रीसँ उत्पन्न छलाह आ दोसर पुत्र मोग्गलान राज महिषीसँ। धातुसेना अपन बेटीक विवाह अपन बहिनक बेटा अर्थात् भागिन मिगारासँ कयलनि आ हुनका अपन सेनापति बनओलनि। कोनो कारणवश एक दिन सासु-पुतोहुमे कहा-सुनी भेल आ मायक उकसएलापर मिगारा अकारण तामसे पत्नीपर प्रहार कऽ हुनक जाँघ घाइल कऽ देलनि। एहने अवस्थामे बेटी बापक समक्ष आबि गेलीह। बेटीक रक्त रंजित वस्त्र देखि धातुसेना तामसे आन्हर भेलाह आ बहिनकेँ आगिमे जिन्दा भक्सी झोंकि मृत्युदंडक सजा देलनि। एहिसँ आहत मिगारा कश्शपसँ मिलि षड्यंत्र कयलनि। एक विद्रोहक बाद धातुसेनाकेँ कैद कऽ लेल गेल। 477सँ 495 ई. तक कश्शप राजगद्दीपर विराजमान छलाह। धातुसेना द्वारा बहुत रास कल्याणकारी काज करएबाक कारणेँ शासकीय खजानाक स्थिति संतोषजनक

नहि छल। मिगाराक कहलापर कश्शप बेर-बेर बापसँ पुछैत छल जे खजाना कतऽ नुकाकँ रखने छी? सब खजाना मोग्गलानक लेल सुरक्षित राखब की? एहिसँ तंग आबि एक दिन ओ पुत्रकेँ समाद देलनि जे कलाबेआ पोखरिमे हम एहि रहस्यपर अपन बात कहब। जहलमे बन्द बूढ़ असहाय पूर्व राजा धातुसेनाकेँ एकटा टूटल-टाटल रथ देल गेल। मात्र 40 किलोमीटर केर दूरी बड़ पैघ भऽ गेल। भूख-प्याससँ व्यथित धातुसेनासँ सारथी अपना लेल आनल भूजल चाउर आ पानिसँ भोजनक आवेशपूर्ण आग्रह कयलनि। सारथीक आग्रह, अनुरोध, आवेश आ आत्मीय व्यवहारसँ धातुसेना भाव-विह्वल भऽ गेलाह। द्रवित धातुसेना ओहि सारथीक एक फक्का भूजल चाउर फाँकि जल ग्रहण कयलनि। ओ पुत्र मोग्गलानक नाम एक पर्ची लिखि सारथीकेँ देलनि। अपन गुरु महानामाक अमृतवाणीसँ पूर्ण संतोष पाबि ओ 2580 हेक्टेयरमे पसरल 125 गीगालीटर क्षमताक समुद्र सदृश विशाल कलाबेआ पोखरिमे स्नान कयलनि आ प्रतीक्षारत पुत्र कश्शपकेँ समक्ष कलाबेआक जल अपन चुरुकमे लैत कहलनि जे यैह छी हमर खजाना! तामसे घोर भेल पुत्र कश्शप सेनापति मिगाराकेँ कहि धातुसेनाकेँ एतहि देवालमे चिनबा देलक। (The Story of Sigiriya : Senani Ponnamperuna, ISBN 9780987345110, P 19-22) कश्शप 18 वर्ष राज कयलनि। ओ सिगिरियामे अपन राजकीय आवास बनओलनि। सिगिरियामे कश्शप खूब ऊँच सिंह आकृतिक किला बनओलनि जेकर अल्प भग्नावशेष अखनो विश्वक धरोहर रूपमे संरक्षित अछि। एहि किलामे प्रदर्शित भित्ति चित्र आ 'देवाल-दर्पण' अद्‌भुत अछि। देवाल केर अद्‌भुत पॉलिश अखनो कतहु-कतहु दर्पण केर काज करबामे सक्षम अछि। कश्शपकेँ श्रीलंकाक प्राचीन राजा अलकापति कुबेर बनबाक धुन छल आ एहि फेरामे ओ सिगिरियाकेँ आठम आश्चर्य तऽ बनाए देलनि। पितृघाती होयबाक कारणेँ भले हुनका अविचि नामक नरकमे एक कल्पक अवधि तक रहए पड़ल हो मुदा श्रीलंकाक वास्तुशिल्पक क्षेत्रमे ओ अत्यन्त यशस्वी स्थानक अधिकारी भेलाह। दिसेनकेलीयक दोसर पुत्र मोग्गलान सिगिरिया राजा (भ्राता कश्शप)क भयसँ रोहुणा, दम्बादिव, भारत आदि ठाम नुकायल रहलाह। फेर एक पैघ सेना संगठित कऽ ओ पितृहन्ता भ्राता कश्शपपर आक्रमण कयलनि। कश्शप युद्धमे आत्महत्या कयलनि आ विजयी मोग्गलान सिगिरियासँ राजधानी अनुराधापुर आनि शासन शुरू कयलनि।

एक दिन जखन राजा मोग्गलानकेँ ओ सारथी, जे अंतिम दिन पिता धातुसेनाकेँ कलाबेआ तक लऽ गेल छल एवं भूजल चाउर आर जल देने छल,

पिता धातुसेना हाथक लिखल पर्ची हुनका देलक तखन बापक हस्तलिपि देखि आ पिताक अन्त समयक करुण कथा सुनि राजा मोग्गलान पघीलि गेलथि, ओ खूब कानलथि। सारथीकेँ एक फक्का चाउर आ एक घोँट पानिक मोन माफिक मोल भेटल आ ओ राजभवनक प्रहरी प्रमुख एवं राजाक मुख्य द्वारपाल बना देल गेलाह। एहि पितृभक्त मोग्गलानक पुत्र कुमार धातुसेना छलाह जे 9 वर्ष राज कयलनि। कश्शप आ कुमार धातुसेनासँ संबंधित ऐतिहासिक तथ्य, शिलालेखादि आ सिंहल स्त्रोत सभपर तटस्थ विचार करब उचित अछि। तत्काल तिम्बिरिवावा शिलालेखसँ समीक्षा शुरू करैत छी।

मारादण्मादुवाक वनमे तीन मील दक्षिण इलकिरीगलाबा जाइवला सड़कसँ आधा मीलपर अवस्थित अनाम जगहसँ स्तूपक भग्नावशेष,11 फीट 10 इंच ऊँच स्तम्भ, ध्वस्त पोखरि, 8 फीट ×5.5 फीट आकारक पाषाण स्लैब आ तीन शिलालेख भेटबाक सूचना श्रीलंकाक वन्यजीव विभागाध्यक्ष सी डब्ल्यू निकोलस 1953 ई.मे पुरातत्त्व विभागकेँ देलनि। तखन एहि अनाम जगहक नामकरण नहि भेल छल। बादमे एहि जगहक नाम तिम्बिरिवावा रूपमे भेल। पुरातत्त्व विभाग 41, 42 आ 43 रूपमे एकरा पंजीकृत करैत एहिपर खोज शुरू कयलक। एस पारानवितानाक शोधपत्र University of Ceylone Reviewक अंक xix, संख्या 2, अक्टूबर 1961मे प्रकाशित भेल छल। शिलालेखक लिपि सिंहली आ ब्राह्मी लिपिक मध्य केर लिपि अछि। पहिल शिलालेखक लिप्यन्तरण अछि—

1. *मपु[रुमु]...या कसाबला-अलकापाया-महाराज-*
2. *अपाया चता लागि दा[सा]-वानाका-वासाही निकामनी-चदा*
3. *पुनु-मसा पेलवा-दवा[सा] ...बलाहा वसाना वलबा-*
4. *हलादरा बनिया बुदला-अलादरा सता*
5. *सयका कहवाना मसाला-राजा-महावहारा*

एकर अंग्रेजी अनुवाद देल गेल अछि—

On the first day of the waxing moon in the month of Nikamani is the tenth year of raising of umbrella [of dominion] by the great king ...Kasabala Alakapaya, the Brave Budala Aladara, nephew of Valaba Haldara, rising at ...bala, [gave] seven hundred kahvanas [to] the great royal monastery of Masala.

अभिप्राय जे राजा कसाबला अलकपायाक छत्रप्राप्तिक दशम वर्षमे ई निर्गत भेल। एहिमे बलभ हलादराक भागिन बुदल हलादरा द्वारा 700 कहवाना सिक्का महाशिलाक राजकीय विहारकेँ दान देबाक कथा वर्णित अछि।

शोधपत्रमे कसाबला अलकापायाक पहचान धातुसेना पुत्र कश्शप रूपमे भेल अछि कारण कश्शप 2 केर शासन मात्र 9 वर्ष रहल छल आ ई दानपत्र शासनक दशम वर्ष निर्गत अछि। दोसर जे कश्शप सदिखन दैवी राजा कुबेर बनबाक इच्छा रखैत छलाह आ तदनुसार ओ सिगिरियाकेँ सजबैत आ सुदृढ़ करैत 'सिंह किला' सदृश अपूर्व बना देने छलाह। तेँ वैह एतऽ अलकापति कुबेर रूपमे अलंकृत छथि। मसाला केर संगति महाशिला वा महाशैला संग सहजतासँ संभव अछि जे कश्शप (477-495 ई.)क राजधानी सिगिरिया वा सिंहगिरिक भावानुरूप अछि। शोधपत्रमे इहो कहल गेल अछि जे तिम्बिरिवाक प्राचीन नाम महाशिला वा मसाला संभव अछि। प्राय: राजा कश्शप केर ई प्रथम शिलालेख अछि। (पूर्व उल्लिखित शोधपत्र, पृष्ठ 96-97)

दोसर शिलालेख मात्र दू पंक्तिक अछि—

1. सिद्धम्! [ ] कुमार-सिरिसागाबोयी-मपुरुमुका-चतारि वाणीयाही वपा-चादि- मेसी[दोलासा-पा]

2. -का पिलिगामीयी वसना दलाया अबि महाराला-राजा-महा-हवाले वि-याहालका सहारा [ल-वाता कता दिना]

अंग्रेजी अनुवाद अछि—
Success! On the 12th of the waxing moon of Vapa in the 4th yeae of His Majesty Kumar Sirisagoboyi, the wife of Dalaya, residing at Pilgami, (gave) one yahala of paddy for the purpose of maintaining [the services of] slaves at the great royal monastery of Maharala.

ई अभिलेख कुमार सिरिसागबोयी (सिरिसाग्रबोधि)क शासन केर चारिम वर्ष दलायाक पत्नी द्वारा महारालाक पैघ महाविहारक दास सभक भरण-पोषण निमित्त एक यहाला धनखेत दान करबाक उल्लेखसँ संबंधित अछि। शोधपत्रमे दावा कएल गेल अछि जे सिंहल परम्परामे कोनो राजाक नाममे कुमार शब्द मात्र धातुसेना संग आयल अछि। इहो कहल गेल अछि जे ई राजकीय नाम इतिहासमे

प्रथम बेर आयल अछि। कुमार शब्दक प्रयोग चूलवंशक अनुसार कुमार धातुसेना आ सिंहली ऐतिहासिक लेखनमे मात्र कुमारदास संग भेल अछि तेँ कुमारदास आ कुमार धातुसेना एकहि रूपमे सामने अबैत छथि (EZ,vol 4, p 123)। शोधपत्रमे आगू स्पष्ट रूपसँ उल्लेख अछि जे आन ठाम (नागिरीकाण्डा अभिलेखमे) एहि राजाकेँ महा कुमारातसा (महा कुमारदास) कहल गेल अछि। नि:सन्देह कुमार धातुसेना आ कुमारदास एकहि व्यक्ति छथि। कश्शप प्रथम केर शिलालेखक 29 वर्ष बाद ओही स्थलपर कुमारदास केर समयक शिलालेख उत्कीर्ण अछि (पूर्व उल्लिखित शोधपत्र, पृष्ठ 100)। आश्चर्य जे एहि राजा सिरिसागबोयीक संगति महावंश (भदन्त आनन्द कौशल्यायन, पद 70-72, 93-98 आ पृष्ठ 194-201)क 36 परिच्छेदमे उल्लिखित मेघवण्णाभयसँ पूर्व भेल राजा संगबोधि (251-253 ई.सँ किएक नहि बैसाओल गेल। यथार्थमे श्रीसंगबोधि श्रीलंकामे एक लोकप्रिय नाम रहल अछि। विशेष व्याख्या आगू प्रस्तुत करब।

महावंशक अनुसार माहुर मिलाओल जामुन खयलासँ राजा संग तिस्सक मृत्युक बाद सेना सभसँ पैघ हाकिम श्रीसंगबोधिक राज्याभिषेक अभय कयलनि। (पद 70-72) संगबोधि 251-53 ई. अर्थात् दू वर्ष राज कयलनि। ओ अनावृष्टिपर अपन प्रण जे बरखाक जलेसँ उठब आ एक राहीक आग्रहपर भोजन ग्रहण कऽ विद्रोही अमात्य गोठाभयकेँ अपन मस्तक देलापर धन भेटबाक कथा कहैत प्राण त्याग करब सन घटनाक लेल जानल जाइत छथि। अनावृष्टि समाप्त भेल आ हिनक मस्तक देलापर गोठाभय द्वारा ओहि राहीकेँ पर्याप्त धन सेहो भेटल। गोठाभय मेघवण्णाभय नामसँ तेरह वर्ष राज कयलनि (महावंश, सम्पा. भदन्त आनन्द कौशल्यायन, पद 93-98, पृष्ठ 198-99)। ई तथ्यात्मक अछि जे एहि शिलालेखमे उल्लिखित कुमार सिरिसंगबोधि आ अपन प्रणसँ अनावृष्टि समाप्त कयनिहार आ राहीक कल्याणक लेल प्राणत्याग कयनिहार श्रीसंगबोधि दू पृथक् राजा छथि।

श्रीलंकाक इतिहासमे कुमार धातुसेना आ कुमारदासमे अभिन्नताक बातपर प्राय: विद्वान् दू भागमे विभक्त भेल छथि। एक पैघ वर्ग दुनूकेँ अभिन्न तऽ दोसर वर्गक किछु विद्वान् एहिसँ फराक् स्वर रखने छथि। डा. सेनार्थ पारानविताना अपन विभिन्न आलेख आ शिलालेखादिक विश्लेषण संबंधी पोथी सभमे कुमार धातुसेना आ कुमारदासकेँ निर्णायक रूपसँ अभिन्न प्रमाणित कयलनि। एहने श्रीलंकाक इतिहासक एक गौरव ग्रंथ—

Epigraphia Zeylanica, Lithic And Other Inscriptions of Ceylon

(Editor/Translator- H W Codrington and S. Paranavitana), Asian Educational Service, New Delhi and Madras. Vol 4, 1994 मे संकलित एस. पारानवितानाक Nagirikanda Rock Inscription of Kumardas (पृष्ठ 115-28)मे कुमारदास आ कुमार धातुसेनाक अभिन्नतापर अभरल निर्णायक स्वर मीड़पर पहुँचल अछि जेकर प्रतिध्वनि वा अनुगूँज सुनल जाय।

श्रीलंकाक उत्तर-केन्द्रीय प्रान्तक कदावत केरोल क्षेत्रमे मदावच्चिया-काप्पीतिगल्लवा मार्गमे अवस्थित नागिरीकाण्डाक 7.5 फीट × 2 फीट आकारक विशाल चट्टानपर सात पंक्तिमे उत्कीर्ण एहि लेखमे उल्लेख अछि जे कुमारदास द्वारा मोल लऽ ब्राह्मण गिरिक प्राचीन विहारकेँ पोखरि आ धनखेत दानमे देल गेल ताकि विहारक भिक्षु सभक आवश्यकताक पूर्त्ति संभव हो। शिलालेखक लिपि ब्राह्मी आ सिंहलीक मध्य केर लिपि अछि। बहुत अक्षर घिसाकेँ अपठनीय भऽ गेल अछि तथापि मूल शिलालेखक लिप्यन्तरणक एक प्रयास निम्न अछि—

1. सिद्धम्! महा-कुमारातसा-राजा-अपाया [हा बामनागा] रीय-वहेर अताया केनावि चदा कोतु

2. दिनाका महागारीय वेवा-सारा [से] कुगरिया वेवा-सारा [से] काबुबे वेवा-सारा [से] कताचनका-पुला सारा से

3. [वे]वा [से]मा चतारा वेवा-सारा दका-पेता कदाया बेजी-पेटा बामानागरीया-वहेरे बीका-सगहाता चरा

4. पचायता दिने सागा-वेगी-केरेयानी मा अतानो सिमे तवा-वेवा से नीलासा- वेवा से गजा- वेवा से पैदा वेवा से मा

5. वाटाका वेवा दका- [पे]ता से बेजा-पेता से बामानागरीया-वहेरे बीका सगहाता दे-पेता-करा-कड़ाका सगा-सरी

शिलालेखक अंग्रेजी भावानुवाद अछि—

By king Maha Kumaratasa Apaya were caused to be purchased and granted as donations to the Bamanagariya monastery, the tank [and] wet lands of Cugariya,the tank [and] wet lands of Kabuba [and] the wet lands, the water share has been remitted and the proprietor's share granted to the bhikkhu community at the Bamanagariya monastery, for their four requisites. These have been made possessions of the community [of monks]. Of the following tanks which belong to himself, namely, Tavaa tank, Ni-

lasa tank, Gajaa tank and Pada tank- of the above mentioned tanks- the water share and the overlord's share (were given) to the bhikkhu community at the Bamanagariya monastery. These are the wet lands belonging to the community, of which the dues on account of the two shares have been remitted.

(पूर्व उल्लिखित गौरव ग्रंथ, पृष्ठ 123-24)

एस. पारानविताना स्पष्ट रूपसँ कहैत छथि जे राजाक पूरा नाम महा कुमारातसा रूपमे अबैत अछि जे व्युत्पत्ति शास्त्रानुसार संस्कृतक महा कुमारदास छथि। महावंशमे कोनो सिंहली राजा एहि नामक नहि छथि मुदा राजा कुमार धातुसेना सिंहलीक समस्त ऐतिहासिक लेखनमे पूजावली (तेरहम शताब्दी)क बाद कुमारदास रूपमे चित्रित छथि। पूजावली (अनुवादक बी. गुणाशेखर, कोलम्बो, 1895, पृष्ठ 27) आदि ग्रंथमे सेहो एकर उल्लेख अछि।

(पूर्व उल्लिखित गौरव ग्रंथ, पृष्ठ 121)

कालिदास कुमारदास विषयक प्रसंग सिंहल ग्रंथ निकाय संग्रह, सद्धर्म रत्नाकर, राज रत्नाकर, राजावलीय, 1265 ई.क सिंहली धार्मिक ग्रंथ पूजावली, पराक्रमबाहु षष्ठ (1412-1467 ई.) कालक यशप्रशस्ति पेरुकुम्बसिरित् (पराक्रमबाहु चरित्) प्रभृति ग्रंथसँ सम्पुष्ट अछि। इतिहासक अनेक विद्वान् अपन लेखनीसँ एकरा परिपुष्ट कयलनि। सिंहल ग्रंथ कालिदास चरिताया (एच जोसेफ ऐन्ड्रू फेरन्दाक 225 संबंधित पद सभक संग्रह (लक्ष्मीनिपाहना प्रेस,कोलम्बो, 1887) आ सिंहल ग्रंथ कालिदास नृत्यापोता (एफ कूरे, कोलम्बो, 1887) जे *The Historical Tragedy entitled Kalidas (Simon de Silva Seneviratna, Muharandrum* रूपमे बेसी जानल जाइत अछि) सहित शताधिक शोध सामग्रीसँ सम्बलित एकर ऐतिहासिकता स्पष्ट अछि। राजावलीयमे कुमारदास विषयक उल्लेख अछि— *His son Kumardas, a great scholar, reigned 18 years. He leapt into the flames of fire in which his friend Kalidas died, immolated himself therein, and went to the other world.*

(Rajavaliya, ed.- B. Gunasekar, p 55)

राजावलीयमे स्पष्ट उल्लेख अछि जे कुमारदास अपन मित्र कालिदासक चितामे कुदि परलोकगामी भेल छलाह। तेरहम शताब्दीक सिंहल ग्रंथ पूजावली आ चौदहम

शताब्दीक ग्रंथ पोरकुम्ब सिरित(पराक्रमबाहु चरित्)मे सेहो ई प्रसंग आएल अछि। पराक्रमबाहुमे उल्लेख अछि—

वेहेर दसठक् पुरा करवा दह खट्क महवेउ वेंदी
वसर एकदा विसव खविसेसु महक्कथम् तेमयुत येती
अजर किविपर पिनिन् जानकिहरण एं महकथु वेंदी
कुमारदसू रद कालिदसू नम् किविन्दु हत सिमदि विपिदी

एतहि कुमार धातुसेना द्वारा बहुत महान् काज सभ करैत शासनक नवम वर्षमे देहत्यागक चर्च अछि। ई तथ्यात्मक अछि जे वंशग्रंथमे कोनो कालिदास, कुमारदास, जानकीहरण वा कालिदासक चितामे कुमारदास आ हुनक पाँच रानीक प्रवेशक चर्च नहि अछि। एहि आधारपर किछु विद्वान् एहि प्रसंगकेँ अप्रामाणिक मानैत छथि।

ई उचित नहि अछि। पूजावली, राजावलीय, पराक्रमबाहु चरित् प्रभृति ग्रंथमे ई प्रसंग उल्लिखित अछि। महावंशक सूचना सभक संकलन अट्ठकथा रूपमे बौद्ध विहारक माध्यमसँ बौद्ध भिक्षु द्वारा होइत छल। इहो तथ्यात्मक अछि जे महावंशक प्रथम संकलन धातुसेनाक माम महानामा 475 ई.मे कयने छलाह। 37म परिच्छेदक 50म श्लोकमे राजा महासेनक मृत्यु 362 ई. तक केर कथा छल। तेकर बाद तेरहम शताब्दीक मध्यमे पराक्रम बाहु द्वितीयक समकालीन धम्मकीत्ति एकरा पराक्रमबाहुक विवरण सहित 90 परिच्छेद तक आगू बढ़ओलनि। एहिना सुमंगल स्थविर कीर्त्तिराज सिंह विवरण सहित 100 परिच्छेद तक बढ़ओलनि। पुनः देवरक्षित आ श्रीसुमंगल राजाधिराज सिंह आ श्री विक्रम सिंह राजाक इतिहास सहित 1815 ई. तक केर इतिहास परिच्छेद 101मे देलनि। 1815सँ 1935 ई.क इतिहास स्थविर युगिरल पंचानन्द थेर लिखलनि। ई तथ्यात्मक अछि जे एहि ग्रंथक कोनो भागमे कालिदास-कुमारदास विषयक प्रसंग नहि अछि।

उल्लेखनीय अछि जे पाँचम शताब्दीमे महानामाक बाद फेर एकर संकलन तेरहमे शताब्दीमे भेल। मनस्वी महानामा प्राय: अपना विषयमे अपने बहुत किछु संकलित नहि कयलनि आ पितामह राजा धातुसेनासँ पौत्र कुमार धातुसेना तक केर बहुत बात संकलित नहि भऽ सकल। पितामहसँ पौत्र तक केर समय बहुत रोमांचकारी आ क्षण-क्षण परिवर्तनशील (Melting Pot) जकाँ रहल तेँ बहुत तथ्य वंशग्रंथक इतर आन स्रोत सभसँ सेहो संसारक समक्ष आयल। एहिमे जानकीहरण केर रचना आ कालिदास कुमारदास विषयक प्रसंग सेहो रहल हो, ई संभव अछि।

इहो संभव जे जानकीहरण पोथी कोनो आपात् दुर्घटना वा आक्रमणमे भुतिया गेल हो तेँ एकर चर्च नहि भेल हो। चूलवंशक यशस्वी अनुवादक विल्हेम गेगर कुमार धातुसेनाक संगे पाद टिप्पणीमे कुमारदासक चर्च करैत छथि। कालिदासक चर्च सेहो अछि मुदा हुनका कुमारदासक पिता मोग्गलानक एक सभासदक पुत्र कहल गेल अछि। एहि कथित कालिदासक कोनो काव्य कतहु आइ धरि उपलब्ध नहि अछि। श्रीलंकाक अनुश्रुतिमे कुमारदासक मित्र कालिदास सुप्रसिद्ध, अप्रतिम आ अत्यन्त लोकप्रिय कवि छथि जखन कि एहि कथित कालिदासक नहि तऽ कोनो कृति अछि आ ने हुनक मेधा, काव्य वा प्रसिद्धि संबंधी कोनो अनुश्रुति तक अछि। श्रीलंकाक इतिहासमे एहन कोनो कालिदासक कतहु चर्च नहि अछि। एहन सामान्य जीवन लेल राजा आत्मोत्सर्ग करत ई मनोविश्लेषणसँ समर्थित नहि भऽ सकैत अछि। कुमारदास राजा छलाह आ आत्मोत्सर्गक लेल जे कोनो विराट् व्यक्तित्व, कोनो विरल महती उद्‌देश्य, कोनो विशिष्ट परिस्थिति, कोनो अनुपम प्रेरणा, कोनो अद्‌भुत प्रयोजन आदिक खगता रहैछ ओ सामान्य मित्र केर मृत्युमे संभव नहि अछि। कुमारदासक मनोभाव तऽ श्रीलंका आ भारतवर्षक कोन कथा विश्व वाङ्‌मय केर सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व हमर मित्र जे भारतवर्षसँ हमरासँ भेंट करए हमर देश श्रीलंका अयलाह आ हम राजा रहैत हुनकर रक्षा तक नहि कऽ सकलहुँ, एहि भावभित्तिपर आश्रित अछि। कुमारदासक मानसिक द्वन्द्व अहुरिया कटैत पीड़ाक घनत्व आ संत्रासक सान्द्रता कारणेँ आत्मोत्सर्ग दिशि बढ़ल। मनोव्यथा एवं अपराधबोधक एहि घनत्व आ सान्द्रतामे एतेक पैघ निर्णय केर प्रक्रिया सुरक्षित अछि। कोनो सामान्य मित्रक मृत्यु मात्रमे आत्मोत्सर्ग स्तर तक लऽ जयबाक पीड़ा केर घनत्व वा सान्द्रता संभव नहि। अपन मित्रक मृत्यु मात्रपर कोनो मनुष्य मृत्युक वरण कहाँ करैत अछि? आत्मोत्सर्गक लेल जाहि भावभूमिक आवश्यकता रहैत अछि ओ महाकवि कालिदास आ महाकवि कुमारदास प्रसंगमे उपलब्ध अछि। एहिपर आर अन्यत्र विचार करब। एतऽ यैह कहब जे बौद्ध मठक मूल उद्‌देश्य बौद्ध धर्मक संरक्षण आ प्रसार रहैत अछि कोनो साहित्यक संवर्द्धन वा इतिहास संरक्षण नहि। कुमारदासक पोथी जानकीहरण पूर्णतया हिन्दू धर्मावलम्बी विषयक कथा थिक। एहिमे बौद्ध धर्म संरक्षण वा प्रचार-प्रसार संबंधी एकटा पद नहि अछि। एहि ग्रंथसँ बौद्ध धर्मक कोनो संरक्षण वा कल्याण संभव नहि छल तेँ एकर संरक्षण विषयक उचित ध्यान नहि देल गेल होयत। पूर्वमे कहल जा चुकल अछि जे इहो संभव अछि जे कोनो आक्रमण आदि कारणेँ भुतिया गेलापर एकर उपेक्षा भेल हो। इहो एकटा

महत्त्वपूर्ण तथ्य अछि जे श्रीलंकाक एहन बहुत रास ऐतिहासिक तथ्य अछि जे वंशग्रंथमे अनुपलब्ध रहलाक बादो शिलालेखादि आ अन्य ग्रंथसँ परिपुष्ट भेलापर सर्व स्वीकार्य भेल अछि।

राजा वटगमिनी अभय केर समय श्रीलंकामे आएल 12 वर्षक महा दुर्भिक्षक चर्च महावंशमे नहि अछि। एकर चर्च राजावलीयमे अछि जे एक ब्राह्मणी, जेकर पति केर हत्या राजा मिलिन्दक अनुचित आदेशपर भेल छल, केर श्रापक कारणेँ भयंकर अकाल पड़ल छल। सम्मोहविनोदिनी (vol 1, p 313)सँ स्पष्ट होइत अछि जे राजा वटगमनी अभयक समय श्रीलंकामे भारी अकाल पड़ल छल। लंकाक अधिकांश भिक्षु-भिक्षुणी सब पलायन निमित्त जम्बूकोलपत्तनम् लऽग एकत्रित भेल छल। ओतएसँ ओ सभ पोत द्वारा समुद्र पार करैत भारत अयलाह। थेरा ईशदत्त आ थेरा महातिस्सा थेरा महासेनकेँ स्पष्ट रूपसँ कहैत छथि जे अखन भारतवर्ष चलि जाउ आ जखन दुर्भिक्षक चरम अवस्था समाप्त होइ तखन फेर आपस आबि जायब। किछु एहने भाव पापांचसूदिणी (vol 2, पृष्ठ 145)मे सेहो अभरल अछि।

भगवान् बुद्ध द्वारा श्रीलंका प्रवास कालमे बोधिवृक्ष रोपबाक कथा महावंशमे नहि अछि। दीपवंशमे आएल एहन उल्लेखसँ ई बात प्रचलित भेल। भगवान् बुद्ध केर श्रीलंका प्रवास वंशग्रंथमे उद्धृत अछि मुदा ऐतिहासिक अन्य परम्परा वा सन्दर्भसँ ई परिपुष्ट नहि अछि। अहिना राजा पाण्डुवासदेव (ईसापूर्व 504-474 ई.) क संतति-अभय, तिस्स, उत्तीय, असेल, विभाताय, राम, शिव, मात्ता आदि केर चर्च महावंशमे नहि अछि, ई सब दीपवंशसँ स्थिर भेल। महावंशमे भारतीय सम्राट् अशोकक पुत्र महेन्द्र संग श्रीलंका आएल दूतादिक नाम अछि मुदा संघमित्रा संग आएलि अन्य दासी/भिक्षुणी सभक नाम नहि अछि। दीपवंशमे संघमित्रा संग उत्तरा, हेमा, मसार्गला, अग्गिमत्ता, दासिका, फेग्गु, पव्वतमत्ता, मल्ला आ धम्मदासीकेँ भारतवर्षसँ श्रीलंका अयबाक चर्च अछि। अहिना रुबनवेलीसेयामे पाषाण स्तम्भ स्थापनाक कथा एवं देवानांपिय तिस्स द्वारा कलापासाद, लोहापासाद, सुना हाथ, थेरापासादि निर्माणक कथा केर चर्च दीपवंशमे नहि अछि मुदा महावंशमे विस्तारसँ अछि। कश्शप द्वितीयक पुत्र मानवम्माक (महला पानो)क चर्च वंशग्रंथमे नहि अछि मुदा राजावलीयसँ हिनक 35 वर्ष केर शासन सर्वमान्य भेल।

428 ई.मे श्रीलंकासँ चीन सम्राट् ओतऽ पत्र सहित महानामा द्वारा दूत पठएबाक कोनो चर्च वंशग्रंथमे नहि अछि मुदा उक्त पत्रक प्राप्तिक चर्च चीनी स्रोतसँ परिपुष्ट भेलापर सर्व स्वीकार्य भेल। एहन पत्र देल गेल छल। (सिल्वाँ लेवी, जे ए,1900, पृष्ठ 412, उद्धृत Epigraphia Zeylanica, vol 3, p 12)।

शिलाकला द्वारा 527 ई.मे चीनक राजा ओतए दूत आ पत्र पठएबाक चर्च चूलवंशमे नहि अछि मुदा चीनी स्रोतमे पत्र केर प्राप्तिक सूचनासँ ई परिपुष्ट आ मान्य भेल। एहिना ईसापूर्व 483 ई.मे राजा विजयक लेल योग्य क्षत्रिय रानीक अन्वेषणार्थ भारतवर्षक एक राजा पाण्डीकेँ प्रेषित पत्रलेखकेँ श्रीलंकाक आरम्भिक लिखित अभिलेख मानल जाइत अछि *(Libraries in Srilanka in the Ancient Anuradhapura Period : A Historical Account (250BC-1017 AD) by Raas Ranveera and Piyadas Ransimhe, Journal of the University Librarians Association of Srilanka, vol 17, issue 1, जनवरी 2013)।*

महावंशमे गोट्ठक द्वारा इम्बर नामक गाछ उखाड़ि ओहिसँ उड़ीदक खेती लेल एसकरे भूमि समतल आ तैयार करबाक कारणेँ हुनक नाम गोट्ठविम्बर होएबाक वर्णन अछि (23/54) जखन कि रसंवाहिनीमे गोट्ठविम्बरक बल परीक्षण हेतु दोसर कथा आएल अछि।

यथार्थमे महावंशमे बहुत एहन कथा आ प्रसंग अछि जे अतिशयोक्तिपूर्ण, अव्यवहारिक, अविश्वसनीय एवं इतिहास विरुद्ध अछि। संख्या गानबाक क्रममे तऽ ई 'दसकेँ हजार मानू' वला सिद्धान्त केर समर्थन करैत अछि।

महावंशमे राजा दुतुगेमुनुपर दस अध्याय अछि जखन कि दीपवंशमे मात्र दस श्लोक। एहिना श्रीसंगबो विषयक कथा महावंशमे विस्तारसँ देल गेल अछि। दीपवंशमे कम। एहिमे हुनका मात्र दू वर्ष शासन करबाक बात कहल गेल अछि।

चूलवंश (अध्याय 37)मे राजा बुद्धदास द्वारा चुट्टी-पिपरी लागल घाओसँ मृतप्राय भेल नागराजकेँ भयवश चिकित्सा नहि करबाक बात कहलापर नागराज द्वारा बिहरिमे मुह सन्हिया राजाकेँ चिकित्सा करबाक अवसर देबाक कथा, चिकित्सा उपरान्त कृतज्ञ नागराज द्वारा राजाकेँ अपन नागमणि देबाक बात आ राजा द्वारा एहि नागमणिकेँ अभ्युत्तरा विहारक एक मूर्त्तिक आँखिमे लगा देबाक प्रसंग आएल अछि जखन कि महावंशमे ई कथा सभ नहि आएल अछि।

चूलवंश (38: 58-59)मे उल्लेख अछि जे धातुसेना अनुराधापुरमे आयोजित महेन्द्र महोत्सवमे दीपवंश केर सार्वजनिक सस्वर पाठ आयोजित करबैत छलाह महावंशमे नहि अछि।

महावंश केर अपेक्षा दीपवंश बेसी व्यवहारिक दृष्टिकोण रखने अछि। महावंश (6/8)मे कलिंग राजकुमारीकेँ सिंह द्वारा उठा लेबाक आ सिंहक सम्भोगसँ सिंहबाहु आ सिंहशिवलीक जन्म सन अव्यवहारिक कथा अछि। दीपवंशमे सिंह नामक युवक द्वारा कारवाँमे शामिल राजकुमारीक अपहरण करबाक कथा आएल अछि।

दीपवंश, महावंश, अनागतवंश, महाबोधिवंश, थूपवंश, दाठावंश, केशधातुवंश, सामनवंश, गन्धवंश, चूलवंश प्रभृति ग्रंथमे पर्याप्त विचलन अछि। एक प्रसंग दोसर ग्रंथमे नहि आ कोनो घटना तेसर ग्रंथमे नहि। यैह हाल अछि।

कालिदास-कुमारदास प्रसंग सेहो एहने अछि जे बादक ग्रंथमे वर्णित अछि आ नागिरीकाण्डा अभिलेखसँ स्पष्ट रूपसँ सम्बलित अछि। एहि शिलालेखमे... 'महा कुमारातसा'मे प्रयुक्त 'त' केर विकास 'द'मे होयब आ तदुपरान्त 'कुमारातसा'केँ 'कुमारदास' होयब व्युत्पत्ति विज्ञानक सामान्य सिद्धान्तसँ समर्थित अछि। 'त' अघोष अछि आ 'द' घोष। अघोषक घोषीकरण संस्कृत आदि भाषा विज्ञानक सामान्य सिद्धान्त अछि। इहो कहल जा सकैछ जे श्रीलंकामे ओहि समय प्रचलित सिंहलीमे संस्कृतक ई घोषीकरण नियम मान्य कोना भऽ सकैत अछि। एहि ठाम इहो उल्लेखनीय अछि जे संस्कृतक घोष ध्वनिकेँ अघोष ध्वनिमे परिवर्तित करबाक प्रवृत्ति तमिलमे रहैत अछि। ई अघोषीकरण तमिल केर अपन विशेषता अछि। सिंहली आ तमिलमे नैकट्य सर्वज्ञात अछि। दुनू क्षेत्रक लोकमे निर्बाध अबरजात छल आ दुनू भाषा एक दोसरसँ प्रभावित छल। एहि सम्पर्क सेतुक कारणेँ एहि शिलालेखमे 'द' घोष केर 'त' अघोष रूपमे अघोषीकरण भेल अछि आ तेँ संभव अछि जे कुमारदासक स्थानपर कुमारातसा नागिरीकाण्डा शिलालेखमे अंकित भेल हो। ई एकदम स्वाभाविक अछि जेकर मूल कुमारदास अछि एहिमे कोनो संदेह नहि। दुनू दृष्टिएँ नागिरीकाण्डा शिलालेख केर कुमारातसा आ कुमारदास अभिन्न छथि, ई स्पष्ट अछि।

एहि ठाम श्रीलंकाक मादिल्ल शिलालेख आ जानकीहरणक अंतिम कथित चारि श्लोक केर आधारपर कुमारदासक विषयमे उत्पन्न भ्रान्तिपर संक्षिप्त विचार करब उचित। पूर्वमे कहल जा चुकल अछि जे कुमारदासक पिता मोग्गलान छलाह जखन कि कवि कुमारदासक एहि कथित पद चतुष्टयमे पिता माणित, माम श्रीमेघ आ अग्रबोधिक उल्लेख आएल अछि। जाहि मादिल्ल शिलालेखक आधारपर एहन दावी कएल गेल अछि ओ स्पष्ट नहि अछि। एहिमे निशांकमल्ल विषयक बात अछि जे बहुत शताब्दीक बाद भेल छथि। एहिसँ ई आशंका बलवती होइत छैक जे जानकीहरण केर अंतिम श्लोक चतुष्टय केर आधारपर एहन परिकल्पना भेल। पूर्वमे कहल जा चुकल अछि जे जानकीहरण केर ई पद प्रामाणिक नहि अछि आ जखन मूले निराधार तखन ओकर ब्याजेँ निरूपित सभ अन्य कथ्य स्वभावतः निराधार आ बेकार प्रमाणित भऽ जाएत।

इहो ध्यातव्य जे श्रीलंकाक आन कोनो राजाक कुमारदास वा एहिसँ मिलैत-जुलैत नाम श्रीलंकाक कोनो वंशग्रंथ वा अन्य इतिहास ग्रंथमे उपलब्ध नहि अछि। एहि नागरिकाण्डा शिलालेखसँ एक बेर जखन कुमारदासक राजत्व सोझाँ आबि गेल तऽ हुनका जानकीहरणक प्रणेता प्रमाणित करबामे कोनो विशेष प्रयासक आवश्यकता नहि अछि। जानकीहरण पोथी अपन परिचय स्वयं दैत अछि आ अपन विशिष्टताक कारणेँ कुमारदास कवि सभक कंठहार बनल छथि। समस्यापूर्त्तिपर लोभवश वेश्या द्वारा माहुर खुआ कालिदासक हत्या, कुमारदास आ पाँच रानी द्वारा कालिदासक चितामे प्रवेश कए मृत्युकेँ अंगीकार करब, माटरा (प्राचीन नाम महाथोटा, मपातुना, महातीर्था, महातीत्ता, महातीरा आदि)मे चितास्थलपर सात हतबोधि लगाएब सन घटनाक वर्णन बहुत ठाम उपलब्ध अछि।

ए एम होकार्टक मान्यता अछि जे माटरामे कालिदासक चिताभूमिपर सातटा हतबोधि वृक्ष लगाओल गेल छल (Mortuary use of Bo trees, Ceylone Journal of Science, section G, vol 2, p 3)। चूलवंश केर अनुवादकर्ता गेगर महोदयक मान्यता अनुसार कालिदास कुमारदास विषयक ई घटना माटरामे घटित भेल छल (चूलवंश : गेगर ,भाग 2, पृष्ठ 218)।

श्रीलंकाक सुप्रसिद्ध इतिहासकार, शिलालेख विशेषज्ञ आ पुरातत्त्ववेत्ता एस. पारानविताना कुमारदासकेँ महावंशक कुमार धातुसेना मानैत छथि मुदा कुमारदासकेँ 'जानकीहरण'कार नहि मानैत छथि। ओ कहैत छथि— *After a reign of 18 years he (Mogglana) was succeeded by his son Kumar Das (515 to 524) who for several centuries has enjoyed a reputation to which he had no claimas the poet who composed the Janaki Haran.*

(A new History of Indian People, vol 6, Gupta age , p 261)

एहि इतिहासकारक उल्लेख करैत भी. राघवन (Janakiharan of Kumardas by Dr C. R. Swaminathan, Motilal Banarsidas, 1977 केर Foreword मे) श्रीलंकाक मादिल्ल स्तम्भ लेख (9म शताब्दी)क आधारपर दोसर कथा कहैत छथि। हुनका अनुसार रम्भा विहारक लऽग मादिल्ल शिलालेख, वन्दुरुप्पा विहारक निशांकमल्लक पाषाण स्तम्भलेख आ 11म शताब्दीमे श्रीविजयमे रचित सुवर्णपुरावंशक आधारपर दोसरे कथा सोझाँ अबैत अछि। सुवर्णपुरावंशक अनुसार कुमारदास अग्रबोधि तृतीय (लम्बकर्ण वंश)क युवराज मान केर पुत्र छलाह। राजाक

इच्छाक विरुद्ध मानकेँ जाहि दिन छलपूर्वक हत्या कएल गेल ओहि दिन पत्नी (जेठातिस्सक बेटी रूपमे वर्णित) पुत्रकेँ जन्म देलनि आ पति शोकमे प्राणत्याग सेहो कयलनि। नेना कुमार धातुसेनाकेँ दू माम श्रीमेघ आ अग्रबोधि सुरक्षित श्रीविजय आनि लेलनि। एतऽ आ काँचीमे हुनक पढ़ाई-लिखाई भेल। काँचीपुराक प्रतिष्ठित आचार्य दंडिन् (काव्यादर्शकार) कुमारदासकेँ शिक्षा देलनि। पल्लवराज नरसिंह वर्मन द्वितीय केर सहयोगसँ मानवम्मा श्रीलंकाक राजा भेलाह आ कुमारदास, जे मानवम्माक संग छलाह, युवराज भेलाह। मानवम्माक ज्येष्ठ पुत्र अग्रबोधि पंचमकेँ ई स्वीकार्य नहि भेल आ कुमारदासकेँ अनुराधापुरसँ भागि फेर श्रीविजय आबए पड़ल। जानकीहरणक रचना श्रीविजयमे शुरू भेल आ अनुराधापुरमे संपन्न भेल। स्थानीय बौद्ध राजाक अनुरोधपर अश्वघोषक सौन्दरानन्दक तर्जपर कुमारदास श्रीघनानन्द सेहो लिखलनि। बौद्ध राजा एहि ग्रंथ श्रीघनानन्दकेँ सौन्दरानन्दक स्तर केर नहि मानलनि तँ कुमारदास ओकर पाण्डुलिपि अग्निदेवकेँ समर्पित करए चाहलनि मुदा राजा मना कऽ देलनि। तखन निराश कुमारदास महातीर्थ (माटरा) आबि गेलाह जतऽ एक वेश्याक घरपर अग्रबोधिक गुप्त दूत द्वारा हुनकर हत्या कऽ देल गेल। हुनक संस्कार स्थलपर मानवम्मा एक स्तूपक निर्माण करओलनि।

(सेनार्थ पारानविताना : जानकीहरण, लंका संस्करण, भूमिका, पृष्ठ 65)

किंचित् परिवर्तनक संग ई कथा 12म शताब्दीक संस्कृत पोथी परम्परा पुस्तकमे सेहो उपलब्ध अछि। एकर आधारपर एस पारानविताना कहैत छथि जे कुमारदासक माम सुवर्णपुराक राजाक रक्षामे अपन प्राणोत्सर्ग कयलनि। कुमारदास जखन महातीर्थ (माटरा) अयलाह तखन राजकुमार अग्रबोधिक गुप्त दूत हुनक हत्या कयलक। मानवम्मा हुनक चितामे कुदि अपन जीवन लीला समाप्त कयलनि।

(जानकीहरण, लंका संस्करण, भूमिका, पृष्ठ 66)

ई वर्णन श्रीलंकाक इतिहासमे शिलालेखीय प्रमाणसँ परिपुष्ट नहि अछि। स्वयं पारानविताना महोदय एक ठाम कुमारदासक चिता स्थलपर मानवम्मा द्वारा स्तूप निर्माणक बात करैत छथि तऽ दोसर ठाम हुनका कुमारदासक चितामे प्रवेश करैत जीवनलीला समाप्त करबाक कथा कहैत छथि। एहन विरोधाभास किएक? एहि विरोधाभास केर समीक्षासँ एतेक तऽ सहज रूपसँ निर्धारित होइत अछि जे कोनो धधकैत चितामे प्रवेश करबाक बात श्रीलंकाक इतिहासमे अनजान नहि छल। कालिदास-कुमारदासक एकहि चितामे महाप्रयाण विषयक जनश्रुति जनकंठ-

परम्परामे सुरक्षित छल आ बादमे ओ विभिन्न रूपमे यत्किंचित् परिवर्तन केर संग इतिहासमे सुरक्षित भेल। शिलालेखीय प्रमाणसँ स्पष्ट अछि जे ई मूल प्रसंग कालिदास-कुमारदासे विषयक छल। कुमारदास-कालिदास विषयक कथा राजावलीय, पराक्रमबाहुचरित आ अन्य श्रीलंकाक इतिहास ग्रंथसँ सम्बलित अछि। राजावलीय सिंहली भाषाक गौरव ग्रंथ अछि। एहिमे राजा विजय (543 BC)सँ राजा राज सिंह आ राजा विमल धर्मसूर्या (शक संवत् 1615मे मृत्यु) तक केर राजा सभक क्रमवार वर्णन अछि। राजा सभक शृंखला लगातार अछि आ कोनो कालक्रम भंग नहि भेल अछि। स्वाभाविक रूपसँ कोनो एक व्यक्तिकेँ एकर लेखनक श्रेय नहि देल गेल अछि। विभिन्न कालमे विभिन्न व्यक्ति द्वारा एकरा अद्यतन कएल गेल अछि। कहि सकैत छी जे ई ओहिना अद्यतन होइत रहल जेना मिथिलामे पाँजि। श्रीलंकाक इतिहासक ई सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण आधार ग्रंथ अछि। अंग्रेजीमे सर्वप्रथम एकर प्रकाशन 1900 ई.मे भेल छल। एशियन एजुकेशनल सर्विस द्वारा 1996 ई.मे पुन: प्रकाशित भेल। ए भी शूरवीराक सम्पादकत्वमे यप पब्लिकेशन, श्रीलंका द्वारा 2014 ई.मे फेर प्रकाशित भेल अछि। एहि ग्रंथ सभक आधारपर पूर्वमे उल्लिखित देशक लेल   वैराग्यक त्याग कऽ मातृभूमिक उद्धार कयनिहार दिसेनकेलीय राजा धातुसेना छथि। हिनक पौत्र कुमार धातुसेना (513-522 ई.) छथि। श्रीलंकाक इतिहास आ परम्परामे कुमार धातुसेना वा कुमारदास आ कालिदासक संगति बैसि जाइत अछि मुदा जानकीहरणक मद्रास पाण्डुलिपि केर कारणेँ समस्याक पूर्ण समाधानमे व्यवधान अबैत अछि।

जानकीहरणक बहुत रास पाण्डुलिपिमेसँ एक धर्मरामा कृत सिंहल प्रति केर मद्रासमे उपलब्ध पाण्डुलिपिक अंतमे वर्णन अछि—

कृतज्ञ (इति मातुलद्धितयत्न) सानाध्यतो
महार्थमसुरद्धिषो व्यरचयन् महाराज (कवि:)।
(कुमार परिचारक:) सफलहार्दं (सिद्धि: सुधी:)
(श्रुतो जगति जानकीहरण) काव्यमेतन्महत्।।

एहिमे कोष्ठकमे देल गेल शब्द धर्म रामा द्वारा अनुमानित अछि। एहि पद केर आधारपर कहल गेल जे पिताक मृत्युक बाद दू माम कुमारदासक पालन-पोषण कयलनि। एहि दुनू मामकेँ मेघ आ अग्रबोधि रूपमे जानल गेल। राजशेखर (10म सदी) कहैत छथि—

यतो मेघाविरुद्रकुमारदासादयः जात्यन्धाः कवयः श्रुयन्ते

(काव्य मीमांसा, चारिम अध्याय)

एहिसँ कुमारदासकेँ जन्मसँ आन्हर मानि लेल गेल जे उचित नहि अछि। ओहिनो गर्भमे रहैत काल पिताक मृत्यु भेलापर जनमल बच्चाकेँ गर्भ आन्हर कहबाक परम्परा अखनो अछि आ इहो मानल गेल अछि जे जाहि दिन ओहि कथित कुमारदासक जन्म भेल छल ओही दिन पिता माणित, जे सिंहली राजा कुमार मणिक सेनापति छलाह, युद्ध भूमिमे वीरगति पओने छलाह। संभवतः तेँ हिनका गर्भ आन्हर कहल गेल होयत जे कालक्रममे जन्मान्ध रूपमे रूढ़ भऽ गेल हो। श्रीलंकाक परम्परा वा अनुश्रुतिमे कतहु कुमारदासकेँ आन्हर होएबाक बात नहि अबैत अछि। जानकीहरणक वर्णन केर सूक्ष्मता सेहो आश्वस्त करैत अछि जे महाकवि पूर्ण स्वस्थ आ दृष्टिक सूक्ष्मता संपन्न व्यक्तित्व छलाह। जँ महाकवि जन्मान्ध रहितथि तखन राजा वा युवराज होयबाक कोनो संभावने नहि रहैत आ एहिपर कोनो विमर्शक प्रयोजने नहि रहैत।

कुमारदास आ कुमार धातुसेनाक मध्य परिस्थिति बहुत ओझरायल अछि। धातुसेनाकेँ तमिल विद्रोही राजा सभक शमन करबाक श्रेय देल गेल अछि। सासु-पुतोहुमे विवाद, बहिन (बेटीक सासु)केँ मृत्युदंड, पुत्र कश्शप केर विद्रोह आ धातुसेनाक मृत्यु फेर दोसर पुत्र मोग्गलान द्वारा कश्शपकेँ परास्त कऽ सत्तासीन होयबाक कथा कहल जा चुकल अछि।

जँ एहि कथापर विश्वास कएल जाय तखन कुमारदासकेँ धातुसेना नहि मानल जा सकैछ कारण श्रीलंकाक परम्परानुसार कुमारदास अपन मित्र महाकवि कालिदासक चितामे कुदि अपन प्राणोत्सर्ग कयने छलाह।

यथार्थमे धातुसेना आ कुमार धातुसेनामे पार्थक्य अछि। श्रीलंकाक राजगद्दी पर छः द्रविड़ राजा— पाण्डु, पाण्डु पुत्र परीन्दु, पाण्डु अनुज खुद्दा परीन्द्र, चारिम तमिल शासक त्रितारा, पाँचम तमिल शासक दथिया आ छठम तमिल शासक पीठ्यक पाण्ड्यन शासनसँ मुक्त करा 459 ई.मे अनुराधापुरक राजसत्तापर धातुसेना बैसल छलाह। ई राजा महानामाक दौहित्र छलाह। कुमार धातुसेना (513-22 ई.) मोग्गलान प्रथम (495-513 ई.) केर पुत्र आ राजा धातुसेना (459-477 ई.)क पौत्र छलाह। हिनकर बाद हिनक पुत्र कीत्तिसेना 522/524 ई.मे राजगद्दी पओलनि। एहि विमर्शसँ कुमारदास आ कुमार धातुसेनामे संगति बैसि जाइत अछि जे अपन मित्र कालिदासक चितामे कुदि अपन प्राणोत्सर्ग कएने छलाह।

आब दोसर समस्या अछि कुमारदासक जानकीहरण महाकाव्यक मद्रास

पाण्डुलिपिमे कविक परिचयात्मक पद सब। एहन पद अछि—

नित्यं सद्गुणभक्तिरिन्द्रियदमश्री संयत: संयत:
शस्त्रद्योतितमूर्घ्नि मुक्तहृदयोऽभीसङ्गत: सङ्गत:।
विद्वानस्य कवे: पितार्यहृदयं धीमानितो मानित:
लङ्कैश्क्यंभुज: कुमारमणिरित्यासन्नय: सन्नय:।।20/61
येनारिप्रकृतिं निराकृतवता सम्मानितो मानित:
यस्थ स्वाङ्गमभिघ्नतो रिपुभृंशनाशोऽभित: शोभित:।
श्रीमेघोऽस्य कवेरसौ किल वृहद्धामातुलो मातुल:
दृष्टस्त्रासजडं द्वषामधिगतत्रासेनया सेनया।।20/62

श्रीमानेकं शरण्य: परिभवविपदाभाजनानां जनानां
रूपेणानुप्रयातो दिवमतिसुभगं रञ्जयन्तं जयन्तम्।
भ्राता तन्मातुरन्य: शाशिधवलयश: कारणानां रणानां
कर्तापुत्रोऽग्रबोधिर्जनशिरसि लसद्भासुराज्ञ: सुराज्ञ:।।20/63

आदायैनं दशायां स्थितमपि तदहस्त्रस्तनाभ्यां स्तनाभ्यां
तुष्टे तस्मिन् गदानामरिहतपितृके पारयन्तौ रयन्तौ।
आत्मापत्याविशेषं पुपुषतुरहतप्रेमदान्तौ मदान्तौ
यत्सानाथ्यात् स काव्यं व्यरचयदसुरद्विण्महार्थं महार्थम्।।20/64

भाव जे कविक पिता कुमारमणि विद्वान्, धीमान् आ यशस्वी लंकेश युद्ध भूमिमे देह त्याग कयलनि मुदा समस्त भद्र जन केर हृदयमे वास कयलनि। कविक माम मेघ अतुलनीय शक्तिवान् छलथि जे अनुपम शौर्यसँ अरिदलकेँ सम्पूर्ण रूपसँ नष्ट कऽ माणितकेँ श्रद्धांजलि देलनि। कविक दोसर माम अग्रबोधि सेहो लोककेँ गौरवक बोध कराबएवला काज सभ कयलनि। नवजात कुमारक व्याधि आ पिताक मृत्युक बावजूद दुनू माम ओहिना स्नेह-प्रेम देलनि जेना ओ हुनक अपने बच्चा हो आ कवि हुनका सभक साहचर्यमे भगवान् केर महिमामे महार्थ काव्य लिखलनि।

ऐतिहासिक स्रोत तऽ यैह कहैत अछि जे 513/515 ई.मे पिता मोग्गलान प्रथमक मृत्युक बाद कुमार धातुसेना राजगद्दीपर आरूढ़ भेल छलाह अर्थात् कुमार धातुसेनाक पालन-पोषण पिता मोग्गलान प्रथम केर छत्रछायामे भेल छल जखन कि

कवि कुमारदास अपन काव्यमे अपन पिताक मृत्यु उपरान्त अपन दू माम— मेघ आ अग्रबोधिकेँ एकर श्रेय दैत छथि। एहि समस्याक निराकरण निमित्त यैह कहल जा सकैछ जे सब पाण्डुलिपिमे ई श्लोक चतुष्टय नहि अछि। मद्रासक सरकारी ओरिएंटल पाण्डुलिपि पुस्तकालयक प्रतिमे ई चारू पद अवश्य अछि मुदा लंदन केर पाण्डुलिपिमे ई पद सभ नहि अछि। तेँ एकर विश्वसनीयता असंदिग्ध नहि मानल जा सकैत अछि। एतऽ इहो महत्त्वपूर्ण तथ्य अछि जे श्रीलंकाक इतिहासक कोनो कालखण्डमे कुमारमणि वा माणितकेँ राजा रूपमे कतहु उल्लेख नहि अछि। 432-34 ई.मे राजा मित्तसेनाकेँ अपदस्थ करैत छ: तमिल आक्रमणकारी राजा अनुराधापुरकेँ हथिया 459 ई. तक राज कयलनि। अंतिम तमिल राजा पीठ्यकेँ मारि धातुसेना अपन सत्ता शुरू कयलनि। श्रीलंकाक इतिहासमे अग्रबोधि प्रथम 568 ई.मे श्रीलंकाक गद्दीपर बैसैत दृष्टिगोचर होइत छथि। 432 ई.सँ पूर्व आ 568 ई.सँ पहिने कतहु कुमारदासक कथित पिता वा मामक उल्लेख श्रीलंकाक इतिहासक आदिग्रंथ सभमे नहि भेटैत अछि। स्पष्ट रूपसँ कुमारदासक जानकीहरण केर कथित श्लोक चतुष्टय बाद केर कोनो प्रतिलिपिकारक कल्पना छी। एहि कथित श्लोक चतुष्टय आ कुमारदासक रचना सभक साहित्यिक मूल्यांकन वला भागमे एहि श्लोक सभकेँ हीन कहल गेल आ कुमारदासक मौलिक रचना नहि मानल गेल अछि। निश्चित रूपसँ एकरा प्रक्षिप्त मानल जयबाक चाही। इहो उल्लेखनीय अछि जे 12म शती केर रचना त्रिकाण्डशेष कोषमे रघुकार कालिदास आ मेधारुद्रकेँ एकहि कहल गेल अछि—

रघुकार: कालिदासो मेधारुद्रश्च कोटिजित्। (2/26)

मेधारुद्र आ मेधाविरुद्र अभिन्न छथि। संभव अछि जे मेधाविरुद्र (अलंकार शास्त्रक रचयिता) जन्मान्ध रहल होथि आ राजशेखर मेधाविरुद्रकुमारदासादयो जात्यन्धा: लिखने होथि। आब कालिदास आ कुमारदास विषयक संगतिक किछु समीक्षा उचित।

कुमारदासे कुमार धातुसेना छथि एकर इतिहास सिद्ध प्रमाण अन्यत्र देल गेल अछि। एतऽ महाकवि कुमारदास केर साहित्यसँ एक प्रमाण केर चर्च करब। महाकवि कुमारदास अयोध्याक भवन सभक वर्णन करैत एकठाम कहैत छथि जे एहि भवन केर देवालमे लोक अपन प्रतिबिम्ब देखि सकैत छथि—

स्वबिम्बमालोक्य ततं गृहाणामदर्शाभित्तौ कृतवन्ध्यघाता:।
रथ्यासु यस्यां रदिन: प्रमाणञ्चक्रमर्दामोदमरिदिपानाम्।।(1/6)

स्पष्टत: ई पित्ती कश्शप द्वारा सिंहगिरिमे निर्मित देवाल दर्पण केर संकेत थिक। ई सेहो स्पष्ट करैत अछि जे महाकवि कुमारदास वैह कुमार धातुसेना छथि जे मोग्गलानक पुत्र आ सिगिरियापति अपन पित्ती कश्शप केर भातिज छथि। विवेच्य श्लोकमे अयोध्याक भवन सभक सौन्दर्य-चित्रणमे ओ अपन चक्षुसँ देखल देवाल दर्पण दृश्य प्रस्तुत कएने छथि।

एहि सिंहगिरि प्रासादमे कश्शप रस्ताक किनारमे नारी सभक मनोरम रंगीन चित्र सभ उकेरित करओने छलाह। सामने केर देवाल दर्पणक (Wall Mirror वा कत् पथ पौरा)मे रमणी सभक अभरल सुन्दर चित्र लगैत छल जे दुनू कात सुन्दर-सुन्दर रानी सभ अपन परिचारिका सभक संग सुशोभित छथि। अखन एहि देवाल दर्पणपर दर्शनार्थी सब अपन-अपन रचना अंकित करैत छथि। सहस्त्राधिक वर्षसँ लिपि केर विकासक अध्ययन लेल ई अंकन जीवन्त दस्तावेज बनि गेल अछि।

वेस्सागिरियामे एक शिलालेख भेटल अछि जेकर लिप्यन्तरण अछि—

लताकताला[ही] ओलुवादु पूजागोनुलमी
ब[ओ]या ओपुलावन कसापि गा-री राजा
महा वेहेरे सिया सिया अगना बहराला
चिदावी माप्ला सावा सतानता

Pujagonula, the brick layer of Latakatala caused my wife to be free from slavery in the Royal Monastery of Boya-opulva-ha Kasapigiri. (May) the fruit of this action be for the benefit of all being.

(S. Paranavitana, 1934)

कुमारदासपर कालिदासक बहुत अधिक प्रभाव अछि। भाव आ भाषिक प्रयोग, शब्द संयोजन आदि केर समतासँ यैह तथ्य उद्घाटित होइत अछि जे दुनूमे सख्य भाव छल, दुनू एक दोसरक काव्यसँ अवगत छलाह आ महाकवि कालिदास कुमारदासक जानकीहरण महाकाव्यक परिशोधन कएने छलाह। दुनू महाकविक विपुल साम्यस्थलसँ किछु साम्यस्थल उदाहरण रूपमे निम्नलिखित अछि—

कालिदासक रघुवंशम् आ कुमारदासक जानकीहरण एकहि भावभित्तिपर ठाढ़ अछि। राजा दशरथक विशेष वर्णन आ हुनका द्वारा रामकेँ देल गेल उपदेश (10/19-36) प्रभृति नूतन स्थल सभकेँ छोड़ि देल जाय तऽ सर्वत्र कालिदासक अनुसरणे परिलक्षित होयत। रावणक मृत्युक बाद मन्दोदरीक करुण विलाप (19/32-52) कुमारसंभवम् (4/3-38)क रति विलापसँ प्रेरित अछि। दुनू महाकविमे भाव पक्षक कोन कथा जे प्रयुक्त समान शब्द सभसँ शिल्पक सौन्दर्य सेहो समान प्रतीत होइछ। समान शब्द संचयन केर एहन किछु उदाहरण दर्शनीय अछि—

- *जानकीहरण केर **स्तनद्वस्योद्वहनश्रमेण...**(1/32) आ रघुवंशम् केर **आपीनभारोद्वहन...**(2/18),*
- *जानकीहरणक **अरालकेश्या अलके विधात्रा...**(1/33) आ रघुवंशम् केर **भित्वा निराक्रामदरालकेश्या...**(6/81),*
- *जानकीहरण केर **मृगेन्द्रगामी मृगया बभूव...**(1/46) आ रघुवंशम् केर **ततो मृगेन्द्रस्य मृगेन्द्रगामी...**(2/30),*
- *जानकीहरण केर **प्रभुः प्रजानामथ स प्रभाते...**(1/70) आ रघुवंशम् केर **अथ प्रजानामधिपः प्रभाते...**(2/1),*
- *जानकीहरण केर **शरं शरण्योऽपि मुमोच बाले रावणेन रणे भग्ना देवा दाग्नितेजसा** (1/74) केर साम्य रघुवंशम् केर **वधाय वध्यस्य शरं शरण्यः।** (2/30),*
- *जानकीहरण केर **मेखलागुणसमीपसङ्गिनं तस्य हस्तमबला व्यपोहितुम्** (8/8) आ कुमारसंभवम् केर **मेखलाप्रणयलोलतां गतं हस्तमस्य शिथिलं रुरोध सा** (8/14)सँ साम्य आ*
- *जानकीहरण केर **अथ राम वृषस्यन्ती...**(10/72)क साम्य रघुवंशम् केर **इति रामो वृषस्यन्तीं...**(12/34)*

प्रभृति शब्दसाम्य संग भावसाम्य दर्शनीय अछि। एहन अनेकशः स्थल आर उपस्थित कएल जा सकैछ। कारयित्री आ भावयित्री प्रतिभाक एहन साम्य कदाचित् ई मानबाक लेल विवश करैत अछि जे दुनू प्रातिभ एकहि गुरुकुलसँ दीक्षित छथि। भावसाम्यक बहुल चित्रसँ मात्र एक चित्र केर उदाहरण प्रस्तुत अछि जाहिमे उत्तरायणी सूर्यक उत्तराभिमुखी गतिक तुलना ओहि पुजेगरीसँ देल गेल अछि जे कुबेर ओतऽ धन प्राप्तिक लेल जाइत अछि—

भ्रान्त्वा विवस्स्वानथे दक्षिणाशामालम्ब्य सर्वत्र करप्रसारी।
ऋत्विक्ततो निस्स्व इव प्रतस्थं थसूपलब्ध्यै धनदस्य वासम्।।(3/2)

आ रघुवंशम् केर 5/26मे सभ किछु दान कएनिहार रघु धरतीपर धन नहि देखि कुबेरसँ धन आनबाक निर्णय करैत छथि ताकि कौत्स मुनिकेँ दक्षिणा पठाओल जा सकए—

तथेति तस्यावितथं प्रतीत: प्रत्यग्रहीत्सङ्गरमग्रजन्मा।
गामात्तसारां रघुरप्यवेक्ष्य निष्क्रष्टुमर्थं चकमे कुबेरात्।।

आब जानकीहरण केर ई पद देखल जाय—

भुवि विरचितमग्रे तल्पमालोक्य भीति
स्पृशति मनसि बाला साश्रुपातस्थिता ताम्।
नृपतिभवनरत्नस्तम्भमालिङ्ग्य दोर्भ्या
रघुपति रूपगुह्य प्रापयद्भूमिशय्याम्।।(7/62)

भूमिपर सामने सजल शय्या देखि राम राजप्रासादक रत्नजटित स्तम्भसँ सटलि रतिभयसँ अश्रुपात् करैत सीताकेँ हाथ पकड़ि ओहि शय्या तक आनलनि। एतऽ कुमारदासपर कालिदासक प्रभावक आकलन कयल जाए। कुमारसंभवम् मे सातम सर्गक समाप्ति प्राय: एहिना अछि आ शिवजी पार्वतीक हाथ पकड़ि कौतुकागारमे भूमिपर सजल शय्या तक अनैत छथि। जानकीहरण आ कुमारसंभवम् केर आठम सर्गमे अद्भुत समानता लक्षित होइत अछि। भावपक्ष आ कलापक्षक कोन कथा जे लोक व्यवहार, स्वभाव, परम्परा आ विन्यास तकमे कुमारदासपर कालिदासक प्रभाव स्पष्ट अछि। अहिना दुनू महाकविक दशम सर्गक प्रथम श्लोक एकहि भावभूमिपर रचित अछि—

ततो नयेन नयतो राज्यं राजीवचक्षुषु:।
तस्य शक्रसमानस्य समानामयुतं ययौ।।

(जानकीहरण,10/01)

पृथिवीं शासतस्तस्य पाकशासनतेजस:।
किञ्चिदूनमनूनर्द्धे: शरदामयुतं ययौ।।

(रघुवंशम्,10/01)

इन्द्र समान तेजस्वी कमलनयन दशरथकैँ नीतिपूर्वक राज करैत हजार वर्ष लगभग व्यतीत भऽ गेल। दुनू श्लोकक भावभित्ति आ गति ततेक समरूप अछि जे जँ रचयिताक नाम हटा देल जाए तऽ निर्णय करब कठिन जे कोन किनकर कृति छी। एहि प्रकारक भावसाम्य आ शब्द साम्य एतेक अधिक अछि जे कखनो-कखनो दुनू सृजन केर एकहि 'टकसाल' मानबाक भ्रम होइत अछि। कखनो कालिदासक कमनीय कविताक कलेवर कुमारदासक काव्यमे अभरैत अछि तऽ कखनो कुमारदासक काव्यक प्रभाव कालिदासक काव्यमे झलकैत अछि। ई धारणा तखन विचलित होइत अछि जखन कुमारदास एकाक्षरा, द्वयक्षरा, यमक आ चित्र काव्य आदिसँ विलक्षण एवं वैदग्ध्यपूर्ण काव्यसँ चमत्कार उत्पन्न करबाक प्रयास करैत छथि।

एहन प्रयास केर मूल्यांकन उचित। महाकविक कुमारदासक चमत्कार प्रदर्शन विलक्षण अछि एहिमे कोनो संशय नहि। एक अक्षर, दू अक्षर, तीन आ चारि अक्षरसँ निर्मित श्लोक सभ अद्‌भुत अछि।
एकमात्र 'त' अक्षरसँ निर्मित निरन्तुरानुप्रासक उदाहरण ई श्लोक अछि—

तताततीति ततोतीता तातताताततत्ततौ।
ततो तोतितितैतेतौ ताते तुत्तितते तति: ॥(18/46)

स्वशक्तिसँ शिवस्वरूपकैँ आर सुदृढ़ करएवला शिवरूप हे हनुमान! विपुल विपक्षीक विस्तृत पंक्तिसँ अबैत भावी व्यथासँ युक्त संग्राममे एतऽसँ ओतऽ तक शत्रुदल केर भक्षणसँ अपना लेल श्रद्धाक विस्तार करैत आउ। एहिना 'स' एवं 'र' मात्र दू अक्षरसँ तैयार एहि श्लोक केर आनन्द लेल जाय—

सारासिरुरु सूरूरा: सारासारासु सूरस:।
ससार सारसारास: सुरासारि: ससार स: ॥(18/6)

अपन सुदृढ़ जाँघ आ वक्षवला स्वर्गक शत्रु मेघनाद, जेकरा बाणक वर्षामे मोन लगैत छल, हाथमे विशाल तलवार नेने हंस समान गम्भीर नाद करैत आगाँ बढ़ल। आब द्वयक्षरानुप्रासक ई दृष्टान्त देखल जाय—

ततारीति रतीताती तन्तिताररुतेरिता:।
ततारारिततीरेता रत तारारतौरत: ॥(18/52)

विस्तृत शत्रुरूपी विपत्ति (ईति)क संयोगसँ बजरल युद्ध हेतु प्रेरित आ विश्रामक अभाव कारणेँ चंचल भेल पुतलीवला सैन्यदल विजयेच्छासँ ललकारा दैत निरन्तर आगाँ बढ़ल। जानकीहरण केर 18म सर्गमे एहन विशिष्ट चमत्कार सभक भरमार अछि। प्रचण्ड प्रातिभक प्रकर्ष पाण्डित्यक प्रदर्शन एहि चमत्कारयुक्त पद सभमे भेल अछि। भावकेँ सीमित अक्षरमे प्रकट करबाक विवशता तऽ निश्चित रूपसँ महाकविक समक्ष रहल होयत मुदा मात्र कृत्रिमता कारणेँ एकरा हेय मानब सेहो उचित नहि। एहि प्रकारक काव्य सृजन सब कवि नहि कऽ सकैत छथि। एतऽ एक प्रसंगक उल्लेख करब उचित।

एकटा कोनो पैघ शास्त्रीय गायक एक कक्षमे अपन अभ्यास करैत छलाह। हुनक दीर्घ आलापसँ सामने रहैत किछु युवक-युवती सभ परेशान होइत हिनकर उपहास करैत छल आ प्रतिदिन हिनक अभ्यास कालमे जोर-शोरसँ अपन रैप संगीतपर झुमैत हिनका प्रताड़ित करैत छल। कतेक बेर मना कयलाक बादो स्थितिमे कोनो सुधार नहि आयल। एक दिन जखन ओ सभ आधुनिक रैप संगीतपर हुड़दंग मचा रहल छल, गायक ओतऽ पहुँचि गेलाह आ समूहसँ पुछलनि जे ई की कऽ रहल छी। ओ सब व्यंग्य कयलक जे ई आ-आ-आ... नहि छी। अहाँक रैप म्यूजिक विषयमे की पता! गायक किछु काल चुपचाप ओकरा सभक अवलोकन कयलनि आ फेर समूहक गायकसँ माइक लैत शुरू भऽ गेलाह। किछुए काल बाद हिनक रैप गायनसँ समूह संतुष्ट भेल आ स्वीकार कयलक जे एहन रैप तऽ हमहूँ सभ नहि गाबि सकैत छी। गायक कहलनि जे हम तऽ अहाँ सभक रैप गीत गाबि देलहुँ बिनु कोनो अभ्यासक, आब कने अहाँ सब हमर कोनो गीतक एक मुखरा वा अन्तरा सुना दियऽ। समूह हाथ जोड़ि क्षमायाचना कयलक आ आगू कहियो हिनका कोनो परेशानी नहि भेल।

एहि प्रसंगक चर्च एहि लेल कयल जे साहित्यिक व्यक्तित्वमे जँ मेधा रहत तखने ओ चमत्कार सृजनमे सफल भऽ सकैत अछि। महाकवि कुमारदास जतबे निष्णात् चमत्कार सृजनमे छथि ओहिसँ कनियो न्यून भाव सृजनमे नहि। ई हुनक अनुपम वैशिष्ट्य थिक। ओना किछु विद्वान् (श्री कमलेशदत्त त्रिपाठी : जानकीहरणम् का काव्य सौष्ठव, जानकीहरणम्, संपा. श्रीकृष्ण दास, मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद, पृष्ठ 28)क मानब अछि जे जँ कुमारदास चित्र काव्यक मोह नहि करितथि तऽ ओ अपन उत्कृष्ट वर्णन शक्ति आ सन्तुलित दृष्टिक कारणेँ अत्यन्त महान् कवि होयतथि। अलंकारक मोहसँ वास्तविक कविताक सृष्टिमे

बाधा पड़ल। हमर दृष्टिकोण एहि मान्यतासँ अलग अछि। यथार्थमे सृजनक जे मानसिक भावभूमि होइछ वा सृजनकर्ताक जे आन्तरिक मनोवैज्ञानिक संरचना होइछ ओकर प्रभाव सृजनपर पड़ब प्राकृतिक प्रक्रिया थिक। कालिदासक जन्म साधारण परिवारमे भेल छल। ओ नैसर्गिक प्राकृतिक वातावरणमे बढ़लाह। कुमारदासक जन्म राजपरिवारमे भेल आ ओ हर वस्तु सायाश सलीकासँ सजल देखैत बढ़लाह। कालिदास मिथिलाक प्राकृतिक वन-उपवन देखलनि, रंग बिरंगक पुष्प केर खुशबू लैत मकरन्द चीन्हलनि, नदी-पोखरिमे हेलैत निरभ्र पूर्णिमा रातिमे झिल्लरिक आनन्द लेलनि, झरनाक गर्जना सुनलनि, धानक खेतमे कमल फुलायल देखलनि, चिड़ै-चुनमुनी सभक कलरव सुनलनि, मधुमाछीक छत्ता आ बिढ़नीक खोँता देखलनि, पड़बाक खोपमे ओकर गुटरब सुनलनि; खेत-खरिहान, रीति-रिवाज, पावनि-तिहार सभक जे नैसर्गिक रूप छल से देखलनि। हुनका समक्ष सभ किछु अपन मौलिक रूपमे छल कोनो प्रकारक कृत्रिमता ओ नहि देखलनि आ यैह सभ नैसर्गिक गेयता बनि हुनकर आन्तरिक मनोवैज्ञानिक संरचनाक निर्माण कयलक जाहि कारणेँ महाकवि कालिदासक काव्य नैसर्गिक अछि। कोनो कृत्रिमताक आश्रय महाकवि नहि लऽ सकैत छलाह। एकर विपरीत महाकवि कुमारदासक जन्म श्रीलंकाक राजपरिवारमे भेल। राजा धातुसेनाक पौत्र, राजा मोग्गलानक पुत्र कुमारदासकेँ राजमहलमे सभ चीज-वस्तु सुव्यवस्थित, कलात्मक ढंगसँ सजाओल आ विशेष जतनपूर्वक तैयार कयल गेल भेटल छल। ओ फुलवारी देखने होएताह तऽ सुव्यवस्थित तरीकासँ तैयार क्यारीमे जतनपूर्वक लगाओल गेल फूल सभक गाछ देखने होयताह। तेँ ओ प्रकृति केर नैसर्गिक स्वरूपक सुन्दर उपवन केर स्थानपर यत्नपूर्वक प्राप्त कएल गेल सौन्दर्यकेँ अधिमान देलनि। कुमारदास अपन पितामह धातुसेनाक पतन, पित्ती कश्शप आ पिता मोग्गलानक मध्य प्राणघातक संघर्ष आ षड्यंत्र केर वीभत्स रूप देखने छलाह, केलि केर उत्कट रूप केर दर्शन कयने छलाह, राज परिवारमे मनुष्यक परिवर्तनशील आस्था आ स्वार्थ लेल दू भायमे रक्तपात सेहो देखने छलाह। स्वाभाविक रूपसँ एकर प्रभाव हुनकापर अवश्य पड़ल छल होयत। तेँ हिनक बहुत वर्णनमे ओ भाव नहि आबि सकल जे नैसर्गिक हो, स्वत:स्फूर्त हो। हुनकामे सहज मानवीय स्वभाव आ संवेदनाक ओ सरल रूप प्रस्फुटित नहि भेल जाहि लेल महाकवि कालिदास प्रसिद्ध छथि। मुदा एकर बादो इहो एक महत्त्वपूर्ण तथ्य अछि जे कुमारदास नैसर्गिक चित्रणमे सेहो निष्णात् छथि। विस्तार भयसँ अनेकश: एहन स्थलसँ एकमात्र उदाहरण प्रस्तुत अछि—

विरामः शर्वर्या हिमरुचिरवाप्तोऽस्तशिखर
किमद्यापि स्वापस्तव मुकुलिताम्भोरुहदृशः।
इतीवाय भानुः प्रमदवनपर्यन्तसरसी
करेणाताम्रेण प्रहरति विबोधाय तरुण।।3/78

प्रमद वन तक विस्तृत अलसाएल सरसीक नयन-कमल मुनल अछि। नवल तरुण सूर्य अपन आताम्र कर-किरण(श्लेष)सँ थपकी दैत कहैत छथि— हे मुकुलित कमल नयनी! राति बीतल, चन्द्र अस्ताचल गेलाह। अहाँ अखन तक सुतलि छी। शीघ्र उठू। पं. ब्रजमोहन व्यास (जानकीहरणम्, मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद, भूमिका, पृष्ठ 18)मे एहि श्लोककेँ सम्पूर्ण संस्कृत साहित्यमे सूर्योदय-वर्णनक श्लोक सभमे सर्वश्रेष्ठ आ एक अनुपम रत्न मानने छथि। प्रभात वर्णनक बाद एक विलक्षण सन्ध्या वर्णन देखल जाय—

अरुण करदृढावकृष्टरश्मि प्रणमितकन्धरभुग्नचारुघोणाः।
दिवसकरहया गिरीन्द्रभित्तेर्जघनपतद्रथनेमयोऽवतेरुः।।

(जानकीहरण, 16/02)

ढलानपर सूर्यक सारथी अरुण कसिकेँ घोड़ाक रासि खींचलनि जाहिसँ घोड़ा सभक कान्ह झुकि गेल आ सुन्दर नथुना तिरछा भऽ गेल। एहि रूपमे सूर्यक घोड़ा सभ पर्वतक चोटीसँ उतरल आ उतरैत काल रथ केर पहिया घोड़ा सभक जाँघसँ सटि गेल। ताँगासँ ढलानपर उतरैत काल ई सहज दृश्य जे कोइ देखने छथि वा अनुभव कयने छथि ओ महाकवि कुमारदासक एहि विलक्षण सहज चित्र आ कल्पना-प्रवणतापर वाह-वाह अवश्य करताह। अनेकशः एहन प्रसंग आ चित्र सभक अनुपम सहज सौन्दर्यसँ विभूषित अछि जानकीहरण।

जानकीहरणमे मिथिला नगरीक घरक पंक्तिकेँ कवि सूर्यक सहस्र रश्मिसँ ज्योतित शुक्र समान परशुरामक फरसा सदृश कहैत छथि—

विटङ्कभुजसंप्राप्त सहस्रकरमूर्त्तिना।
विग्रहेण यदावाससन्तानो भार्गवायते।।6/23

मिथिलाक जे वर्णन सर्ग 6 केर श्लोक 20सँ 30मे भेल अछि ओ सरिपहुँ विलक्षण अछि। कलेवर विस्तार भयसँ मात्र दू उदाहरण प्रस्तुत अछि—

यद्गोपुरविटङ्काग्रचन्द्रकान्तमणिस्त्रवम् ।
रसयन्ति स्यदश्रान्ता: शीतदीधितिवाजिन:।।6/22

चन्द्रमाक घोड़ा अपन तीव्र गतिसँ थाकि नगर फाटकपर पड़बा सभक खोपसँ लटकल चन्द्रकान्तमणिसँ टपकैत जल चाटि रहल अछि।

पौरसन्दोहभोगस्य श्रिया वज्रमृत: पुरीम्।
अधो विधत्ते धामेदं मैथिलस्य पुर परम्।।6/30

मिथिलेशक ई नगरी पौरजन केर आनन्दक प्रचुर सामग्री सभक श्री शोभासँ इन्द्रपुरीकेँ नीचाँ देखबैत अछि, लज्जित करैत अछि।
श्लोक 4/58मे कवि कुमारदास भवनपर चित्रक चर्च करैत छथि—

श्लथभित्तिविरूढभूरुहक्षतमूलाग्रविनिर्गमक्षतम् ।
स्फुटतीव भृशं शुचातुरं हृदयं तद्गृहचित्रयोषित:।।

सीताक वर्णन तऽ विभिन्न श्लोकमे जाहि उच्चता आ गरिमासँ भेल अछि ओ दर्शनीय अछि। एक उदाहरण देखल जाय—

प्रसीद मैवं परिभूदखण्डं ताराधिपं ते वदनामृतांशु:।
इति प्रियाया: पतितेव पादे ताराततिर्दीप्तनखच्छलेन।।(7/7)

सीताक नख केर आभासँ भयातुर तरेगन सीताक चरण वन्दना करैत छथि जे अहाँ अपन मुखारविन्द उठा हमर स्वामी चन्द्रमाकेँ लज्जित होएबाक अवसर नहि दियऽ। राम सीताक केलि वर्णन सेहो विलक्षण अछि। कालिदासक मैथिलत्व महाकविक सोझाँ राम सीता केलि-वर्णनमे जे वर्जनाक छौंकी नेने ठाढ़ छल ओ कुमारदासक लेल नहि छल। महाकवि कुमारदास मित्र महाकवि कालिदासक वर्जनाक एहि छौंकीकेँ दूर फेकि देलनि आ राम-सीता केलि-वर्णन कुमारसंभवम् केर शिव पार्वतीक केलि-वर्णनक स्पर्श कऽ लेलक।

विश्वामित्रक राजधर्म संबंधी जिज्ञासापर मिथिलेश राजर्षि जनकक राज-काज संबंधी नीति आ ज्ञान केर बात (6/35-43) सभक उल्लेख श्रीलंकाक साहित्यमे अपूर्व अछि। युद्धमे मारल गेल शत्रु सभक स्त्री आ बच्चा सभक रक्षा विजयी राजाक पुनीत कर्तव्य होएबाक घोषणा आ सेवानिवृत्त राजकर्मीकेँ पेंशन देबाक बात संबंधी श्लोक प्रस्तुत अछि—

नवें वयसि राज्यार्थं प्रविधाय जरां गतान्।
अक्षमत्वेऽपि तान् भृत्यान् कच्चित्पुष्णासि सादरम्।(6/40)

त्वद्विक्रमेण वैधव्यं प्रापिता रिपुयोषितः।
बालत्राणार्थिनी: कच्चित् सम्यग्रक्षसि बन्धुवत्।।(6/41)

एतऽ ई उल्लेख करब उचित जे पेंशन केर चर्च करैत कुमारदास प्रथम पुरा कवि छथि आ राजर्षि जनक केर मुखसँ नीति विषयक दिव्य ज्ञान नि:सृत करा कवि कुमारदास अपन मैथिल मित्र कालिदासक प्रति सम्मान प्रदर्शित कयने छथि।

महाकवि कालिदासक रचना केर सिंहल द्वीपक साहित्यपर पड़ल प्रभाव संकेत करैत अछि जे महाकविक सिंहल प्रवास तथ्यात्मक अछि। आठम शताब्दीमे मंजुश्रीक मंजुश्रीभूषिता केर रचना भेल। सियवसालंकारपर काव्यादर्शकार महाकवि दण्डिन् केर स्पष्ट प्रभाव अछि। जातकमालापर संस्कृतक प्रभाव अछि।

दशम शताब्दीक सिंहल ग्रंथमे मेघदूतम् केर पाँती अभरैत अछि। अरियादेव केर चतुष्टकाव्य आ चित्तविशुद्धि प्रकरण संस्कृतमे रचित भेल। 12म शताब्दीमे मेघदूतम् केर टीका लिखल गेल। 13म शताब्दीमे दूतकाव्य मिथुरुसन्देश रचित भेल। सिंहलीक अन्य सन्देश काव्य अछि— सउलसन्देश, कट्टकुरुलसन्देश, गिरासन्देश, हंससन्देश, परविसन्देश, कोवुलसन्देश, तिसरसन्देश आदि। अनेक दूतकाव्य रचल गेल। वाहन कारकेँ दूत बना बौद्ध सन्देश सेहो देल गेल अछि। दौल्देने ज्ञानीस्सरकेँ संस्कृतमे काव्य रचनापर बहुत सम्मान भेटल छल। अखनो संस्कृतमे काव्य सृजन होइत अछि। 1983 ई.मे संस्कृत ग्रंथ धर्मचिन्तनम् पर राष्ट्रपति सम्मान देल गेल छल। एहि वर्ष मारंगन् विजयम् सेहो प्रकाशित भेल छल। एहिसँ महाकविक श्रीलंकामे लोकप्रियता आ प्रभाव केर परिचिति अवश्य भेटैत अछि।

ई सत्य जे जनश्रुतिमे एक मुहसँ दोसर कानमे जयबाक प्रक्रिया निष्कलुष नहि रहैत अछि। एकहि बात जखन दोसर-तेसर लोक बजैत छथि तखन ओहिमे अन्तर आबि जाइत अछि। ई एकदम स्वाभाविक प्रक्रिया अछि। कोनो प्रसंगक भावमे आएल यैह अन्तर जनश्रुतिकेँ इतिहाससँ पृथक् करैत छैक। हंसदृष्टिसँ जखन

महाकवि कालिदास विषयक श्रीलंकाक अनुश्रुतिपर विचार करब तखन नीर-क्षीर फरिछा जाएत। एहि दृष्टिसँ देखलापर कालिदास-कुमारदासक संग-संग महाप्रयाण विषयक प्रसंग क्षीर रूपमे आबि जाइत अछि आ कुमारदासक चितामे मानवम्माक प्रवेश वा स्तूप बनएबाक बात नीर रूपमे विलीन भऽ जाइत अछि।

अनेक सुविख्यात् महाकवि सभक रहैत कालिदासे संग कुमारदासक ई अनुश्रुति किएक पसरल ई चिन्तनीय प्रश्न अछि। श्रीलंकामे कुमारदास-दण्डी विषयक अनुश्रुति सभक प्रसार किएक नहि भेल? एहिपर विचार करब तखन सत्य केर दर्शन होयत। ई एकटा महत्त्वपूर्ण तथ्य अछि जे दण्डीक आवास काञ्चीमे रहए जे लंकाक लऽगे अछि। दण्डीक व्यक्तित्व सेहो महान् छल जे कालिदास आ दण्डीक सरस्वतीक समक्ष उठल श्रेष्ठताक प्रश्नपर माता सरस्वती द्वारा 'कविर्दण्डी कविर्दण्डी कविर्दण्डी न संशयः' कहबाक अनुश्रुतिसँ स्पष्ट अछि। एतेक महत्त्वपूर्ण तथ्यक बादो दण्डी-कुमारदास विषयक एहन कोनो अनुश्रुति नहि अछि किएक तऽ ई प्रसंग हुनका सभक संग घटित नहि भेल छल। यथार्थमे ई प्रसंग कालिदास-कुमारदास संग घटित भेल छल तेँ एहन अनुश्रुतिक प्रसार भेल। एहि तथ्यसँ सेहो स्पष्ट होइत अछि जे कुमारदास-कालिदास प्रसंग विषयक अनुश्रुति तथ्यपरक अछि। एहि प्रसंगपर सन्देह करब अपन अज्ञानताक परिचय देब थिक।

श्रीलंकाक मूल निवासी येद्दो छथि। हिनका सभक वासस्थान मात्रकेँ बहुत लोक सिंहल क्षेत्र मानैत छथि। श्रीलंकाक आदिवासी समूह सभमे एक समूह अछि अहिकुन्तक। ई आदिवासी समूह सर्प विद्यामे निपुण होइत छथि। लोककेँ नाग दर्शन कराएब आ भविष्य कथन करब एहि अहिकुन्तक समूहक मुख्य आजीविका थिक। ई समूह तेलुगुभाषी छथि। श्री जे आर श्रीधरण अपन आलेख (द हिन्दू, विजयवाड़ा, 21 फरवरी 2018)मे मानैत छथि जे हिनका सभक भाषामे सिंहली सेहो मिझरा गेल अछि तथापि एहि भाषाक मूल तेलुगुए अछि।

उपर्युक्त विवेचन, दुनू महाकविक रचनामे अभरल विभिन्न साम्यस्थल, मिथिला-मिथिलेश आ जानकीक उल्लासपूर्ण चित्रणसँ हमर एहि निर्भ्रान्त मान्यता, जे मैथिल महाकवि कालिदास अपन मित्र सिंहल महाकवि कुमारदासक कृति जानकीहरण केर शोधन कयने छलाह, केँ अत्यधिक बल भेटैत अछि। *अनुश्रुतिः न निर्मूला*। आ जखन अनुश्रुति शिलालेखादि ऐतिहासिक स्त्रोतसँ सम्बलित हो तखन मात्र आधुनिकताक आलम्बन वा पूर्वाग्रहक कारणेँ ओकर तिरस्कार करब कोनो दृष्टिसँ उचित नहि। कुमारदास आ कालिदास विषयक अनुश्रुति ऐतिहासिक प्रमाणसँ सम्बलित अछि तेँ हमर स्पष्ट मान्यता अछि जे महाकवि कालिदासक महाप्रयाण 522/24 ई.मे भेल छल।

महाकवि कालिदास आ कुमारदास : अनन्त पथ केर सहयात्री

महाकवि कालिदास आ महाकवि कुमारदासक जीवनयात्रामे जतबे भिन्नता ओतबे समानता अछि। काव्य जगत् केर दुनू चमकैत मेधासूर्य! कुमारदास श्रीलंकाक राजपरिवारसँ संबद्ध तऽ कालिदास भारतवर्षक दीन-हीन अनपढ़ परिवारमे अवतरित। कुमारदास श्रीलंकाक सर्वश्रेष्ठ कवि आ कालिदास भारतवर्षक। दुनूक जीवनवृत्त तिमिराच्छादित, दन्तकथा आ अनुश्रुति सभसँ परिपूर्ण मुदा दुनू जीवित किम्वदन्ती पुरुष!

कुमारदासकेँ जन्मान्ध, जन्मक समय कथित पिता मान वा माणित केर युद्धभूमिमे शहादत, माम श्रीमेघ आ अग्रबोधि द्वारा लालन-पालन, जानकीहरण आ श्रीघनानन्द केर रचना, अग्रबोधि तृतीय केर दूत द्वारा वेश्या ओतऽ माटरामे कुमारदासक हत्या आ कुमारदासक चितामे कुदि मानवम्मा द्वारा आत्मोत्सर्ग करबाक कथित घटना सभक प्रचारक मूलमे कुमारदासक जानकीहरण महाकाव्यक कथित श्लोक चतुष्टय अछि। मादिल्ल शिलालेख, निशांकमल्ल केर शिलालेख आ सुवर्णपुरावंश परम्परा पुस्तक केर आधारपर एस पारानवितानाक सेहो किछु एहने अनुमान कयलनि। आश्चर्यजनक तथ्य ई अछि जे पारानविताना महोदय नागिरीकाण्डा शिलालेखमे प्राप्त कुमारातसाकेँ स्पष्ट रूपसँ कुमारदास कहैत छथि आ हुनका कुमार धातुसेना (512-521 ई.)सँ अभिन्न मानैत छथि (Epigraphia Zeylanica Being Lithic and Other Inscriptions of Ceylon, Ed. HW Codrington and S Paranavitana, vol iv, Asian Educational Service, New Delhi, Madras,1994 मे No 14. Nagirikanda Rock Inscription of Kumardas by S Paranavitana, p 115-28)।

श्रीलंकाक इतिहासमे कतहु कुमारदासकेँ जन्मान्ध नहि कहल गेल अछि। राजा कुमार धातुसेनाकेँ सेहो आन्हर प्रमाणित नहि कएल जा सकैछ। जाहि श्लोक

चतुष्टयसँ कुमारदासकेँ ब्याधिग्रस्त होएबाक प्रवाद पसरल आ कुमारमणि, मान, अग्रबोधि, मेघ आदि नामक भ्रम उत्पन्न भेल ओ श्लोक चतुष्टय जानकीहरण केर लन्दन पाण्डुलिपिमे नहि अछि। सौभाग्यसँ सिंहलक समस्त सम्राटक समय श्रीलंकाक इतिहासमे बिनु कोनो व्यतिक्रमक सुरक्षित अछि। श्रीलंकाक कोनो नरेश कुमारमणि वा माणित नामसँ अभिहित् नहि छथि। एहिना महाकविक दू माम रूपमे वर्णित मेघ आ अग्रबोधि केर अस्तित्व सेहो निष्कंटक नहि अछि। श्रीलंकाक इतिहासमे आरम्भसँ हजार ईस्वी तक अग्रबोधि/श्रीमेघ नामधारी वा मिलैत-जुलैत नामधारी निम्न राजपुरुष भेटैत छथि—

क्र.सं.	**नाम**	**समय**	**अभ्युक्ति**
1.	श्रीसंगबोधि *(दहामी सिरिसंगबो)*	251-253 ई.	ई.पूर्व 543सँ प्रथम *लम्बाकान्ना गोत्र, क्रमांक 55*
2.	गोठाभय *(मेघवन्नाभय वा गोलु अबा)*	253-266 ई.	*लम्बाकान्ना गोत्र, क्रमांक 56*
3.	कितिश्री मेवन *(कित श्री मेवन, कितिश्री मेघवन्ना)*	303-331 ई.	*महासेनक पुत्र, समुद्रगुप्तक समकालीन आ मित्र, क्रमांक 59*
4.	अम्बा समनेरादि शिलाकला *(लामणि अम्बाहेराणा सलामेवन वा लामणि अकबो)*	540-553 ई.	*क्रमांक 80*
5.	कितिश्री मेघवण्णा II *(कुदा कितश्री मेवन)*	560 ई.(मात्र 19 दिन)	मोग्गलान द्वितीय वा दला मुगालन पुत्र, क्रमांक 83
6.	अगबो I *(अग्रबोधि 1)*	575-608 ई.	*महानाग वा सेनेवीमाना केर भागिन, क्रमांक 85*
7.	अगबो II *(कुदा अकबो)*	608-18 ई.	*अगबो 1 केर भागिन, क्रमांक 86*
8.	शिलामेघवण्णा *(सला मेवन, असिग्राहका)*	623-32 ई.	*क्रमांक 89*

9.	अगबो III *(श्री संगबोधि द्वितीय वा श्री संगबो)*	632 ई. *(प्रथम शासन मात्र 6 मास)*	*क्रमांक 90*
10.	अगबो III	632-48 ई.	*दोसर शासन 16 वर्ष*
11.	अगबो IV *(श्री संगबोधि तृतीय वा श्री संगबो)*	667-683 ई.	*क्रमांक 96*
12.	अगबो V *(अग्रबोधि पंचम वा अकबो)*	719-25 ई.	*क्रमांक 100*
13.	अगबो VI *(शिलामेघ वा अकबो सलामेवन)*	733-772 ई.	*क्रमांक 103*
14.	अगबो VII *(कुदा अकबो)*	772-78 ई.	*क्रमांक 104*
15.	महिन्दा II *(शिलामेघ वा सलामेवन मिहिन्दु)*	778-798 ई.	*क्रमांक 105*
16.	महिन्दा III *(धम्मिका शिलामेघ वा हलीगाराविल हिस्कासो मिहिन्दु)*	803-807 ई.	*क्रमांक 107*
17.	अगबो VIII *(मादि अकबो)*	805-816 ई.	*क्रमांक 108*
18.	अगबो IX *(पशुल अकबो)*	834-37 ई.	*क्रमांक 110*
19.	सेना प्रथम *(मत्वला सेन वा सलामेवन सेन)*		*क्रमांक 111*

20.	सेना द्वितीय *(मुगायिन सेन, अभा श्रीसंगबो वा बुद्दास श्रीसंगबोयी अभय)*		*क्रमांक 112*
21.	उदय प्रथम *(उदा वा उदा आभा सलामेवन)*		*क्रमांक 113*
22.	कश्शप चतुर्थ *(कसुप वा कसुब श्रीसंगबो)*		*क्रमांक 114*
23.	कश्शप पंचम *(कसुप वा पसुल कसुबु वा सलामेवन अभय)*		*क्रमांक 115*
24.	दापुला पंचम *(कुदा दापुलु वा बुद्दास अभय वा सलामेवन दापुला)*		*क्रमांक 117*
25.	सेना पंचम *(सला मेवन राजा)*	982-992 ई.	*क्रमांक 123*

(A Chronological Table of Ceylon Kings, Epigraphia Zeylancia, ed. D M De Zilva Wickremsinghe आ H W Codrington, Asian Eduction Service, New Delhi & Madras, 1994, vol 3, p 4-20, पूर्व प्रकाशन— Published For The Government of Ceylon by Humphrey Milford, Oxford University Press, Amen House, E.C., London, 1933)

श्रीलंकाक प्रथम राजा विजय (शासनारम्भ ईसापूर्व 543)सँ दशम शताब्दी तक केर श्रीलंका नरेश सभमे अग्रबोधि आ मेघसँ मिलैत-जुलैत नाम मात्र एतबे अछि। संबंधित राजा सभक अन्य प्रसिद्ध नाम, उपनाम, अभिलेखमे उल्लिखित नाम कोष्ठकमे देल गेल अछि। एहि सूचीमे सम्मिलित राजा सभक क्रमांक सेहो यथास्थान देल गेल अछि। यथोक्त उद्धृत पोथीसँ राजा सभक समय एहि कारणेँ नहि लेलहुँ जे भगवान् बुद्धक महाप्रयाण ई.पूर्व 483 ई.क आधार मानि कालक्रम

एहिमे देल गेल अछि आ ई. पूर्व 544-543 ई. मानि कालक्रम कुमारदासक पुत्र कीत्तिसेनासँ शुरू भेल अछि।

अगबोकेँ अग्रबोधि रूपमे लेबाक चाही। अग्रबोधि प्रथमकेँ महानाग केर भागिन मानल जाइछ आ अग्रबोधि द्वितीयकेँ अग्रबोधि प्रथम केर भागिन। अग्रबोधि तृतीयकेँ शिलामेघवण्णाक पुत्र श्रीसंगबोधि रूपमे सेहो जानल जाइछ। अग्रबोधि चतुर्थ श्रीलंकाक लोकप्रिय राजा दथोपतिस्स केर भागिन छथि। अग्रबोधि पंचम मानवम्माक पुत्र तऽ अग्रबोधि षष्ठ कश्शप तृतीय केर पुत्र छथि। अग्रबोधि षष्ठ वा शिलामेघ केर पुत्र महिन्दा द्वितीय शिलामेघ वा सलामेवन मिहिन्दु नामसँ सेहो जानल जाइत छलाह। महिन्दा तृतीय धम्मिका शिलामेघ वा हालीगाराविल हिस्कासो मिहिन्दु नामसँ सेहो। अग्रबोधि सप्तम महिन्दा प्रथम केर पुत्र छथि। पूर्वेमे कहि चुकल छी जे श्रीलंकाक कोनो ऐतिहासिक स्रोत, परम्परा, अनुश्रुति वा तथ्य श्रीलंकाक कोनो राजाक नाम कुमारमणि, मान वा माणित नहि कहैत अछि। कश्शप द्वितीय (पशुल कसुबू) केर पुत्र मानवम्मा (महला पानो, क्रमांक 99)क चर्च यद्यपि महावंशमे नहि अछि मुदा राजावलीय आ पूजावलीयमे हिनक राजत्व काल 35 वर्ष देल गेल अछि। हिनक समय 668-703 ई. देल गेल अछि। हिनको कुमारदासक कथित पिता नहि मानल जा सकैछ। नागिरीकाण्डाक शिलालेखमे कुमारदास छठम शताब्दीक वर्णित छथि तखन आठम शताब्दीमे हुनक अस्तित्वक कल्पनो नहि कएल जा सकैछ।

जानकीहरण केर भूमिकामे नवम शताब्दीक मादिल्ल शिलालेख, वन्दुरुप्पा विहारसँ प्राप्त निशांकमल्ल केर स्तम्भलेख, परम्परा पुस्तक आ सुवर्णपुरावंश सभक आधारपर पारानविताना महोदय कुमारदास विषयक जे कथा कहैत छथि ओकर समीक्षा आवश्यक अछि। हिनके आधारपर डॉ. रत्ना चन्दा अपन शोधप्रबंधमे कुमारदास विषयक प्राय: यैह कथा दोहरा देने छथि। एहि स्रोत सभक अनुसार कुमारदास अग्रबोधि तृतीयक युवराज मान केर पुत्र छलाह। मान संग भेल युद्धमे जेठातिस्सक पराभव आ आत्महत्याक बाद हुनकर दुनू पुत्र श्रीमेघ आ अग्रबोधि भागि गेल छलाह। समय पलटल आ जखन अग्रबोधि तृतीय राजा भेलाह तखन मंत्रीगण राजा अग्रबोधिसँ मान केर हत्या करबाक बात कहलनि किएक तऽ ओ जेठातिस्सक बेटीसँ विवाह कएने छलाह आ राजपर हुनकासँ संकट छल। राजा एहि बातसँ सहमत नहि भेलाह आ मानकेँ युवराज घोषित कऽ देलनि। मंत्रीगण मान केर हत्या करा देलनि आ कहलनि जे ओ रनिवासक स्त्रीगणसँ अभद्र व्यवहार कएने

छलाह। जाहि दिन मान केर हत्या भेल ओहि दिन मानक पत्नी आ जेठातिस्सक बेटी एक नेनाक जन्म देलनि आ पति वियोगमे प्राणत्याग कयलनि। जेठातिस्सक दुनू पुत्र अग्रबोधि आ श्रीमेघक गुप्त दूत नवजातकेँ संग लैत पर्वत दिशि चलि गेल। यैह बालक बादमे कुमारादि धातुसेना भेल। जेठातिस्सक मंत्री दाथाशिव भारतवर्षसँ पैघ सेना संग श्रीलंका आएल आ अग्रबोधि तृतीयकेँ विकट युद्धमे परास्त करैत श्रीलंकाक राजा भेल। कुमारादि धातुसेनाक दुनू माम दाथाशिवक प्रति भक्ति दर्शा कुमारादि धातुसेनाकेँ नेने अनुराधापुर आबि गेलाह। किछु दिन शान्तिसँ व्यतीत भेल मुदा फेर हुनका सभकेँ श्रीविजय भागऽ पड़ल। एतहि कुमारादिकेँ संस्कृतक नीक ज्ञान भेल।

कश्शप द्वितीयक पुत्र आ मान केर अनुज मानवम्मा सुवर्णपुराक राजाक पुत्रीसँ विवाह कयलनि। कुमारादि धातुसेना मानवम्मा सभक संग पल्लव राजाक शरणमे काञ्ची अयलाह। एतहि कुमारादि धातुसेना काव्यादर्शकार दंडिन् केर शिष्य भेलाह। बादमे ओ अपन नाम कुमारदास कयलनि। शिक्षा समाप्तिक बाद ओ पल्लवराजक अंगरक्षक भेलाह। एतहि जानकीहरणक सात सर्गक रचना भेल। पल्लवराज नरसिंहवर्मनक सहयोगसँ जखन मानवम्मा श्रीलंकाक राजा भेलाह तखन कुमारदास अनुराधापुर आबि गेलाह। एतहि जानकीहरणक शेष भाग पूर्ण भेल। एतऽ ओ अतिशयभुतस्य अर्थात् उपराजाक पद पओलनि। मानवम्माक पुत्र अग्रबोधि पंचमकेँ ई स्वीकार्य नहि छल। विभिन्न प्रकारक षड्यंत्र सभसँ व्यथित कुमारदास फेर श्रीविजय आबि गेलाह आ एतऽ केर राजकुमारकेँ अपन ग्रंथ जानकीहरण देखऽ देलनि। ओ कुमारदासक लेल अत्यधिक आदर प्रदर्शित करैत प्रशंसा कयलनि। राजा सेहो अश्वघोषक सौन्दरानन्दक स्तर केर बौद्ध ग्रंथ लिखबाक अनुरोध कयलनि। कुमारदास श्रीघनानन्द केर रचना कयलनि। ई ग्रंथ देखलाक बाद राजा एकरा सौन्दरानन्दसँ हीन कहलनि। व्यथित कुमारदास एहि ग्रंथकेँ अग्निमे भस्म करबाक नेयार कयलनि। राजा मना कयलनि। निराश कुमारदास फेर श्रीलंकाक महातीर्थ आबि रहब शुरू कयलनि। अग्रबोधिक दूत एक वेश्या ओतऽ हिनकर हत्या कऽ देलक। ई जानि द्रवित मानवम्मा हुनक चिता स्थलीपर एक स्तूप केर निर्माण करओलनि।

पारानविताना बारहम शताब्दीमे विक्रमबाहुक समय रचित परम्परा पुस्तक केर आधारपर कथा पूर्ववते रूपमे कहैत छथि। पार्थक्य यैह जे कुमारदासक माम श्रीमेघ द्वारा सुवर्णपुराक राजाक रक्षामे प्राणोत्सर्ग केर घटनाक सेहो चर्च करैत छथि।

दोसर अंतर अछि जे एहि पोथीक आधारपर ओ कहैत छथि जे जखन कुमारदास महातीर्थ आपस अयलाह तखन प्रिंस अग्रबोधिक दूत कुमारदासक हत्या कयलक आ व्यथित मानवम्मा कुमारदासक धधकैत चितामे प्रवेश कऽ गेलाह।

डॉ. रत्ना चन्दा अपन शोधप्रबंध (A Critical Study of the Janakiharan of Kumardas, University of Calcutta, 2016, p 25-30, http://shodhganga.inflibnet.ac.inपर उपलब्ध)मे पारानविताना महोदयक परिकल्पना सभक आधारपर कालिदास-कुमारदास विषयक प्रसंगकेँ तथ्यात्मक नहि मानैत छथि।

यथार्थमे पारानविताना महोदयक ई वर्णन ऐतिहासिक कथापर आधारित काल्पनिक कथा-उपन्यास जकाँ लगैत अछि। ऐतिहासिक नाम सभक प्रयोग भेल अछि मुदा एहिमे इतिहास कतहु सुरक्षित नहि अछि। एहि काल्पनिक कथा केर आधार जानकीहरणक कथित श्लोक चतुष्टय लगैत अछि।

एहि गल्पमे कुमारादि धातुसेनाकेँ कथित मान केर पुत्र मानल गेल जे पूर्णतया इतिहास विरूद्ध अछि। इतिहासमे सर्वत्र कुमारादि धातुसेनाक समय 513/515-522/524 ई. स्वीकृत अछि। एहि मानकेँ अग्रबोधि तृतीय(619-631 ई.) क भ्राता कश्शप द्वितीय (634-642 ई.) केर पुत्र मानवम्मा (668-703 ई.)क अनुज कहल गेल अछि। अर्थात् मानवम्माक कथित अनुज मान केर समय इतिहाससिद्ध मानवम्माक समय सातम-आठम शताब्दीक बादे संभव अछि। अजीब कल्पना! पुत्र कुमारादि धातुसेनाक जन्मक प्रायः डेढ़ सय बरखक बाद बाप मान केर जन्म! ठोरपर अभरल मुस्की भभाकेँ हँसबाक लेल विवश करत जखन जानब जे कथित मान केर हत्या दू-तीन बेर अलग-अलग ढंगसँ होइत अछि। एक बेर मंत्रीगण द्वारा आ एक बेर अग्रबोधिक दूत द्वारा। श्लोक चतुष्टयमे तऽ हुनक तेसर बेर भेल मृत्युक चर्च अछि। एहिना एक बेर कुमारदासक मृत्युक बाद मानवम्मा हुनकर धधकैत चितामे कुदि आत्मोत्सर्ग करैत छथि तऽ दोसर बेर कुमारदासक मृत्युक बाद ओ चितापर स्तूप बनबैत छथि। कनेक हँसि लेलाक बाद फेर गम्भीर विषयपर अबैत छी।

श्रीलंकाक इतिहासक समुद्रमंथन केर एकमात्र उद्देश्य यैह निरूपित करब छल जे श्रीलंकाक इतिहासमे कुमारमणि, मान वा माणित नामक कोनो राजा नहि भेल छथि आ कुमारदासक कथित माम अग्रबोधि एवं श्रीमेघक कोनो तारतम्य हुनका संगे नहि बैसैत अछि।

सेनार्थ पारानविताना महोदय रम्भा विहार (हम्बनटोटा)क मादिल्ल गभुटा स्तम्भ लेख आ अन्य गभुटा शिलालेखक चर्च करैत छथि जे मान केर नाम ओहिपर अंकित अछि आ यैह मान सिंहलीक माणित छथि। मादिल्ल शिलालेख एहि विषयक स्पष्ट नहि अछि। ई संभव अछि जे कुमारदासक कथित श्लोक चतुष्टय हुनका कोनो स्तम्भपर अंकित भेटल हो। निशांकमल्ल (1187-1196 ई.) केर अनेक शिलालेखमे हुनकर वर्णन अछि जे ओ कलिंगक इक्ष्वाकु वंश केर छथि, कोनो गैर बौद्ध श्रीलंकाक राजा होयबाक पात्रता नहि रखैत छथि आ ने एहन प्रयास करब उचित थिक। फेर आगू केर कोनो अभिलेख सभमे सेहो मान आदिक कोनो चर्च नहि अछि। जाहि मादिल्ल शिलालेखक चर्च पारानविताना महोदय करैत छथि ओकर पद देखल जाय—

ए चन्द्र तरम अवताज जगद् अक्षरालिर... (Dr S Paranavitana : Ceylon and Malaysia, Lake House Investments, 1966, ISBN 9780842607919)। एहिसँ कुमारदासपर कोनो रोशनी नहि पड़ैछ। एक क्षण केर लेल मानि लेल जाय जे कुमारदासक पिता मान केर उल्लेख मादिल्ल शिलालेखमे भेल अछि। तखन नागिरीकाण्डा शिलालेख विषयक सेनार्थक मान्यताक की हाल होयत! दोसर बात जे अग्रबोधि तृतीयक कथित युवराज मान, जिनकर हत्या मंत्रीगण कयलनि तिनकर की दशा होयत! यथार्थमे पारानविताना महोदयक नागिरीकाण्डाक शिलालेख विषयक शोध सत्य केर धरातलपर आश्रित अछि, शिलालेखीय प्रमाणसँ सम्बलित अछि तेँ यैह स्वीकार्य अछि। कुमारदास विषयक हुनकर दोसर निष्पत्ति पूर्णतया काल्पनिक, भ्रामक आ अनैतिहासिक अछि। एहिसँ ओ इतिहास आ कल्पनाक फेरमे आकंठ घेरा गेलाह। इतिहासमे कल्पनाक कोन महत्त्व?

जानकीहरण केर सम्पादन एस पारानविताना महोदय सी ई गोदाकुम्बुरा संग श्रीलंका साहित्य मंडलालय (Ceylon Academy of Letters) लेल कयने छलाह जे गवर्नमेंट प्रेस, कोलम्बोसँ 1967 ई.मे प्रकाशित भेल छल। एहिमे पारानविताना उपर्युक्त बात सभक उल्लेख कयलनि (Preface p lx)। हिनकर विस्तृत उल्लेख करैत डॉ. रत्ना चन्दा अपन शोधप्रबंध (A Critical Study of Janakiharan by Kumardas, कलकत्ता विश्वविद्यालय, 2016 ई.)मे पारानविताना महोदयक काल्पनिक कथा सभक उल्लेख कयने छथि। पारानविताना

आ डॉ. रत्नाक ई निष्कर्ष अनैतिहासिक एवं काल्पनिक अछि। ओ मानकेँ अग्रबोधि तृतीयक युवराज कहैत छथि। दुर्भाग्य जे डॉ. रत्नाक शोधप्रबंधमे वैज्ञानिक दृष्टिकोण आ इतिहासकार सभक सूक्ष्म दृष्टिक उपयोग नहि भेल। पारानविताना महोदय केर नागिरीकाण्डा शिलालेख संबंधित आलेख Epigraphia Zeylanica, vol 4,1994 ई.मे प्रकाशित भेल। समयक अन्तरालमे नव शोधसँ संभवत: पारानविताना महोदय केर मान्यता परिवर्तित भेल हो। उल्लेखनीय अछि जे छठम शताब्दीक नागिरीकाण्डा शिलालेखमे जखन स्पष्ट रूपसँ 'सिद्धम् महा-कुमारातसा-राजा-अपाया' उत्कीर्ण भेटल अछि तखन बादक अप्रामाणिक स्रोतपर विचार करब आ किछु काल्पनिक निष्पत्तिक चर्च करब व्यर्थ। जखन बारहम शताब्दीक परम्परा पुस्तकक आधारपर जानकीहरण केर अंतिम श्लोक चतुष्टयकेँ तथ्यात्मक (?) मानल जा सकैछ तखन नागिरीकाण्डा शिलालेख (छठम शताब्दी)सँ सम्बलित, पूजावली (13म शताब्दी), राजावलीय आ अन्य ग्रंथमे स्पष्ट रूपसँ उल्लिखित कुमारदास-कालिदास विषयक संग-संग महाप्रयाणक कथाकेँ तथ्यात्मक नहि मानब ऐतिहासिक तथ्य केर अवज्ञा होयत। श्रीलंकाक कोनो अनुश्रुतिमे मानवम्माक कुमारदासक चितामे प्रवेशक कोनो कथा नहि अछि मुदा कालिदासक चितामे कुमारदास आ हुनकर पाँच रानीक प्रवेशक कथा ओतऽ केर जनश्रुतिमे ओहिना व्याप्त अछि जेना भारतवर्षमे वनकट्टामे बैसल डारिकेँ काटैत मूर्ख कलुआ, विद्योत्तमासँ हुनक विवाह आ भगवती उच्चैठक कृपासँ विश्व-विश्रुत होयबाक जनश्रुति व्याप्त अछि। *नह्यमूला जनश्रुति:* जनश्रुति निराधार नहि होइछ। जनश्रुति वा मिथकमे इतिहासक आत्मा रहैत अछि आ जँ ओ शिलालेखादिसँ सम्बलित हो तखन एकर सम्मान नहि करब उचित नहि। पूजावली (1265 ई.)मे एहि विषयक उल्लेख अछि—

ओहु कित कुमारदास महा काण्डीया नवाहौरुद्दक राजा यय कता कालिदास नामतमा याहालुवा माला दो टेमे बाग्नि बड़ा हारालोवा गिया हा।

एम मेघनकर कृत अनुवाद केर भावानुवाद अछि—

हुनक (मोग्गलानक) पुत्र सम्राट् कुमारदास महान् विद्वान् छलाह, नौ वर्ष राज्य कयलाक बाद जाहि दिन हुनक मित्र कालिदासक मृत्यु भेल ओही दिन ओ (कुमारदास) स्वयं चिताक ज्वालामे कुदि अपन जीवन त्यागि देलनि।

(पूजावली, सम्पादक— माबोपितीय मेघनकर, कोलम्बो, 1932, अध्याय 34, पृष्ठ 18)

पराक्रमबाहु चरितमे एहि घटनाक वर्णन अछि—

इजारा किवियारा पिनिन
जानकीहरणी महाकवेन्दि
कुमारदासा रदा कालिदास नाम
किविन्दु हता सिय दिविपिदि।

एकर अनुवाद केर उल्लेख—
JRASB, Vol lxii, part 17, 1893, H. Vidyabhushan, Preface to Dharamrama's edition— Kumardas and his Place in Sanskrit Literature, G R Nadargikar, p 4 पर अछि— *The king Kumardas who with immortal poetic felicity composed the Jankiharan and other mahakavyas, sacrificed his life for the great poet Kalidas.*

गेगर महोदय कुमार धातुसेना विषयक प्रसंग आ ओकर अनुवाद देने छथि ओ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि—

तस्साच्छाये कुमारादिधातुसेनोति विस्सुतो
अहु तस्सुतो राजा देवरूपो महाबलो
करिते पितुना कासी विहारे नवाकम्मकम्
करेत्वा धम्मासंगीतिम परीसोधेसी
संताप्पेसी महासंघम् पच्छायेही चतुहीपि
कत्वा पुंजेनि नेकनि नवमे हयने तिगा

(चैप्टर 41, 1-3)

अनुवाद—
After his death, his vigorous son of Godlike form called Kumardhatusena became king. In the vihar built by his father he had repairs carried out, he had a revision made of the sacred texts and he reformed the order. He supplied the great community abundantly with the four necessaries and after accomplishing many meritorious works he passed away in the 9th year of his region.

(गेगर : चूलवंश, श्रीमती सी मेबेल रिकमर्स कृत जर्मनसँ अंग्रेजी अनुवाद, भाग 1, पृष्ठ 51)

एहिसँ एतेक तऽ स्पष्ट अछि जे कुमार धातुसेना विद्यानुरागी, धर्मानुरक्षक, दानी आ परोपकारी छलाह जे अनेक महत्त्वपूर्ण काज करैत नवम वर्षमे दिवंगत भेलाह।

कुमारदासक कथित श्लोक चतुष्टय केर साहित्यिक मूल्यांकनसँ स्पष्ट होइछ जे ई श्लोक चतुष्टय कुमारदासक रचना नहि थिक। अपना लेल कोइ कवि परोक्ष रूपसँ अन्य पुरुषमे तथ्य नहि दैत अछि। जानकीहरण केर कथित अंतिम पद—

आदायैन दशाया स्थितमपितदह स्रस्तनाभ्या स्तनाभ्या
तुष्टे तस्मिन् गदानामरिहतपित्रिके पारयन्तौ रयन्तौ।
आत्मापत्याविशेषं युषुतु रहतप्रेमदान्तौ मदान्तौ
यत्सानाथ्यात्स काव्यं प्यरचयदसुरद्विण्महार्थ महार्थम्।।

मे प्रयुक्त 'तदह स्रस्तनाभ्या' (जखन ओ कवि जन्म लेलनि) आ 'स्तनाभ्या तुष्टे' (जखन ओ दुधपीवा नेना छलाह) आदि केर शैली आत्मकथ्यात्मक शैली नहि अछि। जँ कवि स्वयं एकर रचयिता रहितथि तखन आत्मवादी अर्थात् हम, हमर, हमरा सभक आदि केर शैली रहैत। जखन कि एहि कथित श्लोक चतुष्टय केर शैली हुनक, हुनकर, हुनका आदिक अछि। पुराकवि सभमे स्वयं अपन परिचय देबाक परम्परा सेहो नहि छल। उपर्युक्त तथ्य सभक आलोकमे एहि प्रक्षिप्त पदपर समय नष्ट करब उचित नहि। इहो विचारणीय तथ्य अछि जे कतहु मान वा माणितकेँ जेठातिस्स संग भेल युद्धमे शहादत केर बात अछि तऽ कतहु अग्रबोधि तृतीय केर मंत्रीगण द्वारा हत्या करबाक चर्च अछि। स्पष्ट जे श्लोक चतुष्टयकेँ तथ्यात्मक माननिहार समूहमे भ्रम केर स्थिति अछि जखन कि कालिदास-कुमारदास विषयक प्रसंगकेँ तथ्यात्मक माननिहार सभक समूहमे कोनो भ्रम नहि अछि। ओ सभ दुनू महाकविक संग-संग महाप्रयाणक घटनाकेँ सत्य मानि एहि श्लोक चतुष्टयकेँ कोनो प्रतिलिपिकार केर कुमारदास संग अमरत्व प्राप्त करबाक सेहन्ताक प्रकटन मानि प्रक्षिप्त कहैत छथि।

इहो तथ्यात्मक अछि जे जानकीहरणमे पुनरुक्ति चमत्कारक वैशिष्ट्य सर्ग तेरह तक अत्यन्त विरल अछि।

जानकीहरणक आद्योपान्त मनन केर बाद तैयार एहि सारणीपर ध्यान देल जाय—

सर्ग	कुल श्लोक	चतुष्पदी	पुनरुक्ति चमत्कारयुक्त श्लोक
1	90	शून्य	शून्य
2	79	1	शून्य
3	81	4	शून्य
4	73	4	शून्य
5	61	शून्य	शून्य
6	59	शून्य	शून्य
7	62	1	शून्य
8	101	2	शून्य
9	68	2	शून्य
10	90	9	शून्य
11	96	7	शून्य
12	56	1	शून्य
13	46	9	शून्य
14	81	1	24, 55, 73, 75, 77,79
15	64	4	61, 62, 63, 64
16	74	5	16, 71, 72, 73, 74
17	43	1	समस्त श्लोक
18	74	3	2, 6, 15, 16, 71, 74
19	64	2	60, 61, 63, 64
20	63	7	57,58, 59, 60, 61, 62,63

उपर्युक्त सारणीसँ स्पष्ट होइछ जे तेरहम सर्ग केर बादे कुमारदासक ई वैशिष्ट्य सोझाँ अबैत अछि। सर्ग 17 केर प्राय: समस्त श्लोकमे ई चमत्कार अछि। इहो उल्लेखनीय जे चतुष्पदीमे एकर प्रयोग कने आर भकरार अछि। अंतिम सर्गक चारू चतुष्पदी भाव वैशिष्ट्यक दृष्टिकोणसँ एहि सर्गक श्लोक सभसँ विशेष रूपसँ श्लोक सं. 41, 43सँ 51आ 55-56 केर विलक्षण काव्य-सौन्दर्यसँ हीन अछि। स्थान संकोच कारणेँ मात्र एक उदाहरण प्रस्तुत करैत छी—

अमुष्य श्रृङ्गे दुहितुर्महीभृतः तपश्चरन्त्यास्सविता समीपगः।
शशाङ्कशोभामवहद्विलोचन प्रभाततिश्यामितमध्यमण्डलः।।

शैल श्रृंगपर बैसि शैलपुत्री जखन तपस्या करैत छलीह तखन निकटवर्ती सूर्य चन्द्रमा जकाँ शोभायमान भेलाह आ पार्वतीक एकटक सूर्यकेँ देखबाक कारणेँ हुनक आँखिक पुतरीक शोभासँ सूर्यमंडलक मध्य भाग कारी भऽ गेल। महाकवि कालिदासक कुमारसंभवम् केर एहने चित्र देखल जाय—

शुचौ चतुर्णां ज्वलतां हविर्भुजां शुचिस्मिता मध्यगता सुमध्यमा।
विजित्य नेत्र प्रतिघातिनीं प्रभामनन्यदृष्टिः सवितारमैक्षत्।।5/20

तथातितप्तं सवितुर्गभस्तिभिर्मुखं तदीयं कमलश्रियं दधौ।
अपाङ्गयोः केवलमस्य दीर्घयोः शनैः शनैः श्यामिकया कृतं पदम्।।5/21

ग्रीष्म मासमे पार्वती चारू कात आगिक ताप मध्य ठाढ़ि सूर्यक तीक्ष्ण तापकेँ जीति एकटक सूर्यकेँ निहारि तपस्यारत छलीह। एहि कठिन तपस्यामे सूर्य किरणक तापसँ पार्वतीक मुख कुम्हलायल नहि अपितु कमल जकाँ प्रस्फुटित भऽ गेल। हँ, एतेक अवश्य भेल जे हुनक पैघ-पैघ आँखिक नीचाँ किछु श्यामलता आबि गेल।

पाठकगण स्वयं दुनू महाकविक उच्चताक अनुभव करथि। बेसी ठाम महाकवि कालिदाससँ पछुआएल महाकवि कुमारदास एतऽ एक डेग अवश्य आगू छथि। आ एहि असाधारण उच्चताक स्पर्श करब कोनो प्रतिलिपिकारसँ कथमपि संभव नहि छल। एहि चारू पदकेँ महाकवि कुमारदास कृत कहब कुमारदासक अप्रतिम कारयित्री प्रतिभाक उच्चता संग अन्याय होयत।

कुमारदासक काल-निर्धारण निमित्त निम्न विन्दु विचारणीय अछि—

1. कुमारदासक रचना सभक उद्धरण वा कुमारदासक चर्च माधववर्मन केर ज्ञानाश्रयी छन्दोचित्रि (700 ई.), वामन (800ई.)क काव्यालंकारवृत्ति, राजशेखरक काव्य मीमांसा (900 ई.), सुभूतिचन्द्र (1010-1062 ई.) कृत कामधेनु, हेमचन्द्र कृत काव्यानुशासन (1089-1173 ई.), भोज (1010-55) कृत श्रृंगार प्रकाश आ सरस्वती कण्ठावरण, सर्वानन्द कृत टीकासर्वस्व (1159 ई.), श्रीधर कृत सदुक्तिकर्णामृत

(1205 ई.), जल्हण कृत सूक्तिमुक्तावली (1258 ई.), शाङ्र्गधरपद्धति (1368ई.), राय मुकुटमणि कृत पदचन्द्रिका (1430 ई.)मे उपलब्ध अछि।

2. जानकीहरणम् केर तीन श्लोक ज्ञानाश्रयी छन्दोचित्रिमे इन्द्रमल्ल रूपक केर उदाहरण रूपमे उद्धृत अछि—

i. *इयत्पृथुत्वं कृशदेहयष्टेर्नितम्बचक्रस्य परं प्रमाणम्।*
इतीव बद्धा रशनागुणेन श्रोणी पुनर्वृद्धिनिषेधतोऽस्या।।

ii. *दिदृक्षुरन्त सरसीमलङ्घ्यं यत्खातहंसः समुदीक्ष्य वप्रम्।*
सस्मार नूनं दृढकौञ्चकुञ्जभागच्छिदो भार्गवमार्गणस्य।।

iii. *आसीदयं चन्द्रमसो विशेषस्त्वद्वक्रचन्द्रस्य च भासुरस्य।*
विभति पूर्वः सकलङ्कुरङ्गं तस्यैव नेत्रद्वितयं द्वितीयम्।।

उपर्युक्त तीनू श्लोक ज्ञानाश्रयी छन्दोचित्रिमे अछि। तेसर श्लोक जानकीहरणक 1/37, दोसर श्लोक 1/5 आ प्रथम श्लोक मद्रास पाण्डुलिपिमे अछि। तीनू श्लोक त्रिवेन्द्रम् संस्कृत सीरिजक ज्ञानाश्रयी छन्दोचित्रि केर 1969 संस्करण, पृष्ठ 40पर किंचित् परिवर्तन संग उद्धृत अछि।

3. एहिना वामन केर काव्यमीमांसामे— सपदि पङ्क्तिविहगनामभृत् तनयसंवलितं बलशालिना, राजशेखरक काव्य मीमांसामे यतो मेधाविरुद्रकुमारदासादयो जात्यन्धा कवयः श्रूयन्ते प्रभृति पदमे सेहो कुमारदासक स्पष्ट उल्लेख भेटैत अछि। सोड्ढल अपन उदयसुन्दरी कथामे लिखैत छथि—

बभूवुरूपेऽपि कुमारदासभासादयो हन्तकवीन्दवस्ते।
मदीमगोभिः कृतिनां द्रवन्ति चेतांसिचन्द्रोपलननिर्मलानि।

(डॉ. कीथ : संस्कृत साहित्य का इतिहास, मोतीलाल बनारसी दास,दिल्ली,1960, अनु. डॉ. मंगलदेव शास्त्री,पृष्ठ 397 पर उद्धृत)

4. कुमारदासक नाथ कुमार, कुमारदत्त, भट्ट कुमार, कुमार भट्ट आ श्रीकुमार अन्य नाम सेहो भेटैत अछि। सुभाषितावलीमे कुमार भट्ट नामसँ उद्धृत पद—

विमलम्बु निपीय नदीशतैः सलिलमारनिरन्तरितोदरः।
कलममिवानुभवन्नतितिपानजं गिरितटे निषसाद पयोधरः।।

किंचित् परिवर्तन यथा विमलम्बुक जगह विमलवारि आ नदीशतै स्थानपर नदीशतं रूपमे जानकीहरण केर श्लोक 11/53मे उपलब्ध अछि। एहिना सुभाषितावलीमे कुमार भट्ट नामसँ उपलब्ध पद संख्या 1812—

मणिप्रमेषु प्रतिबिम्बशोभया निमग्नया बालशशांकलेखया।
विशाङ्करो वारिषु वश्चितात्मना न राजहंसे न पुनर्विचिच्छिदे॥

मे प्रतिबिम्बशोभयाक जगह प्रतिबिम्बशोभता, विशाङ्करो केर स्थानपर विचिच्छिदे, पुनर्चिच्छिदेक जगह विचिच्छिदे आ पुनर्विचिच्छिदेक स्थानपर पुनर्विसाङ्कुरः पाठ रूपमे उपलब्ध अछि।

5. एहिना जल्हण केर सूक्तिमुक्तावलीमे नाथ कुमार नामसँ उद्धृत पद—

यत्सौधश्रृंगाग्रसरोजरागरत्नप्रभा विच्छुरितः शशांकः।
पौरांगना ववत्रकृतावमानो जगाम रोषादिव लोहित्वम्॥

जानकीहरणक कश्लोक 1/2 रूपमे अछि। पल्लव शासन सन्दर्भमे सभसँ महत्त्वपूर्ण अछि पोलामुरु दानपत्र आ इपुर ताम्रपत्रलेख। एहि दानपत्रमे माधववर्मनकेँ अनेक यज्ञकर्ता आ दान-पुण्य कयनिहार कहल गेल अछि। ज्ञानाश्रयी छन्दोचित्रिमे प्रायः एहने वर्णन अछि। पोलामुरु दानपत्रक आधारपर के. गोपालाचारी (Early History of the Andhra country, p 208) माधववर्मन द्वितीयकेँ ज्ञानाश्रयी राजा रूपमे मानने छथि जखन कि सी आर स्वामीनाथन (Janakiharan of Kumardas, p 19-21) विष्णुकण्डिन् कुल केर माधववर्मन प्रथमकेँ ज्ञानाश्रयी मानैत छथि। ओ एहि तथ्यकेँ पोलामुरु दानपत्रसँ समर्थित कहैत छथि। डी सी सरकार Genology of the Visnukundinमे सेहो यैह मानैत छथि।

Shodhganga.inflibnet.ac.inमे कलकत्ता विश्वविद्यालयक डा. रत्ना चन्दा अपन शोधप्रबंध Critical Study of Janakiharan of Kumardas (लिंक http://hdl.handle.net/10603/159590)मे डी सी सरकार (IHQ vol ix)क मादे विष्णुकुण्डिन् सत्ताक निम्न क्रम दैत छथि—

1. विष्णुकुण्डिन सत्ताक उदय—	*5 म शताब्दी*
2. विक्रममहेन्द्र—	*500-520 ई.*
3. गोविन्दवर्मन—	*520-535 ई.*
4. माधववर्मन प्रथम—	*535-585 ई.*
5. माधववर्मन द्वितीय—	*585-615 ई.*
6. विक्रमेन्द्रवर्मन प्रथम—	*615-625 ई.*
7. इन्द्रभट्टार्कवर्मन—	*625-655 ई.*
8. विक्रमेन्द्रवर्मन द्वितीय—	*655-670 ई.*

(यथोक्त, पृष्ठ 41)

माधववर्मन प्रथम, द्वितीय वा विक्रमेन्द्रवर्मनमे जे राजा ज्ञानाश्रयी होथि किनको समय सातम शताब्दीक बाद नहि राखल जा सकैछ। एक हिरण्यगर्भ, 11 अश्वमेध आ एक हजार क्रतूस यज्ञ एवं अन्य धार्मिक अनुष्ठानकर्ता आ यशस्वी विजेता महाराज माधववर्मन केर चरित्रसँ ज्ञानाश्रयी राजाक चरित्र मिलैत अछि तेँ हिनके ज्ञानाश्रयी मानब उचित। विक्रमेन्द्र केर शासन केर 11म वर्षमे निर्गत आ नलगोंडा जिलाक तुम्मलगुडेमसँ प्राप्त ताम्रपत्र लेख 566 ई.क अछि (एम. रामा राव, New Lights on the Visnukundin, Proceedings of the Indian History Congress, vol 27 (1965), p 78-82)। 593 ई.मे माधववर्मनक समय ज्ञानाश्रयीमे कुमारदासक कविताक उल्लेखसँ बेसी विद्वान् यैह मानैत छथि जे 593 ई.मे कुमारदासक काव्य लोकप्रिय भऽ गेल छल। स्पष्ट जे कुमारदासक समय एहिसँ पूर्व रहल होयत। कुमारदासक वर्णन— काञ्चीमे सार्थवाह सभक जुटान (1/18), कटाह नरेशक पराजय (1/17), व्रतिन: शब्द केर प्रयोग 20/36) आदि तथ्यक आधारपर महान् अनुवादक व्रजमोहन व्यास कुमारदासक समय सातम शताब्दीक पूर्वार्द्ध मानने छथि (जानकीहरणम्, मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद-3,1966, पृष्ठ 22)। वाचस्पति गैरोला कुमारदासक समय 7म-8म शताब्दी मानैत छथि (संस्कृत साहित्य का इतिहास, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी,1960, पृष्ठ

855)। आ. बलदेव उपाध्याय (संस्कृत सुकवि समीक्षा, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी, पृष्ठ 313)मे ज्ञानाश्रयी पद सभक आधारपर 600 ई.सँ पूर्व कुमारदासक समय मानैत छथि। पं. द्विजेन्द्र नाथ शास्त्री (संस्कृत साहित्य विमर्श, न्यू इण्डिया प्रेस, नव दिल्ली, 1956, पृष्ठ 456) 675-750 ई. कुमारदासक समय मानैत छथि। जी आर नन्दार्गीकर (Kumardas and His Place in Sanskrit Literature, पूना, 1908,) आठम शताब्दीक अन्त आ नवम केर प्रथम चतुर्थांश मानैत छथि। एस एन दासगुप्ता (History of Sanskrit Literature, Classical Period, Vol 1, कलकत्ता विश्वविद्यालय, 1947, पृष्ठ 185) हिनक समय 800 ई. मानैत छथि। पं. वेदव्यास शुक्ल (महाकविककुमारदासकृतं जानकीहरणम्, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2014, पृष्ठ 2) कुमारदासक स्थितिकाल 450सँ 525 ई. मध्य स्वीकार कएने छथि। आगू पं वेदव्यास कुमारदासकेँ काशिकावृत्ति (650 ई.) अनुसार सन्तापम्, उप्रिमं, वितूस्तय, मर्माविध् आदि प्रयोगकेँ साध्य मानि कुमारदासकेँ सातम शताब्दीक बाद माननिहार विद्वान् (डॉ. कीथ सहित) सभकेँ एहि तथ्यसँ अवगत करबैत छथि जे कुमारदास द्वारा जे पुनि अर्थमे आसुतीबल शब्दक प्रयोग भेल अछि ओ काशिकावृत्तियोसँ साध्य नहि अछि। एहि विषयक किलहार्न आ यदुनन्दन मिश्रक मत अछि जे कुमारदास चन्द्रगोभिन् कृत चान्द्र व्याकरणक उपयोग कएने होयताह जिनकर समय लिविर 480 ई. मानैत छथि। एहि आधारपर कुमारदासक समय छठम शतीक पूर्वार्द्ध मानल जयबाक चाही। (यथा पूर्वोक्त, पृष्ठ 4)

डी डी कोशाम्बी, के चन्द्रशेखरन्, लाला कन्नूमल, एफ डब्ल्यू टॉमसन, वासुदेव शरण अग्रवाल प्रभृति बेसी विद्वान् कुमारदासक समय छठम शताब्दी मानैत छथि। सत्य यैह अछि। जे विद्वान् महाकवि कुमारदासक काल सातम, आठम वा नवम शताब्दी मानैत छथि हुनका सभकेँ कुमारदास वा कुमार धातुसेनाक कालपर अवश्य विचार करबाक चाही। पाछू दुनूमे अभिन्नता नागिरीकाण्डा शिलालेख आदिसँ प्रमाणित कएल जा चुकल अछि। जँ एहिपर विचार नहि करबाक लेल दृढ़संकल्पित होइ तखन ज्ञानाश्रयीमे उद्धृत कुमारदासक पद देखि कुमारदासक कालपर विचार करथि। सत्य स्पष्ट भऽ जायत।

श्रीलंकामे प्रचलित अनुश्रुति आ अनेक ग्रंथ सभक अनुसार महाकवि लंकेश कुमारदास आ महाकवि कालिदासक महाप्रयाण एकहि चितापर भेल छल। तत्संबंधी हतबोधि वृक्ष, चितास्थली आदि अनेक स्मृतिचिह्न श्रीलंकाक माटरामे

अखनो बाँचल अछि जे प्रमाणित करैत अछि जे दुनू महाकवि अनन्त पथ केर सहयात्री छलाह। एहि आधारपर कालिदास आ कुमारदासक अंतिम समय निर्णायक रूपसँ 522/524 ई. मानल जा सकैछ।

दुनू महाकवि अनन्त पथ केर सहयात्री मात्र नहि छलाह अपितु जीवन पथ केर सहयात्री सेहो छलाह। दुनूमे सख्य भाव छल। दुनू एक दोसरासँ हृदयसँ जुड़ल छलाह ई माटराक हतबोधि वृक्ष, समाधि, कालिदास मार्ग आदि चिचिया- चिचिया तऽ कहिए रहल अछि दुनू महाकविक रचना सेहो एहि तथ्यपर अपन मोहर लगबैत अछि। दुनू महाकविक कारयित्री प्रतिभाक महासागरसँ असंख्य समरूप रत्न सोझाँ राखल जा सकैछ मुदा से हमर अभिप्रेत नहि। हम मात्र ई कहबाक प्रयास करब जे दुनू महाकवि एक दोसरासँ पूर्ण परिचित, प्रभावित आ परम आदरपूर्ण स्नेहसूत्रमे आबद्ध छलाह जेकर निर्वाह दुनू अन्त-अन्त धरि कयलनि।

पहिने कहि चुकल छी जे दुनू महाकवि कारयित्री प्रतिभाक महासागर छथि। काव्यशास्त्रीय निकष रस, छन्द, अलंकार, गुण, रीति, धर्म आदिक विभिन्न भेदोपभेदक सूक्ष्मातिसूक्ष्म भागक उदाहरण दुनू महाकविक रचनामे सहज उपलब्ध अछि। एहि समस्त निकषपर दुनू निष्णात् छथि। एतऽ हम मात्र अलंकारपर ध्यान केन्द्रित करब कारण जे एहिसँ दुनू महाकविक काल निर्धारणपर सेहो किछु प्रकाश पड़ि सकत।

महाकवि कालिदास द्वारा यमक अलंकारक सुन्दर संयोजन— शरणागत गाएकेँ खएबाक लेल उद्धत सिंहकेँ मारबाक लेल तूणीरसँ बाण निकालैत हाथ—

ततो मृगेन्द्रस्य मृगेन्द्रगामी वधाय वध्यस्य शरं शरण्य:

(रघु., 2/30)

वा रघुकेँ देखि प्रजा सभकेँ ओहिना आनन्दित होयब जेना नवीन इन्द्रधनुष देखलापर—

नवाभ्युत्थानदर्शिन्यो ननन्दु: सप्रजा: प्रजा:

(रघु., 4/3)

केर शब्द चित्र देखि कुमारदास ततेक आह्लादित भेलाह जे अपन जानकीहरणमे यमक केर विपुल आ सर्वांगपूर्ण प्रयोग कयलनि। यमक केर एहन विलक्षण, विशिष्ट आ वैदुष्यपूर्ण प्रयोगक कारणेँ हिनका यमकराज कही तऽ कोनो अतिशयोक्ति नहि।

ठीक ओहिना जेना महाकवि कालिदास उपमाक महाराज छथि। पदादि यमक, पदमध्य यमक, पदान्त यमक, समुद्गयमक, अर्द्ध यमक, आध्यात्मिक, पाद यमक, महा यमक, यमकावलि आदिक एहन रस प्रवाह भेल जे सभकेँ चकबिदोर लागि गेल। यमक केर विभिन्न रूपमे महाकवि कुमारदासक कोमल मोन सर्वाधिक रमल अछि पदान्त यमकमे। एक उदाहरण देखल जाए—

नक्तं नक्राधिवासं कुसुमशरशतत्रासितानां सितानां
क्रीडायामङ्गनानां घनकुचकलशैः कातरं तं तरन्तम्।
उत्थाप्यैवं ततस्ते सततरतिसुख व्यासकामं सकामं
तूष्णीमासन सशङ्खध्वनिपटहरवज्या निशान्ते निशान्ते।।

कामदेवक बाणसँ पीड़ित सुन्दरी सभक संग सतत् सम्भोगविलासमे रत आ हुनका सभक पैघ-पैघ कुचकलश केर सहायतासँ भरि राति समुद्रमे हेलैत आ निरन्तर रतिमे लिप्त कामासक्ति कारणेँ कातर भेल रावणकेँ जगओलाक बादे ओ मागध सब चुप भेलाह। अन्य किछु उदाहरण प्रस्तुत अछि—

महायमक—

चक्रे रणं वानर-का-न्तकारी, चक्रे रण-न्वा-नर-कान्त-कारी।
चक्रे रण वा-नरका-न्तकारी, चक्रे, रणन्वानर-कान्त-कारी।।

(जानकीहरण, 18/68)

यमकावलि—

महता महता समरे समरे विभया विभया सहिता सहिता।
विशदा विशदा शुभया शुभया जनता जनता न हिता नहिता।।

(जानकीहरण, 18/71)

समुद्गयमक—

अभिरामाशुगासन्ना सा सेना विभया सती।
अभिरामाशुगासन्ना सा सेना विभया सती।।

(जानकीहरण, 18/16)

शब्दालंकारमे अनुप्रास आ चित्रालंकारक प्रभूत प्रयोग भेल अछि मुदा श्लेष केर बहुत कम। अर्थालंकारमे उपमा आ उत्प्रेक्षाक भेद-प्रभेदपर पूर्ण परिश्रम भेल अछि। एकसँ बढ़िकेँ एक उदाहरण अछि। महाकवि कालिदास विषयक उक्ति 'उपमा कालिदासस्य'सँ प्रभावित महाकवि कुमारदास हुनक अनुसरण करैत एक मूर्त्तसँ दोसर मूर्त्त पदार्थक विलक्षण उपमा अवश्य दैत छथि तथापि महाकवि कालिदास जकाँ—

सञ्चारिणी दीपशिखेव रात्रौ यं यं व्यतीयाय पतिंवरा सा।
नरेन्द्रमार्गाट्ट इव प्रपेदे विवर्णभावं स स भूमिपाल:।।

(रघुवंशम्, 6/67)

सन अनुपम उपमाक बाद जीवित 'दीपशिखा' रूपमे पण्डित सभक मध्य सुशोभित नहि होइत छथि। विभिन्न अलंकार सभक सूक्ष्मातिसूक्ष्म विवेचन आ उदाहरणसँ महाकवि कुमारदासक समय निर्धारित करबाक प्रयास सेहो भेल। भामह, दण्डी आ उद्भटक बादे अलंकार सम्प्रदाय स्थिर भेल। कुमारदासक काव्यमे अलंकारक प्राचुर्य, सूक्ष्मातिसूक्ष्म वर्णन आ सटीक उदाहरण सभक बाढ़ि देखि विशेष रूपसँ 18म सर्गमे शब्दालंकारक प्रति विशेष मोह देखि कुमारदासक समय अलंकारक स्वरूप स्थिर भेलाक बाद सातम-आठम शताब्दी माननिहार विद्वान् (एस एन दासगुप्ता : History of Sanskrit Literature, Classical Period, vol 1, पृष्ठ 185) ई छोट बात किएक बिसरि जाइत छथि जे पहिने सृजन होइत छैक आ काव्यशास्त्रीय निकष केर निर्माण ओकर बादे होइत छैक। आदिकविक मुहसँ नि:सृत आदिकाव्य—

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगम: शाश्वती: समा:
यत्क्रौञ्च मिथुनादेकम् अवधी: काममोहितम्

की छन्दशास्त्रक अध्ययन कएलाक बाद लिखल गेल छल? भाव केर सान्द्रता जखन अन्तसकेँ मथि दैत छैक तखन ओ उद्गार कोनो काव्यशास्त्रीय निकष केर अनुसरण नहि करैत अछि। कामपीड़ित क्रौञ्च पक्षीयुगलमेसँ एककेँ ब्याधा हाथेँ मुइलाक बाद दर्दक घनीभूत अनुभूतिसँ व्यथित आदिकवि द्वारा अनन्त काल धरि

ब्याधाकेँ अशान्त रहबाक शाप केर भावस्वरक आधारपर अनुष्टुप् छन्द केर निकष निर्मित भेल छल। मात्र काव्यशास्त्र पढ़ि वा ओकर अनुसरण करैत कोइ कालजयी कवि नहि भऽ सकैछ भले ओ महापण्डित वा प्रातिभ भऽ जाथि। काव्य शास्त्र मर्मज्ञ मम्मट महाकवि कालिदासक काव्यमे अविमृष्टविधेयांश दोष (विधेय रूप पदकेँ समासादिसँ आबद्ध होएबाक कारणेँ प्रधान नहि होयब), अमतपरार्थत्व दोष (प्राकृतिक रस विरुद्ध रस केर स्थापना), कारकप्रक्रम भंग दोष (अर्थ प्रतीतिमे व्यवधान दैत अन्य शब्दक उपस्थितिसँ पदक्रम भंग होयब), अमंगल व्यंजकता वा अश्लीलता प्रभृति काव्य दोष सभक चर्च कऽ स्वयं कात लागि गेलाह आ महाकविक निर्दोष काव्य अपन आनन्दक पीयूष रस वर्षासँ सहस्राधिक वर्षसँ सभक कण्ठहार बनल अछि। कवि आ काव्यशास्त्रीय विद्वान् सभक बीच केर एहि पार्थक्यपर ध्यान देबाक चाही। कोनो विशिष्ट काव्य रचनाक बादे काव्यशास्त्रीय निकष स्थिर होइछ। परवर्ती कवि एकर अनुसरण करैत छथि। फेर कोनो कवि नव प्रतिमान गढ़ैत छथि आ तदनुसार फेर ओहि प्रतिमान केर अनुसरण होइत अछि। विकासक क्रम एहिना आगू बढ़ैत छैक। उपमा अलंकारक 'दीपशिखा' महाकवि कालिदास कोन अलंकार शास्त्र पढ़ने छलाह? सूर-तुलसी ब्रजी-अवधीक कोन काव्यशास्त्र देखने छलाह? महाकवि विद्यापतिक समक्ष मैथिलीक कोन अलंकार शास्त्र छल? अलंकारशास्त्रीय अध्येता जँ एहि निकषपर पुरा कवि सभक समय निर्धारित करताह तखन कालिदास सहित संस्कृतक समस्त पुराकवि सातम-आठम शताब्दीक बादे अवतीर्ण मानल जएताह जे कोनो विवेकशील मनुष्यकेँ कथमपि स्वीकार्य नहि होयत।

ई सत्य जे दुनू महाकवि एकहि गुरुकुलसँ दीक्षित छथि। एकहि कथासूत्र पकड़ि दुनू महाकवि रघुवंश आ जानकीहरण केर विस्तार देने छथि। दुनू महाकविक अपन-अपन उपलब्धि अछि। ई तथ्यात्मक अछि जे सहज मानवीय संवेदना आ गुण, पात्रानुकूल चारित्रिक औदात्य, नैसर्गिक भावक आत्मसातीकरण प्रभृति चित्रणमे कुमारदास महाकवि कालिदासक सगरमाथाक स्पर्श नहि करैत छथि मुदा विलक्षण चमत्कार सृजनमे कुमारदास बेस आगू छथि। पूर्वमे कहल जा चुकल अछि जे कुमारदास राजकीय परिवारक छलाह। ओ अपन बाप आ पित्ती मध्य भयंकर संघर्ष, राजनीति केर विद्रूपता आ केलि केर उत्कट नग्न रूप आ षड्यंत्र देखने छलाह जे ठाम-ठाम हिनक वर्णनमे अभरल अछि। रावण केर केलि वर्णन किछु एहने भावभित्तिपर अछि। मुदा एहि सभक बादो कुमारदासक भाववर्णनकेँ हीन कहब अन्याय होयत। एक वर्णन देखल जाय—

प्रियस्य बाणव्रणरन्ध्ररोधिनं महीरजस्संचयमश्रुवर्षिणी।
प्रिया परासोरपि खेदशङ्कया सकम्पहस्ता शनकैरपाहरत्।।

(जानकीहरण, 19/36)

निष्प्राण रावणक शरीरमे धँसल बाण सभक छिद्रपर पड़ल सिकता कण सभकेँ रानी मन्दोदरी अपन कँपैत हाथसँ ई सोचि हटबऽ लगलीह जे एहिसँ स्वामीक कष्ट किछु कम होयत। सान्द्र भावक एहि उच्चताक स्पर्श कालिदास, कुमारदास, भवभूति, तुलसी प्रभृति कविए कऽ सकैत छथि। एहन विलक्षण साहित्यिक सौन्दर्यक मर्मन्तुद चित्र सभसँ भरल अछि जानकीहरण! तेँ मात्र चमत्कारक आश्रय लेबाक कारणेँ महाकवि कुमारदासकेँ कमतर कहब उचित नहि। चमत्कार सृजनमे कृत्रिमता आएब सहज अछि मुदा महाकवि कुमारदासक भाव केर नीलवाली गंगा जखन अपन प्रबल वेगमे बढ़ैत अछि तखन सभ कृत्रिमता ओहिमे बहि जाइत अछि।

महाकवि कालिदास आ महाकवि कुमारदास अनन्त पथ केर सहयात्री छलाह। कुमार धातुसेना जखन सिंहल नरेश भेलाह तखन ओ अपन मित्र महाकवि कालिदासकेँ स्मरण कयलनि। गुरुकुलमे कतेक बेर अधिक उम्र आ विपन्नता कारणेँ भेल उपहासमे ओ कालिदासक लेल ढाल बनल छलाह। दुनू मध्य काव्यक स्नेहसूत्र सेहो छल। कालिदास कुमारदासक जानकीहरण केर शोधन कयने छलाह।

महाकवि कालिदास मित्र कुमारदासक सन्देश पाबि सिंहल देशक यात्रा कयलनि। वर्तमान माटरा शहरमे इतिहास प्रसिद्ध महाकवि कालिदास आ कुमारदासक संग-संग महाप्रयाण प्रसंग घटित भेल। एकर मूलमे राजनर्तकी द्वारा कहल समस्या आ कालिदास द्वारा एकर समाधान संबंधी श्लोक अछि—

कमल: कमलोत्पत्ति श्रूयते न तु दृश्यते
बाले! तव मुखाम्भोजे कथमिन्दीवरद्वयम्।

दस सहस्र स्वर्णमुद्राक लोभमे नर्तकी द्वारा कालिदासकेँ विषपान करा मारि देल गेल। भेद खुजलापर नर्तकीक घरसँ लहास आनि कालिदासक राजकीय चिता सजाओल गेल। साज-सज्जासँ युक्त कृत्रिम संरचनासँ परिसर निर्माण भेल आ कालिदासक एहि भव्य राजकीय चितामे आत्मग्लानि एवं विषादक सान्द्रतासँ व्यथित कुमारदास अपन मित्रताक मोल चुका देलनि। फेर बादमे हुनक पाँच रानी

सेहो धधकैत चितामे प्रवेश कयलनि। एहि स्थलपर सात टा बोधिवृक्ष लगाओल गेल छल जाहिमेसँ किछु अखनो माटरामे जीवित अछि। एकरा हतबोधि कहल जाइत अछि। एहि स्थलपर भगवान् बुद्धक पूजास्थल बनल अछि। श्रीलंकाक माटरा शहरमे हतबोधिवृक्ष, समाधिस्थल आ नीलवाला बाइपासक दक्षिण कातसँ बहराइत सी ए अरियातिलक मवाथा सड़क केर सोझाँ चौरस्तापर नीलवाला बाइपासक उत्तरी लेनसँ निकलि रहुला रोडमे मिलैत 0.48 किमी केर कालिदास मार्ग, श्रीलंकामे कुमारदास-कालिदास विषयक प्रचलित अनुश्रुति, पूजावली, राजावलीय एवं अन्य अनेक प्राचीन ग्रंथ महाकवि कालिदास आ महाकवि कुमारदासकेँ अनन्त पथ केर सहयात्री प्रमाणित करैत अछि।

श्रीलंकाक महातीर्थ माटरा : दू महाकविक महाप्रयाण स्थल

श्रीलंकाक दक्षिणी क्षेत्रक भाग रोहुणा क्षेत्र अछि। प्राचीन कालसँ श्रीलंकाक इतिहासमे एकर महत्त्वपूर्ण स्थान रहल अछि। भारतीय सम्राट् अशोकक समकालीन आ राजा मुताशिव केर पुत्र सिंहल नरेश देवानांपिय तिस्स केर भ्राता महानाग ईसापूर्व 200 ई.मे रोहुणा राजवंश केर स्थापना कएने छलाह। एकर कारण एक षड्यंत्र छल। मुताशिव केर 9 संतानमे देवानांपिय तिस्स जेठ छलाह तेँ गद्दी भेटलनि। परम्पराया हुनकर अनुज महानागक बादे हिनक पुत्रकेँ राजगद्दी भेटबाक बात छल तेँ रानी अनुला (राजा चोरनागक रानी आ राजा चोरनाग, राजा तिस्स, द्वारपाल शिव, नगर बढ़ई बटुक, तिस्स लकड़हारा, निलिय ब्राह्मण सहित 6 प्रेमी/पतिक हत्यारिन श्रीलंकाक प्रथम स्वतंत्र रानी अनुला, जिनकर मृत्यु ईसापूर्व 42 ई.मे भेल छल, सँ इतर) अपन पुत्रकेँ राजा बनएबाक लेल दिओर महानागकेँ मारबाक फिराकमे छलीह जखन कि पुत्र अपन पित्तीसँ अत्यधिक स्नेह करैत छल आ बेसी काल हुनके संग रहैत छल। एक दिन दुनू राजमहलसँ किछु दूरीपर कोनो निर्माण कार्य करा रहल छलाह तखन रानी षड्यंत्र रचि माहुर मिश्रित पाकल आम पठओलनि। महानाग स्नेहसँ सभ आम भातिजक आगू राखि देलनि। ऊपर राखल आममे माहुर देल गेल छल। अनजान राजकुमार ऊपर राखल आम खएलनि आ मरि गेलाह। भयातुर महानाग गर्भवती पत्नी आ विश्वस्त सभक संग चुपचाप राजमहल छोड़ि दक्षिण दिशि विदा भऽ गेलाह। मार्गमे यतला गाममे पत्नीकेँ प्रसवपीड़ा भेल आ ओतहि एक मन्दिरमे पुत्रक जन्म भेल। महानाग एहि गामक नामपर पुत्रक नाम यतला तिस्स राखलनि। महानाग रोहुणा क्षेत्रमे राज्य स्थापना कऽ प्रथम राजा भेलाह। अग्रज देवानांपिय तिस्ससँ पूर्ववत् स्नेह रहल। हिनक बाद पुत्र यतला तिस्स आ हुनकर बाद गोठाभय 205 ईसापूर्व तक राज कयलनि। हिनक बाद पुत्र केवन तिस्स ईसापूर्व 205सँ 161 ई. तक राज कयलनि। सामान्यतया रोहुणा राजवंशक

सद्भाव अनुराधापुरसँ बनल रहल आ कोनो प्रतिस्पर्धात्मक स्थिति कहियो नहि आएल। मात्र केवन तिस्स केर यशस्वी पुत्र दुतुगामुनु (गामिनी अभय) ईसापूर्व 161 ई.मे अनुराधापुरपर बलात् कब्जा कयनिहार तमिल राजा इलारासँ अनुराधापुरकेँ मुक्त करा ओहिपर राज कयलनि।

रोहुणा क्षेत्र श्रीलंकाक दक्षिणी प्रान्त, इवा प्रान्त आ सावरगमुवा एवं पूर्वी प्रान्तक किछु-किछु भाग मिलाकेँ बनल छल। राजधानी रूपमे मागमा, तिस्स महारामा, मोनारगला, गैले, माटरा, सितावका, कतरगामा आदिक उपयोग होइत छल। माटराक प्राचीन नाम महातीर्थ, मपातुना, महाथोटा, महातारा, नीलवालातीर्थ सेहो भेटैत अछि। राजा पराक्रमबाहु षष्ठ द्वारा संघराज पदसँ अलंकृत प्रथम बौद्ध भिक्षु महान् विद्वान् आ अनेक पुस्तक केर रचयिता जीवित किम्वदन्ती पुरुष षड्भाषा परमेश्वर थोटागमुवे श्रीराहुल थेरा (15म शताब्दी, देहत्याग 1491 ई.) अपन पोथी पारावी सन्देश्य (1445 ई.)मे राजा वीराबमापनम् द्वारा माटराकेँ अपन राजधानी बना एकरा मपातुना नाम देबाक चर्च करैत छथि। जीवन केर अंतिम किछु वर्ष श्रीराहुल थेरा माटराक डिकवेलामे वास कएने छलाह फेर ओ अम्बाना केर इन्दुरगिरि कन्दरामे जीवन केर अन्त तक रहलाह।[1]

रोहुणा अपन अर्थ— ऊपर चढ़बाक क्रिया वा सीढ़ीकेँ साकार करैत रहल। ई विस्थापित राजा सभक आश्रय स्थल रहल जतएसँ फेर अनुराधापुरक सीढ़ी चढ़ल गेल। महाथोटा तमिल शब्द महा इथेरा शब्दसँ निष्पन्न अछि जेकर अर्थ पैघ बन्दरगाही क्षेत्र जतऽ पानि कम गहीँर हो, होइत अछि। महाथोटाक एक अर्थ दीर्घकाय नौका सेहो होइत अछि। महातीर्थक सभटा अर्थ वा अभिप्राय प्राय: बन्दरगाहेसँ अछि। नीलवालातीर्थसँ सेहो सामुद्रिक अभिप्राये अछि। ई ऐतिहासिक तथ्य अछि जे नीलवाली गंगा नदी माटरा शहर केर बीचो-बीच बहैत अछि आ एहि नदीसँ (माटरासँ) मात्र दू किलोमीटर दूर पोलहेना समुद्रतटमे कौआ द्वीप (Crow Island) लऽग हिन्द महासागरमे उतरबाक मार्ग अछि। एहि मार्गक कारणेँ माटराक ऐतिहासिक महत्त्व अनादि कालसँ रहल अछि। मोती आ हाथीक लेल माटरा प्राचीन कालसँ प्रसिद्ध रहल अछि। मेगास्थनीज विशाल गाछसँ निर्मित विशेष नौका द्वारा श्रीलंकाक बेस शक्तिशाली आ हृष्ट-पुष्ट हाथी कलिंग राजक माध्यमसँ भारत पठएबाक उल्लेख करैत छथि।[2]

अखनो माटराक हाथी अभयारण्य विश्व विश्रुत अछि। हाथी सभक प्रजनन, ओकर पालन-पोषण, प्रशिक्षण केर व्यवस्था आ हाथी सभक अस्पताल लेल

माटराक हाथी केन्द्र दर्शनीय आ प्रसिद्ध अछि। माटराक प्राचीन गजपताकामे एक हाथी आ चारिटा कमल सुशोभित अछि। राजकीय समारोहमे अखनो श्रीलंकाक राष्ट्रीय ध्वज संग माटराक प्राचीन गजपताका एतऽ केर प्राचीन इतिहासक प्रति सम्मान प्रदर्शन हेतु फहराओल जाइत अछि। माटराक प्राचीनता आ ऐतिहासिकता एहिसँ प्रमाणित होइछ।

सम्प्रति गैले, माटरा आ हम्बनटोटा जिला एहि रोहुणा क्षेत्रक भाग अछि। माटरासँ अनुराधापुरक दूरी 160 किमी आ हम्बनटोटाक दूरी 67 किमी अछि। अनुराधापुर राज्य च्युत् भेलापर प्राय: राजपरिवार एहि रोहुणा क्षेत्रमे माटरा, गैले वा हम्बनटोटामे शरण लैत छल आ अपने बलपर वा भारतसँ सहायता लऽ प्रतिरोध करैत छल तँ बादमे रोहुणा क्षेत्र आक्रमणकारी राजा सभक विरुद्ध प्रतिरोधक आधारभूमि रूपमे चर्चित रहल।

महाकवि कालिदास आ महाकवि कुमारदासमे सख्य भाव छल। राजा भेलाक बाद कुमारदास कालिदासकेँ अपन देश श्रीलंका बजओलनि। तखन कुमारदासक आवास माटरामे छल। महाकवि सन्ध्याकाल माटरा पहुँचल छलाह। भोरमे दरबारमे राजासँ भेंट करबाक नेयार करैत ओ एहि रात्रिक आश्रयक लेल एक घरक द्वार खटखटओलनि। द्वार खोलैत सुन्दरीक जिज्ञासापर अपन परिचय दैत रात्रि-विश्रामक सुविधाक याचना कयलनि। सुन्दरी एक दृष्टि हिनकापर देलक-पाकल उम्रक बादो गौरांग आकर्षक देहयष्टि, अमात्योचित रेशमी राजसी परिधान, उन्नत ललाट, सुन्दर केश विन्यास...! सम्पूर्ण देहसँ जेना अभिजात्यक आभा प्रस्फुटित भऽ रहल हो। किछु बातचीतसँ ओ अकानि लेलक जे ई निश्चित कोनो राजपुरुष छथि आ आब हिनकर उचित स्वागत-सत्कार करए पड़त। समयाभाव केर चर्च करैत ओ सुन्दरी असमर्थता दर्शा दोसर द्वार देखबाक संकेत कयलनि। महाकवि असमर्थताक उदेश कयल। ओ स्त्री कहलनि जे काल्हि राजसभामे एक समस्याक सभसँ सुन्दर समस्यापूर्त्तिपर दस सहस्त्र स्वर्णमुद्राक पुरस्कार अछि। एहि समस्यापर सोचबाक लेल हमरा एकान्त समय चाही तँ हम आइ सेवा करबामे असमर्थ छी। महाकवि फेर समस्याक जिज्ञासा कयलनि। सुन्दरी समस्या कहलनि—

कमल: कमलोत्पत्ति: श्रुयते न तु दृश्यते।

अर्थात् कमलसँ कमल केर उत्पत्ति सुनल जाइत अछि मुदा देखल नहि जाइत अछि। कालिदासक मुहसँ हठात् बहरा गेल—

बाले! तव मुखाम्भोजे कथमिन्दीवर द्वयम्।

अर्थात् हे स्त्री! तखन अहाँक मुखकमलसँ दू नयन-कमल कोना बहरा रहल अछि। विलक्षण पद केर रमणीयतापर ओ रमणी मुग्ध भेलीह आ द्वारसँ सम्मानपूर्वक हटैत महाकविकेँ अन्दर लऽ गेलीह। फेर ई सोचि जे पारितोषिक यैह लऽ लेताह, ओ भोजनोपरान्त दूधमे माहुर मिला महाकविक मृत्युक कारण बनलीह आ घरेमे तरहरा खुनि मृत कालिदासकेँ गाड़ि देलनि। भोरमे राजदरबारमे समस्यापूर्त्ति शुरू भेल आ एक स्त्री द्वारा प्रयुक्त 'बाले' शब्द सभटा भेद खोलि देलक।

सख्तीसँ पूछताछमे नर्तकी सत्यकथा कहि देलक। महाकविक लहास आनल गेल आ सर्वोच्च राजकीय सम्मानसँ हुनक चिता सजाओल गेल। मित्रसँ विछोहक महादुख, अपन देशमे आएल मित्रक रक्षा नहि कऽ सकबाक संताप आ अपने देल वचन भंगक दंशसँ विचलित राजा कुमारदास पुत्र कीत्तिसेनाकेँ राजमुकुट पहिरा महाकवि कालिदासक राजकीय चितामे प्रवेश करैत मित्रताक मोल चुका देलनि। फेर एहि चितामे कुमारदासक पाँच रानी सभक प्रवेश भेल। एहि स्थलपर सात बोधिवृक्ष लगाओल गेल छल जेकरा अखनो हतबोधि कहल जाइत अछि। 1783 ई.मे एक डच जेनरल एहि वृक्ष सभकेँ काटि अन्य निर्माण कार्यमे लगएबाक फेरमे छलाह। विरोध भेल। अंग्रेज सभक एहन प्रयासक सेहो विरोध भेल। डच आ अंग्रेज सभक उकठसँ परेशान स्थानीय लोक सभ संगठित भेल आ महाबोधिक रक्षा निमित्त प्रतिकार शुरू भेल। 1961 ई.मे माटरा बोधियमे सर्वश्री के टी सोमपाल, सी ए धर्मसेना आ आर पी पेलिस एतऽ एक स्तूप केर निर्माण करओलनि। बोधि आरक्षक सभा केर निर्माण सेहो भेल जेकर सदस्य छथि— सर्वश्री बी आर्यारत्ने, बी ए साइमन अप्पूहामी, के पी करानेलिस आदि। माटरामे बोधि आरक्षक सवावा बनल जेकर पता अछि—

322, जया निवास, कुमाराथुंगा, एम डब्ल्यू माटरा, श्रीलंका -81000 फोन-0462237008

(Matara Bo Trees Showered with Blessings, Hiru News, 7 मार्च 2012, www.hirunews.lk)

दू महाकविक महाप्रयाणक ई प्रसंग प्राय: सब विद्वान् यत्किंचित् परिवर्तन संग मानैत छथि। एच. विद्याभूषण[3] एहि घटनाक समर्थन करैत छथि मुदा समस्यामूलक पदमे फर्क करैत छथि—

पद्मादापद्मनोद्भूतम् श्रुयते न तु दृश्यते।...

रिया डेविड्स[4] मानैत छथि जे कालिदास कुमारदासक आमंत्रणपर श्रीलंका गेल छलाह। ओ कुमारदासकेँ 522 ई.मे श्रीलंकाक राजा रूपमे मानैत छथि। महाप्रयाण विषयक प्रसंगकेँ सत्य कहैत छथि मात्र पदमे अन्तर मानैत छथि—

वना तम्बारा माला नो तला रोनाता वाणी।
नला देदेरा पना गलवा गिया सेवाणी।।

कालिदास द्वारा समस्यापूर्त्ति—

सियात अम्बारा सिय तम्बारा सिय सेवेणी।
सिय सा पुरा निधि नो लवा नो सेवेणी।।

डेविड्स महोदय दुनू पद केर अंग्रेजी अनुवाद देने छथि—
The forest bee got into the honey without hurting the flower but (being caught in the flower as it closed) he got away with his life to the cool shades of the jungle only when (in the morning) the lily unfolds its petals.[5]

....

The rotation of the sun (the king of the solar race) seeking the society of the lotus eyed (beauty) enjoyed indeed her company, but sleepless was caught in her toils.[6]

राजा कुमारदास द्वारा वेश्याक घरक देवालपर समस्याक अंकन आ कालिदास द्वारा एकर पूर्त्तिक कथामे किंचित् पार्थक्य अछि मुदा वेश्या द्वारा कालिदास विषयक कथा नुकायब, राजाकेँ सन्देह होयब, सत्यापन आ कालिदासक राजकीय चितामे कुमारदास द्वारा मित्रताक मोल चुकबैत प्रवेश आदि वर्णन समाने अछि।[7]

विलियम नायटन सेहो एहि प्रसंग केर समर्थन करैत छथि मात्र दोसर पद केर उल्लेख करैत छथि।[8]

प्रश्न—

सियातम्बेरा सियातम्बेरा सियासेवाणी।
सियास्पूरा निदिनोलावा अनसेवाणी।।

उत्तर—

वणेवम्बारा मालानोताला रोणातावाणी।
महादेदारा पानागलावा गियासावाणी।।

आगू नायटन महोदय द्वारा कएल गेल अंग्रेजी भावानुवाद देल गेल अछि—

By beauty's grasp, in turmoil uncomposed
He's kept a prisoner with eye unclosed.
But if all night the manel (the water lily) keeps the bee
The moon beholds him gay unhurt and free.
(Anecdotes about Kumardas, p 7, http://shodhganga.inflibnet.ac.in)

किछु एहने कथा जेम्स द आल्विस सेहो कहैत छथि। जेम्स सेहो पदमे फर्क करैत छथि। ओ एहिपर सन्देह करैत छथि जे अनुराधापुरकेँ राजधानी रहैत ई प्रसंग माटरामे कोना घटित भेल।[9] गेगर महोदय एहि घटनाकेँ माटरामे घटित कहैत छथि।[10]

श्रीलंकाक इतिहास एहि तथ्यकेँ परिपुष्ट करैत अछि जे राजा धातुसेनाक एक पुत्र कश्शप अनुराधापुरपर आक्रमण कऽ बापकेँ राजच्युत् कएने छल आ अनुराधापुरसँ लगभग 78 किमी दूर सिगिरियामे भव्य आ दुर्गम पाषाण सिंहकिला बना अपन सुरक्षाक अभेद्य उपाय कएने छल। राजा धातुसेनाक दोसर पुत्र मोग्गलान राजधानी अनुराधापुरसँ लगभग 331 किमी आ कश्यप केर बेलगामा-माटरा मार्गपर नवनिर्मित राजधानी सिगिरयासँ लगभग 302 किमी दूर रोहुणा क्षेत्र माटरा आ भारतवर्षमे कहुना दिन काटैत छलाह। हुनक पुत्र कुमारदास एहने विपरीत आ विपन्नावस्थामे जवान भऽ रहल छलाह। संकट केर एहन विकट समयमे रोहुणा क्षेत्रक माटरा हिनका सभकेँ आश्रय देने छल। एहि कृतज्ञ भावक कारणेँ ई पूर्ण तथ्यात्मक आ संभव लगैछ जे राजा बनलाक बादो एहि क्षेत्रक प्रति नेनपन केर नैसर्गिक अनुराग कम नहि भेल हो आ कुमारदास अतिरिक्त राजधानी रूपमे एतहि अपन आवास रखने होथि।

माटरा जिला सचिवालय अन्तर्गत पनकदुवा (मोरावक कैरोल ग्राम)सँ 1948 ई.मे किसान सुरविराजे कैरोलिस अप्पोहामीकेँ खेतमे काज करैत काल भेटल राजा विजयबाहु प्रथम (1055-1110 ई.)केर शासनकालक 27म वर्ष अर्थात् 1082 ई.मे निर्गत पनकदुवा ताम्रपत्र वा पनकदुवा ताम्रपत्र सन्ना (सम्प्रति कोलम्बो संग्रहालयमे सुरक्षित) किछु एहने परिस्थितिक उल्लेख करैत अछि। एहिमे कहल

गेल अछि— जखन हम सब चोल-तमिल सभक अत्याचारसँ पीड़ित आ अपन राजधानीसँ निष्कासित जंगल-पहाड़मे नुकाइत कहुना अपन समय गुदश्त करैत रही तखन एहन विकट समयमे सितनारुबिम वासी आ रोहुणाक सुच्चा सिपाही वीरवर सरदार बुदल हमर पिता मुगालन आ राजपरिवारकेँ बहुत सहायता आ रक्षा कयलनि। हुनके सहयोगसँ हमर लालन-पालन संभव भेल। एहन महान् उपकारी आ वीरश्रेष्ठ बुदल आ हुनक सन्ततिकेँ सभ प्रकारक दण्डसँ मुक्त कएल जाइत अछि। बुदल आ हुनक पुत्र-पौत्रादिकेँ अपराध कयलाक बादो मात्र कहि देलापर कोनो जुर्माना नहि करबाक अछि। अक्षम्य अपराधक स्थितिमे सेहो तीन बेर क्षमा करबाक अछि आ कोनो जमीन वा परिसम्पत्ति जब्त नहि करबाक अछि।[11]

ई सत्य जे जेहन विकट परिस्थिति एहि मुगालनकेँ देखऽ पड़ल छल किछु ओहने परिस्थितिक सामना कुमारदासक पिता मोग्गलानकेँ सेहो करऽ पड़ल छल। मुदा दुनू दू अलग शताब्दीक घटना अछि। एतऽ इहो तथ्यात्मक आ उल्लेखनीय तथ्य अछि जे चोल आक्रमणक समय विजयबाहु रोहुणाक कतरगामा (स्कन्द मंदिर हेतु प्रख्यात)केँ अपन राजधानी बनओने छलाह।

सामुद्रिक व्यापारकेँ लुटेरा सभसँ सुरक्षित राखबाक जनाकांक्षापर मोग्गलान अपन पुत्र कुमार धातुसेना (कुमारदास)केँ समुद्रपर नजरि राखबाक आ सामुद्रिक व्यापारक सुरक्षा निमित्त नियुक्त कयने छलाह।[12]

प्राचीन समय केर महातीर्थ श्रीलंकाक उत्तरी प्रान्तक मान्टोटा छी वा दक्षिणी प्रान्तक माटरा एहिपर मतभिन्नता भऽ सकैत अछि आ स्वभाविक रूपसँ अछियो मुदा रोहुणा क्षेत्रक प्राचीनतापर कोनो मतभिन्नता नहि अछि अपितु पूर्ण मतैक्य अछि। विभिन्न समय भेल उत्खननमे प्राप्त सामग्री एहि तथ्यकेँ परिपुष्ट करैत अछि। बॉन विश्व विद्यालय, जर्मनीक प्रो. हेलमट रॉथ आ श्रीलंकाक अभिलेखागार निदेशक डॉ. डब्ल्यू. एच. विजयपालक नेतृत्वमे जर्मनी आ श्रीलंकाक पराविद् सभक रोहुणा क्षेत्रक गोदावाया राजामहाविहारक मन्दिरक समीप उत्खननमे प्राप्त सामग्री सभसँ स्पष्ट होइछ जे प्रशासनिक काज सेहो एहि मन्दिरसँ होइत छल। प्राप्त एक शिलालेखमे कहल गेल अछि जे राजा गमनी अभय (गजबाहु प्रथम) गोदापव्वत बन्दरगाहक सीमा शुल्क एतऽ केर मन्दिरकेँ देबाक व्यवस्था कएने छलाह। दोसर शिलालेखमे उल्लेख अछि जे अहल्या बातिकमिथाया (राजा गमनी अभय अपर नाम गजबाहु प्रथम केर महारानी) तीन करिष्का (लगभग 22 एकड़)

भूमि गोदापव्वत विहार (मन्दिर)केँ दान कयलनि संगहि तीन करिष्का (22 एकड़) जवाहकविताक धनखेत स्तूपकेँ दान कयलनि। उत्खननमे पानि केर भीतर पाषाण स्तम्भ आ तीन लंगर (anchor) सेहो भेटल छल। कठोर ग्रेनाइट पाथरसँ निर्मित सुदृढ़ लंगरक बीचमे रस्सी फँसएबाक लेल छिद्र छल। पैघ जहाजक भग्नावशेष सहित आनो बहुत रास सामग्री समुद्रक 30 मीटर गहराईसँ टीम प्राप्त कएने छल।[13]

माटरासँ गोदावाया 79 किमी दूरीपर अछि। माटराक महातीर्थ नाम अति दीर्घ पत्तन केर सूचक अछि। एतऽसँ सामुद्रिक आवागमन, वस्तुजातक अदला-बदली आ विपणन केर प्रमाण भेटल अछि। पराक्रमबाहु षष्ठ केर 1433 ई.मे निर्गत आ माटराक नैम्मणाइ गामसँ प्राप्त शिलालेख सेहो माटराक प्राचीनता प्रमाणित करैत अछि।[14]

एहि महत्त्वपूर्ण शिलालेख केर अनुवादसँ स्पष्ट होइत अछि जे माटराक नैम्मणाइ ग्रामदान आ सुंगानकोला, पगाला करामुल्लइ आ वेरदुवाइक खेत एवं बाग-बगीचा श्रीलंकाक सम्प्रभु स्वामी पराक्रमबाहु षष्ठ देवीनुवारा मन्दिरकेँ गरीब दीनहीनक कल्याण निमित्त दान कयने छलाह। इहो स्पष्ट होइत अछि जे एहि देवीनुवारा मन्दिरक भिक्षाकक्षमे प्रतिदिन आयोजित दरिद्र, ब्राह्मण एवं अन्य केर भोजनादि व्यवस्थामे राजा स्वयं वा अन्य उच्च पदाधिकारीक माध्यमसँ उपस्थित रहैत छलाह। एहि शिलालेख केर अनुवाद ए वेलुपिल्लइ कएने छथि।[15] उल्लेखनीय अछि जे माटरासँ देवीनुवारा मात्र 8.2 किमी दूर अछि आ स्वयं राजा वा उच्च पदाधिकारीक उपस्थितिसँ माटराक राजकीय स्वरूपक परिचिति अवश्य भेटैत अछि। यद्यपि माटरामे उत्खनन कम भेल अछि तथापि श्रीलंकाक पुरातत्त्व विभाग एतऽ केर 57 स्थलकेँ महत्त्वपूर्ण स्थल घोषित कएने अछि।[16]

एहि सूचीमे सम्मिलित विभिन्न स्थल आ अतिरिक्त महत्त्वपूर्ण स्थान सभमे वेहराहेणामे भगवान् बुद्ध केर 25 मीटर उँच मन्दिर, अग्रबोधि महाविहार सहित अनेक प्राचीन विहार/महाविहार, पारावीदुवा मन्दिर, पोलहेना सहित माटरा आ मेदावत्त समुद्र तट, स्टार फोर्ट (डच द्वारा निर्मित) माटरा फोर्ट (पुर्तगाल द्वारा 1560 ई.मे निर्माण फेर डच द्वारा 1640 ई.मे पुनर्निर्माण), 160 फीट ऊँच डोन्ड्रा प्रकाश स्तम्भ (श्रीलंकाक सभसँ उँच प्रकाश स्तम्भ), हतबोधि वृक्ष आ भगवान् बुद्ध मूर्त्ति, कालिदास-कुमारदास समाधि, कालिदास मार्ग (नीलवाला बाइपासक बाम कात मुख्य सड़कसँ आर्यतिलक मवाथा सड़क केर सामने वला सड़क जे आगू बढ़ैत रहुला सड़कमे मिलैत अछि) प्रभृति स्थल माटराक प्राचीनता आ कुमारदास-

कालिदास विषयक एकहि चितापर महाप्रयाणक प्रसंगकेँ प्रमाणित करबामे पूर्ण सक्षम अछि। ई एकटा महत्त्वपूर्ण तथ्य अछि जे श्रीलंकामे महाबोधि वृक्ष अनेक ठाम- अनुराधापुरक महामेवण बागमे जयश्री महाबोधि, लाल बोधिवृक्ष, वेहेराहेणा मन्दिरक बोधिवृक्ष, पोल्हेणा बोधिवृक्ष, कतरगामा बोधिवृक्ष आदि अछि आ सभकेँ श्रीलंकाक जनमानस अत्यन्त श्रद्धाक दृष्टिसँ देखैत अछि मुदा माटरा छोड़ि आर कोनो महाबोधि वृक्षकेँ हतबोधि वृक्ष (हथबोधि वृक्ष, हत्थबोधि वृक्ष) नहि कहल जाइत अछि। सिंहली भाषामे हत शब्द केर पर्याय संस्कृतक सप्त आ हिन्दीक सात अछि। माटरामे कालिदास, कुमारदास आ हुनकर पाँच रानी अर्थात् कुल सात प्राणीक महाप्रयाण एकहि चितापर भेल छल तेँ सात बोधिवृक्ष लगाओल गेल छल। एहि लेल एकर नामकरण हतबोधि (सात बोधिवृक्ष) भेल होयत। संस्कृतमे हत् शब्द मृत्युक पर्याय अछि। मृत्यु स्थलसँ जुड़ल रहबाक कारणेँ कालान्तरमे एकरा हथबोधि नामकरण भेल हो इहो संभव अछि। श्रीलंकाक माटरा शहरमे कालिदास मार्गक अवस्थिति कालिदास-कुमारदास विषयक प्रसंगक प्रामाणिकताक दिग्दर्शन हेतु यथेष्ट अछि।

www.mataracity.com पर उपलब्ध Gamini G. Punchiheva अपन आलेख The Historic Tales of Matara (The Sunday Observer, 24 मार्च 2002)मे रहुला कॉलेजक शिक्षक आ पूर्व सांसद जस्टिन विजयवर्दिनक उल्लेख करैत कहैत छथि जे छ: हथबोधिवृक्ष अखनो जीवित अछि। दू माटरा पुलिस स्टेशन लऽग, एक गवादा वीडिया कब्रिस्तानक मोड़पर, चारिम वलिबोरिया (होनुकुतुबा) जंक्शनपर, पाँचम मुख्य गलीमे एडमंड समरशेखरक जमीन लऽग आ छठम कुतुवागोड़ा पुरना सड़कपर।

आइ माटरा महाबोधिय (निनिर्देशांक 5°56’ 54” N, 80°32’ 50” E) एक महत्त्वपूर्ण स्थल बनि गेल अछि। भगवान् बुद्धक प्रतिमासँ ई एक प्रमुख तीर्थस्थल रूपमे विकसित भेल अछि। ई वैह स्थल अछि जतऽ महाकवि कालिदास आ कुमारदासक महाप्रयाण एकहि चितापर भेल छल। चितास्थलपर रोपल बोधिवृक्ष एहि प्रसंगक सत्यता कहि रहल अछि। ई पृथक् बात जे एहि पावन स्थलीक गरिमा ध्वस्त करबाक प्रयास डच आ अंग्रेज सभ कएलक मुदा असफल रहल। बौद्ध सभक प्रयाससँ स्थल सुरक्षित रहल। एस डी फ्रांसिस अपन पुस्तक Faith of our Fathers : History of the Dutch reformed Church in Sri Lanka मे माटराक पुरान नाम विषयक कहैत छथि जे डच मंत्री फिलिप्पस बेल्डियस 1673

ई.मे एकरा मेटुरे (Mature) कहलनि, 1681 ई.मे राबर्ट नॉक्स मेटेरा (Matera) कहलनि आ 1744 ई.मे हेट (Heydt) महोदय एकरा मेडेरोन (Mederon) कहलनि। हुनकर मान्यता अछि जे मेटोरा महाटेरा शब्दसँ निष्पन्न अछि।[17]

माटरा तमिल शब्द मटुरेई शब्दसँ निष्पन्न भऽ सकैत अछि जेकर अर्थ पैघ बन्दरगाह होइत अछि।

श्रीलंकाक माटरा श्रीलंकाक मुख्य वाणिज्यिक नगर अछि। श्रीलंकाक प्रशासनिक संरचनामे 9 राज्य आ 25 जिला अछि। जिला सचिव वा District Secretary जिलाक काज देखैत छथि। हुनक अधीन डिविजनल सेक्रेटरी रहैत छथि ओहिसँ नीचाँ ग्राम नीलधारी डिवीजन। माटरा डिस्ट्रिक्ट सेक्रेटरीक अन्तर्गत अकुरेस्सा, अथुरालिया, देवीनुवारा, डिकबेलिया, हकमाना, कम्बूरिप्तीव, किरिण्डा, पहुलवेला, कोटापोला, मालिम्बरा, माटरा, मुलाटीयणा, पसगोड़ा, पेताबेड्डारा, थिहागोड़ा, वेल्लीगामा आ वेलीपितीय नामसँ सोलहटा Divisional Secretary छथि आ हिनका अधीन 650 ग्राम नीलधारी डिवीजन अछि।

माटरा मोती, मशाला आ हाथी लेल प्रसिद्ध अवश्य अछि। ई एक मिथकीय वस्तु गजमुक्ता लेल सेहो प्रसिद्ध अछि। एहि गजमुक्ताकेँ एम्हर गजमुथु कहल जाइत अछि। वन्यजीव विशेषज्ञ ओना एहि बातक खंडन करैत छथि जे कोनो हाथीमे गजमुक्ता बनैत अछि तथापि जनमानसमे प्रचलित अछि जे 60 वर्षक हाथीमे गजमुथु बनैत अछि। लोकक एहि मनोभावक कारणेँ हाथीदाँतक गोल कथित गजमुथु बना तस्कर सब भारी दामपर बेचैत छथि। एहन तस्कर सभक गिरफ्तारी सेहो होइत रहैत अछि आ माटरा एहिमे सभसँ आगू अछि। 4 जनवरी 2021केँ माटरामे 6 गजमुथु संग तस्कर सभ गिरफ्तार भेल छल[18]।

कहबाक अभिप्राय जे रोहुणा क्षेत्र अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहल अछि आ एकर विभिन्न स्थलकेँ विभिन्न राजा अपन राजधानीक गरिमा देने छलाह। माटराकेँ सेहो कुमारदास (कुमार धातुसेना) एहन सम्मान देने छलाह तँ माटरामे ई प्रसंग कोना घटित भेल एहिपर सन्देह करब उचित नहि। ई सत्य जे मनुष्य अतीत केर यात्रा नहि कऽ सकैत अछि। आजुक दिन 1500 वर्षसँ अधिक पाछू प्रत्यक्ष रूपसँ निश्चित नहि देखल जा सकैत अछि। अतीतकेँ देखबाक लेल इतिहास व पुरातत्त्वक आँखि चाही जे एहि घटनाक समर्थन करैत अछि। एहि संबंधमे प्राथमिक, ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक प्रमाण, नागिरीकाण्डा आ अन्य शिलालेखक अकाट्य साक्ष्य, भारतवर्ष-श्रीलंका मध्य सामुद्रिक आवागमन, अनुश्रुति प्रभृति विन्दु सभपर पूर्वमे

प्रकाश देल गेल अछि।

महाकवि कालिदासक जीवन यात्रा भारतवर्षक बेनीपट्टीसँ शुरू भेल। मिथिला, पाटलिपुत्र, मालिनी नदी कात बसल कोटद्वार (कण्व ऋषिक आश्रम, उत्तराखंड), उज्जैन, मालवा, मन्दसौर आदि स्थान सभकेँ अपन अपूर्व आभासँ आलोकित करैत ई अप्रतिम जीवन ज्योति श्रीलंकाक वर्तमान माटरा शहरमे कुमारदासक संग अनन्त ज्योतिमे विलीन भऽ गेल। मिथिलाक बेनीपट्टीसँ श्रीलंकाक माटरा तक केर महाकवि कालिदासक ई अप्रतिम जीवन यात्रा दुनू देशक अनुपम धरोहर थिक।

सन्दर्भ—

1. *WTJS Kaviratne : A great Literary figure shrouded in Mystery, Sri Lanka. The Associated Newspapers of Ceylon Ltd.*

2. *शास्त्री, 1939, 42। Humanities and Social Science Review, CD-ROM. ISSN 2165-6528: 7(02):191-200 (2017) मे श्री J M Sudharmawathei, University of Kelaniya केर आलेखमे उल्लेख।*

3. *एच. विद्याभूषण, JRASB, Vol lxii, part 1, 1893, p 211ff.*

4. *Rhya Davids: Journal of the Deptt. of Letters, University of Calcutta, vol xvi, The Poet Kalidas and Sea Voyage, p1 ff.*

5. *वैह, पृष्ठ 6।*

6. *वैह, पृष्ठ 6-7।*

7. *" "*

8. *William Knighton : History of Ceylon, कोलम्बो, 1845, पृष्ठ 106।*

9. *Alwis : Contributions to a descriptive catalogue of Sanskrit, Pali and Elu works extent in Ceylon, Introduction to Sidat Sangarawe. Published in the Orientalist, vol 2, p 218.*

10. *गेगर : चूलवंश (अनुवाद),vol 2, पृष्ठ 218।*

11. *Chryshane Mendis, Anuradha Piyadasa : Important Inscriptions of Sri Lanka , vol 1, www.archaeology.lk*

12. *Sirima Kiribamune : The Role of the Portcity of Mahatittha (Mantota) in the trade network of the Indian Ocean. (The paper was read at the 12th IAHA Conference, University of Hongkong, Hongkong, June 24-28,1991)।*

13. *Rasika Muthucumarana, Sri Lanka Archaeology, 13 September 2010. Godawaya: an Ancient Port city (2nd Century CE) and the recent discovery of the unknown Wooden Wreck.*

14. *प्रो. शिवसुब्रमण्यम् पद्मनाथन् : Tamil Inscriptions in the Colombo National Museum : Spotia Zeylanica , vol 47, p 39 -52.*

15. *A. Velupillai : Ceylon Tamil Inscriptions (1971), vol 1, Peradeniya, p 66-67।*

16. *Protected Monument List 12.12. 2012।Department of Archaeology, Sri Lanka. Retrievd 22.5.2016।*

17. *S D Fransis- Faith of our Fathers : History of the Dutch reformed Church in Sri Lanka ,1983, Pragna Publisher, Ceylon, p 41।*

18. *TGI News, 4 जनवरी 2021।https://colombogazette.com।*

निष्कर्ष

राजशेखर तीन एहन कालिदासक चर्च करैत छथि जाहिमेसँ किनको कोइ कखनो श्रृंगार आ लालित्यमे जीति नहि सकल— *श्रृंगारे ललितोद्गारे कालिदासत्रयी किमु।* मुदा महाकविक लोकप्रियता आ हुनक रचना सभक सरसता-सूक्ष्मतासँ तीन की 53 कालिदास भऽ जाथि, तखनो कोनो आश्चर्य नहि।

ईसापूर्व केर विक्रमादित्यकालीन कालिदास, गुप्तकालीन कालिदास, यशोधर्मन् आ कुमार धातुसेनाकालीन कालिदास, मातृगुप्त कालिदास, राजा भोजकालीन कालिदास, मूकशंकर शिष्य कोटिजित् कालिदास, धार नरेश मुंज केर समकालीन नवसाहसांकचरित्रकार परिमल कालिदास, नलोदयकार कालिदास, चम्पूभागवतकार नव कालिदास, लम्बोदर प्रहसनकार कालिदास, शंकर दिग्विजयकार माधव कालिदास, पार्श्वाभ्युदयकार जिनसेन कालिदास प्रभृति अनेक कालिदास सोझाँ अबैत छथि। जेना कालिदासक नाम कोनो पारस पाथर हो जेकर स्पर्शसँ केहनो कमजोर कवि कंचन-कंचन भऽ जाइत हो। कालिदास नामक एहन आकर्षण आ प्रभाव सरिपहुँ अद्भुत अछि।

एहिना ज्योतिर्विदाभरण, कुन्तलेश्वरदौत्य, चिद्गगनचन्द्रिका, कालीस्तोत्र, चण्डिकादण्डकस्तोत्र, चर्चास्तव, दुर्घटकाव्य, पुष्पबाणविलास, मकरन्दस्तव, मंगलाष्टक, महापद्यषट्क, रत्नकोष, राक्षसकाव्य, लक्ष्मीस्तव, लघुस्तव, विद्वद्विनोद, वृन्दावनकाव्य, वैद्यमनोरमा, शुद्धिचन्द्रिका, श्रृंगारतिलक, श्रृंगाररसाष्टक, श्रृंगारसारकाव्य, श्यामलादण्डक, श्रुतबोध, सप्तश्लोकिरामायण, सेतुबन्ध प्रभृति काव्य सभक रचयिता रूपमे सेहो कोनो ने कोनो कालिदासक नाम अबैत अछि। आब सभसँ महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठैत अछि जे एहि सभमे मैथिल कालिदास के छथि? प्रश्न ओझरायल अवश्य अछि आ उत्तर स्पष्ट नहि अछि। तथापि मेघदूतम्, रघुवंशम्, विक्रमोर्वशीयम् आदि केर

रचयिता रूपमे प्रसिद्ध कालिदास निर्विवाद रूपसँ मैथिल छलाह जे आजीविका लेल मालवा क्षेत्रक दशपुर-उज्जैनकेँ अपन कर्मक्षेत्र बनओने छलाह। अल्प समयमे सम्पूर्ण उत्तर भारतकेँ अपन अनुपम शौर्यसँ आयत्त कयनिहार सम्राट् यशोधर्मन् विक्रमादित्य केर राजसभाक एहि अनुपम स्यमन्तक मणिप्रभासँ सम्पूर्ण संसार आलोकित भेल। मित्र सिंहल नरेश कुमार धातुसेना वा कुमारदासक आह्वानपर महाकवि श्रीलंका गेल छलाह जतए लोभवश नर्तकी द्वारा माहुर खुआ हिनकर हत्या कएल गेल छल। राजा कुमारदास हिनक चितामे प्रवेश करैत मित्रताक तेहन मोल चुकओलनि जे काल केर कपालपर अमिट शिलालेख बनि अंकित अछि। छठम शताब्दीक श्रीलंकाक नागिरीकाण्डा शिलालेखमे कुमारदासक स्पष्ट उल्लेख हुनका विषयक समस्त शंका सभक निर्णायक समाधान प्रस्तुत करैत अछि आ जानकीहरण केर एक लिपिकारक पाण्डुलिपिमे उपलब्ध कथित श्लोक चतुष्टयकेँ प्रक्षिप्त प्रमाणित करैत अछि। एहि पोथीमे ई तथ्य पूर्व केर विवेचनसँ आ प्रस्तुत नाटकसँ स्थापित भेल अछि। *अनुश्रुति: न निर्मूला* आ जखन अनुश्रुति ऐतिहासिक शिलालेखसँ सम्बलित हो तखन आधुनिकताक दम्भ भरैत एहिपर शंका करब सर्वथा अनुचित!

भारतवर्ष आ श्रीलंकाक संबंध अति प्राचीन अछि। दुनू महान् देशक सभ्यता-संस्कृति आ धर्म एकहि छल। सम्राट् अशोकक पुत्र महेन्द्र आ पुत्री संघमित्राक श्रीलंका प्रवास काल ओतए केर राजा देवानांपिय तिस्स केर समय लंका बौद्ध धर्म अंगीकार कयलक। तथापि दुनू देशक संस्कृति बहुलांशमे समाने रहल। भगवान् विष्णु, विरुमर (ब्रह्मा), तम्पिरण (महादेव), मुरुगन् (कार्त्तिकेय वा स्कन्द), कुबेर, वरुण प्रभृति देवता आ काली, भद्रकाली, कनकम्पिकाइ अम्मन्, कन्नकी अम्मन् प्रभृति भगवती सभक मन्दिर रहबे कयल आ हुनका सभक पूजा होइते रहल। भगवान् बुद्ध केर मन्दिर, बौद्ध विहार, स्तूप आदि बढ़ल मुदा हिन्दू आ बौद्धमे आपकता ओहिना रहल। श्रीलंकाक वियाउलपता स्तम्भलेखमे राजाक दू पदाधिकारीक नाम रावण आ कृष्ण अंकित अछि। अखनो श्रीलंकामे मुरलीधरन्, सनत् जयसूर्या, अर्जुन रणतुंगा, निशान्त, राम, कृष्ण, रणसिंहे आदि सनातनी नाम राखले जाइत अछि। अतीत एतेक जल्दी पछोर नहि छोड़ैत छैक। स्वयंकेँ आधुनिक प्रदर्शित करबाक फेरमे आब लोक अतीतक इतिहास सम्पुष्ट मान्यता सभपर अविश्वास करैत ओकर अवहेलना करैत छथि, जे उचित नहि थिक।

इतिहासपुरुष महाराणा प्रताप केर तलवार, भाला आ कवच अखनो राखल अछि। देहपर 35-40 किलोग्रामक कवच लादि युद्ध करबाक बातपर आइ-

काल्हिक दस किलो सामान बाजारसँ उठा घर आनएमे हकमि जाएवला लोक सहजतासँ कोना विश्वास करत? मुदा अछि तऽ ई साँच! एहिना मित्र कालिदासक चितामे प्रवेश कऽ कुमारदासक आत्मोत्सर्ग करबाक बात सेहो सभगोटेकेँ कोना अरघत? मुदा अछि तऽ इहो साँच! अपन आत्मीय केर रक्षामे शीशोत्सर्ग, पतिक मृत्युक बाद पत्नी द्वारा आत्महत्या, देशक आन-बान-शानक लेल आत्मबलिदान, कर्तव्य पथपर आत्मकुर्बानी आ कोनो आत्मीयक मृत्युक सूचनापर उठल भावनाक हठात् उद्वेग (sudden outburst of emotions)मे अखनो आत्मोत्सर्ग अत्यन्त विरल नहि भेल अछि। अखन चलि रहल यूक्रेन-रूस युद्धमे एहन दृश्य आबि रहल छल जे भयंकर रूसी टैंकक समक्ष निहत्था आम यूक्रेनी ठाढ़ छथि। ई की थिक? मात्र सान्द्र राष्ट्रभक्तिक ज्वार! कोनो गहन भाव केर सान्द्रता एहन विचार आनि दैत छैक जखन जीवन केर मोह नहि रहि जाइत छैक। आवेगमे एहन निर्णय होइत छैक। कुमारदासक लेल एहने स्थिति रहल होयत तखने ओ कलिदासक चितामे प्रवेश कयने होयताह। हुनक आत्मोत्सर्गक बाद हुनक पाँच रानी चितामे प्रवेश कयलनि। एहि घटनाक मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन एकर सत्यता प्रमाणित करत। आजुक यथार्थसँ 1500 वर्ष पूर्व केर घटनाक यथार्थ केर मूल्यांकन करब उचित नहि। ओकर मूल्यांकन लेल ओही कालक दृष्टि चाही। जेना असत्य बात केर पाँखि नहि होइत छैक तहिना सायास पसारल अनुश्रुति सेहो चिरजीवी नहि होइत अछि। सत्य सम्बलित अनुश्रुति कहियो समाप्त नहि होइछ। कालिदास विषयक मिथिलाक अनुश्रुति आ श्रीलंकाक अनुश्रुति सत्याश्रित अछि तेँ आइ 1500 वर्षसँ अखनो जीवित अछि। कतेक आन अनुश्रुतिसभ कालक गालमे बिला गेल।

महाकवि कालिदासक मैथिलत्व केर दिग्दर्शन करएलाक बाद हमरा ई कहबामे कोनो दुविधा नहि अछि जे महाकविक जन्म भारतवर्षक कोनो क्षेत्रमे भेल हो, समस्त भारतीय हुनका 'अपन' मानैत छथि। केरल (कालिदास कला केन्द्रम्, कोल्लम्) सँ अल्मोरा (उत्तराखंड संस्कृत अकादेमी) धरि पसरल कालिदास; कालिदास शोधन समिति,कोलकाता; रामगढ़ (छत्तीसगढ़)मे कालिदासक नाट्यशालामे कालिदासक नाट्योत्सव; कालिदास अकादेमी, उज्जैनक विराट् कालिदास महोत्सव; कविकुलगुरु कालिदास विश्वविद्यालय, रामटेक, नागपुर केर कालिदास विषयक शोध आ नाट्य प्रस्तुति, इतिहास एवं पुरातत्त्व संस्थान, बालाघाट प्रभृति संस्थान सहित महाकविक नामपर देश भरिमे पसरल अनेक समिति/संस्थान अछि जतए शोध, नाट्य प्रस्तुति, महोत्सव आदि होइत रहैत छैक। महाकविक ई राष्ट्रीय स्वरूप सरिपहुँ मुदित करैत

अछि। महाकवि अनुपम छथि। हिनक कीर्त्तिकलश केर आसवसँ सम्पूर्ण विश्व विस्मित होइत आप्यायित अछि। विश्व वाङ्‌मयमे महाकवि सभक मध्य कालिदास अपना सन एसकरे छथि आ तेँ कँगुरिया आँगुरसँ जँ गणना शुरू करब तखन ओकर बाद किनको नाम नहि आबि सकत तेँ अनामिका आँगुरक नाम सार्थक भेल। सुप्रसिद्ध जर्मन कवि गेटे अभिज्ञान शाकुन्तलम् केर प्रति किछु एहने उच्चतम भाव प्रदर्शित कयने छथि—

वासन्तं कुसुमं फलं च युगपद् ग्रीष्मस्य सर्वं च यद्
यच्चाऽन्यन्मनसो रसायनमत: सन्तर्पणं मोहनम्।
एकीभूतमभूतपूर्वमथवा स्वर्गलोक-भूलोकयो-रैश्वर्यं
यदि वाञ्छसि, प्रियसखे! शकुन्तलं सेव्यताम्॥

निष्कर्षत: कहि सकैत छी जे महाकवि कालिदास मैथिल छथि। महर्षि वाल्मीकि आ महर्षि व्यासकेँ 'ब्रह्मा' (सृजनकर्ता) मानल जाए आ महाकवि कालिदासकेँ 'न भूतो न भविष्यति' महाकवि प्रातिभ!

महाकविक महाप्रयाण

नाटक

पात्र परिचय

पुरुष पात्र

1. कालिदास : भारतवर्षक सुप्रसिद्ध महाकवि
2. कुमारदास : सिंहल देशक राजकुमार आ राजा
3. पण्डित 1 : सुप्रसिद्ध वररूचि
4. पण्डित 2 : पण्डित 1 केर शिष्य, विद्योत्तमासँ विवाहक आकांक्षी
5. अनुचर : पण्डित सभक चाकर
6. नट : नाटक केर सूत्रधार
7. राजा : विद्योत्तमाक पिता
8. चारण : सिंहल नरेशक सेवक
9. सभासद 1
10. सभासद 2
11. कित्तीसेना : कुमारदासक पुत्र, सिंहल देशक राजकुमार

स्त्री पात्र

1. विद्योत्तमा : सुप्रसिद्ध विदुषी आ राजकुमारी
2. प्रियंवदा : विद्योत्तमाक परिचारिका
3. कामसेना : सिंहल देशक राजनर्तकी
4. रानी : विद्योत्तमाक माता
5. नटी : नट केर प्रिया

6. परिचारिका : विद्योत्तमाक परिवारक दू परिचारिका
(आवश्यकतानुसार अतिरिक्त किछु पुरुष पात्र राजाक सभामे आ सिंहल नरेश कुमारदासक सभामे बैसि सकैत छथि)

दृश्य- एक

(नाटक लेल तैयार रंगमंच। मंचक बामा कात एक पर्दा लागल अछि। अखन मुख्य मंचसँ ओम्हर नहि गेल जा सकैछ। मंचक समानान्तर बामा कात एक लघुमंच अछि जाहिपर पर्दा खसल अछि। मुख्य मंचक पर्दा उठैत अछि। एक कातसँ नट आ दोसर कातसँ नटीक हाथ जोड़ने प्रवेश होइत अछि)

नटी : जय हो! जय हो!! आइ समय केर पैघ अन्तरालक बाद हम सब एतऽ पुनः एकत्र भेल छी।

नट : हँ। आइ हम सब महाकवि कालिदासपर आधारित एक लघु नाटिकाक आनन्द लेब...

नटी : वैह महाकवि कालिदास ने जिनका विषयमे कहल गेल अछि—
पुरा कवीनां गणना प्रसंगे कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदासः
अद्याततुल्यकविर्भावात् अनामिका सार्थवती बभूव

नट : हँ प्रिये! वैह महाकवि कालिदास! मिथिलाक वरद् पुत्र कालिदास! उच्चैठ भगवतीक उपासक कालिदास। प्राचीन कवि सभक गणना जँ कँगुरिया आँगुरसँ आरम्भ करी तऽ दोसर स्थानपर किनको नाम आबि नहि सकत तँ एहि आँगुरक नाम अनामिका सार्थक भेल। **(गिनती करबाक अभिनय। अनामिका आँगुरक प्रदर्शन)**

नटी : आह की दिव्य दिवस अछि आइ! महाकवि कालिदासक अद्भुत जीवनचरित् सँ हमरा सभक साक्षात्कार होयत।

नट : हँ प्रिये! अद्भुत जीवनचरित्! जेहने महाकविक विलक्षण काव्य तेहने मोनहरू हुनक जीवनयात्रा।

नटी : से की ?

नट : महाकविक जन्म मिथिलामे भेल, वज्रमूर्ख छलाह। जाहि डारिपर बैसल छलाह ओकरे काटैत छलाह, छलपूर्वक राजकुमारीसँ विवाह भेल, तिरस्कार भेटल, उच्चैठ भगवतीक कृपासँ विद्यादान भेटलनि, अध्ययनमे रूचि भेलन्हि आ सर्वश्रेष्ठ महाकवि रूपमे प्रतिष्ठित भेलाह। जन्म मिथिलामे आ मृत्यु सिंहल देशक माटरामे...

नटी : **(आश्चर्यचकित)** अँय! जन्म मिथिलामे आ मृत्यु एतऽसँ हजारो कोस दूर श्रीलंकाक शहर माटरामे! परम आश्चर्यजनक आ मनोरंजक कथा अछि। हमर जिज्ञासा अत्यधिक बढ़ि गेल अछि प्रिय! मिथिलासँ माटरा धरिक ई जीवन यात्रा... ओह!

नट : हँ प्रिये...

नटी : ओह! महाकविक महाप्रयाण श्रीलंकाक माटरा शहरमे कोना भेल? ओ सागर लंघन किए कयलनि? हमर जिज्ञासा आब चरमपर पहुँचि गेल अछि, व्याकुल आ विह्वल भऽ रहल छी हम। प्रिय! बिनु एक पल नष्ट कएने हमरा महाकवि कालिदासक जीवन यात्राक सब रहस्य बता हमर उद्विग्नता शान्त कएल जाय।

नट : अवश्य प्रियतमे! आइ स्वयं दिवाकर महाकवि कालिदास विषयक कथा कहि रहल छथि। अहाँक समस्त जिज्ञासा अवश्य शान्त होयत। बस मनोयोगपूर्वक एहि नाटिकाक आनन्द लेल जाय।

नटी : अवश्य प्रिय! **(नेपथ्यसँ कोलाहल केर स्वर अभरैत अछि)** अँय! ई कोलाहल किए?

नट : **(कानपर हाथ राखि अकानैत)** ओह! जेना दूरसँ चिकरा-भोकरीक स्वर आबि रहल अछि। ओहिना जेना किछु गोटे तम-तमायल आबि रहल हो। कोनो कोना धऽ ली हम सभ। क्रोध विपत्तिक कारण भऽ सकैत अछि। ई कोलाहल कथीक? की नाटक शुरू भऽ गेल?

(नट-नटी एक कोनासँ ससरि जाइत छथि आ दोसर कातसँ रेशमी परिधानमे दू पण्डित आ साधारण वस्त्रमे अनुचरक प्रवेश)

अनुचर : **(हकमैत)** रौ बाप रौ बाप! गै माय गै माय! देखू तऽ यैह! ओह! एहन जब्बर छौंड़ी नहि देखने रही। सब विद्वान् सभक कान काटि लेलक। सभकेँ पानि पिआ-पिआकेँ पस्त कएलक। जियह हे बवुनी! वाह की दिव्य रूप! की अद्भुत गुण! तिल-तिल उत्तम तिलोत्तमा! आह की मधुर स्वर! की उत्तम विद्या विद्योत्तमा!! देखू तऽ यैह!

पण्डित 1 : अरे मूढ़ अनुचर! तौँ चुप रह। एक तऽ विद्योत्तमा हमरा सभक एहन अपमान कएलक आ तौँ ओकर गुणगान कऽ हमरा सभक जरल करेजापर नोन छीटि रहल छेँ?

पण्डित 2 : हमर तऽ ओ सत्यानाशे कएलक। सब गुड़ गोबर कऽ देलक। तेहन जिह्वा बान्हलक जे हम ब्रह्म आ जीवमे की पार्थक्य सन सरल प्रश्नक उत्तर नहि दऽ सकलहुँ।

अनुचर : ओकर अपरूप रूप निहारैसँ फुर्सत हो तखन ने उत्तर फुरायत। बूझल नहि अछि जे ओहिनो गोर मोडगि गौरवे आन्हर होइ छै आ जखन भगवान् ओहन दिव्य रूप परसँ गुण सेहो हुनका

देलनि तखन ओ की करतीह से सोचल जाय। ओह! जेहने अपरूप रूप तेहने विलक्षण गुण। देखू तऽ यैह!

पण्डित 1 : पता नहि अपना आपकेँ की मानै छैक! जेना भगवती दुर्गा प्रण कयने छलीह—

यो मे जयति संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति।
यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति॥

तहिना इहो निर्णय कयलक जे जे हमरा शास्त्रार्थमे पराजित करत ओकरेसँ विवाह करब। जीविते भगवती बनतीह। हुँह!

अनुचर : आ हा हा! गेल रही शास्त्रार्थमे पराजित कऽ बियाह करऽ। की भेल? भकचोन्ही लागल ने? देखू तऽ यैह! अरे ओ साक्षात् भगवतीक अवतार छथि आ अहाँ सभक जोड़ी तऽ शुम्भ निशुम्भक जोड़ी ने भेल? शास्त्रार्थ काल तऽ ठकमुरी धेने छल आब की तरुवारिसँ मरब अहाँ सब! कठजीव नहितन!

पण्डित 2 : अधम अनुचर! चुप रह। महाराजक आचार्य रत्न आ हमरा सन प्रकांड पंडितकेँ शुम्भ-निशुम्भ कहबाक धृष्टताक कारणेँ एक शिकायतपर तोरा प्राणदंड भेटि सकै छौ।

अनुचर : देखू तऽ यैह... यौ! यैह ने भेल बापक नाओँ लत्तीफत्ती आ बेटाक नाओँ परोर! इह! चाइनपर केश नहि माथपर ककबा! फेर कहै छी सुनू। अपन हारल आ बहुकेँ मारल लोक नहि बाजै छै कतहु। चुप्पे रहू।

पण्डित 1 : कोना चुप रही? शास्त्रार्थमे पराजय केर दंश तोँ नहि बुझि सकैत छेँ रे मूर्ख। शस्त्रसँ भेल घाओ वा पराजय मात्र तनपर होइ छै, समयक संग भरि जाइत छैक मुदा शास्त्रार्थमे पराजय मनपर

होइत छैक, ओ कहियो नहि भरैत छैक। शस्त्रसँ पराजयमे कदाचित् एहन मर्मान्तक पीड़ा नहि भेल रहैत जेहन आइ शास्त्रमे पराजयसँ भेल आ ओहो एक स्त्री द्वारा! छिया छिया! हे महादेव! की करी जे चित्त शान्त हो।

पण्डित 2 : गुरुवर! एक उपायसँ हमरा सभक धधकैत करेजकेँ शीतलता भेटि सकैत अछि। घमंडी विद्योत्तमाक विवाह कोनो वज्रमूर्खसँ करा हम सब अपन प्रतिशोध पूर्ण कऽ सकैत छी।

पण्डित 1 : से कोना ?

(पण्डित 1 पण्डित 2 केर कानमे किछु कहैत छथि। अनुचर उचकिकेँ सुनबाक प्रयास करैत अछि तऽ दुनू पण्डित ओकरापर तमतमा जाइत छथि। नेपथ्यमे टँगारीसँ किछु काटबाक आवाज अबैत अछि।)

पण्डित 2 : **(टँगारीक अबैत आवाज दिशि अकानैत)** हम कने अबैत छी। **(दोसर पण्डित मंचसँ विदा होइत छथि। आ लगले आपस आबि जाइत छथि। हुनकर संग हाथमे टँगारी आ किछु जारनि नेने कलुआ सेहो अछि।)**

पण्डित 2 : **(मुस्की दैत)** गुरुवर! एकटा जड़ी देखऽ गेल रही मुदा अनुपम दृश्य देखि मोन तृप्त भऽ गेल। ई नवयुवक जाहि डारिपर बैसल छल ओकरे काटि रहल छल। खसत तऽ हाड़-पाँजड़ छिटकि जेतै, यमलोक जा सकैछ तेकर कोनो ज्ञान नहि छल एहि मूर्खकेँ। एकरासँ पैघ मूर्ख कोइ दोसर आन नहि भऽ सकैछ। हमरा सभक प्रतिशोधक लेल सर्वथा उपयुक्त पात्र अछि ई मूर्खराज! **(दुनू पण्डित हँसैत छथि आ कलुआकेँ टेबैत छथि। अनुचर विचित्र मुद्रा बना उपहास करैत अछि)**

पण्डित 1 : अरे ई की करै छलहुँ यौ? की नाम अछि?

कलुआ : हम कलुआ। देखै नहि छी जे जारनि लाबय गेल रही। हम जारनि लऽ के जेबै तखन माय भानस करतै तखने भोजन भेटत। हमरा दिक् नहि करू। हमरा अपन काज करऽ दियऽ।

पण्डित 2 : आजुक बाद अहाँकेँ कहियो कोनो काज नहि करऽ पड़त। अहाँक विवाह राजकुमारीसँ होयत।
(राजकुमारीसँ विवाहक बात सुनिते मातर कलुआ टेँगारी आ जारनि फेकि सभकेँ प्रणाम करैत अछि।)

पण्डित 1 : अहाँ आब राजमहलमे रहब। दास-दासी सब अहाँक सेवामे सदिखन कऽल जोड़ने ठाढ़ रहत।

कलुआ : जय माँ उच्चैठ भगवती! माँ...

पण्डित 2 : अहाँक माँ सेहो संगे रहती। बस शर्त्त एक्के टा अछि जे अहाँ वैह करबै जे अहाँके हमसभ कहब। काजो पैघ नहि मात्र अहाँके एक दिनक लेल मौनव्रत धारण करऽ पड़त।

कलुआ : मउन वरत! ई की होइ है?

अनुचर : देखू तऽ यैह! अरे बौक बनऽ पड़त।
(कलुआ मुड़ी डोलबैत अछि)

पण्डित 1 : जखन हम संकेत करब तखन अहाँ राजाकेँ ॐ नमः शिवाय कहि आशीर्वाद देबै बस फेर मौन व्रत धारण कऽ लेबाक अछि। की ई कऽ सकैत छी ने?
(कलुआ विनम्रतापूर्वक झुकिकेँ मुड़ी डोला स्वीकृति दैत अछि। फेर कखनो ओना मासी धं, कखनो ओनम शिव, कखनो उशंरटं, कखनो सम्बलाय, कखनो शिवशिवाय कहि अभ्यास करैत अछि फेर एकदमसँ मौनी बाबा भऽ जाइत अछि।)

पण्डित 2 : अरे वाह! ई तऽ अखनेसँ मौनी बाबा भऽ गेल।

अनुचर : धन्य-धन्य हे उच्चैठ भगवती। कलुआक कपारमे कारी खोरनाठो कनिञा नहि लिखल छलै। कहियासँ एकर माय एकर बियाहक लेल अपस्याँत छलै, कतेक कबुला पाती केलक, जोड़ा छागर गछलक आ देखू तऽ यैह! सब भगवतीक कृपा। कहाँ करिकीओ कनिञा नहि आ कहाँ गोरकी राजकुमारीसँ बियाह! वाह वाह! देखू तऽ यैह!

पण्डित 1 : तोँ चुप रह!

अनुचर : देखू तऽ यैह! मुदा हे यौ पंडीजी सब! अहाँ सभकेँ उच्चैठ भगवती जान नहि छोड़तीह जे एहन अनुचित बियाह करा रहल छिऐ। ई महापाप अछि। कहाँ ओ सर्वगुण संपन्न सुन्दरी आ कहाँ ई निपट मूर्ख चपाट। एहन बेमेल बियाह करबै वला रौरव नरक जएबे टा करत। देखू तऽ यैह!...

पण्डित 1 : तोँ किछु नहि बाजह।

पूर्व जन्म उपार्जित विद्या पूर्व जन्म उपार्जित धनम्
पूर्व जन्म उपार्जित नारी अग्रे-अग्रे धावत्।

पूर्व जन्म उपार्जित विद्या, धन वा स्त्री आगू-आगू चलैत अछि। भगवतीक कृपा हेतै तऽ कलुआ सेहो विद्वान् भऽ जेतै। चिंता जुनि करू। हिनका लेल रेशमी वस्त्र आनू, स्नान करा हिनकर साज-श्रृंगारक व्यवस्था करू। शीघ्रता करू बहुत काज करबाक अछि।

(सभक प्रस्थान। यवनिका पात)

दृश्य- दू

(राजसभाक दृश्य। सोचमग्न राजा, मंत्रीगण आ श्रृंगार कएने प्रफुल्लित विद्योत्तमा बैसलि छथि। तीन आसन रिक्त। दुनू पंडित आ रेशमी परिधानमे सुशोभित कलुआक प्रवेश।)

पण्डित 1 : महाराजक जय हो। हमरा ज्ञात अछि जे अखन अपनेक वैह दशा अछि जे जानकी स्वयंवरमे धनुर्भंग करबामे असमर्थ राजा सभकेँ देखि महाराज जनक केर छल।

राजा : विवाह योग्य पुत्रीक पिता होएब ओहिनो चिन्ताक कारण होइत अछि आ जँ सुयोग्य पुत्री प्रण करए जे शास्त्रार्थमे पराजित कयनिहारेसँ विवाह करब तखन चिन्ता आर बढ़ि जाइत अछि। शास्त्रार्थमे विद्वान् सभक पराजयसँ अत्यधिक निराश आ दुखी छी हम।

पण्डित 1 : राजन्! अपनेक समस्या केर सुन्दर समाधानक संग हमसभ उपस्थित छी। ई छथि कण्व गुरुकुल केर सर्वश्रेष्ठ स्नातक कालि। सुदर्शन, सदाचारी, उच्च कुल-गोत्र आ सर्वगुणसंपन्न सुशील एहि नवयुवक केर जिह्वापर स्वयं सरस्वती विराजमान छथि। सकल शास्त्र कंठाग्र छैन्हि एहि धीर आ वीर युवककेँ। हिनका *अग्रत: सकलं शास्त्रं पृष्ठत: सशरं धनु:* केर साक्षात् प्रतिमूर्त्ति कहल जा सकैत अछि। **(कलुआ विनम्रता पूर्वक राजाक अभिवादन करैत अछि आ राजा हुनका आ पण्डितगणकेँ आसन दैत छथि। विद्योत्तमा नेहपूरित नजरिसँ कलुआकेँ देखैत छथि।)**

राजा : हम अति आनन्दक अनुभव कऽ रहल छी। आगू जे भगवतीक इच्छा।

पण्डित 1 : मात्र एक समस्या अछि जे अखन एहि पण्डित केर मौन व्रत चलि रहल अछि तेँ शास्त्रार्थ मात्र संकेतसँ संभव अछि।

विद्योत्तमा : आचार्य! एक प्रहर पूर्व अपने अपन सर्वश्रेष्ठ शिष्यक संग शास्त्रार्थ सभासँ पराजित आ अप्रसन्न भऽ आपस भेल रही। पुनः अयलहुँ अछि। एतेक शीघ्र हरिद्वार लऽग अवस्थित कण्व गुरुकुल केर स्नातक कोना भेटि गेलाह? ई कोनो षड्यंत्र तऽ नहि अछि ने?

पण्डित 1 : राम राम! शिव शिव! ई कोनो षड्यंत्र नहि अछि राजकुमारी। पण्डित गाम आएल छलाह आ हमरा सभकेँ भेटि गेलाह। हिनकर मौनव्रत अछि अखन तेँ राजन केर अभिवादनमे एक-दू शब्दक अतिरिक्त आर किछु नहि बजताह अन्यथा हिनक मौनव्रत खंडित होयत। महर्षि कण्वक गुरुकुल केर सर्वश्रेष्ठ स्नातक छथि ई। साधनासँ सिद्धि केर सिद्धान्तक अनन्य उपासक। पण्डित प्रवर कालि! राजन् केर अभिवादन कएल जाय।
(संकेत पाबि कलुआ ॐ नमः शिवाय कहबाक प्रयास करैत छथि मुदा किछु मोन नहि पड़ैत छैन्हि। कहुना मात्र उशंरटं बजैत छथि। सभा स्तब्ध।)

पण्डित 1 : राजन्! सभामे सभासद् गण स्तब्ध छथि जे पण्डित प्रवर की कहलनि। यथार्थमे ओ एहि श्लोकसँ अपनेक अभिनन्दन कयलनि अछि—

उमयो सहितो रुद्रः
शंकरः शूलपाणिभृत्।
रक्षतु त्वां महीपाल
टंकार बलगर्वितः।।

अर्थात् हे टंकार बलगर्वित राजन्! रुद्र शंकर, जे हाथमे त्रिशूल धारण कएने छथि आ उमा संग छथि, अहाँक रक्षा करथि। अपन मौनव्रतक कारणेँ पण्डित प्रवर पूरा पद नहि पढ़ि मात्र चारू पद केर आद्याक्षर जोड़ि एक शब्द उशंरटंसँ अपनेक अभिवादन कयलनि।

(सभासद सब वाह वाह, अद्‌भुत, विलक्षण, जय हो जय हो कहि पण्डित प्रवर केर सम्मान करैत छथि। राजा आ विद्योत्तमा मुदित छथि।)

विद्योत्तमा : जेहन अपनेक इच्छा आचार्य! हम सांकेतिक शास्त्रार्थ शुरू करैत छी। हमर संकेतक भाव स्वयं हिनका समझऽ पड़त आ तदनुसार उत्तर अपेक्षित रहत। हमर प्रथम प्रश्न अछि...

(अपन तर्जनी आँगुर कलुआ दिशि बढ़ा दैत छथि। कलुआ पहिने अपन एक आँखि फेर दोसर आँखि झँपैत अपन तर्जनी आ मध्यमा आँगुर विद्योत्तमाकेँ देखबैत छथि जे तोँ जँ हमर एक आँखि फोड़बाक बात करबेँ तऽ हम तोहर दुनू आँखि फोड़ि देबौ।)

पण्डित 1 : वाह वाह! की सुन्दर प्रश्न आ की विलक्षण उत्तर! राजकुमारी! अपनेक प्रश्न यैह ने छल जे ब्रह्म एक छथि? (राजकुमारी मुड़ी डोला स्वीकृति दैत छथि) आब पण्डित प्रवर केर उत्तर देखल जाय। दू आँगुरसँ ओ संकेत करैत छथि जे ब्रह्मक संग जीव केर सत्ताकेँ नकारल नहि जा सकैछ। अपने अद्वैतक गप्प करैत छी से उचित नहि। ईश्वर अलग ब्रह्म छथि तऽ जीव केर पृथक् अस्तित्व अछि। ब्रह्म आ जीव केर पृथक्-पृथक् अस्तित्व अछि तेँ अद्वैतकेँ एतऽ नहि मानल जा सकैछ।

विद्योत्तमा : अद्वैत भारतीय दर्शन केर आत्मा थिक। एकरा नकारल जा सकैछ की?

पंडित 1 : आत्मा अवश्य अछि मुदा सृष्टिक लेल द्वैत सेहो आवश्यक अछि। द्वैतक अस्तित्व रहत तखने अद्वैतक अस्तित्व बाँचत। प्रकृति आ पुरुष अनादि अछि मुदा दुनूक पृथक् सत्ता अछि। गीताक अध्याय 13 श्लोक 19मे भगवान् कृष्ण कहैत छथि—

प्रकृतिं पुरुषं चैव विद्ध्यनादि उभावपि
विकारांश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृति संभवाम्

सब गुण आ विकार मात्र प्रकृतिसँ निष्पन्न होइत अछि पुरुषसँ नहि। पुरुष तऽ मात्र ओकर भोक्ता अछि। तेँ प्रकृति आ पुरुषकेँ संग रहब आवश्यक अछि। बिनु प्रकृति ब्रह्म कोनो सृजन नहि कऽ सकैत छथि। ओ योगमाया शक्ति आवश्यक अछि जेकरा बलेँ ब्रह्म सृजन हेतु सक्षम होइत छथि। संसारमे कोनो स्त्री वा कोनो पुरुष एसकरे संतानोत्पत्ति नहि कऽ सकैछ। सृष्टि वा सृजनक लेल दूनूक संयोग आवश्यक अछि।

विद्योत्तमा : ब्रह्म जे सृष्टि करैत छथि से सब सृष्टि कल्पान्तमे फेर ब्रह्ममे समाहित् भऽ जाइत अछि तेँ जीव ओहि ब्रह्म केर अंश मात्र अछि। यद्यपि देखलासँ ओ ब्रह्मसँ पृथक् लगैत अछि किन्तु यथार्थमे ओकर कोनो पृथक् अस्तित्व नहि अछि।

पंडित 1 : सत्य कहल राजकुमारी! ई सत्य जे ब्रह्म सृजन करैत छथि। गीतामे भगवान् श्रीकृष्ण कहैत छथि— *अहं बीजप्रद: पिता* अर्थात् हमही बीज दएनिहार पिता छी। तथापि जँ कोइ बीज धारण कयनिहारि नहि हो तऽ सृजन संभवे नहि अछि। अन्न सेहो बीज अछि मुदा ओ तखने फलवती होइत अछि जखन पृथ्वी माता ओकरा अपन गर्भमे धारण करैत छथि आ फेर अन्नक सृजन होइत अछि। द्वैतमे 'अ' केर संयोग भेलासँ अद्वैत बनि जाइछ। यैह द्वैताद्वैत अर्द्ध नारीश्वरक परिकल्पनाक मूलाधार थिक। तहिना शिव आ शक्तिक संयुक्त रूप अर्द्धनारीश्वर मूर्त्ति सृजन केर आधार अछि। दू नहि तऽ एक केर कोन मोल? आत्मा नहि तऽ परमात्माक कोन महत्त्व? भक्त नहि तऽ भगवान् कतऽ? राजकुमारीजी! अपनेक मूलप्रश्नक तीर तऽ पण्डित प्रवर कालिक विद्वत्ता रूपी ढालसँ टकरा खंडित भऽ गेल अछि। आब जयमाल आनल जाय। ऋषि कण्व केर सर्वश्रेष्ठ शिष्यक जय हो! जय हो!!
(सब चकित भऽ पण्डित प्रवर केर जय-जयकार करैत छथि)

विद्योत्तमा : **(हाथ उठबैत)** कृपया शान्त रहल जाय। अपन प्रथम प्रश्नक वैदुष्यपूर्ण आ विस्तृत उत्तरसँ हम पूर्ण संतुष्ट छी आ अपन स्थापनाक खंडन स्वीकार करैत छी। हम जे आब दोसर प्रश्न करब तेकर संक्षिप्त उत्तर देल जाओ। हमर दोसर प्रश्न अछि...
(राजकुमारी अपन पंजा कलुआकेँ देखबैत छथि। कलुआ अपन एक पंजाक पाँचू आँगुरकेँ बेराबेरी दोसर हाथक आँगुरसँ गानबाक अभिनय करैत अछि आ फेर अपन मुट्ठी राजकुमारीकेँ देखबैत अछि जे जँ तोँ हमरा चाँटा मारलेँ तऽ हम तोरा मुक्का मारबौ।)

पण्डित 1 : हर हर महादेव! राजकुमारी! अपने जे अपन पाँच आँगुरसँ पंचभूतक बात कएल ओकरा कटैत पण्डित प्रवर केर कथन अछि जे ओ सभमे एक्के टा तत्त्व अछि। अपने क्षिति, जल, पावक, गगन आ समीरक कथा कहलहुँ अछि। एहिपर पण्डित प्रवर केर कथन अछि जे ई पाँचू तत्त्वे मिलि एक शरीर बनबैत अछि, एकहि जगतीक निर्माण करैत अछि। एहि सभक मूल तत्त्व एकहि अछि। तेँ पण्डित प्रवर केर कथन अछि जे पंचभूतमे एके टा आदि तत्त्व अछि। जेना कोनो तत्त्वक सूक्ष्म कण अणुसँ बनल अछि, ई अणु सेहो परमाणुसँ निर्मित अछि। परमाणुक सेहो विखंडन संभव अछि मुदा जेना ओहि विखंडनमे सेहो अणु आ परमाणुक मूल तत्त्व वैह रहैत अछि जे संबंधित पदार्थ वा तत्त्व केर रहैत अछि। ठीक यैह स्थिति पंचतत्त्व केर सेहो अछि आ तहिना पंचभूतोक आदितत्त्व एक्के अछि। जहिना पंचभूतसँ एक शरीर तहिना पाँच आँगुरसँ एक मुट्ठी। आबहु कोनो संशय राजकुमारीजी ?
(विद्योत्तमा मुड़ी हिला इन्कार करैत लाजे लाल भऽ जाइत छथि। सब कण्व गुरु कुलक सर्वश्रेष्ठ स्नातक केर जय हो, विदुषी विद्योत्तमाक सुयोग्य वर कालि केर जय हो आदि उद्घोष करैत छथि। राजा उठिकेँ कलुआकेँ हृदयसँ लगा आशीष दैत छथि। एक थारमे राखल सजाओल दीप आ ओतहि राखल विभिन्न प्रकारक पँखुरी उठा पुष्पवर्षा करैत एक परिचारिका आ दोसर थारमे पँखुरीसँ सजाओल तामामे ललका धान, अक्षत आ दुर्वादल नेने पुष्पवृष्टि

करैत दोसर परिचारिकाक पाछू सखी प्रियंवदा आ रानी दू थारमे जयमाल नेने प्रवेश करैत छथि। विद्योत्तमा आरतीक थार परिचारिकासँ लैत कालि केर आरती करैत छथि, टीका लगबैत छथि आ फेर विद्योत्तमा एवं कालि एक दोसराकेँ जयमाल पहिराबैत छथि। उपस्थित सब गोटे तामासँ दुर्वाक्षत लऽ मंत्र पढ़ैत छथि—

ॐ आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढा नड्वानाशुः सप्तिःपुरन्ध्रियोर्षा जिष्णूरथेष्ठाः सभेयोयुवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्। मन्त्रार्थाः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रुणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्त्व। दीर्घायु भव! सौभाग्यवती भव...

दुर्वाक्षत् मंत्र पढ़लाक बाद सब गोटे दुबि-धान-अक्षतसँ नव वर-वधूकेँ आशीर्वाद दैत छथि। दुनू परिचारिका पुष्पवृष्टि करैत छथि।)

प्रियंवदा : राजकुमारी विद्योत्तमाक प्रण पूर्ण भेल। आइसँ हुनक विवाहोत्सव आरम्भ भऽ गेल अछि। राज्य भरिमे समारोह, महोत्सव, कार्यक्रमादिक भारी धूम रहत। सब एहि महोत्सवमे मग्न आनन्द लेत। मुदा हाय रे हमर भाग्य! हम की करू? हम मातृ-पितृ हीना नेनपनेसँ विद्योत्तमाक संग छी। छी तऽ हम साधारण अनुचरी मुदा विद्योत्तमा शुरूसँ हमरा अपन सखीक मान देलनि, कहियो नौड़ी अनुचरी नहि मानलनि। हमर तऽ जीवनाधारे विद्योत्तमा छथि। एक पलक लेल कहियो हुनकासँ अलग नहि रहलहुँ। आब की होयत हे विधाता! विद्योत्तमासँ वियोग हम सहि नहि सकब हमर प्राणान्त निश्चित अछि।

(प्रियंवदा विद्योत्तमाक गर्दनि पकड़ि कानऽ लगैत अछि।)

राजा-रानी ढाढ़स दैत कहैत छथि- तोरो एकरे संग विदा करबौ। कालि मुस्कुराइत छथि)

(यवनिका पात)

दृश्य- तीन

(राजमहल केर एक कक्षमे सोहाग सेज सजल अछि। विद्योत्तमा पटोर पहिरने प्रफुल्लित बैसलि छथि। सोझाँमे एकटा बिछान भूमिपर सजल अछि। नव वस्त्राभूषणमे सजल कलुआक प्रवेश।)

विद्योत्तमा : ओना एहि क्षेत्रमे कोबरामे पहिने स्वामी टोकैत छथि नवविवाहिताकेँ मुदा अहाँक मौनव्रत आ हमरा-अहाँक पूर्वमे भेल वार्त्ताक कारणेँ हम स्वयं आगू बढ़ि अहाँक स्वागत करैत छी। सुस्वागतम प्रियवर! विद्योत्तमाक हृत्पटलपर अपन तीक्ष्ण मेधा आ अतुलित तर्कशक्तिसँ राज कयनिहार महर्षि कण्व गुरुकुलक सर्वश्रेष्ठ स्नातक कालि केर जय हो। सुस्वागतम प्राणनाथ!

(कलुआ चुपचाप हुनका लऽग ठाढ़ भऽ जाइत छथि।)

प्रियवर! आब चुप किएक छी? अहाँक मौनव्रतक सार्थक समाप्तिपर बहुत-बहुत बधाइ स्वामी! एहि मौनव्रतक बादे हमरा सभक मिलन विधाता स्थिर कयने छलाह, से लगैत अछि। आब अपन मुखारविन्दसँ अपन किछु आर विशेष परिचय देल जाय। अपन प्रेमोद्गारसँ हमर चिर पिपासित उतप्त हृदयकेँ आसव वर्षासँ आनन्द सागरमे निमज्जित कएल जाय।

(कलुआ चुप छथि विद्योत्तमा पुन: बजैत छथि)

आब चुप नहि रहल जाय स्वामी। हमर हृदय केर धड़कन व्याकुल भऽ रहल अछि। आउ हमरा संग बैसि हमरा पूर्णता प्रदान कयल जाउ। हमर सौभाग्य जे कण्व गुरुकुलक सर्वश्रेष्ठ स्नातकसँ शास्त्रार्थमे पराजित भेलहुँ आ अहाँ सन तेजपुंज हमर पतिदेव भेलाह। हम सरिपहुँ गर्वित छी जे अपने सन श्रेष्ठ विद्वान् केर अर्द्धांगिनी भेलहुँ। आउ स्वामी !

(विद्योत्तमा अपन हाथ बढ़ा कलुआकेँ अपना लऽग बैसा लैत छथि। कलुआ सकुचाइत छथि। तखने बाहर ऊँटक बलबलएबाक स्वर अबैत अछि। विद्योत्तमा ओहि स्वर दिशि ध्यान दैत पुछैत छथि— किम् वदति?)

कलुआ : **(निम्न स्वरमे)** ऊँट बलबलाइ हय। नागा बबाजी सभ अनने हय ऊँट। **(विद्योत्तमा चौंकैत छथि। किछु क्षण बाद विद्योत्तमा पुनः बजैत छथि)**

विद्योत्तमा : आइ हमरा अहाँक मधुर मिलनक राति अछि। अहाँक मौनव्रत से समाप्त भऽ गेल अछि। आब अपन मुखारविन्दकेँ किछु कष्ट देल जाय स्वामी!

कलुआ : अरविन्दा बड़ शैतान हय। ओकरा कष्ट हेतै तऽ ओ बड्ड मारि मारत हमरा। हमर मायो के मारत ओ। ओकरा कोनो कष्ट नै होबए देबै हम। बरु अपने सब कष्ट सहि जेबै।

विद्योत्तमा : ई की बाजि रहल छी स्वामी?

कलुआ : सत्ते कहैत छी। हमर गामक मालिक हइ अरविन्दा। हमे आर ओकरे रैयत परजा! कोनो दया-धर्म नहि छै ओकरा! ककरो छौंकीसँ छरपिटा दैत हइ।

विद्योत्तमा : अहाँ एना किए बजै छी? आब ओ अहाँक चरण पखारत। अहाँक सेवा करत। आब अहाँक ओ एकटा छोटछीन सेवक बनिकेँ रहत। आब अहाँ एतऽ केर राजा छी। खैर, ई गप्प सब छोड़ल जाय। अहाँ कण्व ऋषिक सर्वश्रेष्ठ शिष्य छी। एहि मातल मधुयामिनीक वर्णन कएल जाय स्वामी। दू आकुल-व्याकुल तन-मनक मधुर मिलन केर चित्र उकेरल जाय। कविता कामिनीक अनावृत कुच आ कंचनजंघाक रसचित्र सभक दिग्दर्शन करा हमर अन्तर्मनकेँ तृप्त कएल जाय हे हमर रसराज! कामदेवक मदन बाण केर संधानक प्रभाव विषयक किछु काव्य कहल जाय कालि महोदय!

कलुआ : मधुयामिनी, कविता कामिनी, मधुर मिलन, कामदेव, मदनबाण! ई सब की होइ हय? हमरा तऽ कुच्छो नहि बुझाय हइ। अपने की बोलै हती? कंचनजंघा पहाड़क चोटी तऽ हमरा गाममे दूरेसँ देखाइत हय। हम एक साधु संगे ओहिपर एक बेर चढ़ल हती।

विद्योत्तमा : **(साश्चर्य)** ओह! सच-सच कहू। अहाँ के छी ?

कलुआ : हम उच्चैठ भगवतीक भक्त हती झूठ नहि बाजै छी। हमर नाम कलुआ हय। बाऊ नहि हय शान्त भऽ गेलै आ माय हमर कुटान-पिशान करै हय। हम कोनो कणव रिखी के नहि जानै छी। गाम से बाहर एक बेर हिमालय आ एक बेर बराह क्षेत्र गेल छी। पढ़बाक लेल हम कतहु गेलो नै छी। हम मूरुख हती।

विद्योत्तमा : **(अचम्भित)** ई की मद्यप जकाँ बजै छी? भोजन बाद प्रियंवदासँ माँगि भाँग पीबि लेलहुँ वा मद्यपान कयलहुँ जे एहन अवाच्य कथा सब बाजि रहल छी?

कलुआ : ने हम भाँग पीने हती आ ने कोनो मदपान केने हती। सत्य यैह हइ।

विद्योत्तमा : **(तमसायल उच्च स्वर)** तखन एतऽ कोना आबि गेलहुँ?

कलुआ : **(भावुक स्वर)** माय कहने रहय जारनि आनय से हम गेल रही वनकट्टा जारनि आनै लेल। तखने ने भात रान्हल जयतै। हम जाहि डारिपर बैसल रही ओकरे काटैत रही। किछु पंडीजी सब ई देखि हमरा कहलनि जे जेना कहब से करब तऽ राजकुमारीसँ बियाह करा देबौ। हम गछि लेलियै आ आबि गेलहुँ। सभामे हमरा मुहसँ किछु बहरा गेल छल ओहिपर पंडीजी शलोक बना सुना देलक। हमरा किछु नहि अबैत हय। **(कानऽ लगैत अछि)**

विद्योत्तमा : **(तामसे थरथर कँपैत)** छल! महाछल!! हे माता ई की भेल! **(कलुआसँ)** रे दुष्ट स्वार्थी नीच! अधम! महापापी! तोँ मात्र जाहिल गँवारे नहि छैँ तू तऽ धूर्त्त शिरोमणि सेहो छैँ। रे ठकहारा

तौँ हमरा कतहुँकेँ नहि रहऽ देलें। कहाँ हम अपनासँ श्रेष्ठ विद्वान् सँ विवाहक संकल्प कएने छलहुँ आ कहाँ तोरा सन मूर्ख गमार हमर भाग्यमे बथा गेल। रे निर्लज्जा! तोरा एको रत्ती लाज नहि भेलौ जे एक दिन जखन रहस्य अनावृत हेएत तखन की होएत?

कलुआ : हम...

विद्योत्तमा : तौँ चुप रह रे पापी! पंडित सब कहलक बियाह होयत आ बिनु पात्र अपात्रक विषयमे सोचने चलि अयलाह मूर्खराज! नारी देह लेल रकटल कापुरुष!

कलुआ : हम कापुरुष नै!

विद्योत्तमा : चुप रह रे मूर्खराज! नारीकेँ मात्र मनोरंजन केर साधन माननिहारकेँ कापुरुषे कहब उचित। अपने केहनो अयोग्य आ कुरूप हो कनिञा मुदा चाही इन्द्रक परी। अपने छथि मूर्ख आ धरफरायल विवाह करऽ अयलाह विदुषी राजकुमारीसँ। पात्र-अपात्रक कोनो विचार नहि कयनिहार कापुरुषे भऽ सकैछ। धिक्कार छौ तोहर पुरुषत्व के रे क्लीव ठकहारा!

कलुआ : (ठाढ़ होइत) हमर पुरुखार्थकेँ गारि नै दे...

विद्योत्तमा : बड़ अयलाह पुरुषार्थ वला! अरे छलसँ विवाह करबामे कोन पुरुषार्थ! पुरुषार्थ छै जय करबामे, स्वयंवरक हमर शर्त्त पूरा कऽ हमरा पराजित कयलाक बाद हमरासँ बियाह करबामे पुरुषार्थ होइतए! छिया छिया! तौँ तऽ छल कयलेँ। तोरामे कोन पुरुषार्थ? तौँ तऽ क्लीव नपुंसक! धिक्कार तोहर पुरुषार्थपर!

कलुआ : **(तामसे थर-थर कँपैत)** बस बस बस! शान्त! शान्त!! धिक्कार छौ तोहर रूपपर! थू-थू तोहर मतिपर जे अपन पतिक अनादर कयलेँ। (दुनू हाथ उठबैत) ई धरती सुनय, ई आकाश सुनय,

तीनू लोक सुनय! एहि रातिक तेसर पहर सुनय! ई चान-तरेगन सुनय! तोँ सेहो सुन गे घमंडी माउगि! आइ हम उच्चैठ भगवतीक सप्पत खाइ छी जे एक दिन तोहर सब गुमान झाड़बौ। जाबत एहि जोग नै हेबौ, तोरा अपन मुह नै देखेबौ। जहिया तोहर ग्यानक घमंड चूरबौ ओहि दिन बेज्जति करैत तोरा छोड़ि देबौ। कथामे सुनने रहिऐ जे बालमिकी मूरुख-चपाट ब्याधा-हत्यारा छलै। फेर एक दिन ओ रामायण कोना लिखलकै? पुरुखक भाग्य केर कोन ठेकान? काल्हि पंडीजी सब तोरा ठकि लेलकौ मुदा आइ हम सप्पत खाइ छी जे सच्ची-मुच्चीमे तोहर सब गौरव झाड़बौ। तोहर सब घमंड चूरबौ आ जखन तोरा हरा देबौ तखन तोहर तेहन बेज्जति करबौ जे सौंसे गौंआ देखतौ। ओहि दिन तोँ हमर पुरुखार्थ देखिहें। जय हे माता भगवती!

(कलुआ जयनाद करैत जोरसँ पयर पटकि प्रस्थान करैत अछि। किंकर्तव्यविमूढ़ विद्योत्तमा माथ पकड़ि विलाप करैत छथि)

विद्योत्तमा : ओह! ई की क्षणमे छनाक भेल हमरा संग! ओह! व्यर्थ एहन तिरस्कार कयलहुँ जे सप्पत खा पड़ा गेलाह। जेहन छथि मुदा हमर स्वामी तऽ आब वैह छथि। ओह! आब की करी? (किछु क्षण विलमि)... नहि नहि! ई आचार्य सभक अन्याय छल नारी जातिक प्रति। एकर प्रतिकार करब सर्वथा उचित। हम एहि योग्य छी जे विद्यादान करैत अपन जीवन चला सकी। हमर क्रोध उचित छल। पतिक तिरस्कार अनुचित छल की? पता नहि लोक की सोचत? ओह! एहि उचित-अनुचितक द्वन्द्वमे ओझरा गेल छी हम। की करी की नहि करी किछु फुरा नहि रहल अछि। हाय रे हमर भाग्य! कौआ सब कुचरि रहल अछि, इजोरिया पसरि रहल अछि। लागै छै जेना भोर भऽ रहल छैक, किछु कालमे सूर्योदय हेतैक मुदा हमर भाग्यक तऽ जेना आइ सूर्यास्त भऽ गेल हो। आह!...

(विद्योत्तमा निराश होइत बिछानपर मुड़ी पटकि बिछानपर

राखल मसनदमे अपन मुह नुका लैत छथि। किछु काल धरि पूर्ण शान्ति रहैत अछि। पुनः..
प्रियंवदा प्रवेश करैत झूमि-झूमि गीत गबैत छथि—

बीतल राति इजोरिया उगल लुबधुब चमकय चान रे!
कौआ कुचरय पवन सिहकाबै मौसम बड़ बेइमान रे!
छल पुरुष प्रकृति मिलन केर राति
सोलह श्रृंगार यौवन मदन केर राति
केलिलीने रही पता नै चलल कोना भऽ गेलै बिहान रे।
कौआ कुचरय पवन सिहकाबै मौसम बड़ बेइमान रे।
कम्पित अधर गर्म तेज साँसक सफर
मधुयामिनी सपनाक साकार सब स्वर
अरमानक सेजपर ताराक मोती नभमे प्राती गान रे।
कौआ कुचरय पवन सिहकाबै मौसम बड़ बेइमान रे!!

प्रियंवदा उल्लासपूर्वक गीत गबैत छथि आ विद्योत्तमा बिछानपर गुमसुम पड़लि छथि। गीतपर हुनक कोनो प्रतिक्रिया नहि। प्रियंवदाक नजरि विद्योत्तमापर पड़ैत अछि)

प्रियंवदा : एहन मनोयोगसँ अहाँक मधुयामिनीक भोरक वर्णन कयलहुँ मुदा अहाँक कोनो प्रतिक्रिया नहि! वाह! एहन मगन! देखू तऽ कोना मन्द-मन्द समीर अंग-अंगमे सुरसुरी उत्पन्न कऽ रहल अछि, शीतल पवन शरीर सिहका रहल अछि, पक्षी सभक कलरव आ प्राती केर स्वर वातावरणकेँ अद्‌भुत कऽ देने अछि। आम्रमंजरीक मादक महक मदनरससँ सबके मस्त कऽ रहल अछि। ओहिपर कोइलीक कूक! ओह!! भगवान् भास्कर कखनसँ हुलकी दऽ रहल छथि आ हमर दुलरी सखी अखन तक सोहाग रातिक खोमारीएमे छथि।
(विद्योत्तमाक लऽग जाइत) चलू नखक्षत देखाउ, मधुचुम्बन चिह्न देखाउ, रातुक केलिकथा सुनाउ। आइ हम किन्नहु नहि मानब, सब सुनिकेँ रहब। **(स्वतः)** अँय! **(विद्योत्तमाकेँ उठबैत)**

अहाँ एहन उदास आ चुप किएक छी ? की रातिए भरिमे स्वामी सब रस चूसि सिट्ठी बना देलनि? महर्षि कण्व केर सर्वश्रेष्ठ छात्र आ हमर सखीक प्राणनाथ कतऽ छथि?
(हठात् विद्योत्तमा प्रियंवदाक छातीमे मुह नुका हबो ढकार कानऽ लगैत छथि।)

प्रियंवदा : **(आश्चर्यचकित)** ई की भेल!

विद्योत्तमा : **(कनैत)** छल! महाछल!! प्रियंवदा! आचार्य शास्त्रार्थमे अपन आ शिष्य सभक पराजयपर प्रतिशोध लैत अनर्थ कयलनि हमरा संग। कोनो गमारसँ विवाह करा अपन ओइलि सधा लेलनि। ओ महर्षि कण्व गुरुकुल केर छात्र नहि निपट मूर्ख गमार छथि।

प्रियंवदा : **(आश्चर्यचकित)** ई की कहैत छी सखी?

विद्योत्तमा : सर्वथा सत्य कहैत छी। अहाँसँ अपन हृदयक बात नहि कहब तऽ किनका कहि सकब सखी? सोहाग सेजपर मौनव्रत समाप्तिक बातपर ओ गों गैं करऽ लागल। संस्कृत तऽ नहिए अबै छै ओ तऽ नीकसँ मैथिलीयो नहि बाजि सकैत छथि, अपभ्रंशो नहि। हुनक भाषा विचित्र अछि ओ मात्र जाहिल गमार जकाँ बाजि सकैत छथि। हम धिक्कारलहुँ तऽ नेना जकाँ कानि-कानि आचार्यक छल केर पूर्ण कथा कहलनि जे हम तऽ तेहने मूर्ख छलहुँ जे जाहि डारिपर बैसल रही ओकरे काटैत रही। गुरुजन सभकेँ कोनो मूर्खक खोज छल आ ओ सब हमरा सिखा-पढ़ा ई सब करा देलनि। राजाकेँ आशीर्वाद स्वरूप हमरा मात्र ॐ नमः शिवाय कहबाक छल मुदा ठीक समयपर ओ बिसरा गेल आ कहुना मुहसँ उशंरटं शब्द बहरा गेल छल। पण्डित अपनेसँ श्लोक बना सुना देलनि। मिथ्या जयजयकार भेल। ओह! पराजयक प्रतिशोधमे लोक एहन आन्हर कोना भऽ जाइत छैक प्रियंवदा?

प्रियंवदा : प्रतिशोधक ज्वारमे मतिहरण भऽ जाइत छैक सखी! मतिहरण होइते लोक उचित-अनुचित सब बिसरि जाइत अछि। ओ अपन

स्वार्थमे कोनो अनर्थ कऽ सकैत अछि। अच्छा, छोड़ू ई बात! अहाँ हमर गप्प ध्यानसँ सुनू। गौरीक विवाहमे की भेल छल? माता पार्वतीक विवाहक समय वर महादेवक विचित्र भेषभूषा, भाव-भंगिमा आ अंग-भंग नंग-धड़ंग बरियाती देखि परिछन काल माता मेना विषादसँ कानि गेल छलीह, संतापसँ भरि गेल छलीह। फेर की भेल? सब मंगल भेल। अहूँ मोनसँ गिरिजा स्थानमे पूजा कएने छी। गिरिजा भगवती अहाँ संग अन्याय किन्हु नहि होमऽ दऽ सकैत छथि। अहाँ धीरज राखू, सब नीक होयत। अहाँ व्यर्थ चिन्ता जुनि करू। गिरिजा भगवती सब मंगल करतीह। मुदा ओ छथि कतय ?

विद्योत्तमा : पता नहि। भुरुकबा उगैसँ पहिने कतऽ निपत्ता भऽ गेलाह से नहि जानि। हम कदाचित् हुनके संग निर्वाह कऽ लितहुँ, भगवतीक यैह इच्छा मानि सब स्वीकार कऽ लितहुँ। कहुना जीबि लितहुँ। मुदा आब नहि! परित्यक्ता भऽ हम किन्हु जीबि नहि सकब। अहाँ चारि टा घैलक व्यवस्था करू हम गर्दनिमे बान्हि नदीमे डूबि अपन प्राण त्याग करब।

प्रियंवदा : **(विद्योत्तमाक मुहपर हाथ रखैत)** मरथि अहाँक दुश्मन। प्राणत्याग करथि पापी आचार्य जे अहाँ संग एतेक पैघ छल कयलनि। अहाँक कोन अपराध? अहाँ तऽ माता सीता आ ज्ञान गर्विता गार्गीक अनुसरणमे अपन निश्चय कयलहुँ जे अपनासँ श्रेष्ठ विद्वान् सँ विवाह करब। ई कोनो पाप नहि अछि। की माता सीता आ विदुषी गार्गीक अनुसरण करब अनुचित अछि ? किन्हु नहि। अहाँ अपने विदुषी छी। हम साधारण नारी अहाँकेँ की समझा सकब? मुदा ई अवश्य कहब जे आत्महत्या महापाप थिक। आत्महत्या कोनो समस्याक समाधान नहि भऽ सकैत अछि। संकट केर सामना साहससँ करबाक चाही नहि की डरिकेँ पलायन। जखन किछु अपना हाथमे नहि हो तखन सब किछु भगवती आ भगवान् पर छोड़ि देबाक चाही।

विद्योत्तमा : हमरा तऽ एहि कोबरघरसँ बहरएबाक साहसे नहि होइत अछि।

पिताश्री कतेक प्रसन्न छलाह, माताश्री आ परिजन सभक खुशीक पारावार नहि छल। हम किनको सोझाँ कोना जाउ? की करी, की कही, किछु समझिमे नहि आबि रहल अछि। जे सब सपना देखने रही ओ इन्द्रधनुषी सपनाक सातू रंग बदरंग भऽ गेल। शास्त्रार्थमे पराजित कयनिहारेसँ विवाह करब, ई निर्णय तऽ हमरे छल तेँ किछु बाजि नहि सकैत छी। आब की कही,किनका कही? किछु सूझि नहि रहल अछि प्रियंवदे!

प्रियंवदा : दुख आ सुखमे यैह मौलिक अन्तर अछि सखि! दुख दोसरकेँ कहलासँ घटैत अछि आ सुख वा खुशी आन किनको कहला वा बाँटलासँ बढ़ि जाइत अछि। आइ कहू वा काल्हि कहऽ तऽ सभकेँ पड़बे करत। अहाँ निधोक चलू, हम छी ने, सब सम्हारि लेब!

(विद्योत्तमा प्रियंवदाक छातीमे मुह नुका लैत छथि। दुनूक प्रस्थान, यवनिका पात)

दृश्य- चारि

(ऋषि कण्वक आश्रम। यज्ञक हवनकुण्ड मिझा गेल अछि मुदा एहिसँ अल्प धूम्रप्रवाह जारी अछि जाहि कारणेँ वातावरणमे सरड़ आ गुग्गुल केर दिव्य सुगन्ध पसरि गेल अछि। कालिदास आ कुमारदास वार्त्तालाप करैत छथि)

कुमारदास : मित्र कालिदास! अहाँक कथा सुनि हम भावुक भऽ गेल छी। विदुषी विद्योत्तमाक प्रण, आचार्य आ विद्वान् सभक पराजय आ प्रतिशोध, संकेतमे शास्त्रार्थ, विवाह, पत्नीक तिरस्कारसँ व्यथित कोहबर घरमे पत्नीक परित्याग, उच्चैठ गुरुकुलमे रसोइयाक चाकरी, वर्षा ऋतु केर विकराल रातिमे उफनैत नदी हेलिकेँ पार कऽ भगवतीकेँ दीप बारि पूजन आ निशानी देबाक लेल भगवतीक मुहपर दीप केर करिखा लगबैत काल भगवती द्वारा साक्षात् दर्शन दऽ हाथ पकड़ि विश्व-विश्रुत होयबाक आशीर्वाद...

कालिदास : सब माता उच्चैठ भगवतीक कृपा! स्वयंवरमे आचार्य हमर परिचय ऋषि कण्वक शिष्ये रूपमे देने छलाह। तेँ हम अपन मातृभूमि मिथिलासँ एतेक दूर एतऽ आबि कण्व ऋषिक एहि आश्रममे अपन भविष्य देखलहुँ। हिमालय केर पूर्वी तराइ क्षेत्र मिथिलासँ हिमालय केर पश्चिमी तराइ गढ़वालमे मालिनी नदीक तटपर अवस्थित कोटद्वारक एहि आश्रम तक केर यात्रा अत्यन्त दुर्गम छल। तथापि विद्योत्तमाक तिरस्कारक शब्द आ भगवतीक आशीर्वाद हमर पाथेय बनल। एहि चौकीघाटाक लऽग किनकसोत कुञ्जकेँ

कोना बिसरि सकैत छी मित्र! आइ वर्षक वर्ष व्यतीत भऽ गेल तथापि एको क्षणक लेल हम ने अपन मातृभूमि मिथिला आ ने उच्चैठ भगवतीकेँ बिसरलहुँ। एतेक वर्ष बाद एतऽ रहि आब हम एहि योग्य अवश्य भऽ गेल छी जे विद्योत्तमाक ज्ञान गर्व कखनो खंडित कऽ सकैत छी मुदा आब ओम्हर ध्याने नहि जाइत अछि। तिरस्कारसँ भरल शब्दबाण सदिखन जेना हमर मर्मस्थलकेँ बेधैत रहैत हो। ओकर डोका सन-सन पैघ-पैघ आँखि जेना हमरा व्याकुल करैत हो। विद्योत्तमाक तिरस्कारक एक-एक शब्द ओहिना मोन अछि कापुरुष, महापापी, धूर्तशिरोमणि, ठकहारा, क्लीव, नपुंसक... ओह!

कुमारदास : मित्र! अहाँ मानी वा नहि मानी मुदा अहाँक आजुक स्थितिक निर्माणमे ओहि शब्द सभक योगदान अवश्य अछि। सत्य यैह अछि जे अहाँक अचेतन मन अखनो देवी विद्योत्तमाक परिक्रमा करैत अछि। मेघदूतम् मे यक्ष नहि अहाँ स्वयं अपन विरह व्यथा कहैत छी। मेघकेँ दूत बना अहाँ अपन प्रिया विद्योत्तमेकेँ सन्देश पठओने छी। अहाँक सृजन संसार अद्‌भुत अछि। न भूतो न भविष्यति कही तऽ कोनो अत्युक्ति नहि। विलक्षण उपमा, अद्‌भुत गुण, अपूर्व अर्थ गौरव, सर्वश्रेष्ठ शृंगार, अद्वितीय बिम्ब विधान, अनुपम शब्द चित्र, भावयित्री आ कारयित्री प्रतिभाक प्रकर्ष...

कालिदास : **(बात कटैत)** ई अहाँक स्नेह अछि।

कुमारदास : नहि। ई सत्य अछि। अहाँक रचनाक प्रसंगे कतबो कही ओ अल्पे होयत। एहि गुरुकुल केर सर्वश्रेष्ठ स्नातक रहल छी अहाँ। वर्तमान आश्रमपति महर्षि कण्व अहाँकेँ अपन गौरव मानैत छथि। अभिज्ञान शाकुन्तलम् मे अपन दादागुरुक अभिनव शब्द चित्र देखि हुनको चकबिदोर लागि गेल छल। ओहि दिन संबंधित प्रसंग सुनलाक बाद भरि पाँजमे अहाँके पकड़ि दहो-बहो नोरसँ अहाँक मस्तककेँ आर्द्र करैत हुनकर भावुक भेल स्वर- सर्वतो

जयतु इच्छेति पुत्रात् शिष्यात् पराजयम् अपूर्व छल। एहि अत्यन्त विरल दृश्यक साक्षी रहल छी हम! एहन अपूर्व महा सौभाग्य मात्र अहीँकेँ भेटल अछि जे गुरुवर अहाँसँ अपन पराजय केर कामना कयलनि।

कालिदास : आह! गुरुवर...

कुमारदास : आइ हमरा बाजऽ दियऽ। सम्पूर्ण भारतवर्षमे अहाँक मेधाक सूर्य दमकि रहल अछि। राजसूय, अश्वमेध यज्ञादि संपन्न करएबाक अनुरोध विभिन्न राज्य सभसँ अबैत रहैत अछि। महाराज विक्रमादित्यक दरबारमे रत्न बनबाक आमंत्रण पत्र लऽ हुनकर दूत गुरुकुल केर अतिथिशालामे कहियासँ बैसल छथि। अहाँ छी जे दिवारात्रि अध्ययन, लेखन आ भ्रमणमे मस्त रहैत छी।

कालिदास : भ्रमण केर आनन्द अपूर्व अछि। अध्ययन हमर रूचि आ लेखन आब हमर जीवनाधार...

कुमारदास : **(हठात्)** जीवनाधार संग अपन जीवन केर विषयमे, अपन भविष्यक विषयमे सेहो सोचबाक चाही। हमरा सभक अध्ययन आब समाप्त भऽ गेल अछि। अहाँ बहुत विलम्बसँ अध्ययन शुरू कयने छलहुँ मुदा समाप्त सभसँ पहिने कयलहुँ ई गौरवक विषय अछि। हम तऽ सिंहल केर राजकुमार छी। पिताश्री मोग्गलान हमरा श्रीलंकाक युवराज घोषित करबाक दिन निर्धारित कऽ देने छथि तेँ हम आब गुरुकुलसँ विदा भऽ जाएब। मित्र कालिदास! आजुक दिन अहाँसँ किछु याचना करऽ चाहैत छी, करी ? देब ने ?

कालिदास : **(कुमारदासक हाथ पकड़ैत)** याचना नहि मित्र। आदेश देल जाय।

कुमारदास : नहि, पहिने वचन देल जाय।

कालिदास : अहाँ कहि के तऽ देखू। हम निराश नहि करब।

कुमारदास : नहि। बिनु वचन नेने हम नहि कहब। (हाथ जोड़ैत) अहाँ उम्र आ योग्यता दुनूमे हमरासँ श्रेष्ठ छी। आइ अपन एहि अनुजकेँ वचन देल जाय।

कालिदास : **(साश्चर्य)** अँय! अहाँ हमरा अपन अग्रज मानलहुँ? हे भगवती! याचित वस्तु देबामे सक्षम रहलापर हम निराश नहि करब, से वचन दैत छी। अहाँसँ हम कहियो कोनो कथा नहि नुकायल। गुरुकुलमे प्रथम दिवससँ अहाँ हर क्षण हमर संग देलहुँ। मोन होयत जे किछु सहपाठी हमर अधिक उम्र आ विपन्नावस्थापर हमर उपहास करैत छलाह तखन अहाँ ढाल बनि हमर रक्षा करैत छलहुँ। हमर रोम-रोम अहाँक कृतज्ञ अछि। हमरापर अहाँक बहुत ऋण अछि...

कुमारदास : मित्रपर कोनो ऋण नहि होइत अछि सखा। अहूँ तऽ हमर काव्य 'जानकीहरण' केर शोधन आ परिमार्जन कयने रही। ई ऋण नहि मित्रता केर धर्म छी बन्धु!
(कुमारदास उठाकेँ कालिदासकेँ अपन अंकपाशमे बान्हि लैत छथि)

कालिदास : **(भावुक होइत)** श्रीलंकाक राजकुमार आ भावी राजा कुमार धातुसेना आइ हमरा अग्रज आ बन्धु कहलनि। जेकरा लेल कहियो दुनू साँझक भोजन निश्चित नहि छल ओहि अकिंचनकेँ राजकुमार अपन हृदयसँ सटा लेलनि। हमरासँ किछु मँगलनि। हाय रे हमर भाग्य! जन्म-जन्मसँ याचक हम आइ दाता भऽ गेलहुँ। माता उच्चैठ भगवती! सब अहाँक कृपा! (दुनू हाथ ऊपर उठबैत) जे इच्छा हो से माँगल जाय। हम वचन दैत छी जे हम पूर करब। आइ जँ हमर प्राण वा हमर जीवनो माँगि लेब तऽ हँसैत दऽ देब। आश्रम केर एहि हवनकुण्डक अग्निक समक्ष ई वचन दैत छी हम।

कुमारदास : अहाँक जीवनक लेल तऽ हम अपन प्राणोत्सर्ग कऽ सकैत छी मित्र। अहाँक प्राण नहि चाही हमरा, मात्र तीन वचन चाही।

कालिदास : **(आश्चर्यचकित)** तीन वचन ? हमरासँ...

कुमारदास : हँ! मात्र तीन वचन मित्र! प्रथम वचन जे अहाँ भौजी विद्योत्तमाकेँ क्षमा कऽ देब आ सम्मान सहित अपन संग राखब। स्वयंवरमे अहाँक महर्षि कण्व गुरुकुल केर सर्वश्रेष्ठ छात्र रूपमे जे परिचय देल गेल छल से भगवतीक कृपासँ फलित भऽ गेल अछि। मित्र! अहाँ मानी वा नहि मानी मुदा सत्य यैह अछि जे अहाँक एहि उपलब्धिमे भौजीक तिरस्कार आ धिक्कारक योगदान अवश्य अछि। दोसर वचन दियऽ जे महाराज विक्रमादित्यक आमंत्रण केर स्वस्ति आइ पठा देब। तेसर आ अंतिम वचन जे अहाँ एक बेर हमर मातृभूमि श्रीलंकाक महाथोटा माटरा हमरासँ भेंट करऽ अवश्य आयब। हम अपन देशक राजा रावण केर विद्धत्ता, वीरता, धीरता, संपन्नता आ आदर्श एवं मर्यादाक प्रति हुनक दृढ़तासँ अहाँक साक्षात्कार कराबय चाहैत छी।

कालिदास : अवश्य...

कुमारदास : अखन हमरा बाजए दियऽ। एहि यज्ञवेदीक समक्ष हम अहाँके ई वचन दैत छी जे अपन देशक भ्रमण करओलाक बाद अहाँक आपसीमे हम अहाँक संग विदा भऽ अहाँक मातृभूमि मिथिला आयब। अहाँ हमरा राजर्षि जनक केर नगरी जनकपुरक दर्शन करायब। हम ओहि माता उच्चैठ भगवतीक दर्शन-पूजन अवश्य करब जिनकर कृपासँ वज्रमूर्ख कलुआ महाकवि कालिदास रूपमे परिणत भेल। हमरा वचन दियऽ मित्र!

(कुमारदासक बढ़ल हाथ कालिदास थामि लैत छथि)

कालिदास : अहाँक तीनू इच्छाक सम्मान करबाक वचन एहि यज्ञवेदी तऽर दैत छी। ओना जाहि राति ओ हमर अज्ञानतापर हमरा अपमानित आ तिरस्कृत कयने छलीह ओहि राति कोबराक त्याग करैत काल मोनेमोन हम प्रतिज्ञा कयने रही जे एहि ज्ञानगर्वितार्कें विद्धत्ताक सब घमंड चूर करब। अपमानित आ तिरस्कृत करैत हिनकर स्थायी परित्याग करब तखने हमरा आत्मतुष्टि होयत। अबैत

काल हम अपन प्रतिज्ञा सुना सेहो देने रही। मुदा अहाँक देल वचनक रक्षा निमित्त आब हुनकर कोनो दर्पदलन हम नहि करब। स्वयं हुनका ओतऽ जा हुनका सम्मान सहित आनब आ सदा संग राखब।

कुमारदास : ओह मित्र!

कालिदास : स्वर्णमयी लंकाधिपति महाबली रावण शिव ताण्डव स्तोत्र आ रावण संहिताक रचयिता छलाह। भगवान् सूर्यक सारथी अरुणसँ ओ जन्मकुण्डली, हस्तरेखा आ सामुद्रिक विद्या प्राप्त कयने छलाह जे अरुण संहितामे संकलित अछि। ऋग्वेदपर हिनक भाष्य आ रावणीयम् अनादि कालसँ विद्वत् वर्गमे समादृत अछि।

कुमारदास : महाबली रावण आयुर्वेदक महान् ज्ञाता सेहो छलाह। महारानी मन्दोदरीक प्रश्न सभपर आधारित हिनक शिशुचिकित्सा विषयक प्रतिष्ठित पोथी 'अर्क प्रकाश'मे गर्भस्थ शिशुक रक्षा आ जन्म केर बाद चिकित्साक नीक वर्णन अछि। मातृका सभक पूजासँ परिवारकेँ कोना प्रसन्न राखल जा सकैछ आ छोटी माता एवं बड़ी माता अर्थात् चेचक महामारीक लक्षण आ उपायपर 'कुमारतंत्र' अद्भुत रचना अछि। आयुर्वेदमे 'नाड़ी परीक्षा' नामक हिनक ग्रंथ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। इन्द्रजाल, जादू-टोना आ तंत्र केर विलक्षण साधक दशानन 'इन्द्रजाल', 'प्राकृत कामधेनु', 'प्राकृत लंकेश्वर' प्रभृति पुस्तक सभक रचनाकार छलाह। हिनक पाण्डित्य अपूर्व छल। बहिनक अपमान केर प्रतिशोधमे जानकीहरण कयलनि मुदा कखनो आदर्शसँ विचलित नहि भेलाह।

कालिदास : हँ मित्र! सीता हरणक बाद अशोक वाटिकामे माता सीताकेँ सुरक्षित रखलनि, शीलभंग केर प्रयास नहि कयलनि। ई मर्यादा आ आदर्शक बात तऽ अवस्से थिक।

कुमारदास : अहाँ समक्ष एक रहस्य अनावृत करैत छी मित्र! जेना भगवान् राम सम्पूर्ण भारतवर्षमे पूजित छथि तेना महाबली दशानन हमर

सम्पूर्ण देशमे पूजित नहि छथि। ओ किछु भागमे पूजित छथि। ई सत्य अछि। मुदा इहो सत्य अछि जे श्रीलंकाक महानायक रूपमे ओ सम्पूर्ण देशमे प्रतिष्ठित अवश्य छथि। हुनका संग महाबली कुम्भकर्ण आ मेघनादकेँ हमरा ओतऽ असीम प्रतिष्ठा प्राप्त अछि। भ्रातृ धर्म, पुत्र धर्म आ देश धर्मक प्रतिमान छथि ई दुनू। राम-लक्ष्मण भले जे रहल होथि लंकाक लेल तऽ ओ आक्रमणकारी छलाह आ कुम्भकर्ण मेघनाद अपन कर्तव्य निर्वहन कयलनि। देशक आनपर प्राणोत्सर्ग कयनिहार ई दुनू नरश्रेष्ठ जन-जन केर हृदयमे वास करैत छथि।

कालिदास : वाह!

कुमारदास : हँ! हमरा ओतऽ विभीषणकेँ कोनो प्रतिष्ठा नहि अछि। कोइ हुनका आदरक दृष्टिसँ नहि देखैत अछि।

कालिदास : **(साश्चर्य)** से की मित्र?

कुमारदास : लोक मानैत छथि जे एहि कुलघाती आ देशद्रोही विभीषणक कारणेँ महाबली रावण पराजित भेल छलाह। विद्या, शास्त्र, शक्ति, अस्त्र-शस्त्र, संपन्नता सभमे श्रेष्ठ रहलाक बादो एकमात्र एहि देशद्रोही विभीषण केर कारण महाबलीक पराभव भेल। एहि कारणेँ एहि कुलघातीकेँ हमर देशमे कहियो प्रतिष्ठा नहि भेटि सकल। कोइ अपन नेनाक नाम विभीषण नहि रखैत छथि। धर्मक मिथ्या आलम्बन लऽ देश संग घात करब कथमपि उचित नहि। कारण जे रहल हो मुदा श्रीराम दल तऽ लंकापर आक्रमण कयने छल। देशपर आक्रमण कयनिहारक प्रतिकार करबाक चाही आ एहन संकटक स्थितिमे देशत्याग करब कखनो धर्म नहि भऽ सकैछ।

कालिदास : सर्वथा सत्य मित्र! देशक रक्षा करब सभसँ पैघ धर्म थिक। जे धर्म देशहितपर भारी पड़ि जाय ओहि धर्मक परित्याग करब

सैह उचित धर्म थिक। धर्मभ्रष्ट भेलापर प्रायश्चित केर प्रावधान अछि मुदा देशसँ विश्वासघातक कोनो प्रायश्चित नहि छैक। धर्मच्युत् व्यक्ति उचित प्रायश्चित कऽ पुन: अपन धर्ममे आपस आबि सकैत छथि मुदा राष्ट्रद्रोहक कारणेँ राष्ट्रकेँ भेल क्षत्ति वा पराजय केर भरपाई संभव नहि अछि। अपन मातृभूमिक लेल शीशोत्सर्ग कयनिहारसँ पैघ कोइ नहि। शहीद वा बलिदानी सर्वदा नमस्य स्तुत्य वन्दनीय पूजनीय होइत छथि। हमसभ हुनकर वन्दना करैत गर्वित होइत छी।

कुमारदास : सर्वथा सत्य! सुनैत छी जे हमर पितामह धातुसेना नेनपनेसँ वैराग्य धारण कयने छलाह। जखन देशपर संकट आयल आ दमिल राजा हमर देशकेँ पददलित कयलनि तखन एक दिन धातुसेना देशक लेल धर्मक त्याग कयलनि। ओ धर्म केर निशानी काषाय रंगक अन्तरवासक, उत्तरासंग आ संघाटी एहि तीनू चीवर केर त्याग कयलनि। जपमाला आ भिक्षापात्रक परित्याग करैत ओ हाथमे तरुआरि उठा लेलनि। अपन अतुलित साहस आ शौर्यसँ निज देशकेँ राजा पीठ्य केर चाँगुरसँ स्वतंत्र करओलनि।

कालिदास : हम अहाँक ओहि महान् पितामह धातुसेनाकेँ प्रणाम करैत छी। ओ वस्तुत: धर्ममर्मज्ञ छलाह। मातृभूमिक रक्षा धर्मक रक्षा थिक। धर्म देशसँ पैघ कथमपि नहि भऽ सकैछ। देशसँ पैघ कोनो धर्म नहि। **(दक्षिण दिशामे दुनू हाथ जोड़ैत छथि)** नमन अशेष हे धर्मपालक धातुसेना!

कुमारदास : एहि कारणेँ हुनकर अपर नाम लोक धर्मसेना सेहो कहैत छल। मित्र कालिदास! हमर नाम हुनके नामपर धातुसेना राखल गेल छल।

कालिदास : ओह विलक्षण!

कुमारदास : जखन अहाँ हमर सिंहल देश आयब तऽ हम ओ दीघसन्द विहार देखायब जतऽ ओ अपन माम महानामा संग रहैत

बौद्ध धर्मक मर्म सीखैत छलाह। एहि विहारक निर्माण राजा देवानांपिय तिस्स केर सेनापति दीघसन्दन द्वारा भारतवर्षक सम्राट् अशोकक पुत्र महेन्द्रक विश्राम लेल भेल छल।

कालिदास : अवश्य।

कुमारदास : हम अहाँकेँ महाबली दशानन केर किला देखायब। अशोक वाटिका देखायब। हमरा सभक पारम्परिक राजधानी अनुराधापुर रहल अछि। पित्ती कश्शप विद्रोह कऽ पिताक राज्य अपहृत कयलनि आ सिंहगिरिमे भव्य किला बनओलनि। हमसभ अनुराधापुरसँ भागि भारतवर्ष आ श्रीलंकाक दक्षिणी क्षेत्र रोहुणामे नुकाइत रही। रोहुणा क्षेत्रक महाथोटा माटरा एहि विपत्ति कालमे हमरा सभकेँ गुप्तवासमे आश्रय देने छल। तेँ हम अपन आवास ओतहि राखब। अहाँ माटरे आयब मित्र!

कालिदास : अवश्य मित्र!

कुमारदास : लंकेश संगीतशास्त्रक महान् ज्ञाता से छलाह। परम्परागत संगीत वाद्ययंत्र वीणामे आवश्यक परिमार्जन सभक कारण हुनका एहि रावण वीणा केर आविष्कारक मानल जाइछ। हुनक पुष्पक विमानकेँ सिंहल भाषामे दाण्डु मोनारा अर्थात् मोर यंत्र कहल जाइत छल। महाबली दशानन केर महल नुवारा एलिया क्षेत्रमे छल। नुवारा एलियासँ उदा घाटी जयबाक मार्गमे अखनो असंख्य अशोकक गाछ अछि। एहि क्षेत्रमे ओ अशोक वाटिका छल जतऽ माता सीताकेँ राखल गेल छल। सीता एलिया आ एतऽ केर सीता अम्मा मन्दिर विलक्षण अछि। हम ओ सभ अहाँकेँ देखायब। कोणेश्वरम् मे महर्षि अगस्त्य द्वारा स्थापित रावण केर प्रतिमा अखनो विलक्षण अछि। रैगला गुफामे रावण केर शरीर राखल गेल छल। ई सब स्थल हम अहाँकेँ अवश्य घुमायब।

कालिदास : हम अवश्य ओ जगह सब देखब जतऽ मैथिली दशानन रावण केर कैदमे रहल छलीह। जगत् जननी जानकी मिथिलेश महाराज

जनक केर पुत्री छलीह, सम्पूर्ण मिथिलाक गौरव! हम जन्मसँ मैथिल छी। एहि संबंधसँ ओ हमर आराध्य अग्रजा भेलीह, नमस्य माता भेलीह। हमरा सभक देशमे बहिन वा बेटीक सासुरमे कोनो कष्टक विषयमे जानि नैहरसँ पुछारी होइत छैक। पता नहि माता सीताक कष्ट सुनि नैहर मिथिलासँ पुछारी भेल छल वा नहि मुदा हम ई काज अवश्य करब! हम ओहि जगह सभपर अवश्य जायब। ओहि दर्दकेँ अनुभव करबाक प्रयास करब जे माता सीता भोगने होएतीह। कमसँ कम अपन दू ठोप नोरसँ माता सीताकेँ अपन नैहरक अनुभूति तऽ अवश्य करायब हम! हे जनक दुलारी!! हे मैथिली!! ओह!!

(कालिदास भावुक होइत छथि)

कुमारदास : मित्र! अहाँ भावुक भऽ गेलहुँ। ओह! अहाँक सम्वेदनशीलता अद्‌भुत अछि। जानकीक चर्चपर अहाँकेँ एना भावुक होइत देखि हम आश्वस्त छी जे अहाँ हमर देश अवश्य आयब। आ देखल जाय जे अहाँ आब वचनबद्ध सेहो छी जे एक बेर हमर मातृभूमि अवश्य आयब। हम एक बेर फेरसँ ई वचन दोहराबैत छी जे आपसीमे अहाँक संग हम मिथिलाक यात्रा अवश्य करब।

कालिदास : हम अहाँक मातृभूमि अवश्य आयब मित्र! अहूँ हमरा वचन देलहुँ जे आपसीमे अहाँ हमरा संग हमर मातृभूमि मिथिला आयब, ई हमरा लेल अत्यन्त गौरव केर बात अछि। हम अहाँके जनकपुरीक दर्शन अवश्य करायब। फेर हम अहाँकेँ उच्चैठ भगवतीक दर्शन करायब जिनकर कृपासँ एहि अकिंचनकेँ विद्यादान भेटल छल। एहिसँ सटले हमर गाम अछि। मायकेँ बिलटलाक बाद गामपर आब कोइ नहि अछि। हम जाहि गुरुकुलमे रसोइया रही ओ थुम्हानी नदीक दोसर किनारपर अछि। एक कात माता उच्चैठ भगवतीक मन्दिर आ दोसर कात गुरुकुल। गुरुकुल वला डीह आब हमरे नामसँ जानल जाइत अछि। हम अहाँक इच्छानुसार ओतहि विद्योत्तमाक संग रहब।

कुमारदास : फेर हमर दोसर वचन केर की होयत जे अहाँकेँ आइ विक्रमादित्यक राजसभाक रत्न बनबाक प्रस्ताव स्वीकार करबाक अछि?

कालिदास : अहाँक देल कोनो वचन वृथा नहि होयत मित्र। हम महाराज विक्रमादित्यक प्रस्ताव आइ स्वीकार करैत अपन स्वस्ति पठा देब। हमर कर्मक्षेत्र उज्जैन अवश्य होयत मुदा हम मातृभूमि मिथिलाकेँ कहियो बिसरि नहि सकब। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी! ओहि पावन उच्चैठ गुरुकुल डीहपर अपन गृह निर्माण अवश्य करायब आ अवकाश कालमे देवी विद्योत्तमाक संग एतहि आबि रहब आ विद्यादान करब।

कुमारदास : विद्योत्तमा सन विदुषी आ अहाँ सन विद्वान् जतऽ शिक्षण कार्य करत ओ गुरुकुल विश्व-विश्रुत अवश्य होयत। हमरो परिवार आ देशसँ बटुक सभ एहि गुरुकुलमे आबि शिक्षा ग्रहण करताह। हम सेहो आयब। ओह! की अनुपम दृश्य होयत!

कालिदास : अहाँ जखन एतऽ आयब तखन विद्योत्तमा ई जानि अहाँक आर विशेष मानदान करतीह जे अहीँक कारणेँ हमरा सभक पुनर्मिलन भेल। सब उच्चैठ भगवतीक कृपा। माता उच्चैठ भगवती अहाँक मंगल करथि मित्र!

**(दुनू एक दोसराकेँ हाथ जोड़ैत विदा करैत छथि।
यवनिका पात)**

दृश्य- पाँच

(अपन कक्षमे विद्योत्तमा साधारण वस्त्रमे बिनु कोनो श्रृंगार वा आभूषणकेँ बैसलि कोनो ग्रंथ पढ़ि रहल छथि। भोरक समय अछि। नेपथ्यसँ द्वार खटखटएबाक स्वर अबैत अछि- ठक! ठक!! ठक!!! विद्योत्तमा चौंकैत एम्हर-ओम्हर ताकि किछु नहि देखि फेर ग्रंथमे डूबि जाइत छथि।)

विद्योत्तमा : **(स्वगत)** आइ भोरेसँ कौआ अखन धरि कुचरि रहल अछि। हमर वाम अंग आ आँखि फड़कि रहल अछि। एहि नीरस जीवनमे ई शुभ संकेत किएक?

(किछु काल बाद फेर वैह स्वर अभरैत अछि- ठक! ठक!! ठक!!! एहि बेर विद्योत्तमा आसनसँ उठि जाइत छथि। द्वार खटखटएबाक फेर स्वर अबैत अछि आ एहि संग कालिदासक स्वर सेहो अबैत अछि - देवि! द्वार देहि। ई स्वर सुनि विद्योत्तमा चौंकैत छथि)

विद्योत्तमा : आह! ई केहन स्वर! ई किछु देखल सुनल जकाँ लगैत अछि। किनकर भऽ सकैत अछि?

(वैह स्वर फेर अबैत अछि— देवि! द्वार देहि! विद्योत्तमा ओहि स्वरकेँ अपन बाम कानपर हाथ राखि अकानैत छथि)

विद्योत्तमा : **(स्वगत)** ई तऽ हमर स्वामीक शब्द लगैत अछि। मुदा एहन विलक्षण संस्कृतमे ओ कोना बाजि सकैत छथि? अवश्य भ्रम भऽ रहल अछि हमरा। कहाँ ओ मूर्ख चपाट आ कहाँ ई परिष्कृत

उच्चारण! हे जगदम्बा! जाहि दिनक एतेक वर्षसँ प्रतीक्षा कयलहुँ कहुना एकरा सत्य करू माता! हमरा पतिक तिरस्कारक दण्ड भेटि गेल अछि माता! चिर विरहिन आ परित्यक्ता बनि लांछित जीवन जीयब कतेक दुष्कर अछि, हम ई जानि गेल छी। एक-एक पल, एक-एक दिन, एक-एक मास आ एक-एक वर्ष हम कोना अहुरिया काटलहुँ से हमही जनैत छी। ओहि राति हम जे पतिक तिरस्कार कयलहुँ तेकर भारी दण्ड हम भोगि चुकल छी। हे जगदम्बा! हमर भ्रमकेँ सत्य बनाउ। हम जीवन भरि अहाँक पूजा करब। जे पाप कोबरघरमे हुनका धिक्कारैत आ अपशब्द कहैत हम कएने रही ओकर प्रायश्चित करब माता!
(एकदम लऽगसँ वैह स्वर फेर अबैत अछि— देवि! द्वार देहि!)

विद्योत्तमा : ओह! वैह चिर प्रतीक्षित स्वर अछि। आइ ई की विशेष बात अछि— ओह! *अस्ति कश्चित् वाग्विशेष:!*
(सजल-धजल राजकीय परिधानमे कालिदास मंचपर अबैत छथि। विद्योत्तमा आश्चर्यचकित किछु क्षण कालिदासकेँ अपलक देखैत छथि फेर सहसा क्षमा पतिदेव! क्षमा स्वामी!! करैत कालिदासक पयरपर खसि पड़ैत छथि। कालिदास अत्यन्त नेहपूर्वक हुनका उठा अपन छातीमे सटा लैत छथि। दुनूक आँखिसँ बहैत नोर अपन-अपन पश्चात्तापक सभटा कथा कहि दैत अछि।)

कालिदास : **(प्रकृतिस्थ होइत)** क्षमायाचना नहि कयल जाय देवी! क्षमायाचना तऽ हमरा अहाँसँ करबाक चाही जे अपात्र रहितो छलपूर्वक अहाँ संग विवाह कयने रही। छद्म विद्वत्ताक दम्भ भरने रही। अहाँक संग विश्वासघात कयने रही। अहाँ चाही तऽ आइ हमर परीक्षण कऽ सकैत छी।

विद्योत्तमा : कोनो परीक्षण नहि स्वामी! बस हमरा क्षमादान देल जाय।

कालिदास : अहाँकेँ क्षमादान हम नहि दऽ सकब प्रिये! हमरे क्षमा कएल जाय। अहाँक लेल हमर मित्र कुमारदास जीवन पर्यन्त एहि भुजपाशक बंधनमे रहबाक पैघ दण्ड निर्धारित कऽ देने छथि। **(विद्योत्तमाकेँ अपन भुजपाशमे लैत छथि। दुनू हँसैत छथि)**

विद्योत्तमा : अपनेक ओहि मित्रक प्रति हम चिरकृतज्ञ रहब स्वामी! कृपया हुनका विषयमे किछु आर कहल जाय।

कालिदास : कुमारदास श्रीलंकाक युवराज छथि। अहाँक तिरस्कारक बाद हम उच्चैठ गुरुकुलमे रसोइयाक चाकरी करैत रही। एक भयंकर आँधी-तूफान आ वर्षा वला रातिमे माता उच्चैठ भगवतीक मन्दिरमे दीप जरएबाक लेल कोइ तैयार नहि भेल तखन हम जानपर खेलि नदी पार कऽ मन्दिर गेल रही। भगवती हमर दीपदानसँ प्रसन्न भऽ विद्याक वरदान दैत प्रेरणा देलनि जे हम महर्षि कण्वक गुरुकुल जाय। ओहि दिन राजसभामे हमर परिचय महर्षि कण्वक सर्वश्रेष्ठ शिष्यक रूपमे देल गेल छल। हम ओतहि गेलहुँ।

विद्योत्तमा : ओह!

कालिदास : श्रीलंकाक युवराज कुमार धातुसेना ओहि गुरुकुलमे विद्या अध्ययन करैत छलाह। ओ हमरासँ अत्यधिक स्नेह करैत छलाह। हम भगवतीक कृपा स्वरूप वाग्दान केर बाद अपन नाम कालिदास कऽ लेल। हमर नाम कालिदासक अनुकरणपर ओ अपन नाम कुमार धातुसेनासँ कुमारदास कऽ लेलनि। ओ हमरा अनेक बेर सहायता कयलनि। अनेक संकटसँ हमर रक्षा कयलनि। गुरुकुलसँ विदा होइत काल ओ हमरासँ वचन नेने छलाह जे हम अहाँकेँ क्षमा कऽ देब आ सदा संग राखब। आइ ओ वचन सेहो पूर भऽ गेल। हुनका देल दू वचन पूर कऽ देलहुँ आब तेसर वचन पता नहि कहिया पूर होयत!

विद्योत्तमा : प्रथम-दोसर-तेसर कोन वचन स्वामी?

कालिदास : प्रथम वचन छल अहाँ ओतऽ स्वयं आबि अहाँकेँ क्षमादान दैत सदा अपना संग राखब। से आइ संपन्न कएल। दोसर वचन छल महाराज विक्रमादित्यक दरबारक नवरत्न बनबाक प्रस्तावपर स्वस्ति देब से हम हुनक वचनानुसार ओही दिन पठा देलहुँ। तेसर वचन अछि एक बेर हुनक मातृभूमि श्रीलंका जा हुनकासँ भेंट करब। हमरो माता जानकीक अशोक वाटिका आ महाबली दशानन केर किला आदि देखबाक अछि तेँ हम ओतऽ अवश्य जायब। ओ हमरो वचन देलनि जे आपसीमे ओ हमरा संग हमर मातृभूमि मिथिला आबि जनकपुर आ उच्चैठ भगवतीक दर्शन करताह।

विद्योत्तमा : ओह! विलक्षण! ओ कुमारदास तऽ हमर श्रेष्ठ भ्राता भेलाह जे अपन एहि परित्यक्ता बहिनक दुख बूझि अहाँसँ वचन लऽ हमरा सभक मिलन केर मार्ग प्रशस्त कयलनि। हम दूरेसँ अपन ओहि वीर अग्रजकेँ प्रणाम करैत छी जिनकर कारणेँ आइ हमरा सभक चिरप्रतीक्षित पुनर्मिलन भेल। **(दक्षिण दिशामे दुनू हाथ जोड़ैत छथि)**

कालिदास : वीर अग्रज?

विद्योत्तमा : हँ स्वामी ! हमरा हुनका कहियो भेंट नहि। हम तऽ हुनकर नामो नहि सुनने रही। तथापि ओ हमर संकट हरलनि, हमर विपत्ति दूर कयलनि ई वीरे कऽ सकैछ। वीर केर एक अर्थ विपत्ति रक्षक भ्राता सेहो तेँ वीर अग्रज कहलहुँ।

कालिदास : वाह वाह! अहाँ सरिपहुँ विदुषी छी। अहाँ हमर मित्रसँ आइ नव सम्बन्ध जोड़ि लेल ! बहुत नीक प्रिये!! आइ हम अहाँकेँ एक उपहार देब जे ओहि राति नहि दऽ सकल रही प्रिये! आइ

अहाँक मुखारविन्दसँ निःसृत तीनू शब्द— अस्ति, कश्चित् आ वाग्विशेषःसँ अपन तीन रचना आरम्भ कऽ एहि शब्द त्रिवेणीकेँ अमरता देब। ई हमर प्रथम मिलन केर उपहार होयत। एहि लेल रचना सभमे किंचित् परिमार्जन करब। आजुक एहि पुनर्मिलनपर यैह हमर प्रेमोपहार थिक अहाँक लेल।

(प्रियंवदाक प्रवेश।)

प्रियंवदा : **(सोल्लास)** अहोभाग्य हमरा सभक जे एहन शुभ घड़ी आयल। सुस्वागतम् महर्षि कण्वक अनुपम शिष्य! शुभ स्वागतम् हे भारतवर्षक सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक मेधा सम्पन्न कालिदास! हमर विरहिन सखीक दीर्घ विरहकेँ स्वयं पधारि समाप्त कयनिहार श्रेष्ठतम प्रतिभाक स्वागत अछि। हे रसराज! शृंगारक सरितासँ समस्त संसारकेँ सुख देल जाय। सखि विद्योत्तमा आ हमरा सभक जीवन अत्यन्त कष्टमय भऽ गेल छल। अहाँ सभक पुनर्मिलनसँ सब फेर मधुमय भऽ गेल। धन्य भाग्य!! विद्योत्तमा! सबसँ पहिने ई सुखद समाचार सभकेँ सुना दी। फेर हमसभ गिरिजास्थान आ उच्चैठ भगवतीक दर्शन करबाक लेल प्रस्थान करब। कतेक कबुला-पातीपर आइ ई सुखद दृश्य देखि रहल छी। आइ फेरसँ ओ गीत गायब जे अहाँ सब ओहि दिन सुनि नहि सकल रही—

बीतल राति इजोरिया उगल लुबधुब चमकय चान रे।
कौआ कुचरय पवन सिहकावै मौसम बड़ बेइमान रे।

(विद्योत्तमा प्रियंवदाक छातीमे हँसैत मुक्का मारैत नुका जाइत छथि। कालिदास मुस्काइत छथि। यवनिका पात।)

दृश्य- छओ

(श्रीलंकाक एक नगर माटरामे राजनर्तकी कामसेनाक घर। देवालपर सिंह केर आकृति, समुद्र केर रम्य तट केर चित्र आ सुन्दर कलाकृति सब सुशोभित अछि। द्वारपर सजल दीपक केर रोशनी घरक शोभा बढ़ा रहल अछि। द्वार खटखटएबाक स्वरपर कामसेना प्रकट होइत छथि। आकर्षक देहयष्टिपर सुन्दर परिधान आ स्वर्णाभूषण दमकैत अछि। सामने कालिदास राजसी परिधानमे ठाढ़ छथि।)

कालिदास : देवी! हम भारतवर्षसँ आएल एक पथिक छी। की अहाँ हमर भाषा समझि रहल छी?

कामसेना : **(कालिदासपर एक नजरि दैत)** अवश्य महानुभाव। हम अहाँक भाषा समझि रहल छी। महाराज कुमारदासक राजदरबारमे एहि भाषामे सेहो वार्त्तालाप होइत अछि। कहल जाय श्रीमन्!

कालिदास : ई हमरा लेल अत्यन्त आह्लादकारी अछि जे सिंहल दरबारमे हमर मातृभाषा मैथिलीक व्यवहार होइत अछि। एहिसँ हमरा अत्यधिक सुविधा होयत।

कामसेना : अपन परिचय आ उद्‌देश्य कहल जाय महानुभाव!

कालिदास : अवश्य सुन्दरी! हमर नाम कालिदास अछि। सन्ध्याकाल समुद्र तटपर अस्ताचलगामी सूर्यक अनुपम दृश्य देखि आनन्द विभोर

भऽ गेल छलहुँ आ समय केर ध्यान नहि रहल। ओह! की विलक्षण दृश्य छल ओ जेना दिन भरि जरैत रहलाक बाद विशाल अग्निपुंज शीतलता लेल शनैः शनैः समुद्रमे समा रहल हो। एहि अनुपम दृश्यकेँ अपन हृत्पटलमे अंकित करबाक क्रममे विलम्ब भऽ गेल। आब राजासँ अखन भेंट करब उचित नहि अछि। भोरमे राजदरबार जाएब। रात्रि-विश्रामक लेल आश्रय केर याचना करैत छी।

कामसेना : हम कामसेना महाराज कुमारदासक दरबारमे राजनर्तकी छी। अहाँक परिधानसँ स्पष्ट अछि जे अपने कोनो राजपुरुष छी। अतिथि देवो भव! अपनेक स्वागत-सत्कार करब हमर धर्म अछि। किन्तु आजुक लेल हम विवश छी। हमर घरसँ तीन प्रासाद आगू एक सराय अछि। अपने हमरापर कृपा करैत आजुक लेल ओतहि शरण ली मान्यवर!

कालिदास : हम सराय अवश्य देखि लेब सुभगे! तथापि की हम अपनेक विवशता जानि सकैत छी?

कामसेना : अपने ई जानि की करब? काल्हि अपने हमरा ओतऽ आबि सकैत छी। आजुक लेल हम असमर्थ छी। हमरा क्षमा कयल जाय श्रीमन् !

कालिदास : हम अतिथि बनि आयल छी। अतिथिक धर्म अछि जे आतिथेयक समस्या समाधानमे हुनक सहायता करी। संभव अछि जे हम अपनेक किछु सहायता कऽ सकी।

कामसेना : क्षमा आगन्तुक! काल्हि राजदरबारमे सर्वश्रेष्ठ समस्यापूर्त्तिपर दस सहस्र स्वर्णमुद्राक पुरस्कार घोषित अछि। अपने राजपुरुष छी। अपनेक यथोचित स्वागत-सत्कारमे हमरा बहुत समय लागत आ हम एहि सभमे लागि जायब तऽ ओहि समस्यापर सोचबाक लेल हमरा एकान्त समय नहि भेटि सकत। एहि कारणेँ हम क्षमायाचना करैत छी। अपने अन्यथा नहि लेल जाय।

कालिदास : एहि लेल क्षमायाचनाक कोनो प्रयोजन नहि अछि बाले! अहाँ सन सुन्दरीक मुखमण्डलपर चिन्ता वा परेशानीक रेख नहि शोभैत अछि। समस्यापूर्त्तिक लेल अपने एतेक गम्भीर किएक छी ?

कामसेना : ई मात्र दस सहस्र स्वर्णमुद्राक बात नहि अछि।

कालिदास : तखन आर कोन बात ?

कामसेना : **(मुस्की दैत)** ई एक गोपन रहस्य अछि आर्य! महाराज कुमारदास रसिक शिरोमणि छथि आ हम हुनकर सर्वाधिक प्रिय राजनर्तकी छी। हम आब मात्र राजनर्तकी नहि छी। महाराज हमरा प्रति आकर्षित छथि आ हम सेहो हुनकासँ प्रेम करैत छी। हुनकर प्रिया बनल रहबाक लेल ई समस्यापूर्त्ति हमरा अवश्य जीतबाक अछि। एतेक पूछताछ नहि कएल जाय आ हमरा क्षमा कएल जाय। हमरा एहि समस्यापर सोचबाक अछि।

कालिदास : समस्याक प्रथम पंक्ति कहल जाय वनिते! अहाँक उद्‌देश्य अवश्य फलीभूत होयत आ अहाँ राजाक हृदयेश्वरी बनल रहब। ई एक भारतीय केर वचन अछि राजनर्तकी कामसेनाजी!

कामसेना : **(खौंझाइत)** हमरा कोनो वचन नहि चाही हमरा मात्र एकान्त चाही।

कालिदास : हम भारतीय अपन देल वचनकेँ आपस नहि लैत छी। अहाँ प्रथम पंक्ति पढ़ू तऽ...

कामसेना : अहाँ हद्‌द करैत छी। सुनल जाय! जँ समुचित समाधान नहि भेल तखन हम सब मर्यादा बिसरि जाएब। की अपने ओहि अपमानक लेल तैयार छी?

कालिदास : अवश्य!

कामसेना : तखन सुनल जाय। समस्या अछि जे कमलसँ कमल केर उत्पत्ति सुनल जाइत अछि मुदा देखल नहि जाइछ—

कमल: कमलोत्पत्ति श्रूयते न तु दृश्यते...

कालिदास : **(हठात्)** *बाले! तव मुखाम्भोजे कथमिन्दीवरद्वयम्।* बाले! कमलसँ कमल केर उत्पत्ति जँ मात्र सुनल जाइत अछि आ देखल नहि जाइत अछि तखन अहाँक मुखकमलसँ दू नयनकमल कोना उत्पन्न भऽ रहल अछि?

कामसेना : ओह! अद्भुत! विलक्षण! आर्यश्रेष्ठ! क्षमा कएल जाय एहि अकिंचनकेँ जे भारतवर्षक स्यमन्तक मणिकेँ चीन्ह नहि सकल। पधारल जाय श्रीमान! अपनेक चरण रजसँ आइ ई कुटिया पावन भेल! आइ हमरा एक श्रेष्ठ भारतीय केर अटूट आत्म विश्वासक दर्शन भेल। अपन अद्वितीय मेधासँ अपन वचनक रक्षा करैत देखि हम आश्चर्यचकित छी मान्यवर अतिथि! अहाँ सन अतिथि केर आतिथेय बनब हमर परम सौभाग्य! हमरा अपन स्वागत-सत्कारक अवसर देबाक कृपा कएल जाय हे भारतवर्षक रत्न नरश्रेष्ठ!

कालिदास : आभार देवी कामसेना!

कामसेना : आभारी हम छी जे अपनेक आतिथेयक अवसर भेटल। अपने विश्राम कएल जाउ हम भोजनादिक व्यवस्था करैत छी।

कालिदास : नहि देवी! अखन विश्राम नहि। पहिने स्नान करब हम आ फेर आजुक सन्ध्याकाल जे अपूर्व दृश्य देखल ओकरा सभकेँ लिपिबद्ध करब।

कामसेना : **(आश्चर्यचकित)** की अपूर्व दृश्य छल आर्य ?

कालिदास : समुद्रक कात सूर्यास्त केर विलक्षण दृश्य देखल। लागल जेना भगवान् भास्कर भरिदिन ताप बिल्हैत-बिल्हैत ततेक गर्म भऽ गेलाह जे सन्ध्याकाल शीतलताक लेल स्वयं समुद्रमे सन्हिया गेलाह। सम्पूर्ण क्षेत्र सिन्दूरी शोभासँ शोभायमान छल जेना श्रीलंकाक समुद्रमे सुरक्षित समस्त स्वर्णभंडार सतहपर आबि सोनाक सेतुबन्ध बना देने हो।

कामसेना : ओह विलक्षण!

कालिदास : हम अपलक ई अपूर्व दृश्य निहारि रहल छलहुँ। ओह! आधा सूर्य समुद्रमे आ आधा बाहर! लगैत छल जेना कोनो स्वर्ण परात ओन्हल हो वा जेना समुद्रपर अर्द्ध चन्द्राकार कोनो कनकभवन बनल हो। डूबल भाग सेहो ओहिना देखा रहल छल। ई भागमे जेना सोनाकेँ अपना दिशि खीचबाक शक्ति हो आ सागरमे सुरक्षित समस्त स्वर्णभंडार आकर्षित होइत ओतहि जमा भऽ गेल हो।

कामसेना : ओह! सुन्दर बिम्ब विधान!

कालिदास : देवी! जेना-जेना अन्हार बढ़ि रहल छल लगैत छल जेना वसुधा देवीक माथपर सीउथ बनि रहल हो। एक दिशि समुद्रक एक कात केर गाछ-वृक्षक हरीतिमामे सन्हिआयल अन्हार आ दोसर दिशि समुद्रमे पसरल अनन्त अन्हार जेना वसुधा देवीक अनन्त केशराशिकेँ सीउथ दू भागमे बाँटि देने हो आ एहि सीउथमे सूर्यक रेख जेना सिन्दूर बनि सुशोभित हो।

कामसेना : सरिपहुँ अपने अद्भुत छी।

कालिदास : तखने बुन्नी पड़ब शुरू भऽ गेल। हम दृश्यावलोकनमे तेहन लीन रही जे हम बरखामे भीजैत रहलहुँ मुदा आँखि नहि हटा सकलहुँ। वसुधा देवीक सीउथ केर सिन्दूर जेना सर्वत्र पसरि गेल हो आ बरखाक बुन्नी जखन आरक्त समुद्रक सतहपर खसैत छल तखन जे लघूर्मि उठैत छल ओ सेहो छोट-छोट स्वर्णकलश समान चमकि वृत्त बनि समुद्रमे समा जाइत छल। ओह! हम आनन्दविभोर भऽ भीजैत रहलहुँ तथापि हटि नहि सकलहुँ। बुन्न खसलापर बनैत लघु स्वर्णकलश आ वृत्त सभक आनन्द लैत रहलहुँ।

कामसेना : ओह! एहन सूक्ष्म दृष्टि!

कालिदास : देवी! हम एहि समस्त भावकेँ लिपिबद्ध करब आ भोरमे अहाँकेँ सुनायब। जे भावचित्र अहाँक सर्वश्रेष्ठ लागत ओहिपर आर परिश्रम करब आ जखन ओ हमर मनोनुकूल भऽ जाएत तखन ओकरा अपन आगामी रचनामे स्थान देब।

कामसेना : हमरा जे सर्वश्रेष्ठ लागत?

कालिदास : हँ देवी! सृजन पाठके लेल ने! हम बड़भागी छी जे अहाँ सन विदुषी हमर एहि सृजन-प्रक्रियामे हमर सहयोग करब। पूर्वमे एकबेर किछु एहने दृश्यक साक्षात्कार हमरा अपन क्षेत्रक महावराह क्षेत्रमे भेल छल आ ओतए आकाशगंगाक अवतरण केर कल्पना साकार भेल छल। देखै छी एहि बेर की होइत अछि। बेस! स्नानागार कतऽ अछि?

कामसेना : हँ! अहाँक वस्त्र अखनो किछु भीजले अछि। आउ! **(संकेत करैत)** स्नानागार ओम्हर अछि।

(कामसेना विनीत भावसँ आग्रहपूर्वक कालिदासकेँ अन्दर लऽ जाइत छथि। ओ अपन कुटिल मुस्की आ बाउर कूचबाक भाव-भंगिमासँ कोनो पैघ षड्यंत्रक आभास करबैत छथि। यवनिका पात)

दृश्य- सात

(श्रीलंकाक राज दरबार सजल अछि। सिंह केर विशाल आकृति सभक चित्र सब देवाल सभपर सुशोभित अछि। यत्र-तत्र पितरिया, काँसा आ चानीक सिंह प्रतिमा राखल अछि। मध्यमे राजसिंहासन लऽग सिंह केर भव्य स्वर्ण प्रतिमा सुशोभित अछि। सभासद सब अपन-अपन आसनप विराजमान छथि। चारणक उद्घोष होइत अछि)

चारण : सावधान! 'जानकीहरण' काव्य केर प्रणेता, नृपश्रेष्ठ धातुसेनाक पौत्र, सुर सेनापति स्कन्द समान वीरश्रेष्ठ राजा मोग्गलानक पुत्र, महाथोटा माटरा भूषण, बल-बुद्धि-विद्या श्रेष्ठ, दानवीर दया सागर, रसिक शिरोमणि, स्वर्णिम लंकाधिपति कुमार धातुसेना प्रसिद्ध महाकवि कुमारदास पधारि रहल छथि!
(कामसेना कुमारदासकेँ सम्हारैत मंचपर प्रवेश करैत अछि। सभासद सब अपन-अपन आसनसँ उठि सम्मान प्रकट करैत जय-जयकार करैत अछि। कुमारदास आसन ग्रहण करैत छथि। तेकर बाद सब सभासद अपन आसन ग्रहण करैत अछि। कुमारदास हाथ उठा राजसभाक कार्यवाही शुरू करबाक संकेत करैत छथि।)

कामसेना : महाराजक जय हो! राजसभाक कार्यवाही हुनक आदेशसँ आरम्भ होइत अछि। आइ हमसब आनन्दोत्सवमे एकत्रित भेल छी। एहि आनन्दोत्सवमे सर्वप्रथम हमर गीत-नृत्य होयत फेर समस्यापूर्त्ति आ आन राजकाज। अपने सब आनन्द लेल जाय।

कामसेना नृत्य करैत गीत गबैत छथि—

सुरम्य सागर तट सुशोभित
साहस शक्ति सौन्दर्य अशेष।
चन्दन चर्चित गजमुक्ता शोभित
मसृण मृदु मोती मंडित भेष।।
जयति जय अनुपम सिंहल देश।
प्रकृति पुत्री प्रचण्ड प्रातिभ
प्रणव नाद सप्त स्वर स्वामिनी।
ज्ञान गर्वित शीर्ष शिखर विवेकी
सकल बल बुद्धि विद्या धारिणी।।
सुन्दर श्रीलंका व्योम डंका विश्वविश्रुत विशेष।
जयति जय अनुपम सिंहल देश।

कुमारदास : एतेक वर्ष बाद आइ पता नहि किएक एहि आनन्दोत्सवमे महाकवि कालिदास कोना मोन पड़ि गेलाह। कोनो काव्यपाठ वा आनन्दोत्सव बिनु कालिदास अपूर्ण अछि।

कालिदास कविता नवं वयो माहिषंदधि सशर्करं पयः।
शारदेन्दुरबला च कोमला प्राप्यते सुकृतिनैव भूतले।।

अर्थात् कालिदासक कविता, नव महीसक दूध केर दही, शर्करा युक्त दूध, शरद् केर चाँदनी रातिमे कोमलांगी सभक साहचर्य एहि धरतीपर भाग्यवाने सभकेँ भेटैछ।
आह! की सुख अछि! आइ हम अहाँ सभक समक्ष एक गोपन रहस्य अनावृत करैत छी।
(सभासद सब साधु-साधुक समवेत स्वरसँ वातावरण गूँजायमान करैत छथि)

कुमारदास : सुनलहुँ जे हमरे देल अपन वचन केर निर्वाह करैत महाकवि विद्योत्तमाकेँ क्षमा कयलनि। स्वयं विद्योत्तमा ओतऽ जा कहलनि— देवि द्वार देहि। प्रमुदित विद्योत्तमाक आश्चर्यचकित उत्तर छल— *अस्ति कश्चित् वाग्विशेषः*। एहि तीनू शब्दसँ महाकवि तीन

कालजयी रचना शुरू कऽ एहि शब्द सभकेँ अमरत्व प्रदान कयलनि। *अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराज:* सँ कुमारसंभवम्, *कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्त:* सँ मेघदूतम् आ *वागर्थाविव सम्पृक्तो वागार्थ: प्रतिपत्तयैसँ* रघुवंशम् केर आरम्भ कऽ महाकवि एहि शब्द त्रिवेणीमे स्नान करा सम्पूर्ण संसारकेँ निरभ्र कऽ देलनि। मेघदूतम् केँ कश्चित् सँ आरम्भ करबाक लेल तदनुसार परिमार्जन सेहो कएल गेल।

सभासद 1 : महाकवि कालिदासक काव्य आ नाटक अद्भुत अछि। मालविकाग्निमित्रम्, अभिज्ञान शाकुन्तलम् आ विक्रमोर्वशीयम् सन नाटक तऽ एहिसँ पूर्व लिखले नहि गेल। मेघदूतम्, कुमारसंभवम् आ रघुवंशम् काव्य केर कोनो परतर भऽ नहि सकैत अछि। काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला आ शाकुन्तलेन स कविर्नाटकेनाप्तवान यश: सन सूक्ति अभिज्ञान शाकुन्तलम् केर लेल अछि। के इह रघुकारे न रम्यते कालिदास आ रघुवंशम् केर अलौकिक लोकप्रियताक प्रमाण अछि। उपमा कालिदासस्य से सुप्रसिद्ध अछि—

सरस्वती व कर्णाटी विजयां का जयत्ससौ।
या वैदर्भीगिरांभूमि: कालिदासादनन्तरम्।।

कतेक गानल जाय। जे बात महाकवि कालिदासमे अछि ओ कोनो आन कविमे नहि।

कुमारदास : निश्चित रूपसँ। तँ माता सरस्वती सोऽहं कहि स्वयंकेँ कालिदास कहि देलनि। महाकवि कालिदासक ज्ञान गर्वित दर्पणमे समग्र संसार प्रतिबिम्बित होइछ—

महाकवि कालिदासं वन्दे वाग्देवतागुरुम्।
यज्ज्ञाने विश्वमाभाति दर्पणे प्रतिबिम्बवत्।।

धन्य-धन्य हे मित्र कालिदास!

कामसेना : **(चौंकैत)** कालिदास अहाँक मित्र?

कुमारदास : अहाँक ज्ञात नहि अछि कामसेना! महर्षि कण्वक गुरुकुलमे हम सब सहपाठी छलहुँ। भारतवर्षक काञ्ची नगरमे सेहो हम सभ किछु समय संग रहल छी। ओ हमर काव्य 'जानकीहरण' केर प्रथम पाठक, शोधक आ समीक्षक छथि। हमर मूलनाम तऽ कुमार धातुसेना छल मुदा महाकवि कालिदाससँ प्रभावित हम अपन साहित्यिक नाम कालिदासक अनुसरणमे कुमारदास कऽ लेलहुँ। हुनकेसँ हम हुनक मातृभाषा मागधी अपभ्रंश मैथिली सिखने छलहुँ जेकर प्रचार-प्रसार अपन दरबारमे सेहो कयलहुँ आ आइ हमर सभासद सभ एहि मधुर मैथिलीमे निपुण भऽ एहिमे वार्त्तालाप करबामे सक्षम छथि।

कामसेना : ओह हो!

कुमारदास : महाकवि कालिदास हमर अभिन्न मित्र, अनन्य सखा, अद्वितीय बन्धु आ अनुपम प्राणाधार छथि। ओ हमरा वचन देने छथि जे एक बेर हमरासँ भेंट करबाक लेल हमर मातृभूमि श्रीलंका अवश्य अओताह। पता नहि ओ दिन कहिया आओत। हम सेहो हुनका वचन देने छी जे आपसीमे हुनका संग हुनकर मातृभूमि मिथिला अवश्य जायब आ जानकी जन्मभूमिपर साष्टांग प्रणाम करब। महामूर्खसँ विश्वविश्रुत विद्वान् बनओनिहारि उच्चैठ भगवतीक दर्शन करब। अपन मित्रक जन्मभूमि मिथिलाक माटि अपन माथमे लगा धन्य होएबाक सेहन्ता अछि हमरा। पता नहि कहिया हमर ई मनोरथ पूर होयत।

कामसेना : क्षमा महाराज! सब ईश्वरक इच्छा। आब समस्यापूर्त्तिपर विचार केर आदेश देल जाय महाराज!

कुमारदास : समस्यापूर्त्तिक प्रति अहाँ आइ अत्यधिक उत्सुक छी कामसेना! अहाँ हमर सभसँ प्रिय आ सुन्दर राजनर्तकी छी। अपन विशिष्ट वाक् चातुर्य, मनमोहक नृत्य, अनुपम देहयष्टि आ उद्दाम यौवनसँ हमरा सभकेँ परमानन्द प्रदान करैत छी। अहाँ कतेक बेर समस्यापूर्त्तिक प्रथम पुरस्कार प्राप्त कएने छी। एहि बेर दस सहस्र स्वर्णमुद्राक पुरस्कार अछि तँ अहाँ किछु विशेष व्यग्र छी की? वा पुरस्कार जीतबाक लेल आश्वस्त छी अहाँ?

कामसेना : अपने सन रसिक शिरोमणिक प्रिया बनल रहबाक लेल ई पुरस्कार जीतब आवश्यक अछि महाराज!

कुमारदास : महामंत्री! समस्यापूर्त्ति आरम्भ कयल जाए।

सभासद 1 : **(उठैत)** महाराजक जय हो। उपस्थित सुहृदजन! समस्यापूर्त्तिक विषयमे अपने सभ जनैत छी। आजुक समस्या पूर्वमे देल जा चुकल अछि। हम प्रथम पंक्ति पढ़ब आ अहाँ सब बेरा-बेरी अपन दोसर पंक्ति पढ़ब। जिनकर दोसर पंक्ति सर्वश्रेष्ठ होयत हुनका दस सहस्त्र स्वर्णमुद्राक पारितोषिक देल जायत। प्रथम पंक्ति अछि—

कमल: कमलोत्पत्ति: श्रूयते न तु दृश्यते।

अर्थात् कमलसँ कमलक उत्पत्ति सुनल जाइत अछि मुदा देखल नहि जाइत अछि।

कामसेना : **(हठात् उठैत)**

बाले तव मुखाम्भोजे कथमिन्दीवरद्वयम्

अर्थात् तखन अहाँक मुख कमलसँ दू नयन कमल कोना बहरा रहल अछि।

(सभासदगण विलक्षण पंक्ति, अत्यन्त रमणीय पूर्त्ति, अपूर्व समाधान, वाह वाह, राजनर्तकी कामसेनाक जय हो आदि केर जयकारा लगबैत छथि।)

कुमारदास : ई अप्रतिम पंक्ति फेर महाकवि कालिदासक स्मरण करा देलक। एहन सटीक आ विशिष्टतायुक्त विलक्षण समस्यापूर्त्ति कालिदासक अतिरिक्त केओ आन नहि कऽ सकैत अछि। कामसेना! सत्य कहू जे अहाँ महाकवि कालिदाससँ कहियो भेंट कएने छी?

कामसेना : नहि महाराज! हम कोनो कालिदाससँ कहियो नहि भेंट कयने छी।

कुमारदास : **(कड़क स्वर)** फेर अहाँ अपने लेल एहि 'बाले' शब्दक प्रयोग कोना कयलहुँ? हमरा मुहसँ 'मित्र कालिदास' सुनि अहाँ सेहो

अकचकाइल रही। सच-सच बताउ जे कतय छथि हमर मित्र ? नहि तऽ अखने अपना हाथेँ अहाँकेँ मृत्युदंड दैत छी। **(म्यानसँ तलवार घीचि कामसेनाक घेँटपर राखि दैत छथि।)**

कामसेना : **(दुनू हाथ जोड़ैत)** क्षमा महाराज! अभयदान महाराज! प्राणदान महाराज!

कुमारदास : सब बात सच-सच बता देलापर कदाचित् तोरा प्राणदंडसँ मुक्ति भेटि जाउ। **(तलवार हटा लैत छथि।)**

कामसेना : सर्वथा सत्य कहब हम। मात्र जान बकसि देल जाय महाराज! काल्हि सन्ध्या काल एक गौरांग सुदर्शन व्यक्ति हमर द्वारपर दस्तक देलनि। ओ रातिमे आश्रय केर याचना कयलनि आ भोरमे दरबार अयबाक बात कहलनि। हम समस्यापूर्त्तिपर चिन्तन करबाक लेल समयाभावक कारणेँ आश्रय देबासँ मना कऽ देलहुँ तखन ओ हमरासँ समस्या पुछलनि। प्रथम पंक्ति— *कमल: कमलोत्पत्ति श्रूयते न तु दृश्यते* पढ़िते मात्र हठात् हुनकर मुहसँ निकसि गेल— *बाले तव मुखाम्भोजे कथमिन्दीवरद्वयम्।* हम आश्रय देलहुँ मुदा ई निश्चित छल जे जँ ई दरबारमे अबितथि तऽ पुरस्कार हिनके भेटैत तेँ पुरस्कारक लोभवश हम रातिमे भोजनोपरान्त दूधमे माहुर मिला हुनकर हत्या कऽ देलहुँ।

कुमारदास : ओह!

कामसेना : फेर भिनसरबामे अपने घरमे तरहरा खुनि हुनका गाड़ि देलहुँ। हमर एक-एक शब्द सत्य अछि महाराज! आब हमरा प्राणदान देल जाओ। क्षमा महाराज क्षमा!

कुमारदास : **(विलाप करैत)** हा हन्त! हमर मित्र! अहाँ अपन देल वचन पूर कयलहुँ। हमर मातृभूमि श्रीलंका आबि हमरासँ भेंट करबाक वचन निभा देलहुँ मुदा हम अहाँक रक्षा नहि कऽ सकलहुँ। धिक्कार अछि हमरा राजा भेलापर। **(कामसेनाकेँ धक्का दैत)** अरे पातकी! तू महाकवि कालिदासक नहि तू तऽ हमरा माहुर खुआ देलेँ, हमर हत्या कऽ देलेँ। ओह मित्र! अहाँ संगे हमरा

अहाँक मातृभूमि मिथिला जएबाक छल। जानकी जन्मभूमि, जनकपुर आ उच्चैठ भगवतीक दर्शन करबाक छल। हाय रे हमर भाग्य! **(कुमारदास विलाप करैत छथि आ सभासद सब हुनका सम्हारैत छथि।)**

कुमारदास : **(कामसेनाकेँ गर्दनि पकड़ि धक्का दैत)** अरे एहि नागिनकेँ दंड तऽ बादमे देब पहिने एकरा लऽकेँ एकर घरसँ हमर मित्रकेँ आनल जाय। सर्वश्रेष्ठ राजकीय सम्मानसँ श्रेष्ठ श्रीखण्ड रक्तचन्दन केर चिता सजाओल जाय। युवराज कित्तीसेनाकेँ अति शीघ्र उपस्थित होयबाक आदेश पठाओल जाय।

(कुमारदास आ एकमात्र चारण छोड़ि सब मंचसँ प्रस्थान करैत छथि।)

कुमारदास : **(एकल विलापक मुद्रा)** कालिदास! हमर मित्र, हमर सखा, हमर बन्धु! हमरा क्षमा करब हम अहाँक रक्षा नहि कऽ सकलहुँ। ओह! एक बेर गुरुकुलमे अपना लेल अग्रज आ बन्धु संबोधन सुनि अहाँ द्रवित भऽ गेल छलहुँ। हमर अंक मालिकापर अहाँ केहन भाव-विह्वल भेल छलहुँ मित्र! आ हम केहन अधम आ अभागल जे अपन बन्धुकेँ बचा नहि सकलहुँ। हम कोन मुहसँ विद्योत्तमाक सोझाँ जा सकब? हुनकर पैघ-पैघ आँखिसँ अश्रु-प्रवाह कोना देखि सकब हम? हमरे देल वचन केर निर्वाहक कारणेँ महाकवि कालिदास आ विदुषी विद्योत्तमाक पुनर्मिलन भेल छल आ एहि अनुपम युगल जोड़ीकेँ तोड़बाक पापो हमरे माथ बथाएल। हाय रे हमर भाग्य! कालिदास आ विद्योत्तमाक बहुत पैघ ऋण हमरापर, हमर देशपर चढ़ि गेल अछि। एहि महाॠणसँ हम कोना उऋण होयब हे महादेव!

(सभासद 1 केर प्रवेश)

सभासद 1 : महाराज! महाकवि कालिदासक चिता नगर माटराक दक्षिणी क्षेत्रक किरीन्दी नदीक मुहानपर सर्वोच्च श्रेणीक राजकीय सम्मानक संग सजाओल जा चुकल अछि। ई स्थान राजमहलक सामने अछि। युवराज मुखाग्नि...

कुमारदास : नहि ! किन्नहु नहि ! अपन मित्रकेँ मुखाग्नि दऽ हम स्वयं विदा करब।

प्रजा द्वारा कएल पापक प्रायश्चित राजाकेँ स्वयं करबाक चाही। हमरा ओतऽ लऽ चलू।

(मुख्य मंचक बामा कात लागल पर्दा हटि जाइत अछि। चारण आ सभासद सहारा दैत मंच केर बामा कात सजाओल चिता तक कुमारदासकेँ अनैत छथि। लघुमंच केर पर्दा उठि जाइत अछि। ओतऽ युवराज कित्तीसेना आ सभासद सब उपस्थित छथि। कुमारदास मुकुट उतारि युवराजक हाथमे दैत छथि फेर अपन उपरका परिधान उतारैत छथि जे चारण सम्हारि लैत अछि। कुमारदास *'ॐ देवाश्चाग्निमुखा: सर्वे कृतस्नपनं गतायुषमेनं दहन्तु'* **मंत्र पढ़ैत उल्का हाथमे लैत छथि। फेर** *'ॐ कृत्वा सुदुष्करं कर्म जानता वाप्यजानता। मृत्यु कालवशं प्राप्तं नरं पञ्चत्वमागतम्। धर्माधर्मसमायुक्तं लोभमोहसमावृतम्। दहेयं सर्वगात्राणि दिव्यान् लोकाञ्च गच्छतु'* **मंत्रोच्चार करैत चिताक परिक्रमा कऽ कालिदासकेँ मुखाग्नि दैत छथि। चिता धधकि उठैत अछि।)**

कुमारदास : **(विलाप करैत)** हे मित्र कालिदास! जे हाथ कहियो अहाँकेँ उठा हृदयसँ लगओने छल वैह हाथ आइ अहाँकेँ मुखाग्नि देलक। ओहि दिन अंकमालिका काल हमर हाथ काँपल नहि छल ओ अत्यन्त प्रफुल्लित छल मुदा आइ... आइ मुखाग्नि दैत काल **(थरथराइत दुनू हाथ उठबैत)** ई दुनू हाथ काँपि रहल छल। हमरा क्षमा करब मित्र! अहाँ हमरा देल अपन तीनू वचन निभा देलहुँ। हमरासँ भेंट करय हमर मातृभूमि श्रीलंका अयलहुँ मुदा हम अकिंचन अपन राजधर्मक निर्वहनमे असफल भऽ गेलहुँ। अहाँ अपन दू ठोप नोरसँ सीता माताकेँ अपन नैहर मिथिलाक अनुभूति करएबाक मार्मिक कथा कहने रही से हमरे कारण संभव नहि भऽ सकल हे मित्र हमर! हमरा माफ करब! हमर देशक माटि हमर महाकवि मित्रकेँ उदरस्थ कऽ लेलक तऽ एकर प्रतिदान तऽ हमरे करए पड़त। अहाँकेँ एतऽसँ एसकर कोना प्रस्थान करऽ दी मित्र? हम वचन देने रही जे आपसीमे अहाँक संग मिथिला जायब। जहिना भारतीय सभ प्राण दइयो के अपन देल वचनक रक्षा करैत अछि तहिना हम सिंहलवासी सब सेहो अपन देल वचनक रक्षामे प्राणक मोह नहि करैत छी। हम अपन देल वचनक रक्षा अवश्य करब आ अहाँक

संग अपन अनन्तयात्रा शुरू करब। संभव अछि जे एहि अनन्त यात्रामे कहियो हमरा अहाँक संग मिथिलाक दर्शनक सौभाग्य भेटि जाए। ओहि दिन हम कृत् कृत् होयब आ तखने हमरा एहि जीवनचक्रसँ मुक्ति वा मोक्ष भेटि सकत। हे हमर देश! हमरा क्षमा करब। महाकवि कालिदासक सिंहल देशमे हत्यासँ भारतवर्षक ऋण हमर देशपर चढ़ि गेल अछि। हम कथमपि नहि चाहब जे हमर देशपर कोनो आन देशक ऋण रहय। तेँ हे हमर देश! क्षमा करब हमरा। हम आब आर अहाँक सेवा नहि कऽ सकब। हे महाकवि! आइ मित्रधर्मक निर्वहन करैत भारतवर्षक श्रीलंकापर चढ़ल ऋणकेँ हम चुकता करब। अहाँक देल अपन वचन निर्वहन लेल हम अनन्त पथपर अहाँक संग चलब। प्रायश्चित करबाक लेल हम आबि रहल छी मित्र। एहि पावन नील गंगा नदीक तीरपर हमरा सभक महाप्रयाण संग-संग होयत। हमरा क्षमा करब मित्र! हमरा क्षमा करब हे हमर देश!

(कुमारदास युवराजक हाथसँ मुकुट अपना हाथ लऽ युवराजकेँ मुकुट पहिरा अपन माथक तिलकसँ युवराजकेँ तिलक करैत कालिदासक धधकैत चितामे पैसि जाइत छथि। हाहाकार मचि जाइत अछि। फेर पाँच बेर विभिन्न स्त्री स्वरमे 'प्राणनाथ', 'स्वामी', 'लंकेश्वर', 'प्राणेश्वर' आ 'हृदयेश्वर' शब्द अभरैत अछि। वातावरणमे अनेक प्रकारक करुण क्रन्दन् केर स्वर, हे महादेव, हे अवलोकितेश्वर केर आर्त्तनाद, चीत्कार, गूँज आ कोलाहल पसरि जाइत अछि।)

(यवनिका पात)

नेपथ्यसँ अबैत नट केर स्वर— सती प्रथा उचित नहि तेँ कुमारदासक पाँच रानीकेँ धधकैत चितामे प्रवेश नहि दर्शाओल गेल अछि। श्रीलंकाक मुख्य शहर कोलम्बोसँ लगभग 160 किमी दक्षिण पूबमे अवस्थित माटरा शहरमे चितास्थलपर सात टा बोधि वृक्ष लगाओल गेल छल। एहिमे अनेक हतबोधिवृक्ष माटरा शहरक विभिन्न क्षेत्र-जेना माटरा पुलिस स्टेशन, गवादा विडिया, बेलि बेरिया, मुख्य गली आ कोतुवागोड़ा पुरान सड़कपर अखनो जीवित अछि।

दरभंगा जिलाक गाम सुलतानपुर, कुशेश्वर स्थानक रहनिहार **डॉ. रंगनाथ दिवाकर** बिहार प्रशासनिक सेवामे अनेक उच्च पद सभकेँ सुशोभित करैत अपर सचिव रूपमे सेवानिवृत्त भेल छथि। 'ब्रह्मभट्ट वैभव', 'सहदेव सुषमा : पं. सहदेव झा स्मृति ग्रंथ', 'मधुबनी दर्पण', 'विरासत मधुबनी', समस्तीपुर जिला गजेटियर 'समेटियर', 'विरासत मुजफ्फरपुर', श्री विजय ना. मिश्र 'प्रवासी साहित्यालंकार'क काव्यसंकलन 'प्रवासी प्रतिबिम्ब', 'भामती' आदिक सम्पादन कयने छथि। स्वतंत्र पोथीमे 'हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में मिथिला का योगदान', 'मिथिला गौरव प्रतीक कन्दर्पी', मैथिली कथासंग्रह 'भखरैत नील रंग', 'सुलतानपुर सौरभ' प्रमुख अछि। साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित पंजाबी कथासंग्रह 'अमर कथा' (ले. गुलजार सिंह संधू)क मैथिली अनुवाद साहित्य अकादेमीसँ प्रकाशित भेल अछि। दिवाकरजी शुद्ध मेधावादी छथि। स्नातक विज्ञान (प्रतिष्ठा)क बाद स्नातकोत्तर हिन्दीमे 'टॉप' कयलनि। शोधमे रूचि रखैत छथि एवं मिथिलाक इतिहास आ संस्कृति विषयक अनेक विवादास्पद घुरछीकेँ सफलतापूर्वक सोझरा देने छथि। एहिमे श्रीधर केर काल-निर्धारण, मैथिल करण कायस्थक कर्णाटसँ कथित आव्रजन, मण्डन मिश्र-शंकराचार्यक कथित शास्त्रार्थ, महाकवि कालिदासक मैथिलत्व, कन्दर्पीघाटमे मैथिल शौर्यक दिग्दर्शन आदि प्रमुख अछि। कन्दर्पीघाटमे मिथिला विजय स्तम्भक निर्माण हिनक अमर कृति थिक आ एहि कारणेँ ओ अपर ग्रियर्सन रूपमे समादृत छथि। किरण पुरस्कार, केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' सम्मान, मिथिला विभूति सम्मान, मिथिला रत्न सहित अनेक पुरस्कार/सम्मानसँ अलंकृत छथि।

— दीप नारायण

सम्पर्क : फ्लैट सं. 102, अनन्त विकास अपार्टमेंट, वेदनगर, रुकनपुरा, बेली रोड, पटना -800014
मोबाइल : +91 8709610336, इमेल : rangnath.chy@gmail.com

अनुप्रास प्रकाशन
मधुबनी, मिथिला (बिहार) 847211
+ 91 94305 83847
info@anuprasprakashan.com
www.anuprasprakashan.com

महाकवि कालिदासक मैथिलत्व आ महाप्रयाण विषयक नाटक
₹ 800/–
9 789391 371128

Also available on
amazon flipkart.com